CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिकायन

डॉ० अर्जुन दास केसरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लौरिकायन

डॉ० अर्जुनदास केसरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोक महाकाव्य

लोरिकायन

[मँजरी एवं लोरिक की जन्म तथा कर्मभूमि मिरजापुर की मौखिक परंपरा से प्राप्त सांस्कृतिक एवं प्रामाणिक गाथा]

डॉक्टर अर्जुनदास केसरी

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा नामित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार से सम्मानित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

● संस्करण : प्रथम, १९८० ई०

● © अर्जुनदास केसरी

● प्रकाशक :
कन्हैया लाल, रामगोविन्द दास
लोकरुचि प्रकाशन
राबर्ट्सगंज, मिरजापुर (उ० प्र०)

● वितरक :
केसरी पुस्तक भण्डार
राबर्ट्सगंज, मिरजापुर (उ० प्र०)

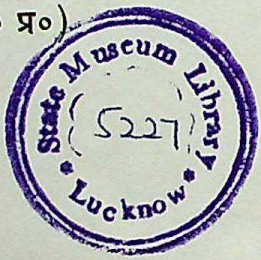

● मूल्य रु० 75.00 मात्र

● उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लेखक को प्रदत्त
आंशिक वित्तीय सहायता से प्रकाशित ।

● मुद्रक
कैक्सटन प्रेस,
बाई का बाग,
इलाहाबाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

LORIKAYAN

[Cultural folklore of Mirzapur, the native soul of Lorik and Manjari]

Dr. Arjundas Kesari

Awarded by Uttar Pradesh Hindi Sansthan, Lucknow
Namit Rahul Sankrityayan Reward.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Edition First, 1980

Publisher :

Kanhaiyalal Ramgovind Das

LOKRUCHI PRAKASHAN

ROBERTSGANJ, MIRZAPUR (U. P.)

Distributor :

KESARI PUSTAK BHANDAR

ROBERTSGANJ, MIRZAPUR (U. P.)

Price : Rs. 75.00 Only

Printed by :

CAXTON PRESS

BAI KA BAGH

ALLAHABAD.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"जगनिक के लोक-महाकाव्य 'आल्हखंड' की तरह ही हमारे प्रदेश में 'लोरिकायन' महाकाव्य भी, विशेष रूप से पूर्वी क्षेत्र में, अत्यधिक लोकप्रिय रहा है। यह होते हुए भी वह सम्पूर्ण महाकाव्य कहीं पढ़ने को नहीं मिलता था, किसी गाँव में किसी को उसका कोई अंश याद था और किसी को अन्य कोई अंश। हमारे लगन भरे प्रतिभाशाली युवक डॉ० अर्जुनदास केसरी ने वर्षों अनेक गाँवों में घूम-घूम कर उक्त महाकाव्य के विभिन्न अंशों को संकलित किया। यह बड़े साहस, धैर्य और लगन का काम था। डॉ० अर्जुन दास केसरी के वर्षों के तपोफल के स्वरूप यह लोरिकायन महाकाव्य आज आपके हाथ में है। उ० प्र० हिन्दी संस्थान डॉ० केसरी के अथक श्रम को 'राहुल सांकृत्यायन' पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित कर चुका है।

डॉ० केसरी हम सब के धन्यवाद और शुभकामनाओं के सुपात्र हैं। मैं इनकी उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करता हूँ।"

अमृतलाल नागर

चौक, लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभिनन्दन

'लोरिकायन' के प्रस्तुत संस्करण के संकलनकर्त्ता एवं संपादक डा० अर्जुन दास केसरी वास्तव में लोक-साहित्य के प्रति समर्पित अध्यवसायी, शोधार्थी हैं। उनका कार्य-क्षेत्र व्यापक, श्रमसाध्य और तपस्या-परक है। दस वर्षों तक निरन्तर परिश्रम करके उन्होंने भोजपुरी की प्रसिद्ध लोकगाथा 'लोरिकायन' के विभिन्न अंशों और अंगों को एकत्र किया, उसका अनुशीलन और संपादन किया और उसे इस रूप में विज्ञ समाज के लिए प्रस्तुत किया। सफल काम, यशस्वी शोधार्थी, कृत-संकल्प मेधावी विद्वान् डा० अर्जुनदास केसरी को, 'लोरिकायन' के प्रकाशन के इस मंगलमय अवसर पर मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

लोरिकायन है क्या ? मैंने बचपन में अपने पारिवारिक भृत्य जगदेव से 'चनैनी' सुनी थी। 'चनैनी' गाते समय अहीर जगदेव का अंग-अंग थिरकने लगता था। तब मुझे क्या मालूम था कि चनैनी (चन्दायनी) विराट लोक प्रसिद्ध, लोक कण्ठ में ही अवस्थित, महिमा-मण्डित लोक महाकाव्य 'लोरिकायन'—लोक-मानस में विराजमान लोरिकचरित—का ही एक महत्त्वपूर्ण अंश है भोजपुरी—अवधी क्षेत्र में ही नहीं अन्य कई भाषाओं में व्याप्त और लोकप्रिय !

'महान् लोकगाथा' लोरिकायन' का शोध, अनुशीलन संपादन और प्रकाशन करके वास्तव में डा० अर्जुनदास केसरी ने हमें उपकृत किया है, ऋणी बनाया है।

धरती के बेटों और बेटियों के सहज, सरल, स्वाभाविक जीवन के चटख, रंगीन चित्रों को बार-बार अंकित करने वाले, सारे परिवेशों और संदर्भों के साथ मूल स्वरूप को उभार कर सामने रखने वाले 'लोरिकायन' का स्वागत ! धरती की ओर से, धरती की सोंधी महँक की ओर से, सस्य-श्यामल खेतों की ओर, उनकी मेड़ों पर बैठे युवकों और युवतियों के भावभीने, मादक-उन्मादक कण्ठस्वरों की ओर से 'लोरिकायन' का शत-शत अभिनन्दन-अभिवादन !

शिवरात्रि
14 फरवरी 1980

—श्री कृष्णदास

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिकायन—एक समर्पित शोध विद्यार्थी की महत्वपूर्ण उपलब्धि

श्री अर्जुनदास केसरी ने शताब्दियों से मौखिक परम्परा से चले आ रहे लोरिकायन जैसे महान् जन-काव्य को लिपिबद्ध करके भारतीय मनीषा की महत्वपूर्ण सेवा की है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न अंचलों में आंशिक रूप से गाये जाने वाले इस लोककाव्य के कितने ही गायकों से सम्पर्क स्थापित करके पूरी गाथा का उद्धार करने में उन्हें लगभग 10 वर्ष लगे हैं। रेलवे विद्यालय की अच्छी सी लगी-लगायी नौकरी छोड़कर श्री केसरी ने लगभग विपन्नता का जीवन स्वीकार करके अपने को राबर्ट्सगंज क्षेत्र में समाधिस्थ कर दिया तभी जाकर यह कार्य पूरा हो सका; अन्यथा नगरीय जीवन की हलचलों में फँसकर कितने ही अच्छे अन्वेषकों तथा सहृदय पाठकों के स्वप्न अधूरे रह गये। श्री केसरी ने इस कार्य के दौरान अपने को मिर्जापुर की जन-जातियों के साथ एकमेव कर लिया। उनके बीच कितनी ही रातें अलावों के आस-पास बैठकर उन्होंने गुजारीं। आश्चर्य तो यह है कि यह सारा कार्य उन्होंने नितांत असुविधाजनक स्थिति में पूरा किया। न टेप रिकार्डर, न वित्तीय सहायता, न आवा-गमन के साधन। ऐसी स्थिति में यह सारा का सारा कार्य मध्यकालीन वातावरण में अलाव के प्रकाश में बैठकर किये गये एक यज्ञ जैसा पवित्र और महत्वपूर्ण माना जाना चाहिये।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के निर्देशक के नाते जिन कुछ कार्यों के लिए मैं जीवन भर रोमांच का अनुभव करूँगा उनमें एक था लोरिकायन को संस्थान के सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित करने के निर्णय में भागीदार होना। इसके पूर्व केवल प्रकाशित ग्रन्थों को ही पुरस्कृत करने की परम्परा थी। मैंने कार्यकारिणी से आग्रह करके पाण्डुलिपियाँ भी पुरस्कार के लिए स्वीकृत करने की योजना आगे बढ़ाई। जब पाण्डुलिपियों की माँग पत्रों में प्रकाशित हुई तब हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि हिन्दी प्रदेश में कितनी पाण्डुलिपियाँ अप्रकाशित पड़ी हुई हैं? उदाहरण के लिए श्री केसरी द्वारा किया गया लोरिकायन सम्बन्धी कार्य ही ले लें। श्री केसरी ने जिन स्थितियों में यह कार्य पूरा किया था उनमें उन्हें कितने अभावों के बीच गुजरना पड़ा होगा इसका अन्दाज हम नगरों में बैठकर नहीं लगा सकते। राबर्ट्सगंज में एक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छोटा सा विद्यालय बड़ी मुश्किल से श्री केसरी इन दिनों चला रहे हैं जिसे अभी तक किसी प्रकार की सहायता प्राप्त नहीं है। उनके विद्यालय में आदिवासी एवं पिछड़ी जाति के छात्रों की संख्या काफी है लेकिन उन छात्रों से किसी प्रकार की फीस प्राप्त करना बहुत ही मुश्किल काम है। श्री केसरी ने यह सारा कार्य लगभग भूखे रहकर पूरा किया है। ऐसी स्थिति में यह आशा करना कि वे इतना बड़ा ग्रन्थ अपने साधनों से प्रकाशित करेंगे एक दुराशा ही सिद्ध होगी। इसीलिए उन्हें छः हजार रुपये का पुरस्कार देते हुए संस्थान ने यह आशा की थी कि अब इस पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हो जायगा। सौभाग्य से पुस्तक पुरस्कार प्राप्ति के एक वर्ष के अन्दर ही प्रकाशित हो रही है और इस प्रकार शताब्दियों से उपेक्षित पूरी लोक-गाथा सुरक्षित होने जा रही है। यह दुख की बात है कि हिन्दी संस्थान ने मेरे बाद पाण्डुलिपि पर विचार करने की परंपरा समाप्त कर दी है। इस निर्णय के कारण निश्चित ही कितने अच्छे लेखक और शोधकर्ता असुविधा का अनुभव करेंगे। इसलिए मुझे आशा है कि हिन्दी संस्थान अपने हुए निर्णय पर पुनः विचार अवश्य करेगा।

लोरिकायन के सम्बन्ध में जहाँ तक मेरी स्मृति जाती है श्री केसरी से मेरी बातचीत लगभग आठ वर्ष पहले हुई थी। उन दिनों मैं मिर्जापुर के लोक-जीवन पर एक उपन्यास लिखने की योजना बना रहा था जिसमें मुझे कदम-कदम पर असुविधा हो रही थी। उत्तर प्रदेश मासिक पत्रिका के सम्पादक के नाते मैंने प्रदेश के ऐसे पिछड़े अंचलों पर काफी सामग्री प्रकाशित की थी और इसी सिलसिले में मेरी श्री केसरी से बातें भी हुई थीं। लोरिकायन की संक्षिप्त कथा सम्भवतः पहली बार उत्तर प्रदेश पत्रिका में ही धारावाहिक प्रकाशित हुई थी जिसने कितने लोगों का ध्यान आकर्षित किया था। तभी मैंने ध्यान से लोरिकायन के कुछ अंश भी पढ़े थे और उनके भीतर वर्णित अथवा चित्रित समाज की गहराइयों को आंकने की कोशिश की थी। वह एक रोमांचक अनुभव था जिसके लिए मैं आज भी श्री केसरी का आभारी हूँ। बाद में लोरिकायन की पूरी पाण्डुलिपि मेरे सामने आयी और उसे मैंने कई बार ध्यान से पढ़ा। कहने को उसकी भाषा भोजपुरी है और उस पर अवधी का काफी प्रभाव है लेकिन केवल इतना ही कह देने से वह अनुभव व्यक्त नहीं किया जा सकता जो इस विशाल रचना के मोड़ों, आवर्तों और कथानक रूढ़ियों के बीच गुजरने में प्राप्त होता है। मैं स्वयं पूरब का निवासी हूँ और जीवन के पिछले वर्षों में मैंने लोक-साहित्य को पूरी आस्था और तन्मयता के साथ देखा, सुना और समझा है। लोरिकायन न केवल उन अनुभवों में वृद्धि करता है बल्कि कुछ ऐसी अनथाही गहराइयों तक ले जाता है जहाँ इसके पहले पहुँचने का अवसर मुझे भी नहीं मिला था। इन अनुभवों के लिए भी मैं श्री केसरी का आभार मानता हूँ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोरिक देव के सम्बन्ध में कभी डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ था। निश्चित ही पंडित जी ने अपने उन पुस्तकों में कल्पना का सहारा लिया था लेकिन कुल मिलाकर वे लोरिकायन का मूड पकड़ने में काफी समय तक सफल हुए थे। मैं पिछले कई महीनों से लोरिकायन की पाण्डुलिपि बार-बार पढ़ रहा हूँ लेकिन आज भी उसका सही मूड पकड़ने में मुझे सफलता नहीं प्राप्त हुई है। इसका मूल कारण मैं अपनी असमर्थता मानता हूँ। लेकिन कुछ हद तक लोरिकायन का शिल्प भी इसका कारण हो सकता है।

आज से तीस वर्ष पहले कभी संथाल परगने के लोकगीतों को मैंने जिस तरह आत्मसात किया था इन दिनों उन्हीं गहराइयों से इस महागाथा को पकड़ने की कोशिश मैंने की है। केवल कवि समय, कवि उक्तियाँ या कथानक रूढ़ियों का विवेचन कर देने से ही लोरिकायन को पूरी तरह समझा नहीं जा सकता। यह कथा शास्त्रीय खाना-पूरियों या ठंडे विवेचनों से कुछ अधिक बैठती है। इस आधिक्य को पकड़ने का प्रयत्न पिछले कई महीनों से कर रहा हूँ और अभी भी यह नहीं कह सकता कि लोरिकायन मेरी पकड़ में आ गया है। यह बात मैं अगर स्वीकार न करूँ तो उस गाथा के साथ अन्याय हो जायगा।

सम्प्रति इतना ही।

31, गुलिस्तां कालोनी
लखनऊ

ठाकुर प्रसाद सिंह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

1—ग्रंथ के विषय में (16—30)

लोरिक सम्बन्धी कथाएँ और किंवदन्तियाँ (14), लोरिक कथा का क्षेत्र विस्तार (17), आभीर जाति की रामायन (18), लोरिक-कथा के स्रोत (31); इस गाथा पर हुए कार्य की समीक्षा (22); प्रस्तुत सामग्री (24), कथा-संरचना (25), 'लोरिकायन' का कथा-शिल्प (26) प्रबंधात्मकता (27), छन्द-परिचय (27); 'लोरिकायन' में संगीत नृत्य तथा नाट्य तत्व (28), 'लोरिकायन' की भाषा (30); संकलन की पद्धति तथा बाधाएँ।

2—पहला खण्ड : लोरिक मंजरी—बाल काण्ड (1—35)

लोरिक का जन्म (2), राजा मोलागत और महरा में संघर्ष का आरम्भ (10), राजा मोलागत का महरा के घर जाना (10), महरा द्वारा राजा का अपमान तथा राजा के सिपाहियों द्वारा महरा को टेककर राजा के समक्ष उपस्थित किया जाना (11), राजा का महरा के साथ कौड़ी खेलने का आग्रह (12), महरा की जीत (13), राजा का देश निकाला (13), ब्रह्मा द्वारा राजा की सहायता (14), राजा की जीत और राज्य वापस (15), महरा द्वारा महरिन की कोख हारना (16), मंजरी का जन्म (18), नाल-छेदन (19) राजा का मंजरी को पाने का यत्न प्रारम्भ (20), नोना चमाइन की विदाई (21), राजा का मंजरी को पाने का पुनः प्रयास (22), महरिन की चालाकी : राजा वापस (23), कैथे की लड़की का मंजरी को मेहना (24), मंजरी के लिए योग्य वर की खोज (27) लोरिक की वीरता (29), राजा सहदेव द्वारा तिलक में बाधा उपस्थित किया जाना (30) धरमी के विवाह का प्रसंग (31), लोरिक का तिलक तय (32)।

3—दूसरा : विवाह काण्ड (36—79)

बारात की तैयारी (35), बारात का पड़ाव कोटासे में (37), कोटासे के राजा से युद्ध (39), लोरिक की जीत, (39) बारात का अगोरी की ओर प्रस्थान (41), राजा का विरोध (43), बारात का पार उतर कर अगोरी पहुँचना (44), विवाह की विभिन्न शर्तें (45), गिलास की रहस्यमय चोरी, (54) गिलास का छिपाया जाना (56), तरई गोबर सैती के यहाँ-प्रस्थान (57), गिलास वापस (58), गिलास

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाने के लिए धरमी लोरिक का योगी-रूप धारण (59), महीचन तेली के घर गिलास, लोरिक उसे लेकर बारात लौटता है (60), मंजरी के विवाह की तैयारी (63), एकान्त में लोरिक का मंजरी से मिलन कराने का प्रयास (64), गड्या का महरा के घर जाना (65), हास-परिहास (66), गड्या का मँजरी के घर से पुनः बारात को वापस होना (68), लोरिक का मंजरी के घर जाना (68), मंजरी-लोरिक मिलन (72), मंजरी द्वारा लोरिक को राजा के आतंक से आतंकित किया जाना (72), लोरिक का नाल उठाकर जोर आजमाना (73), देवी-देवताओं का वरदान प्राप्त करना (75), लोरिक का महादेव से प्रकट बात करना (75), दुर्गा से प्रकट बात करना (76), मनियाँ से वरदान प्राप्त करना (77), हाथ के अंगूठे से पेड़ गिराना: राजा से युद्ध का प्रारम्भ (78)।

4—तीसरा : युद्ध काण्ड (80—123)

लोरिक का बारात में वापस जाना, (81) गुण्डों को मारकर राजा को आतंकित करना (81) मंजरी की तथा साथ ही बारात की विदाई (82) गाय-भैंस के दहेज की प्रथा (83), मंजरी की कारुणिक विदाई (84), मंजरी के खूंट में विष ताकि लोरिक की पराजय की स्थिति में मंजरी उसे खाकर मर जाय (85), मरदमल से युद्धः लोरिक की जीत (87), मरदमल को राजा द्वारा आधा राज्य देने का वचन (87), मरदमल की दुर्गति (91), राजा मोलागत द्वारा लोरिक से युद्ध के लिए अन्य राजे-महाराजे आमंत्रित (93), युद्ध की तैयारी (94), मंजरी का भयभीत होकर विष खाने का प्रयास (94), धरमी का वाण जो मंजरी के स्पर्श से विष हो जाता है (94), लोरिक भी युद्ध के लिए तत्पर (94), युद्ध प्रारम्भ (97), लोरिक का इनरावत हाथी से युद्धः लोरिक की जीत (97), राजा निरमल को पत्र लिखना, युद्ध के लिए निरमल का आना, युद्ध तथा दुर्गा की सहायता से लोरिक की जीत (101), जीवन-निमित्तक वस्तु से निरमल के विजय-पराजय की परीक्षा (103) निरमल का अगोरी पहुँचना (104), लोरिक-निरमल वार्त्ता (107), निरमल वापसः राजा क्रुद्ध (107), निरमल वापसः युद्ध के लिए तत्पर (107), निरमल-लोरिक के बीच युद्ध (108), दुर्गा द्वारा इन्द्रासन जाकर ब्रह्मा के हाथ से लिखी निरमल के हाथ लोरिक की मृत्यु की जगह लोरिक के हाथ निरमल की मृत्यु लिखवाना (109), निरमल और लोरिक में युद्ध (112), मंजरी की विदाई (119), लोरिक मंजरी का गउरा के लिए प्रस्थान (120), लोरिक-पत्थर : लोरिक की वीरता की निशानी (120), गउरा में खान-पान का उत्सव (121)।

5—चौथा : संवरू काण्ड (दूसरा खण्ड (124—168)

सुमिरनी (125), दुर्गा का इन्द्रलोक प्रस्थान (125), फाग खेलने के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डंफा का बनवाया जाना (128), गडिया का डंफा बनवाने के लिए बोहा प्रस्थान (128), संवरू द्वारा सामर का शिकार (129), गउरा का फाग (130), सहदेव की लड़की चनवाँ से होली (130), सिल्हिया का संवरू से चनवाँ का विवाह करने का ताना (131), लोरिक चिंतित (132), राजा भिमली से अजई पराजित (133); अजई की सहायता के लिए लोरिक आमंत्रित (134), बारात की तैयारी (134), बारात का प्रस्थान (135), बारात दानव के पेट में (136) बारात का पता लगाने में क्रमश, चन्द्रमा, शुक्र, गोबरसैंती, नाग देवता आदि सहायक (137), धरती माता सहायक : बारात का उद्धार (138), डाइन का छल : अजई उसके मुख में (141), गंडिया भी उसके गाल में समाहित (141), लोरिक को भी निगलने का प्रयास, किन्तु लोरिक डाइन को मारकर अजई गंडिया के उद्धार में सफल (142), बारात बरईपुर की ओर (142), सवा लाख बारातियों द्वारा बरईपुर का बगीचा नष्ट (143), राजा के पास शिकायत (144), बरईपुर के राजा की लड़की से लड़ाई (144), लड़की पराजित किन्तु लोरिक के प्रति आसक्त (146), विवाह का हठ (146), बारात सगरे के भीटे पर (147), वहाँ के महाजन द्वारा बारात का स्वागत (147), गाँव की स्त्रियों के साथ बारातियों का दुर्व्यवहार (150) राजा से शिकायत (151), राजा भिमली के सरीर पर हाथी की दंवरी (151), राजा भिमली से लड़ाई (152), सतिया के छल से सवा लाख बाराती सर्प-दंश से मृत्यु के गाल में (155), लोरिक के प्रयास और दुर्गा की कृपा से बारात पुनः जीवित (156), लोरिक द्वारा हंस-हंसिन की सहायता (158), हंस-हंसिन की पीठ पर सवार होकर लोरिक द्वारा सात समुद्र पार की यात्रा (159), दुर्गा का स्त्री-रूप धारण करके अगिया-कोयलिया से सतिया का सोहगैली प्राप्त करना (160), मृत्यु लोक को पुनः वापस (160); लोरिक द्वारा अपनी जांघ का माँस काटकर चिड़ियों की भूख शान्त करना (161), लोरिक का बमरी के राजा से भेट : विवाह का प्रस्ताव (163), राजा द्वारा विवाह की अस्वीकृति (163), संघर्ष की स्थिति उत्पन्न (164); विवाह सम्पन्न, बारात की विदाई (164), गउरा के लिए प्रस्थान (165), बरईपुर की लड़की लोरिक पर मोहित (166), विवाह के लिए हठ : लोरिक द्वारा विवाह की अस्वीकृति (166), बारात गउरा वापस (166), धरमी बोहा में (167)।

6—तीसरा खण्ड : पाँचवाँ : लोरिक-चनवाँ-उद्धार काण्ड (167—186)

सुमिरनी (169), लोरिक को दुर्गा का अजेय होने का वरदान (170); लोरिक के द्वार पर दुर्गा की स्थापना (170); दुर्गा का इन्द्रलोक प्रस्थान (17); चनवाँ के प्रति सेवहर की नपुंसकता (173); चनवाँ का गउरा जाने का बहाना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(175) सेवहर ब्योरानदी तक चनवाँ गउरा को (175), सेवहर बिजरी वापस (176), बंठवा चमार की चनवाँ के साथ छेड़खानी (176), बंठवा को धोखा देकर चनवाँ का पलायन (176); बँठवा द्वारा पीछा किया जाना (177); बँठवा का चनवाँ के साथ विवाह का हठ, राजा-प्रजा सब आतंकित (178), राजा से शिकायत (177), रानी सेल्हिया का लोरिक को वस्तु-स्थिति से अवगत कराना (181) लोरिक बँठवा की लड़ाई (182) दुर्गा सहायता करने में असमर्थ (183); लोरिक-बँठवा दोनों अजई गुरु के शिष्य (183), गुरुवाइन बिजवा द्वारा लोरिक की सहायता (184), बंठवा लोरिक में लड़ाई (185), लोरिक की जीत (186)।

तीसरा खण्ड–7 पाँचवाँ काण्ड : लोरिक द्वारा चनवाँ का उद्धार (187-209)

चनवाँ द्वारा बंठवा की सहायता का प्रयास (188), राजा सहदेव को भोज देने का दण्ड (189), जात-बिरादरी का भोज (189), लोरिक भी बिरादरी में सम्मिलित (191), लोरिक की वीरता देखकर चनवाँ में प्रेम-भावना का उदय (191), चनवाँ की लोरिक के साथ छेड़खानी (192), लोरिक को सेल्हिया द्वारा विष देकर मार डालने का प्रयास (192), चनवाँ द्वारा बचाव (192), दोनों का एक दूसरे के प्रति आकर्षण (193), लोरिक द्वारा गुप्त मिलन का प्रयास (193), लोरिक बरहा के सहारे चनवाँ से मिलने में सफल (197), अजई को लोरिक के चरित्र पर सन्देह (198); लोरिक की सफाई (198), मँजरी का भी सन्देह : लोरिक द्वारा समझाने का प्रयास (199); मँजरी की सास से शिकायत (200); मँजरी-चनवाँ में झगड़ा (201), चनवाँ को भगाकर ले जाने का कार्यक्रम तय (202), लोरिक का रात में निकल भागना (202), चनवाँ के संग बोहा के लिए प्रस्थान (203), हरदी के लिए तैयारी (204), लोरिक से लड़ाई : सेवहर पराजित (205), सेवहर द्वारा पिपरी के कोलों का भड़काया जाना (205), लोरिक जमुनी कलारिन की ओर आसक्त (206)।

8—हरदी काण्ड (210-226)

लोरिक राजा महुअर के यहाँ नौकर नियुक्त (211), लोरिक का प्रजा-वर्ग के साथ दुर्व्यवहार (213), राजा से शिकायत (214), नेउरपुर के राजा हरेवा-परेवा राजा से बदला लेने के लिये प्रस्थान (215 , छेवली के वन में (217), नेउरपुर का राजा लोरिक को फँसाने के लिए छेवली के वन में जाल फिकवाता है, दुर्गा की सहायता से लोरिक का बच निकलना (219), भयंकर युद्ध : लोरिक की जीत (220), लोरिक हरदी वापस (221), महुअर राजा से लोरिक को आधा राज्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राप्त (221) बोहा में सँवरू कोलों से संघर्ष की स्थिति में (221), कोल पराजित कोलिन बिरम्हीं द्वारा छल (222), कोलों का राज्य वापस : धरमी हत (223), सारी सम्पत्ति कोलों के हाथ (224), मँजरी की दुर्दशा (224), नायक शोभा का मँजरी की स्थिति से लोरिक को अवगत कराने का प्रयास (224), शोभा का लोरिक को पत्र (225), पत्र चनवाँ के हाथ : चनवाँ का पत्र छिपाने का प्रयास (225), गंगिया का स्वागत : गँगिया वापस (226)।

9—सातवाँ : सती-परीक्षा काण्ड (228-240)

गंगिया शोभा द्वारा दण्डित (228), लोरिक वस्तुस्थिति से अवगत (229), लोरिक दुखी होकर गउरा को वापस (230), मँजरी की सत्य-परीक्षा (235), लोरिक-अजई, में युद्ध (237), लोरिक का अजई खुइलन, अभोरिका से मिलना प्रसन्नता व्यक्त (239)।

10—चौथा खण्ड : आठवाँ, उद्धार काण्ड

लोरिक बिरम्हीं कोलिन के जादू का शिकार (242), बिरम्हीं की हत्या : पिपरी गाँव स्वाहा (243), लोरिक देवसिया के तीर का शिकार (244), दुर्गा की कृपासे लोरिक पुनःजीवित : गउरा वापस (244), अभोरिका देवसिया युद्ध में अभोरिका की जीत (244), लोरिक द्वारा मृत्यु को आमंत्रण (245), अभोरिका को देवी की कृपा प्राप्त (246), जमुनी के गर्भ से बोलारख का जन्म (246), सिपाहियों का अभोरिका के विरुद्ध बोलारख को उकसाना (251), जमुनी का आशीर्वाद प्राप्त कर अभोरिका का गउरा वापस लौटना (253), देवाइच और चनरइता को महदेव द्वारा यातना (255), अभोरिका का मुक्ति दिलाने का प्रयास (255), सेल्हिया का विष देकर अभोरिका को मार डालने का प्रयास (255), दुर्गा सहायक (256), अभोरिका का चनवाँ से भेंट उसकी दयनीय स्थिति पर अभोरिका दुखी (257), चनवाँ का उद्धार (257), बिरादरी की बैठक (257), अभोरिका द्वारा काशी जाकर पिण्डदान : पूर्वजों का उद्धार (258), बरईपुर की लड़की का छल-अभोरिका तोतारूप में (261), चनरइता देवाइच द्वारा अभोरिका का उद्धार (262) सतिया का छल (262); जमुनी से सामना (263), जमुनी की जीत : सुगनापुर की लड़की अभोरिका पर मोहित (266), अभोरिका द्वारा लोरिक का उद्धार (266),

11—शान्ति काण्ड :

चनरइता देवाइच विवाह (266) दोनों का सुरावल के लिए प्रस्थान (268) राजा बमरी आतंकित (268), किन्तु बाद में आतिथ्य (268), गंजेड़ीपुर के राजा की लड़की से शादी का प्रस्ताव (269), तिलक तथा खान-पान (271), शादी में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मँजरी भी सम्मिलित (272), बारात का गंजेड़ीपुर के लिए प्रस्थान (274), जयसिंह से चनरइता की लड़ाई : आकाश मार्ग में (276), जयसिंह की पराजय : विवाह तथा द्वारचार (277), बारात वापस (279), मंजरी गउरा वापस (279), अभोरिक मँजरी दोनों का सुखपूर्वक गउरा में निवास (280)

11 गोपीचन्द्र का पाठ 282

12. राम दास कुर्मी का पाठ 294

13. चिरागन का पाठ 303

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्रंथ के विषय में

'लोरिकायन'[1] भोजपुरी की प्रमुख लोकगाथा है जो देश के कोने-कोने में बड़े चाव से गायी और सुनी जाती है। इसमें वीर लोरिक का सम्पूर्ण जीवन-चरित्र पद्यबद्ध शैली में अंकित है।

इस लोकगाथा को उपजीव्य बनाने वाले कई आख्यानक काव्य हैं। अवधी के प्रथम प्रेमाख्यानक काव्य 'चन्दायन' का मूलाधार यही कथा है। एक ओर दक्खिनी हिन्दी, अवधी और बंगला के कतिपय मध्यकालीन प्रेमाख्यानक काव्यों में प्रयुक्त होने तथा फारसी में अनूदित होने के कारण यह व्याप्ति और लोकप्रियता की दृष्टि से अन्य-भारतीय लोक-गाथाओं में बेजोड़ है तो दूसरी ओर 'वर्णरत्नाकर' तथा 'लोरकहा' के साक्ष्य पर अपभ्रंश काल से अद्यावधि धारावाहिक रूप में इसको विभिन्न साहित्यिक कृतियों का उपजीव्य बनते रहने के प्रमाण भी मिलते हैं।

आधुनिक काल में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का उपन्यास 'पुनर्नवा' इसके उपयोग का सर्वोत्तम उदाहरण है। इसी प्रकार अपनी दीर्घ परंपरा, व्याप्ति और लोकप्रियता के साथ लोरिक की बहुक्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय लोकवार्त्ताएँ, लोरिक-सम्बन्धी कथाएँ और किंवदन्तियाँ वैविध्यपूर्ण तथा पर्याप्त महत्वपूर्ण हैं।

---

1. विस्तृत अध्ययन के लिए देखिए—'मिरजापुर की मौखिक परंपरा से प्राप्त 'लोरिकी' का सांस्कृतिक एवं तुलनात्मक अध्ययन' : अर्जुनदास केसरी का शोधप्रबंध, काशी विद्यापीठ; 'चंदायन' : माताप्रसाद गुप्तः; 'चंदायन' : डा० परमेश्वरी लाल गुप्त; 'लोरिकी' : डा० श्याममनोहर पाण्डेय; 'चंदायन' : मौला दाऊद दलमई; सतीमैना उलोर-चन्द्रानी' : दौलत काजी; 'साधन कृत मैनासत'; 'गवाती कृतमैना सतवन्ती'; लोरिकायन' : महादेव प्रसाद सिंह; 'भोजपुरी लोकगाथा : डा० सत्यव्रत सिन्हा; 'लोरिक वीर नाटक' : ठाकुर महताब सिंह; 'गाता हुआ पहाड़' : डा० जयशंकर त्रिपाठी; Popular Religion and Folklore of Northern India vol. II. W. Crooke; The Tribes and Castes of the North-Western Provinces and Oudh : W. Crooke, Vol. I; Memoirs of the History Folklore, and Distribution of the Races of the North Western Provinces of India by Sir Henry M. Elliot; S. C. Dubey : Fieldsongs of Chhattisgarh.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भिन्न-भिन्न विधाओं और रूपों में भोजपुरी, अवधी, छत्तीसगढ़ी, मैथिली तथा बंगला भाषा के क्षेत्र में प्रचलित इसके अनेक संस्करण और रूपान्तर प्राप्त होते हैं। तब भी यह महागाथा अभी तक मौखिक परंपरा में ही रही है। मौखिक परंपरा के ही कारण इसके मूल स्रोत का पता लगाना टेढ़ी खीर है। इसके अलिखित होने के पीछे दो मुख्य कारण रहे हैं। प्रथमतः यह लोक-प्रचलित धारणा है कि इसके लिख लेने मात्र से लिखने-लिखाने वालों का अनिष्ट होगा। विद्वानों में यह धारणा भी कार्य करती रही है कि इसके लिख डालने मात्र से इसकी आत्मा की हत्या हो जायगी[1]। यही कारण है कि 'लोरिकायन' ही नहीं अन्य अनेक लोककाव्य और कथाएँ गाँव-गाँव घर-घर भरी पड़ी हैं। उनका कोई संग्राहक नहीं है। और यहाँ यह बता देना अभीष्ट है कि जब कोई साहित्य अलिखित रह जाता है तो उससे सम्बन्धित अनेक प्रवाद और किंवदन्तियाँ भी उसकी अक्षुण्यता को उपजीव्य बनाये रखने के लिए अपने आप प्रचलित हो जाती हैं। लोरिक से सम्बन्धित अनेक किंवदन्तियाँ यत्र-तत्र प्रचलित हैं।

लोरिक सम्बन्धी कथाएँ और किंवदन्तियाँ

यों तो, 'लोरिकायन' गाये जाने वाले जितने क्षेत्र हैं उन सबमें लोरिक सम्बन्धी कथाएँ और किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं किन्तु मिरजापुर की धरती तो मंजरी तथा लोरिक की जन्म तथा कर्मभूमि ही है, इसलिए यहाँ और भी जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं।[2]

मिरजापुर-दक्षिणांचल में राबर्ट्सगंज से पाँच कि० मी० दक्षिण स्थित 'मार-कुण्डी घाट' पर एक शिला-खण्ड 'लोरिका पत्थर' के नाम से जाना जाता है। कहते हैं और लोकगाथा में भी उल्लेख है कि इस शिला-खण्ड को लोरिक ने अपनी पत्नी के कहने पर अपनी तलवार से तीन खण्डों में विभाजित कर दिया था।[3]

---

1. द बैलेड : सिजविक, पृष्ठ 39

2. The legend of Lorik is very popular among the Ahir tribe, and has been localized in the Mirzapur district in a curious way which admirably illustrates the principles which we have been discussing.

See—Lorik legend, Shahabad Version : Shahabad Gazetteer.

3. When they reached in their flight the Markundi Pass, the wife Manjani (Manjari) advised Lorik to use her father's sward, which with admirable for thought, she had brought with her. He preferred his own weapon, but she warned him to test both. His

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिक-कूद—मारकुण्डी घाट से पश्चिम 'कण्डाकोट' नाम की एक पहाड़ी है। प्रचलित है कि विजयगढ़ दुर्ग लोरिक द्वारा और कण्डाकोट का दुर्ग सूरा द्वारा बनाया गया था। ये दोनों ही एक सुन्दरी (सम्भवतः मंजरी) से ब्याह करना चाहते थे। दोनों में उसके लिए युद्ध होने लगा। अंत में निर्णय हुआ कि दोनों उस सुन्दरी के लिए अलग दुर्ग का निर्माण करें, जिसका दुर्ग पहले बनेगा, वही इसका वरण करेगा और जिसका दुर्ग पहले बन जायगा वह प्रतीक स्वरूप मशाल भी जलायेगा।

दोनों दुर्ग बनाने लगे। इसी बीच लोरिक का कोई सामान खो गया और उसे खोजने के लिए उसने मशाल जलाई। सूरा ने सोचा कि लोरिक का दुर्ग बनकर तैयार हो गया है, अतः सुन्दरी को प्राप्त करने के लिए 'कण्डाकोट' के नीचे कूद पड़ा। जब इसके कूदने की आवाज लोरिक के कानों तक गई तो वह भी कूद पड़ा। दोनों में संघर्ष हुआ जिसमें अंतिम विजय लोरिक की हुई और सुन्दरी को प्राप्त करने का अधिकारी भी यही हुआ। पहाड़ी के नीचे कूदने के कारण उसके पाँवों के निशान आज भी दिखाये जाते हैं।[1]

लोरिक की धमेख[2]—इसी प्रकार सारनाथ के बौद्धस्तम्भ को भी 'लोरिक की कूद' के नाम से जाना जाता है[3]। कहा जाता है कि लोरिक वहाँ से कूदकर चुनार दुर्ग, फिर वहाँ से कूदकर अदलहाट से सात कि० मी० पूरब, भाईपुर कला के पास ललमनियाँ नामक पहाड़ी पार आया था। वहाँ उसके पाँवों के निशान आज भी दिखाये जाते हैं।

---

own sward broke to pieces against the huge boulder of the pass, but Manjani's weapon clave it in twain.

—The tribes and Castes of the North Western Provinces and Oudh : W. Crooke Vol, I, 1896, Page 55.

Muir : Ancient Sanskrit Texts. V. 425 Sq., Lal Bihari De-Folktales of Bengal 193 Sq. 277, Temple Legends of the Punjab, 48 Sqq. Wide awake Stories 277 Sqq., Campbell: Popular Tales-i 2, Katha saritsagar II Tawney p. 323-

1. कण्डाकोट का असुरायण दुर्ग : अर्जुनदास केसरी, 'आज' 11-6-71

2. 'भोजपुरी' : रघुवंश नारायण सिंह, 1954, पृष्ठ—6

3 ....."जवन लोरिक एतना परसिद्ध बा कि सारनाथ में गौतम बुद्ध के दूनों स्मारक के ओकर कुदान के ऊँची मानक जातबा। ऊका महाकाव्यक छोट नायक होई आ ओकरा जीवन क जवन कहनी बाइ, समाज में कम बलदेई ?" रघुवंश नारायण सिंह : भोजपुरी 1954, पृ०—6

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह भी कहा जाता है कि कूदते समय उसके कन्धों पर दूध का पटेवा था, कूदने के कारण दूध के वे पात्र भी गिर पड़े जिससे एक पहाड़ी ही फट गई और एक शिला पर निशान बन गये।

लोरिक की खाँड़ (तलवार)—अगोरी से लगभग 8 कि० मी० दक्षिण (ओबरा के पास) एक पहाड़ी थी जिसके ऊपर एक तलवार पड़ी बतायी जाती थी। कहा जाता है कि, उसे जो भी छूता, वही मूर्छित होकर गिर जाता। लोगों का विश्वास था कि वह तलवार लोरिक की ही थी, जो बाद में रेणनदी की धारा में प्रवाहित हो गई।[1]

लोरिक का अखाड़ा—मिर्जापुर में ही घोरावल नामक स्थान से पाँच कि० मी० दक्षिण 'गुरवल' नाम का स्थान है। कहते हैं, लोरिक वहीं लड़ता-लड़ाता था। लोरिक के बड़े भाई सँवरू को अगोरी से जो पशु दहेज में मिले उन्हें उसने पार ले जाते समय वहीं पलाश के चार खूँटे गाड़कर बाँध दिया था।[2]

इनरावत हाथी—अगोरी में सोणनद के अंदर एक शिलाखण्ड हाथी के आकार का पड़ा है। कहा जाता है कि यही 'इनरावत' अथवा 'करमामेल' हाथी है जिसे लोरिक ने एक ही तलवार के वार से मृत्यु के घाट उतार दिया था।[3]

बलिया जिले में भी लोरिक से सम्बन्धित अनेक प्रवाद प्रचलित हैं। वहाँ 'लोरिक डीह' है जिसके बारे में कहा जाता है कि लोरिक वहीं रहकर लड़ता-लड़ाता तथा गायें चराता था। वहाँ से थोड़ी दूर पर 'बरम्हाइन देवी' का मन्दिर स्थित है, कहते हैं, यही देवी लोरिक को इष्ट थी जिसके कारण उसे सर्वत्र सफलता मिलती गई। वहाँ 'सँवरू बाँध' और 'मड़हा नदी' भी है जिसके बारे में अनेक जन-श्रुतियाँ प्रचलित हैं और प्रस्तुत गाथा में भी उनका यथास्थान उल्लेख हुआ है।

1: लोरिक की तलवार का प्रस्तुत गाथा में अनेकशः वर्णन आया है। दे०—इन पंक्तियों के लेखक का लेख—'लोरिक सम्बन्धी प्रवाद और किंवदन्तियाँ:' पुराकल्प 12, पृ०—54

2. प्रतीक रूप में चार प्रस्तरखण्ड वहाँ आज भी वर्तमान बताये जाते हैं।

3. In the bed of the Son is a curious water-warm rock, which, to the eye of faith, suggests a rude resemblance to a headless elephant, on this foundation has been localized the legend of Lorik....."

Popular Releigion and Folklore of Northern India by W. Crooke, Vol. II Manoharlal Oriental Publishers, page—8.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिक के कंगूरे—लोरिक सम्बन्धी दन्तकथाएँ नेपाल में प्रचलित हैं। गौतम बुद्ध के जन्मस्थान पर लोरिक के कंगूरे नाम की दो पहाड़ियाँ हैं। कहा जाता है कि जब गौतम का जन्म हुआ तो ज्योतिषियों ने बताया कि ये महात्मा होंगे या राजा। इससे उनके माता-पिता को बड़ी चिन्ता हुई। गौतम जैसे-जैसे बड़े होने लगे, संसार के प्रति विरक्ति के भाव उनमें आने लगे। फलतः उनके पिता ने लोरिक को इस कार्य पर नियुक्त कर दिया कि इन कंगूरों पर उछलते-कूदते रहें ताकि गौतम का मन लगा रहे और उनमें विरक्ति के भाव न आने पायें। लोरिक उछल-कूदकर उनका मनोरंजन करते रहे।[1] इन सब बातों से ऐसा प्रतीत होता है कि शताब्दियों से लोरिक सम्बन्धी लोककथाएँ दूर-दूर तक प्रचलित हुईं और उनसे एक लोक-विश्रुत महागाथा-कथा का निर्माण अपने आप हो गया।[2] इन जनश्रुतियों के ही कारण कुछ विद्वान् इसे पूर्णतः काल्पनिक और गप्पित रचना की संज्ञा देकर इसके महत्व को नकार जाते हैं, किन्तु गाथा के अध्ययन तथा लोरिक सम्बन्धी जनश्रुतियों से सम्बद्ध स्थलों को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह रचना बिना किसी अतिरंजना के सही है।[3] यह एक युग की समस्त काव्यगत विशेषताओं को अपने अंदर समेटे हुए है। यह यदुवंश की जातीय गाथा होते हुए सम्पूर्ण समाज की, विशेष रूप से पिछड़े वर्ग तथा जातियों का पुराणेतिहास है।

लोरिक-कथा का क्षेत्र-विस्तार—लोरिक-सम्बन्धी प्रवाद और किंवदन्तियों को देखते हुए इन पंक्तियों के लेखक के मन में इसकी व्यापकता के प्रति सहज जिज्ञासा पैदा हुई 'जिसके परिणामस्वरूप उसने लोरिक से सम्बन्धित सभी स्थलों को निकट से देखने का संकल्प भी संजोया। सबसे पहले लोरिक के जन्मस्थान कंतित की यात्रा की वहाँ एक पुराने किले के अतिरिक्त और कुछ न मिला। फिर लोरिक की लीला-भूमि अगोरी-गोठानी गया। वहाँ के सभी स्थलों को अपनी आँख से देखा तो सचमुच आँखें खुल गईं। अगोरी दुर्ग, करमामेल (इनरावत) हाथी, मंजरी-(महरा) की पहरी, मनियाँ, बंसरा,

---

1. Budhist Monuments of India by Debola Mitra.

2. लोरिक सम्बन्धी प्रवाद और किंवदन्तियों के लिए देखिए 'पुराकल्प'—12 में प्रकाशित अर्जुनदास केसरी का लेख पृ०—54

3. "ई वीर रस प्रधान गीत हऽ। अहिर जेके लोरिकई कहा जायऽ, अपने उत्सवन पर प्रायः गावा करऽयेन। अन्य अवसरन पर भी लोरिक गीत गावा जायऽ। ई गीत से सम्बन्ध रखइ वाले स्थानों को देखने से मालूम पड़ऽय कि ई कहानी बिना किसी अतिरंजना के सही ह ऽ।

—सीताराम द्विवेदी 'समन्वयी', भोजपुरी, अगस्त 1954, पृ० 43–44

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शंकर के मंदिर तथा मूर्तियाँ, कण्डाकोट के नीचे उसके पांवों के निशान, मारकुण्डी घाट पर स्थित लोरिक-पत्थर, घोरावल के पास में स्थित गुरवल का लोरिक का अखाड़ा, ललमनियाँ पहाड़ और गाजीपुर बलिया के सभी स्थलों की यात्रा करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सका कि लोरिक की कथा सुदूर तक व्याप्त है और गाँव के करोड़ों नर-नारियों का, अपनी मौखिक परम्परा में रहती हुई शताब्दियों से मनोरंजन करती आ रही है।

यह बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त पूरे भारत में तो गायी ही जाती है, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लोवाकिया, नेपाल और उन समस्त देशों में भी गायी जाती है, जहाँ-जहाँ भारतीय प्रवासियों का क्षेत्र-विस्तार है। इस गाथा में अहीर, कुर्मी, तेली, कलवार, धोबी, नाई, चमार, कोल, ब्राह्मण, बनियाँ, कहार तथा आदिवासी जातियों का जातीय एवं सांस्कृतिक इतिहास छिपा पड़ा है। यही कारण है कि ये समस्त जातियाँ इसे चाव से गाती तथा विविध उत्सवों, समारम्भों पर समारोह पूर्वक सुनती-सुनाती हैं। अहीर तो इसे अपनी जाति की 'रामायन' ही कहते हैं।[1]

इस सम्बन्ध में एक कहावत भी बहुत प्रसिद्ध है—

"केतनउँ अहिरा होइ सयान,
लोरिकी छोड़ि न गावै आन।"

आभीर जाति की रामायन

'लोरिकायन[2]' लोरिक की चरित्र गाथा है और लोरिक आभीर (अहीर) जाति का इतिहास-पुरुष है। अब सवाल उठता है कि उसका समय क्या था? इसके लिए हमें आभीर जाति की वंश-परम्परा पर भी विचार करना पड़ेगा।

'मत्स्यपुराण' के अनुसार 'आभीरों की दस पीढ़ियाँ हुई थीं और उनका राज्यकाल 67 वर्ष पर्यन्त स्थापित रहा।

---

1. देखिये—डा० अर्जुनदास केसरी का 23 सितम्बर '79 के 'धर्मयुग' में प्रकाशित लेख, 'क्या सचमुच लोरिकायन आभीर जाति की रामायन है'—पृ० 22

2. 'लोरिकायन' 'लोरिक' शब्द अपने में एक नवीन भाव-बोधक है। यह रामायण-कृष्णायन के अनुकरण पर बने लोरिकायन के पर्याय के रूप में अपने आप प्रयोग होने लगा। लोरिकी शब्द लोरिकायन के ही अर्थ में मौखिक परम्परा के रूप में वहाँ अधिक व्यापक हो गया है, जहाँ इसके गाने वाले आज भी पँवारा गायक के रूप में ख्यात हैं। जहाँ इसका साहित्यिक महत्व स्वीकारा जाता है, वहाँ यह लोरिकायन के रूप में ही रूढ़ होता जा रहा है। श्यामपरमार : हिन्दी साहित्यकोश: भाग 2, पृ०—523, 24।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"सप्त षष्ठिस्तु वर्षाणि दशाभीरास्तथैवच,
तेषुत्सवेषु कालेन ततः किलकिलानृपाः ॥"

'वायु पुराण' और 'ब्रह्माण्ड पुराण' में भी आभीरों की दस पीढ़ियों का उल्लेख हुआ है। परन्तु 'भागवत' में केवल सात पीढ़ियाँ ही बतायी गई हैं। इससे प्रतीत होता है कि सातवाहनों के समय में इन आभीरों ने ईश्वरसेन की अधीनता में एक राज्य स्थापित किया था, जिसका शिलालेख नासिक में मिलता है[1]। ईश्वरसेन सामान्य कुलोद्भव प्रतापी और प्रजापालक राजा था। डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल के अनुसार उसने सन् 236 ई० और 239 ई० के मध्य शक क्षत्रप को अधिकार-च्युत करके निकाल दिया था।[2] किन्तु 'मत्स्य पुराण' में कहा गया है कि विन्ध्यशक्ति के उदय के पहले अर्थात् सन् 248 ई० के लगभग आभीरों का अन्त हो गया था। किन्तु इस बीच आभीरों के कारण सातवाहनों के अस्तित्व की रक्षा हो सकी और उन्होंने यौधेयों और मालवों के सीधे संघर्ष से अपने को बचा लिया।[3] इसी सन्दर्भ में आभीरों के यादवों और अंधक वृष्टिकों के संगी-साथी होने का प्रमाण भी मिलता है। 'ब्रह्म-पुराण' में कहा गया है कि अहीर जाति की उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और वैश्य माता के संयोग से हुई है। फिर भी आभीड जाति में रक्त-सम्मिश्रण कम हुआ है।

जो भी हो, इतना तो निर्विवाद सत्य है कि यह जाति आरम्भ से ही लड़ाकू और वीर रही है। कुछ विद्वानों के अनुसार यह जाति किसी समय काफी सम्पन्न और भूस्वामी थी, गो, ब्राह्मण, स्त्री-रक्षा के पारम्परिक कर्तव्य का पालन करने वाली थी। इस जाति का चरित्र-बल ऊँचा था। इसमें ऋषियों-मुनियों से लेकर देवाधिदेव भी हो चुके हैं। कृष्ण इसी जाति के थे जिनका मुख्य कार्य लोक-रक्षा था। लोरिक को ही अनेक स्थानों पर 'लोरिक देव' कहा जाता है। यह जाति, नृत्य, संगीत, युद्ध, कुश्ती, वाद्यकला में तब भी प्रवीण थी और आज भी प्रवीण है।[4] क्रुक महोदय का कथन है कि अहीरों के सम्बन्ध में कोई विवरण तब तक पूर्ण नहीं होता, जब तक

---

1. एपिग्राफिया इण्डिका-खण्ड 8, पृ० 88
2. अंधकारयुगीन भारत, द्वि० सं० ना० प्र० सभा, काशी—पृ०—317
3. वही, पृ०—318
4. आभीरों के विषय में विस्तृत जानकारी के लिए देखिये—

J. R. A. S. XIII : 141, J. A. S. B. IX. 478, 484, 756, 885, Bombay L. T. i 2 87. Lassen. Alterthumsk. i 539. J. R. A. S. i 248. Tod's western India-pp. 358, 421. Eadd Memoirs the History Folklore and Distribution of the Races of the North Western Pro-Vinces of India by Henry M. Elliot P. 2.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनके बीच अत्यन्त लोकप्रिय लोरिक की जातीय निजंधरी कथा का उल्लेख न किया जाय,[1] किन्तु मेरा तो ख्याल है कि तेली, कलवार, कोल, धोबी, चमार, नाई, कहार, केवट तथा आदिवासी जातियों की भी यह प्रतिनिधि गाथा तथा पुराणेतिहास है।

इलियट महोदय के अनुसार अहीरों की सबसे घनी बस्ती विहेमऊ के पास, यमुना के तट पर मरेहरा के समीप कला नदी के तट पर बसी थी और मझौली के सलेमपुर (गोरखपुर) से सिंगरौली (मिर्जापुर की सीमा पर स्थित) तक फैली हुई थी। निश्चय ही इन जिलों के अहीरौरा (अहरौरा) नामक परगनों के पुराने कागजातों के देखने से इसी की पुष्टि भी हो जाती है।[2] मिर्जापुर में प्रचलित इस गाथा से भी इस बात की प्रामाणिकता असंदिग्ध हो जाती है।

जहाँ-जहाँ अहीरों का क्षेत्र रहा है, वहाँ-वहाँ तो यह गाथा प्रचलित रही ही है, इसके अतिरिक्त अन्य अनेक क्षेत्र में भी लोकप्रिय रही है। यही कारण है कि डा० वासुदेवशरण अग्रवाल को भी लिखना पड़ा कि "भोजपुरी में लोरिकायन या लोरिक-चन्दा की कहानी गीतों में गायी जाती है जिसे भोजपुरी लोक-साहित्य की रामायण ही कहना चाहिए। लोरिक-चन्दा की कहानी प्राचीन और सरस है। हिन्दी का पहला प्रेमाख्यानक काव्य जो जायसी से दो सौ बरस पहले लिखा गया वह लोरिक-चन्दा ही था।"[3]

---

1. No account of the Ahirs would be complete without some reference to the famous tribal legend of Lorik which is most popular among them and is sung at all their ceremonies. There are various recensions of it and it is most valuminous and embodies a number of different episodes.

The Tribes and Castes of the North-Western Provinces and Oudh : W. Crooke Vol. I. 1896, Page—55

2. विस्तृत जानकारी के लिए देखिए–मेंमरीज आफ द हिस्ट्री फोकलोर, एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन आफ द रेसेज आफ द नार्थ वेस्टर्न प्राविंसेज आफ इंडिया : सर हेनरी एम० इलियट; के० सी० बी० वालूम I ट्रुबनर एण्ड कम्पनी, 8 एण्ड 60 पेटर नोस्टर रो—19वाँ, पेज—2, एण्ड जे० आर० ए० एस० 23वाँ : (4), जे० ए० एस० बां०–19वाँ—478, 484, 757, 885, बाम्बे एल० टी० आई—287, लोसेन, अल्टर हुमस्क, आई–539, जे० आर० एस० आई० एस० (आई) 248 टाड, एस० वेस्टर्न इंडिया, पी० पी०—358, 421 ई० एंड।

3. भोजपुरी : अगस्त 54, पृ०–77

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिक-कथा के स्रोत—कथा-स्रोत से हमारा अभिप्राय 'लोरिकायन' की कथा के मूल स्रोत से है। इसके उपजीव्य की खोज अपने-आप में एक स्वतन्त्र विषय है, जो कथानक की संरचना के लिए आधारभूत उपादानों तथा तत्वों के अभिप्राय और उसके अन्तर्गत व्यवहृत घटना-प्रकारों के समायोजन से सम्बन्धित है। साथ ही ऐतिहासिक स्तर पर उसकी विकास-यात्रा का स्पष्टीकरण भी है।

किसी भी लोकगाथा के कथा-स्रोत का पता लगाना दुष्कर है। जहाँ तक 'लोरिकायन' का प्रश्न है, अभी तक प्रायः मौखिक परम्परा में ही रही है, इसलिए इसके बारे में कुछ भी अंतिम रूप से नहीं कहा जा सकता।

लोरिक का सबसे प्राचीन उल्लेख ज्योतिरीश्वर ठाकुर-कृत 'वर्णरत्नाकर' में हुआ है। इसमें प्राचीन नाट्यशैली में 'लोरिक' नामक लोककाव्य के प्रचलन का पता चलता है। इसकी रचना 14 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुई थी।[1]

इसके बाद 'मुल्लादाउद'-कृत 'चंदायन' की रचना 1370 ई० में हुई। तीसरा उल्लेख दौलत काजीकृत 'सतीमैना उलोर-चंद्रानी' में मिलता है जिसकी रचना 1638 ई० में हुई। जातक कथाओं में भी लोरिक की कथा के संकेत मिलते हैं।[2] इसी प्रकार 'कथासरितसागर' में भी ग्वालों की कथा कही गई है जिसकी व्युत्पत्ति करके आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने उसे एक पुरानी कृति स्वीकार की है।[3] लोरिक-कथा में आये पात्रों की तुलना 'मृच्छकटिक' के पात्रों से करते हुए गिलास की रहस्यात्मक चोरी के प्रसंग को आधार बनाकर उन्होंने इस कथा को पाँचवीं शताब्दी के आस-पास का बताया है।[4] डा० रामकुमार वर्मा का विचार है कि लोरिक का समय राजा भोज का समय था। उन्हीं के नाम पर भोजपुर प्रदेश बना। लोरिक अहीर था। उसकी वंशावली भी राजा भोज से मिलती-जुलती है। 'लोरिकायन' पँवारा काव्य है, पँवारों के वंश में (1067-1177) राजा भोज हुए।[5]

---

1. "सिरियादेसइ, उमरण, चाउघइ चेंगा, चंबिली, लोरिक, नापो नगनी, नगनी मैना, बड़ली·····" भूमिका वर्णरत्नाकर—रायल एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बेंगाल, 1940 पृ०—1 तथा 'हिन्दुस्तानी'—जनवरी-मार्च 1959, माताप्रसाद गुप्त का लेख।

2. Budhist Monuments of India—Debala Mitra,

3. मिरजापुर की मौखिक परम्परा से प्राप्त लोरिकी का सांस्कृतिक एवं तुलनात्मक अध्ययन : अर्जुनदास केसरी का शोध प्रबन्ध—पृ०, 403

4. दे० आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यास 'पुनर्वंवा' में लोरिक का प्रसंग।

5. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास—पृ०, 63

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो भी हो, यह तो मानना पड़ेगा कि लोरिक-कथा का स्रोत प्राचीन है। यह बात और है कि यह कथा न जाने कब से लोककण्ठ का शृंगार बनी रही। जब इसके महत्व को समझा गया तो उसके कथांशों को लेकर छिटफुट अनेक रचनाएँ की गईं।

आलोच्य गाथा में वीर, प्रेम और सती तीनों गाथाएँ क्रमबद्ध रूप से आरम्भ से अंत तक चलती रहती हैं। लोरिक-मँजरी के विवाह की कथा वीरगाथात्मक है और लोरिक-मँजरी के मिलन की कथा सतीकथात्मक है। 'इसमें लोरिक चंदा की कथा ही अधिक प्रचलित हुई जिसमें लोरिक के प्रेमी-चित्त का ही अधिक वर्णन किया गया। प्रस्तुत गाथा पहली बार प्रस्तुत की गई है जिसमें लोरिक का व्यक्तित्व सजीव होता है। लोरिक का उल्लेख 'पृथ्वीराजरासो' में भी किया गया है जिसमें इसकी ऐतिहासिकता की सम्भावना का संकेत मिल जाता है।[1]

कथा के मूल स्रोत का ही पता न होने के कारण समय का सही-सही निर्धारण करना कठिन है। अन्तःवाह्य साक्ष्यों के आधार पर हम उसे आरम्भिक मध्यकाल यानी 6वीं-7वीं शताब्दी के आस-पास की रचना मान सकते हैं।[2] ऐसा प्रतीत होता है कि मध्यकाल में इस कथा को काफी लोकप्रियता मिली।

इस गाथा पर हुए कार्य की समीक्षा—इतनी प्रचलित, लोक-विश्रुत और लोकानुरंजन का माध्यम होने के बाद भी इस सम्बन्ध में कोई ठोस कार्य नहीं हुआ है। प्रस्तुत ग्रन्थ के पूर्व डॉ० माताप्रसाद गुप्त तथा डॉ० परमेश्वरी लाल गुप्त द्वारा दाउद मौला-कृत 'चंदायन' (लोरिकायन नहीं) की व्याख्या दी गयी है। 'चंदायन' 'लोरिकायन' के चतुर्थांश पर रचित लोरिक-चंदा के प्रेम-वृत्तान्त पर आधारित सूफी प्रेमाख्यानक काव्य है जो दोहा-चौपाइयों में लिखा गया है। डॉ० सत्यव्रत सिन्हा ने 'भोजपुरी लोकगाथा' में लोरिक-कथा का सार-संक्षेप प्रस्तुत करते हुए अंत में उसका थोड़ा अंश भी उद्धृत कर दिया है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के 'पुनर्नवा' में लोरिक-कथा को एक विशेष औपन्यासिक शैली दी गयी है। लोरिकायन के मौखिक पाठों का संग्रह डॉ० श्यामसनोहर पाण्डेय ने अभी हाल में किया है जो 'साहित्य-भवन' इलाहाबाद से 'लोरिकी' नाम से प्रकाशित है। इसमें कथा को जोड़ने का प्रयास तो हुआ है, किन्तु एक ही गायक द्वारा पूरी गाथा संग्रहीत न होने के कारण कथा के अविच्छिन्न प्रवाह में बाधा पड़ी है। साथ ही, विषय का

---

1. पृथ्वीराज रासो—द्वितीय खण्ड, ना० प्र० सभा, काशी : श्यामसुन्दर दास पृष्ठ 722—726

2. दे० लोरिक का काल-निर्णय: डॉ० अर्जुनदास केसरी 'सम्मेलन पत्रिका,' भाग-92, सं० 33, पृ 170-176

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनावश्यक विस्तार किया गया है। यह पाठ वाराणसी के पाँचू नामक गायक से लिया गया है जो न लोरिक की जन्म-भूमि है और न कर्म-भूमि अतः महत्वपूर्ण होते हुए उसे बहुत प्रामाणिक नहीं माना जा सकता।

एस० सी० दूबे ने 'फील्ड सांग्स ऑव छत्तीसगढ़' नामक पुस्तक में छत्तीसगढ़ के पाठ पर आधारित 'लोरिक-चंदा की प्रेम कहानी पद्यबद्ध अँग्रेजी अनुवाद के रूप में लिखी है जो मौखिक परम्परा से प्राप्त 'लोरिकायन' से सर्वथा भिन्न होने के कारण प्रामाणिक नहीं है। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् में भी लोरिकायन' का एक संग्रह रखा हुआ है जो प्रयास के बावजूद देखने को नहीं मिला। वहाँ के अधिकारियों से हुई बातचीत से ज्ञात हुआ कि उसकी कथा 'मिरजापुर की मौखिक परम्परा से प्राप्त प्रस्तुत संग्रह से भिन्न है।

कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने भी यत्र-तत्र सुनकर इस कथा को लिखने का प्रयास किया है, किन्तु उसके मूल पाठ का संग्रह नहीं किया है। अपितु किंवदन्तियों का ही सहारा अधिक लिया है। इनमें से प्रमुख हैं—डब्ल्यू० क्रुक: 'द ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ नार्थ-वेस्टर्न प्राविंसेज आफ अवध', 'एन इन्ट्रोडक्शन टु द पापुलर रिलिजन', 'इण्डियन एटीक्वेरी', जार्ज ग्रियर्सन: 'सम बिहारी फोकसांग्स', सम भोजपुरी फोकसांग्स तथा 'फोक लिटरेचर आफ नार्दर्न इण्डिया,'[1] जे० सी० नेसफील्ड: 'पायोनियर', 'हन्टर: 'भागलपुर गजेटियर', अलेग्जेंडर कनिंघम: 'आर्कियोजाजिकल सर्वे रिपोर्ट:' सैसिल हेनरी वाम्प्सन: 'फोकलोर ऑव संथाल परगनाज' आदि। इनमें अंकित विवरण अक्रमबद्ध तथा अप्रामाणिक हैं।

द्विवेदीजी के प्रसिद्ध उपन्यासों के अतिरिक्त 'लोरिकायन' की कथा को लेकर हिन्दी तथा अन्य भाषाओं—बोलियों में खण्डकाव्य, महाकाव्य, नाटक और उपन्यास भी लिखे गये हैं। डा० जयशंकर त्रिपाठी ने इसी कथानक को आधार बनाकर एक नाटक की रचना की है जो 'गाता हुआ पहाड़' के नाम से प्रकाशित है। लोरिक वीर नाटक' नामक ठाकुर महताब सिंह का एक नाटक हरदोई से प्रकाशित हुआ है। इसी कथा को आधार बनाकर पढ़े लिखे लोकगायकों ने भी काव्य-रचना की है, जैसे 'गुजरी चरित्र'।

लोक की एक महत्वपूर्ण धरोहर होने के बावजूद अभी तक मौखिक परम्परा से प्राप्त किसी प्रामाणिक और सम्पूर्ण पाठ का संकलन नहीं किया जा सका था।

---

1. जरनल आफ एशियाटिक सोसाइटी ऑव बंगाल के विभिन्न अंकों में प्रकाशित।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस अर्थ में प्रस्तुत लेखक सौभाग्यशाली है और मँजरी-लोरिक की जन्म तथा कर्म-भूमि मिरजापुर जनपद की मौखिक परंपरा से प्राप्त इस संग्रह को पहली बार प्रस्तुत कर सका है।

प्रस्तुत सामग्री—उपर्युक्त विवरणों में जिन अभावों की ओर संकेत किया गया, उनकी पूर्ति के उद्देश्य से किया गया यह कार्य, संकलन-संपादन और अध्ययन की विविध समस्याओं से जुड़ा है।

इस संकलन की मूल सामग्री अपने आप में पूर्ण है। अब तक के प्रकाशित-अप्रकाशित सभी पाठों से वृहत् है। पूरी कथा सरित-प्रवाह की भाँति अटूट और अविच्छिन्न है। कथानक का बीज अगोरी के राजा मोलागत तथा महरा अहीर के मध्य उत्पन्न ईर्ष्या-द्वेष में प्रतिफलित होकर द्यूत-प्रसंग से अंकुरित होती है। महरा की सातवीं सन्तान मँजरी को राजा अपनी रखैल बनाकर रनिवास में रखना चाहता है, इधर उसके माता-पिता उसका विवाह लोरिक अहीर से कर देते हैं। यहीं से संघर्ष प्रारंभ हो जाता है। अंत में राजा पराजित होता है तथा लोरिक मँजरी को लेकर गढरा प्रस्थान कर जाता है। तदनन्तर लोरिक का प्रेम चनवां से होता है, और उसके द्वारा वह भगाई भी जाती है। तत्पश्चात् प्रवास-काल में हरदी की जमुनी कलवारिन से उसका प्रेम-प्रसंग आता है। हरदी का राजा लोरिक की वीरता से प्रसन्न होकर उसे अपना आधा राजपाट दे देता है। वह सुखपूर्वक रहने लगता है, किन्तु राजा के हित में कोलों और हरेवा-परेवा राजा के साथ उसे पुनः संघर्ष लेना पड़ता है। इधर, लोरिक-व्याहिता मंजरी की दशा उसके विरह में शोचनीय हो जाती है। इसकी जानकारी होने पर वह मँजरी के पास पहुँचता है।

इसी क्रम में लोरिक के बड़े भाई सँवरू के विवाह की कथा भी जुड़ती है, जिसका रोचक ढंग से वर्णन किया गया है। अंत में, लोरिक के पुत्रों की गाथा आरंभ होती है जिसकी परिणति कुल और पितृ-ऋण से मुक्ति के साथ होती है। इस मुख्य कथा में कई अवान्तर प्रसंग और गौरव गाथाएँ भी आती हैं। ये प्रसंग और कथाएँ एक तो लोरिक के चरित्र के बहुरंगी आयामों को उद्घाटित करती हैं, दूसरे मुख्य कथा को पूर्णता की ओर अग्रसर करती हैं। कुल मिलाकर इसका महा-काव्यात्मक शिल्प लोरिक को जातीय-चरित्र अन्तर्प्रान्तीय लोक-कथा-नायक के रूप में उभारता है। इस क्रम में निम्नलिखित तथ्य प्रकाश में आते हैं।

(1) इस पाठ का कलेवर अन्य सभी कथा-रूपों से बहुत वृहद् है।

(2) इसमें 'लोरिकायन' के अन्य अज्ञात प्रसंग भी हैं और इससे नायक-नायिका के समग्र चरित्र तथा जीवन पर प्रकाश पड़ता है जबकि अन्य कथा-रूपों से केवल आंशिक चरित्र पर ही प्रकाश पड़ता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(3) इसकी घटनाएँ लोरिक-सम्बन्धी प्रायः सभी आंचलिक प्रवादों एवं किंवदन्तियों के मेल में हैं।

(4) इसका मुख्य स्वरूप प्रेमगाथात्मक न होकर वीर तथा सतीगाथात्मक है।

(5) इसमें वर्णित घटनाएँ, इसमें आये पात्र काल्पनिक होते हुए ऐतिहासिक भी प्रतीत होते हैं।[1]

कथा-संरचना—इस महागाथा की कथा विस्तृत है। हर खण्ड के आरंभ में लोक के देवी-देवताओं की सुमिरनी की गई है। फिर कथा को 9 काण्डों में विभाजित किया गया है। पहले काण्ड में लोरिक-मंजरी-जन्म, दूसरे काण्ड में विवाह, तीसरे काण्ड में युद्ध, चौथे काण्ड में सँवरू का विवाह, पाँचवें काण्ड में चनवां का उढ़ार, छठवें काण्ड में पिपरीगढ़ की लड़ाई, सातवें काण्ड में लोरिक-मंजरी-मिलन, आठवें काण्ड में लोरिक पुत्रों की कथा और अंतिम काण्ड में उद्धार की कथाएँ सम्मिलित हैं। पूरी गाथा प्रायः एक ही छन्द में गायी गई है और खण्डित नहीं हुई है। हाँ, गायकों के गाने की शैली में अन्तर अवश्य है। इस गाथा की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) पूरी कथा प्रेम, विवाह और युद्ध का आश्रय लेकर विकसित होती है। इसके आरंभ की कथा वीर गाथात्मक, मध्य की कथा प्रेमगाथात्मक और अंत की कथा सती गाथात्मक है।

(2) इसमें उत्पन्न बाधाओं के निराकरण के प्रयास में अलौकिक शक्तियाँ काम करती हैं और बाधाओं का शमन होता जाता है।

(3) कथा में वर्ण-व्यवस्था और कर्मकाण्ड के अनुरूप क्रियाएँ होती हैं।

(4) धन, ऐश्वर्य, रूप, शक्ति-सामर्थ्य, युद्धकला के वर्णन एवं विवरण अतिशयोक्तिपूर्ण तथा ऊहात्मक हैं।

(5) वातावरण पर कृषि, गोचारण-संस्कृति आदि के सन्दर्भ में सामन्ती जीवन-विधि का प्रभाव है।

(6) जादुई क्रियाओं और देवी-देवताओं आदि अलौकिक तथा अमानवीय पात्रों की अधिकता है।

(7) कथा में अतिमानवीय शक्तियों, अलौकिक शक्तियों और सहज मानवीय शक्तियों के संधान का सामञ्जस्य स्थापित है। पौराणिक तथा निजंधरी कथा-लोक के साथ यथार्थ जीवन का अद्भुत मेल हुआ है।

---

1. 'लोरिकायन' के कथा-सार के लिए देखिये 'उत्तर प्रदेश' में अर्जुनदास केसरी के प्रकाशित 'लोरिक का देश' शीर्षक लेख, दिसम्बर 74, जनवरी, फरवरी, मई, जून, जुलाई 1975

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिकायन का कथाशिल्प

'लोरिकायन' का कथा-शिल्प सुगठित है। कथा को मुख्य रूप से चार भागों में विभक्त किया जा सकता है—(1) लोरिक-मँजरी के जन्म से विवाह तक की कथा, (2) लोरिक—चनवाँ उढ़ार की कथा, (3) सँवरू के विवाह की कथा और (4) लोरिक-मँजरी के मिलन और लोरिक पुत्रों की वीरता की कथा।

कथा का आरम्भ बड़े विचित्र किन्तु कौतूहल-वर्द्धक ढंग से किया गया है। मँजरी का जन्म, राजा का उसे पाने का प्रयत्न, जुआ और उसमें महरा द्वारा महरिन की कोख हारना फिर उसके लिए संघर्ष का बीजारोपण आदि प्रसंग कथा को रुचिकर बनाने और उसे गति देने में सहायक हुए हैं। कथा में कहीं भी अवरोध नहीं आया है। सँवरू के विवाह की कथा थोड़ी उलझी हुई अवश्य है, किन्तु लोरिक-मँजरी के मिलन का प्रसंग आते ही उसमें गति आ जाती है।

घटनाएँ क्रमबद्ध रूप में घटती हैं और कुल मिलाकर एक वीर-चरित्र की सृष्टि करती हैं। कथा-विकास का आधार अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन तथा चरित्रों के अलौकिक क्रिया-कलाप हैं। सभी घटनाएँ चमत्कार और आश्चर्य-मिश्रित भाव के साथ रोमांचकारी हैं। पूर्व मध्यकालीन शौर्य्य-प्रदर्शन की प्रवृत्तियाँ सर्वत्र दिखलाई पड़ती हैं। कथा में दैवी शक्तियों की प्रधानता है जो मानवीय शक्ति को कमजोर बना देती हैं। चित्र-प्रदर्शन, पान-बीड़ा द्वारा प्रेम-प्रदर्शन, योगी-रूप-धारण, प्रेम-मिलन और विवाह, में विविध बाधाएँ और उनका अंत, युद्ध-प्रेम, सती-परीक्षा, सर्प-दंश, नारी-अपहरण, मिलन, वियोग, शौर्य्य-प्रदर्शन आदि इस कथा के अन्य प्रमुख तत्व हैं। इस प्रकार इस गाथा में लोक-गाथा की समस्त विशेषताएँ हैं।

कथानक सम्बन्धी रूढ़ियाँ—किसी भी लोकगाथा के अध्ययन के सन्दर्भ में उसके कथानक—रूढ़ियों के अध्ययन का विशेष महत्व होता है क्योंकि ये ही कथा विकास की आधार होती हैं। 'लोरिकायन' में ये इस प्रकार हैं—

साहित्यिक—सातवीं संतान, कन्या-हरण, सत्य-क्रिया, असम्भव कार्य-सम्पादन, चौर्य-शास्त्री, पत्नी के साथ बहिन का नाता, मृत व्यक्ति की समाधि पर फलदार वृक्ष का उगना, रक्त-बीज, कुम्भकर्णी निद्रा, पहरेदार को अंधा बनाना, बदला-बदली द्वारा मृत्यु का स्थगन, जादुई क्रिया-कलाप, बाचालमुण्ड, बाण का सर्प में बदलना, कनिष्ठिका में अमृत का होना, रूप-परिवर्तन, मृतक का पुनर्जीवित होना आदि।

पशु-पक्षी सम्बन्धी— उड़ुयनशील घोड़ा, विश्वसनीय कुत्ता या कुतिया, मानवेतर की सीख, डाइन का छल, पक्षी की पीठ पर यात्रा आदि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपर लोक सम्बन्धी—आकाश-पाताल की यात्रा, समुद्र यात्रा आदि।

अन्य—बुद्धि-परीक्षा हेतु कठिन शर्त, अलौकिक जन्म, कृपालु देवी-देवता, बच्छ नाग, स्थानीय किंवदन्तियाँ, पुराना प्रतीक, जीवन-निमत्तक वस्तु, हवन की गंध का आकाश तक जाना आदि।[1]

प्रबंधात्मकता

ऊपर के विवरणों से 'लोरिकायन' के प्रबंधकत्व में कोई सन्देह नहीं रह जाता तब भी, शास्त्रीय नियमानुसार प्रबंध काव्य उसी को माना जाता है जो सर्गबद्ध होता है जिसका नायक सुर या राजा होता है, जिसमें नायक के सम्पूर्ण जीवन का वृत्त अंकित होता है, जिसमें वीर, शृंगार अथवा करुण में से कोई एक रस मुख्य होता है, जिसके हर सर्ग के अंत में छन्द-परिवर्तन हो जाता है और अगले सर्ग की कथा का संकेत भी दे दिया जाता है और जिसमें यथास्थान प्रकृति-चित्रण भी किया गया होता है।

इस दृष्टि से जब हम 'लोरिकायन, पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि उसमें वीर रस प्रधान है, शृंगार, भयानक, करुण, हास्य, वीभत्स आदि रसों की योजना भी यथास्थान हुई है। वह सर्गबद्ध या काण्डबद्ध है। लोरिक वीर उसका नायक है जो यदुवंशी, क्षत्रिय तथा महान् पराक्रमी है। 'लोरिकायन' में उसके सम्पूर्ण जीवन की कथा वर्णित है। छन्द-परिवर्तन का नियम तो सर्वत्र लागू नहीं होता, तथापि यत्र-तत्र उसमें परिवर्तन भी हुआ है। प्रकृति-चित्रण भी अच्छा बन पड़ा है। इसके अतिरिक्त सुपुष्ट गठित एवं प्रबन्ध के अनुसार विविध मानवीय व्यापारों का उद्धारक भी है। उसकी आख्यान-कथन की क्षमता तथा भाषा का प्रवाह सर्वत्र श्रेष्ठ है। अलंकारों की स्वाभाविक छटा दर्शनीय है। भाव-व्यंजना तथा अन्तर्द्वन्द्वों के कारण उसका हृदय-पक्ष सबल हो गया है। इन विशेषताओं के कारण हम इसे लोक महा-काव्य की संज्ञा दे सकते हैं।

छन्द-परिचय :—जिस रचना में वर्ण, मात्रा, यति, गति, तुक आदि का ध्यान रखा जाता है उसे छन्द कहते हैं। लोरिकायन में छन्दों का कोई शास्त्रीय नियम लागू नहीं है तथापि, हम इन्हें लोक-छन्द की संज्ञा से अभिहित कर सकते हैं। मात्रिक न मानकर यदि वर्णिक माना जाय तो निम्नलिखित पंक्तियों में उनकी संख्याओं का क्रम इस प्रकार है :—

---

1. इस गाथा में आई कथानक रूढ़ियों पर ही महत्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया जा सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हथवा जोरय करय बिनती
हम ददा गइया-भंइसिया देखा देखल ।
कबों नाहीं कयली देसवा में बरियात,
हमके आपय मलुमवाँ नाहीं बाय ।

इसकी प्रथम पंक्ति में 12, दूसरी पंक्ति में 16., तीसरी पंक्ति में 15, और चौथी पंक्ति में 14 वर्ण आये हैं। इस प्रकार 10 से 17-18 वर्णों तक का विधान किया गया है। मात्राओं की गणना करें तो कम से कम 12 और अधिक से अधिक 24 मात्राएँ तक आयी हैं। ये मात्राएँ नूरे के पाठ में हैं, अन्य पाठों में अधिक मात्राएँ देखी जाती हैं।

लोक-छन्दों में प्रधानता लयात्मकता की होती है। उसके अनुसार ही कभी किसी पंक्ति में वर्ण अधिक हो जाते हैं तो किसी में कम। गायक जब खींच कर गाता है तो मात्राएँ बढ़ जाती हैं और जब ढील दे देता है तो मात्राएँ कम भी हो जाती हैं। लघु और गुरु दोनों प्रकार के वर्णों का प्रयोग हुआ है, किन्तु गुरु वर्णों की ही अधिकता है। एक पंक्ति का एक पद है। यति हर पंक्ति के अन्त में है। तुक बैठना आवश्यक नहीं है। तब भी, कहीं-कहीं बैठ गया है। 'ना', या, 'बाय' का तुक अधिक देखा जाता है।

'लोरिकायन' में संगीत, नृत्य तथा नाट्य तत्व

लोरिकी मूलतः गीतिकाव्य है, किन्तु कथात्मक होने के कारण तथा लोक की वस्तु होने ने कारण भी वह संगीतशास्त्र की कसौटी पर उतना खरा नहीं उतरता तब भी उसमें संगीत, नृत्य तथा नाटक के तत्व मिलते हैं। 'लोरिकायन' का सस्वर गायन होता है। लोक-गायक उसे उचित आरोहावरोह के साथ गाता है ताकि उसे इस लम्बी गाथा को गाने में थकान का अनुभव न हो और न ही पाठक या श्रोता किसी प्रकार की नीरसता का ही अनुभव करे। इसीलिए लोरिकायन-गायक कभी-कभी रात-रात भर गाता रह जाता है।

गायन के स्वर मध्य षड़ज और मध्यम के बीच के हैं। गायक भाव-विभोर होकर जब जोश में आता है तो तीव्र मध्यम से धैवत तक के स्वरों में गाने लगता है। गायन का आरम्भ वह मध्य षड़ज से करता है, मध्य तक षड़ज और शुद्ध मध्यम का प्रयोग करता तथा अन्त में तीव्र मध्यम से ऊपर शुद्ध धैवत तक पहुँच जाता है। इसके स्वर मन्द्र सप्तक के केवल शुद्ध निषाद् को स्पर्श करते हैं। तार सप्तक में तो बिल्कुल नहीं जाते। प्रत्येक पंक्ति में प्रायः 16 से 20 मात्राएँ होती हैं। चिरागन के पाठ का 'नोटेशन' इस तरह बन सकता है—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रे म म ग ग रे रे सा रे नि
सा सा — सा रे ग ग — रे रे—सा सा रे———सा—
भइ या ऽ रा ऽ मइं क ऽ नम वां ऽ गुन हो गा ऽ ऽ ऽ सा—
गा ऽ ऽ ऽ इँ—
म म ग ग रे सा रे नि
सा रे ग ग—रे रे सा—सा—रे ——— सा—

रा ऽ मइँ क ऽ द रि य इं ले ऽ हीं ऽ ना ऽ ऽ ऽ म ऽ
भइया ऽ रा ऽ म इं क ऽ नमवां ऽ गुन हो ऽ गा ऽ ऽ ऽ इं ।
रा ऽ म इं क ऽ दरियइं ले ऽ हीं ना ऽऽऽ म ।।

नूरे केवट के पाठ की स्वर लिपि इस प्रकार बनती है :[1]

सा— — — — — रे — सा रे — — — — — —
द खि न न दे स वा ऽ बा ड़ य ख ङा ऽ ऽ र

रे ग रे
ग — — — — — —रे सा — — ग — — — —
द खि न न दे स या ऽ बा ड़ य ख ड़ ऽ ऽ र

ग रे
ग — — — — — — — — — — रे सा — ग —
ए क उ हाँ ऽ न ग र अ गो ऽ री ऽ बा ऽ य पा ऽऽ ल
सा — — — — — — रे रे — — — — — — —सा
खो रि या में उ र दू ऽ उ ब स ल बा ऽ य ब जा ऽ ऽ र

गायक केवल मध्य सप्तक में ही विभिन्न स्थलों को उतार-चढ़ाव के साथ दर्शाता है। कभी एक ही स्वर की बार-बार आवृत्ति करता है तो कभी पार्श्ववर्ती स्वरों के सहयोग से आगामी गतिविधि को अभिव्यक्ति देता है। वह एक स्वर पर स्थिर रहते हुये गायन में लालित्य लाने के लिए पास के स्वरों का भी स्पर्श करता है।

पूरी गाथा इसी स्वर, ताल, लय, धुन में गायी जाती है। गायक प्रसंग, भाव और इसके अनुसार कभी ऊँचे स्वर में गाता है तो कभी नीचे। बीच-बीच में वह

1. दोनों पाठों के स्वरलिपिकार : कमलेश कमल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विश्राम भी करता जाता है। हाव-भाव प्रकाशन भी करता है। कभी हाथों से इशारा करता है तो कभी मुँह बिचकाकर या सिर हिलाकर भावाभिव्यक्ति करता जाता है। सहयोगी बीच-बीच में गायक को सहारा देने के लिए टेरी भरते अथवा टेक मिलाते हैं।

इस गीत के साथ अभिनय और नृत्य भी यत्र-तत्र किया जाता है। हावों-भावों के प्रकाशन द्वारा नाटकीयता तो अपने-आप आ ही जाती है, साथ में जब वाद्य-यंत्रों (डफला और थाली) और नृत्य का भी संयोग हो जाता है तो कहना ही क्या, दर्शक-श्रोता, गायक-वादक सभी आनन्द-मग्न हो जाते हैं। यह आनन्द कभी-कभी इस सीमा तक पहुँच जाता है कि वे कभी-कभी 'करगही' और 'गड़थैया' नाचने[1] के लिए भी बाध्य हो जाते है।

प्रस्तुत गाथा के गायक नूरे कान में अंगुली डालकर हाथों से ही हाव-भाव-प्रदर्शन करते हुए गाते थे और गाते-गाते झूमने लगते थे। उनका कहना था कि "'लोरिकायन' एक प्रकार से देवी-स्तोत्र है, इसीलिए मैं भी जब गाने लगता हूँ तो ऐसा लगता है कि देवी मेरे सिर पर सवार हो गयी हैं।"

लोरिकायन की भाषा

'लोरिकायन' की भाषा हिन्दी ही है किन्तु वह अवधी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी, बिहारी की मेल-जोल खिचड़ी है।

डॉ० ग्रीयर्सन ने हिन्दुस्तानी के दो भेद माने, एक बोल-चाल की और दूसरी साहित्य की। साहित्यिक हिन्दुस्तानी की चार शैलियां—उर्दू, रेखता, दक्खिनी और हिन्दी निर्धारित की।[2] दक्खिनी वही भाषा थी जिसका व्यवहार उत्तर में होता था। यह शब्द-भंण्डार में ब्रज तथा अवधी के निकट थी।[3] 'लोरिकायन' की भाषा का स्वरूप-विधान भी उसी के आसपास है। इसमें खड़ीबोली के 'आ' की प्रधानता देखी जाती है। जैसे-माथा, जतिया, रजवा, लोरिका, देविया आदि। इस आकारान्त रूप के कारण अंत के पूर्व शब्द के आकारान्त का अकारान्त हो गया है। जैसे—राजा में 'रा' 'र' होकर 'जा' का 'ज' हुआ और फिर उसमें 'वा' जुड़ गया। इसी प्रकार स्वर मध्यवर्ती एवं शब्दान्त महाप्राण ध्वनियों के महाप्राणत्व के ह्रास की प्रवृत्ति भी देखी जाती है। यथा-जांघ का जंघिया, दूध का दुधवा हो गया है। इसी प्रकार सर्वनाम में बुन्देली और अवधी तथा भोजपुरी का सम्मिश्रण द्रष्टव्य है-'ई' का

---

1. अहीरों का नाच-विशेष,
2. लिंग्विस्टिक सर्वे आफ् इंडिया : जिल्द—9, भाग-1, पृष्ठ—46
3. भाषा और समाज, पृष्ठ—303

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अवधी में 'ए' भोजपुरी में 'इहइ' 'उ' अवधी में 'ओ' भोजपुरी में 'ऊहइ', बुन्देली में 'की' अवधी में 'के' भोजपुरी में 'केन' हो जाता है।

क्रियाएँ :—वर्तमान काल की रचना बैसवाड़ी के ढंग पर 'व' विकरण से हुई है। जैसे—आने के अर्थ 'आवत', 'है' के लिए 'बाय' शब्द का प्रयोग। खड़ी-बोली हिन्दी के आया, गया, लिखा, पीया, जा रहा था आदि क्रिया-पदों को गाथा में क्रमशः आवल, गवल, लिखली, पियली और जात रहल के रूप में लिखा गया है।

संज्ञा-पद और मुहावरे—संज्ञा-पदों में प्रायः कोई परिवर्तन नहीं पाया जाता। तब भी लोक भाषा तथा बोली में यत्र-तत्र उसमें भी तोड़-मरोड़ देखा जाता है। यथा-नोना का नोनवाँ, गंगा का गंगिया आदि प्रयोग। कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के साथ जाति का नाम थी जुड़ा रहता है जैसे—महरा में महरा अहीर, नोना में नोना चमाइन, गंगा में गंगिया नाऊ, महीचन में महीचन तेली आदि। जाति और भाववाचक संज्ञाओं के प्रयोग में भी परिवर्तन देखा जाता है जैसे—गोबर का गोबरवा उससे गोबरवा का, गोबरवा कइ होन बा अर्थात् बिगड़े हुए भाग्य वाली स्त्री या बालिका के लिए मुहावरेदार प्रयोग हुआ है। वैसे 'लोरिकायन' में इतने मुहावरे प्रयुक्त हैं कि उनका एक संक्षिप्त कोश ही तैयार हो सकता है।

पुरुष तथा सर्वनाम—कुछ सर्वनामों का प्रयोग विचित्र बनावट में है जैसे—हम लोग के लिए 'हमहनों (उत्तम पुरुष), 'वे लोग' के लिए 'ओनहन' (अन्य पुरुष), 'तुम लोग भी' के लिए 'तोनहनो' (मध्यम पुरुष) प्रयोग हुआ है।

विशेषण—विशेषण में पूरा का पूरा पद कह दिया गया है। जैसे—बहुत सुन्दर पालकी के लिए 'सोनय न पानी बाय ढारल'—'हुम्मी-हुम्मा पालकी बाय चलत' का प्रयोग भी किया गया है। इसी प्रकार टिकुली की शोभा सुन्दर लग रही है या चमक रही है, अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए 'जैसे बरत सुरुजुवा का बाय जोति' आलंकारिक प्रयोग किया गया है। वैसे भी रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, यमक, अति-शयोक्ति, संदेह आदि प्रचलित अलंकारों की छटा दर्शनीय है।

तत्सम-तद्भव शब्द—'लोरिकायन' में तत्सम शब्दों का भी प्रयोग हुआ है जो संस्कृत मूल के अनुकरण पर हैं। जैसे—कुक्कुर, पोस्तक (अपभ्रंश), पंडित, नगर आदि। तद्भव शब्दों में गोड़, हाथ, सोवरन, अभरन, पूत आदि।

वचन—एक वचन और बहुवचन शब्दों का प्रयोग किया गया है। एक वचन शब्दों का बहुवचन में प्रयोग भी देखिए—गाय, भैंस, आदमी, सरदार आदि एक वचन शब्दों का प्रयोग गइयन, भैंसियन, अदिमियन, सरदरवन आदि बहुवचन के रूप में किया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विभक्तियों का प्रयोग—भोजपुरी की अपनी विभक्तियाँ हैं। कारक के साथ उनका सम्मिलन कुछ विचित्र ही ढंग से हुआ है। जैके—कर्ताकारक—'हम लोगों ने' के लिए 'हमहन', कर्मकारक 'हमको' के लिए 'हमहन के', करण कारक 'उनसे' के लिए 'ओनसे', 'ओन्हन से', संप्रदान कारक 'उनके लिए' के लिए 'ओनहनबदे' अपादान कारक पेड़ से पत्ता गिरने के अर्थ में 'पेड़वा से पतवा गिरल' संबन्ध कारक-'उसका, 'मेरा', तुम्हारा, के लिए क्रमशः 'ओकर', 'हमार', 'तोर' तथा अधिकरण कारक—अहीरों में, गाँव में, वृक्ष पर-के लिए क्रमशः 'अहीरन में', 'गाँवन में', पेड़ पर' आदि विभक्तियों का प्रयोग किया गया है।

विदेशी शब्द—उर्दू, फारसी, अरबी—कुल, इन्तजाम, हजामत, हर्ज, मुहब्बत, इज्जत, किला, बहादुर, दरोगा, लाश, मालूम, मौज, मुर्दा, सिपाही, हिसाब-किताब, जमीन, अमीर, खजाना, इलाका, मसाला, चाउर आदि।

अंग्रेजी—आडर, फुलपैन्ट, लालटेन, पलटन, टाइम, फोटो, फीस आदि।

संस्कृत—तिलक, बीर, असुर, स्नान, कथा, गाथा, मेघ, राजा, नगर, सर्प, नाग, आदि।

बिहारी—बिटिया, (बेटी), घोड़ा, भला, बड़ा, मोर, कइलसि, मारल, ओकर, आदि।

अवधी—नीयर,-नीयरे, बड़मनई, चलब, आवाज, जबाब, घोड़वा आदि।

देशज—मल्लाह, डोंगा, पगड़ी, खिचड़ी, चिड़िया, आदिमी, जनावर, सहुआ, बाभन, नाऊ, पिंजरा, बढ़नी, पानी आदि।

भोजपुरी, पूर्वी हिन्दी तथा पश्चिमी हिन्दी—तोरे, बाढ़ि, दिहलसि, एमें, ओमें, एहर, ओहर, केहर, अतना, ओतना, केतना, बड़ा, जवन, तवन, कवन, मरलस, जे, जौन, जेकर, जइसन, बइसन, कइसन, काजर, अचरज आदि।

छत्तीसगढ़ी—करे (किया), गये (गया), खान के ज्यादा (खाने से अधिक), छोकरा (लड़का), मनुख (मनुष्य), सबो (सब), बइला (बैल) आदि।

भाषा-वैविध्य—'लोरिकी', 'लोरिकायन' तथा 'चंदायन' तीनों की भाषा अवधी है। सूफी साहित्य के प्रसिद्ध अन्वेषक प्रो० अस्करी ने लिखा है कि "इसकी भाषा पर प्राकृत भाषाओं, मागधी, शौरसेनी तथा अर्द्ध मागधी का प्रयोग ढूंढ निकालना उपयोगी होगा। इसमें अवधी के अनेक रूपों में पूर्वी का रूप पहाड़ी, बैसवाड़ी की तुलना में बहुत अधिक स्पष्ट है और इसमें खड़ीबोली के तत्व पाये जाते हैं। मौलाना दाउद की रचना ठेठ अवधी और विशुद्ध अवधी में है। उसकी भाषा तुलसी-कृत 'रामायण' तथा जायसी कृत 'पदमावत' से भी मिलती-जुलती है। आलोच्च गाथा की भाषा में अनेक भाषाओं के शब्द भी स्वाभाविक रूप से आ गये हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपसर्ग और प्रत्यय—हिन्दी के प्रचलित उपसर्गों तथा प्रत्ययों का प्रयोग भी 'लोरिकायन' में हुआ है। उपसर्गों का प्रयोग मूल शब्द के आदि में होता है। जैसे—निरमल (निर), निरबल (निर), अपमान (अप) परताप (प्र), पराजय (पर), निरोग (नि), आदि उपसर्गों का प्रयोग अधिक हुआ है। इसी तरह सपूत (स), भर पेट (भर), गैरहाजिर (गैर), आदि उपसर्ग भी प्रयुक्त हैं जो शब्दांश के अन्त में जुड़कर उसमें कुछ परिवर्तन कर देते हैं, वे प्रत्यय कहे जाते हैं। 'लोरिकायन' में प्रत्ययों का यथास्थान प्रयोग देखा जा सकता है। यथा—बुराई में (ई), ओकाई में (ई)—, लड़कपन में (पन), इसी प्रकार सइतिया में (इया), दुलरुवा में (वा) आदि के अतिरिक्त इल्, अत्, अन्, आ, आई, आऊ, के प्रयोग भी मिलते हैं।

ध्वनि तथा ध्वनि परिवर्तन—ध्वनियों में परिवर्तन भाषा विज्ञान के नियम के अनुसार यत्र-तत्र हुआ है। जैसे—जानवर का जनावर, बउरायल का बउखल, पाठक का पठका, टाटक का टटका, ब्राह्मण का बाभन आदि। इसी प्रकार व्यंजन तथा स्वरों का लोप भी यथास्थान हुआ है। जैसे—शावस-साबस (मध्य स्वर-लोप), आक्रमण (अन्त स्वर-लोप), स्थाली-थाली (आदि व्यंजन लोप), सत्य-सत् या सच (अंत व्यंजन लोप), त्रिशूल-शूल या सूल (अक्षर लोप), स्तुति अस्तुति (स्वरागम), समुद्र-समुन्दर (व्यंजनागम), डंफ-डफली (अन्त अक्षरागम), सवारी-असवारी (आदि निहित-समस्वरागम)।

समास—धातु तथा प्रत्यय के योग से शब्द बनते हैं और जब एक से अधिक शब्द मिलकर वृहत् शब्द की सृष्टि करते हैं तब उसे समास कहते हैं। अभिजात साहित्य के अतिरिक्त लोकसाहित्य में भी सामासिक पद पाये जाते हैं। भोजपुरी साहित्य, उसमें भी लोरिकायन में ऐसे पदों की कमी नहीं है। यहाँ कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

द्वन्द्व—माई-बाप, बहिन-मतारी, बेटा-पतोहू, देवर-भौजाई, मेहरारु-लड़िका।

कर्मधारय—कपूत, सपूत, महाजन, लाल-पीला।

द्विगु—चौ-मोहानी।

बहुब्रीहि—पीताम्बर, कोंचा-कोंची, लड़ाई, देखा-देखी, छीना-झपटी।

अव्ययीभाव—आजुकालि, हरदम।

धातुरूप—धातु रूपों से क्रियायें बनती हैं। संस्कृत वैयाकरणों ने धातुओं को दस गणों में विभक्त किया था, किन्तु अपभ्रंश तक पहुँचते केवल एक गण रह गया और शेष सभी लुप्त हो गये। डा० चटर्जी ने भोजपुरी क्रिया-पदों को दो भागों में विभक्त किया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(1) सिद्ध धातु—(प्राइमरी रुट्स),
(2) साधित धातु—(सेकेंडरी रुट्स)।

इसको भी कई भागों में बाँटा गया है जो इस प्रकार है—जिनमें से संस्कृत-गणों के विकर्ण—वर्तमान हैं–प्रसिद्ध धातुएँ—जैसे—कस् (कसना), काढ़, (काढ़ना), काँप (कम्प) काँपना, कूद (कर्द) कूदना, कह (कथय्) कहना, खन्, (खन्), खोदना, घट् (प्रा० घट्ट) घटना, चुन (चि, चिनौति) चुनना आदि।

भोजपुरी सिद्ध धातुएँ प्राकृत तथा अपभ्रंश से होकर आयी हैं, किन्तु इनमें अत्यधिक ध्वन्यात्मक परिवर्तन हुआ है। संस्कृत के भोजपुरी तक आने वाले विकरणों का उदाहरण इस प्रकार है—नाच् (नच्चइ, नृत्-य-ति), (युद्ध-य-ति), (जा-ना-ति) जानना, पृच्छ् (पृच्छति) पूछना।

णिजन्त से उतान्त सिद्ध धातुएँ–इनका प्रेरणार्थक अर्थ लुप्त हो गया है, और ये साधारण सकर्मक धातुएं बन गयी हैं—मुअता (मरता है), मारता (मारता है), मर-यति) मरवावत (मरवाता है)।

अर्द्ध तत्सम धातुएं—अरप् (अर्प), अर्पित करना, वद् (बद्) कहना, सोभ (शोभ) सुन्दर बनाना।

जिनकी उत्पत्ति संस्कृत से भी नहीं जान पड़ती—अँट-अँटना, छाँड़-छोड़ना, झाँक-झाँकना, बटोर-एकत्र करना, बाँट-बाँटना, हींच-खींचना।

वे साधित धातुएँ जिनमें आव् जोड़ने पर प्रेरणार्थक बन जाती है—यथा-बइठ-बैठना, बइठाव-बैठाना, लिखु-लिखो, लिखाव-लिखाओ।

नाम धातु—संज्ञा पद तथा क्रियामूलक विशेषण जब क्रिया बनाने के लिए धातु रूप में प्रयुक्त होते हैं तब उन्हें 'नामधातु' कहते हैं। संस्कृत अनुकरण पर इनके रूप बनते हैं। यथा-गर्मा-गर्म होना, नाराज होना, सर्मा या सर्माओं-लज्जित होओ। अन्य नाम धातुएँ हैं।

तीव्रता बोधक—अंटक-फँसना, पिचुक-पिचुकना, सुस्क—पी जाना, छिरिक-छिड़िकना, पकड़-पकड़ना, लपट-लपटना, सिकुर-सिकुड़ना।

अव्यय–संस्कृत, पालि, प्राकृत आदि में नाम तथा सर्वनाम शब्दों के परे तद्धित के कतिपय प्रत्यय लगाने से अव्यय बन जाते हैं। अव्यय के स्वरूप में प्रायः परिवर्तन नहीं होता, तथापि भोजपुरी अव्यय अन्य भाषाओं के अव्ययों से कुछ भिन्न अवश्य हैं। यहाँ हम कुछ का विवेचन प्रस्तुत करेंगे—

(1) **कालवाचक अव्यय**–भोजपुरी में प्रयुक्त ऐसे अव्यय प्रायः संस्कृत से आए हैं। यथा—'घरी' शब्द संज्ञा पदों से निर्मित संस्कृत के 'घटिका' से निर्मित है। इसी

CC-0. Agamnigam DigitaPresentation Foundation, Chandigarh

प्रकार समै (समय), टेम '(टाइम)' हाली (शीघ्र) आदि अव्ययों का भी प्रयोग मिलता है। अव्यय पदों से निर्मित अव्यय हैं—आजु, (सं० अद्य), कालिह् (सं० (कल्यम्) आदि।

(2) स्थान वाचक अव्यय—नियरे (पास) (सं० निकट), पार, उस पार (सं० पारम्), तरे, नीचे (सं० तल) आदि।

(3) प्रकार वाचक—कुछ तत्सम तथा अर्द्ध-तत्सम शब्द प्रकार वाचक अव्यय के रूप में व्यवहृत होते हैं। जैसे—अधिक, केवल, बिरिथा आदि।

(4) संख्या वाचक अव्यय—'अकेलुआ', सभे, कुछ आदि शब्द संख्यावाची अव्यय के रूप में व्यहृत हैं। यहाँ अकेलुआ से अकेला, सभै-सब, कुछुवे—कुछ से बना है।

(5) परिणाम वाचक— भोजपुरी में कुछ ऐसे भी अव्यय प्रयुक्त हैं जो अपनी संरचना में सर्वथा प्रथम हैं। जैसे—अउरी (और), कम-बेसी (कम-अधिक), थोड़ा या थोड़य (कम)।

तात्पर्य यह है कि लोरिकायन का व्याकरण एक प्रकार से भोजपुरी साहित्य का व्याकरण है जो शब्द अन्य भाषाओं से आकर घुल मिल गये हैं, उनका स्वरूप स्थिर नहीं है। लोरिकायन अनेक जनपदों में गाया जाता है। अतः उसकी भाषा के स्वरूप में भी प्रायः परिवर्तन हो जाता है। बलिया की लोरिकी में विशुद्ध भोजपुरी के शब्द मिलते हैं तो मिरजापुर के लोरिकायन में मिरजापुरी बोली की प्रधानता देखी जाती है।

'लोरिकायन' वास्तव में एक ऐसा काव्य है, जिसका आनन्द पढ़ने में कम, सुनने में ही अधिक है। इसीलिए इसे सही-सही लिपिवद्ध करना भी कठिन है। जब यह कार्य हाथ में लिया गया तो यह कठिनाई भी गाड़ी के सामने काठ बनकर आयी।

गायक एक ही शब्द का कई प्रकार से उच्चारण करता है। वह कभी 'अहीर' तो कभी 'अहिर', कभी 'गंगिया' तो कभी 'गङ्गिया' और 'गङ्गिया' भी कहता है। इसी प्रकार कभी 'दुर्गा' कहता है तो कभी 'दुरगा', कभी 'सौरू' उच्चारण करता है तो कभी 'सँवरू' कभी 'सेल्हिया' कहता है तो कभी 'सेन्हिया'। शब्दों का तोड़-मड़ोर कर उच्चारण भी करता है।

संकलन में शब्दों को यथावत रखने का प्रयास किया गया है ताकि उसका भलीविधि गायन तो किया ही जा सके, शब्दों की परिवर्तनशील प्रकृति का अध्ययन भी किया जा सके। वास्तव में इस ग्रन्थ का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन भी एक उपयोगी और सार्थक कार्य हो सकता है।

आज का परिवेश और प्रस्तुत ग्रन्थ

किसी भी रचना की उपजीव्यता उसके शाश्वत मानवीय मूल्यों पर निर्भर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करती है। प्रेम, सहानुभूति, करुणा, दया, परोपकार, सत्य, अहिंसा आदि शाश्वत मानवीय मूल्य हैं। इस दृष्टि से जब हम 'लोरिकायन' पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि इसमें ये सभी मानवीय मूल्य वर्तमान हैं। 'लोरिकायन' लोरिक की शौर्य्य-गाथा है।

इस रचना से जीवन में संघर्ष की प्रेरणा तो मिलती ही है, उससे पुरुषार्थ की प्रेरणा भी मिलती है। इसके पात्र-स्वत्व-रक्षा के लिए नहीं अन्याय, अत्याचार, अनाचार, दुराचार, आदि दुष्प्रवृत्तियों के अंत के लिए धर्म-युद्ध करते हैं। वीर लोरिक दुष्ट तथा दुश्चरित्र राजा मोलागत को पराजित कर सती-साध्वी नारी मँजरी का उद्धार करता है। मँजरी भी दुष्ट राजा के चंगुल में जाने से इनकार करती और अपने योग्य वीर पति लोरिक का वरण करती है। ये घटनाएँ जहाँ एक ओर सामन्ती व्यवस्था के प्रति आक्रोश का संकेत देती हैं, वहीं दूसरी ओर आज के युवावर्ग के लिए भी प्रेरक सिद्ध होती हैं।

आज के परिवेश में भी इस महागाथा का बड़ा महत्व है। इसमें जाति-वर्ग हीन समाजवाद की सार्थक कल्पना की गई है। इसमें जाति-पाँति, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब के भेद-भाव की भावना का विरोध किया गया है। मँजरी गाँव की हर जाति की बालिकाओं के साथ खेलती है तो लोरिक भी शूद्र जाति के व्यक्ति अजई धोबी को अपना गुरु बनाता है। लोरिक का भाई सँवरू गंगिया नाई के साथ बैठकर भोजन करता है। राजा सहदेव द्वारा दिये गये भोज में सभी जाति के लोग सम्मिलित होते हैं।

'लोरिकायन' के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय का ग्राम्य-जीवन बड़ा सुखी तथा सम्पन्न था। दारिद्र्य और अकाल-दुकाल का नाम न था। होली आदि के पर्व तो बड़े हर्षोल्लास से मनाये जाते थे जिसमें हर जाति-वर्ग के लोग सम्मिलित होते थे।

समाज में स्त्रियों का सम्मान था। बड़े-बूढ़ों को सभी आदर की दृष्टि से देखते थे। समाज चार वर्गों में विभक्त था तथा सभी वर्ण अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते थे।

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत महागाथा भी 'रामायण' की ही तरह समन्वय की एक और चेष्टा है, इससे पथ-भ्रष्ट समाज को मार्ग-दर्शन मिलेगा और इसके अध्ययन की अनेकानेक सम्भावनाएँ बनेंगी। अब तक यह महागाथा मौखिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परम्परा में ही थी। इन पंक्तियों का लेखक इसे मौलिक, प्रामाणिक और सम्पूर्ण रूप में पहली बार प्रस्तुत करते हुए गौरवान्वित है।[1]

संकलन की पद्धति तथा बाधाएँ

लोक-साहित्य का संकलन एक कठिन कार्य है। लेखक के सामने भी अनेक व्यावहारिक कठिनाइयाँ आती गईं अतः उनका उल्लेख कर देना भी आवश्यक है।

इस कार्य की प्रथम प्रेरणा मुझे अपने माता-पिता से मिली जिनकी गोद में बैठकर राजा-रानी की अगणित कहानियाँ सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अवस्था बढ़ने के साथ गांव के बड़े-बूढ़ों से भी लोक-कथाएँ, गाथाएँ सुनता रहा। मुझे स्मरण है मेरे गांव के नक्कूतेली और सीता सोनार हमें कौड़े के पास कहानियाँ सुनाया करते थे। इन कहानियों के संग्रह के भाव भी मेरे मन में तभी आये थे। बाद में लेखन से जुड़ने के साथ मेरा परिचय 'सम्मेलन पत्रिका' के तत्कालीन सम्पादक तथा महाप्राण 'निराला' के मित्र ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' से हुआ। उनकी प्रेरणा से लोक-साहित्य के संकलन में जुट गया। उन दिनों आदिवासी-बहुल क्षेत्र चोपन में कार्यरत था। दिनभर की कार्य-व्यवस्तता के बाद, प्रायः अवकाश में किसी-न-किसी गाँव में निकल जाया करता था। इसी क्रम में कुरहुल गाँव में भी एक दिन गया जहाँ नूरे केवट से भेंट हो गई। नूरे केवट को 'लोरिकायन' सम्पूर्ण कंठाग्र था, जिसका सस्वर पाठ वे खेत अगोरते समय प्रायः मध्य रात में मैरा या मचान पर सोकर किया करते थे। उन्हें भीड़ पसन्द न थी और न वे किसी के कहने पर भीड़ में सुनाते ही थे। मैं अपने प्रिय शिष्य रामकुमार के घर से उनके गीतों को सुना करता था। इस पूरे गीत को सुनने में लगभग एक वर्ष का समय बीत गया और तब मैंने नूरे से आग्रह किया कि वे उसे लिपिबद्ध करा दें। लेकिन यह एक दुस्कर कार्य था जिसे नूरे ने स्वीकार नहीं किया।

कुछ समय बाद जब मैंने उनसे अपनी 'मैत्री जोड़ ली और वह प्रगाढ़ता में परिणत हो गई तो उनसे कहा—"आप कौड़े पर इसे सुनाया करें।"

कौड़े के पास मैं कुछ लोगों को जुटा लिया करता था, ताकि सुनने-सुनाने का महौल बने। कंकड़-तमाखू बीड़ी-गाँजा का दौड़ जानबूझ कर चला दिया करता था, ताकि लोग ऊब कर उठने न पावें। इस तरह दूसरी बार इस महागाथा को सुना जिसमें लगभग एक वर्ष का समय और लग गया। इसके बाद लिखने-लिखाने

---

1. विस्तृत जानकारी के लिए देखिए संतबरग्श भारतीय द्वारा अर्जुनदास केसरी से ली गई एक विशेष भेंटवार्ता: 'अमृतांजलि' (सं० एम० एम० खान) दिसम्बर, 1978 पृ०—3

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का मन बना, किन्तु जब तूरे गाने लगते तो मैं लिख नहीं पाता था और जब मैं लिखने लगता था तो वे सस्वर पाठ नहीं कर पाते थे। मेरे पास वैज्ञानिक उपकरणों का अभाव था। परिणाम यह होता कि चालीस-पचास पंक्तियों से अधिक मैं इसे लिख नहीं पाता था। फिर भी, साहस बटोर कर उसे लिखता रहा जिसमें लगभग तीन वर्ष का समय लग गया। अब इसकी शुद्धता का प्रश्न खड़ा हुआ तब मैंने उधार के टेप रिकार्डर से उसे पुनः टेप करना आरंभ किया। जितना अंश टेप करता उतना अपने लिखित पाठ से मिलाता जाता। इस तरह इस कार्य में भी लगभग चार वर्ष का समय लग गया।

अब, जब पूरी गाथा लिख ली गई तो इसे आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, प्रो० राजाराम शास्त्री, श्री मोहनलाल गुप्त आदि को दिखलाया। इन लोगों ने इस महागाथा को लिख डालने पर आश्चर्य व्यक्त किया। और इसी पर शोधकार्य कर डालने का सुझाव भी दिया। मैं लग गया और काशी विद्यापीठ के श्रद्धेय डॉक्टर श्याम तिवारी के निर्देशन में लगभग 6 वर्षों के अथक परिश्रम के बाद जब इस कार्य को भी पूरा कर लिया गया तो इसके विविध पक्षों को लेकर कई लेख लिखने का और उन्हें स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराने का सुयोग भी प्राप्त हुआ। नया विषय होने के कारण इसकी बड़ी चर्चा हुई और तब डॉ० विद्यानिवास मिश्र, अमृतलाल नागर, ठाकुर प्रसाद सिंह और अशोक जी जैसे विद्वानों से भी सम्पर्क का अवसर प्राप्त हुआ। आदरणीय ठाकुर प्रसाद सिंह के कहने पर संकलन की एक प्रति उ० प्र० हिन्दी संस्थान में जमा कर दी गई जिस पर 6000 रु० के (सन् 1976 का) राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार की घोषणा की गई। इस घोषणा को सुनकर आश्चर्य मिश्रित हर्ष हुआ। इसके बाद इस महाकाव्यात्मक लोकगाथा के प्रकाशन की चिन्ता हुई। संयोगवशात् जब 3000) उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशनार्थ स्वीकृत हुए तो मैंने इस कार्य को भी पूरा कर दिया। अब यह महागाथा समग्र रूप में सुधी पाठकों, विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत है। इसके विविध पक्षों को लेकर अभी भी अध्ययन की सम्भावनाएँ हैं। मेरी तो अब तक के साहित्यिक जीवन की यही कमाई है।

इस ग्रंथ को सुधी पाठकों, विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। पाठकों की सुविधा के लिए इस ग्रन्थ के आरम्भ में भूमिका और हर कथा-प्रसंग के आरम्भ में आगे की कथा का सारांश, शब्दार्थ तथा अन्त में तुलनात्मक अध्ययन के लिए समीक्षात्मक टिप्पणी दे दी गई है ताकि ग्रंथ को आत्मसात करने में कठिनाई का अनुभव न हो सके। अंत में विभिन्न परिशिष्टों में गायकों की सूची, स्थान-परिचय, पात्र-परिचय तथा सन्दर्भित एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थों की सूची भी दे दी गई है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस महत्कार्य में अनेक विद्वानों, साहित्य-मर्मज्ञों, लेखकों, सुधीजनों एवं महानुभावों का तथा कुछ पुस्तकालयों जैसे—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग, उ० प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ, राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता, और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आदि संस्थाओं का योगदान रहा है। मैं सर्वप्रथम आलोच्य गाथा के गायक (अब स्वर्गीय) नूरे केवट का आभारी हूँ जिन्होंने इतना अधिक समय देकर पूरी गाथा का लेखन कराया। प्रथम बार सम्पूर्ण गाथा को लिखने-लिखाने का कष्ट किया अपने प्रिय शिष्य श्री रामकुमार ने अतः उन्हें भी अपनी शुभ कामनाएँ और शुभाशीष ही अर्पित कर पा रहा हूँ। मैं सर्वाधिक ऋणी हूँ अपने श्रद्धेय गुरुवरेण्य डॉ० श्याम तिवारी का, जिनके निर्देशन में यह कार्य पूरा हो सका।

इस ग्रंथ को ही नहीं, मुझे भी प्रकाश में लाने का गुरुतर कार्य किया है आदरणीय ठाकुर प्रसाद सिंह ने अतः उनके प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मुझे समय-समय पर आचार्य प्रवर हजारीप्रसाद द्विवेदी, अमृतलाल नागर, डॉ० विद्यानिवास मिश्र, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, श्री श्रीकृष्ण दास, डॉ० शम्भुनाथ सिंह, डॉ० परमेश्वरी लाल गुप्त, श्री मोहन लाल गुप्त, अशोक जी, श्री चन्द्रमोहन शर्मा, अजम शेखर तथा डॉ० रामहित ओझा से भी परामर्श, प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला है अतः मैं उनके प्रति श्रद्धावनत हूँ। इस महत् कार्य में मेरे शुभेच्छुओं, मित्रों जैसे देवकुमार मिश्र, उदयशंकर दुबे, मुनीर बख्श आलम, एम० ए० खाँन, एस० एन० श्रीवास्तव, सन्तबख्श भारतीय, जगदीश पंथी, श्रीनाथ मालवीय, रामकृष्ण तिवारी, हरिहर आदि का भी कम योगदान नहीं रहा है। शेखजैगुल आब्दीन, एस० अतिबल, सुधेन्दु पटेल तो मेरी इस यात्रा के सहयात्री रहे हैं, अतः उन्हें धन्यवाद क्या दूं। हम सब अभी भी यात्री हैं।

लोकवार्त्ता शोध संस्थान
राबर्ट्सगंज, मिरजापुर
उत्तर प्रदेश।

—अर्जुनदास केसरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिकी में वर्णित मिर्जापुर के प्रमुख वा स्थान रा

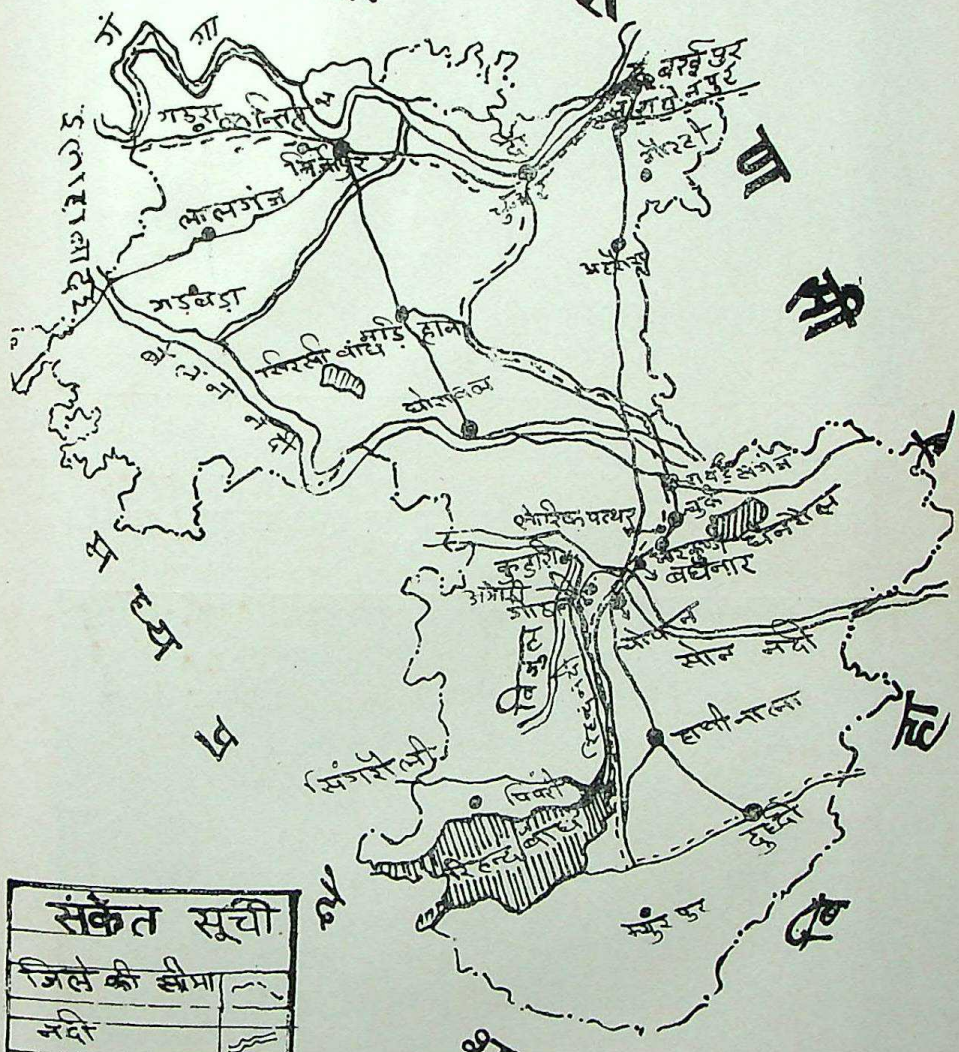

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अगोरो दुर्ग को भोतरो दीवार का शिलालेख । इसे राजा मोलागत का किला कहते हैं । लोरिक का इसी से युद्ध हुआ था ।

मारकुण्डी घाट स्थित लोरिक पत्थर
जिसे लोरिक ने अपनो तलवार से काटा था ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

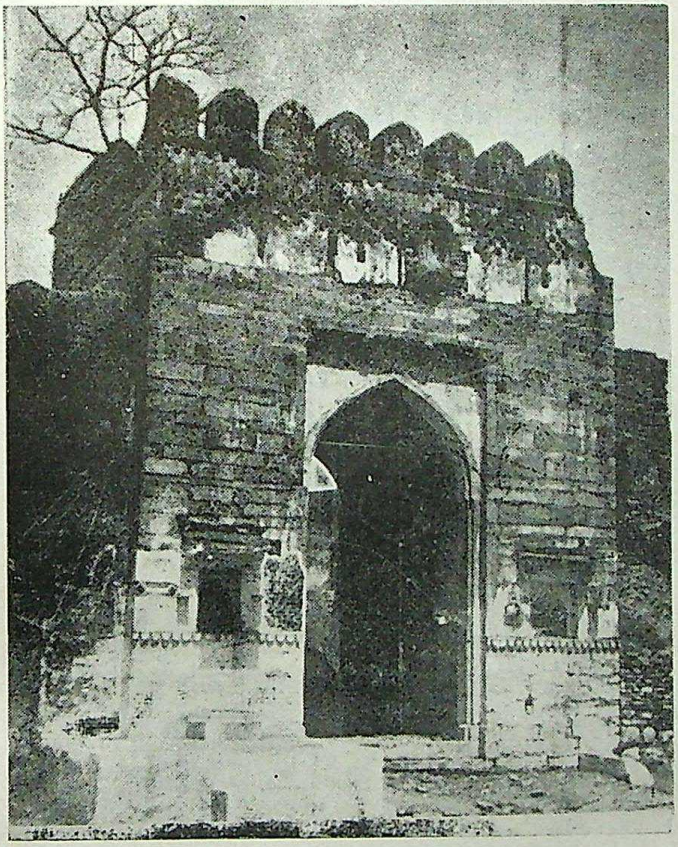

अगोरो दुर्ग का मुख द्वार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

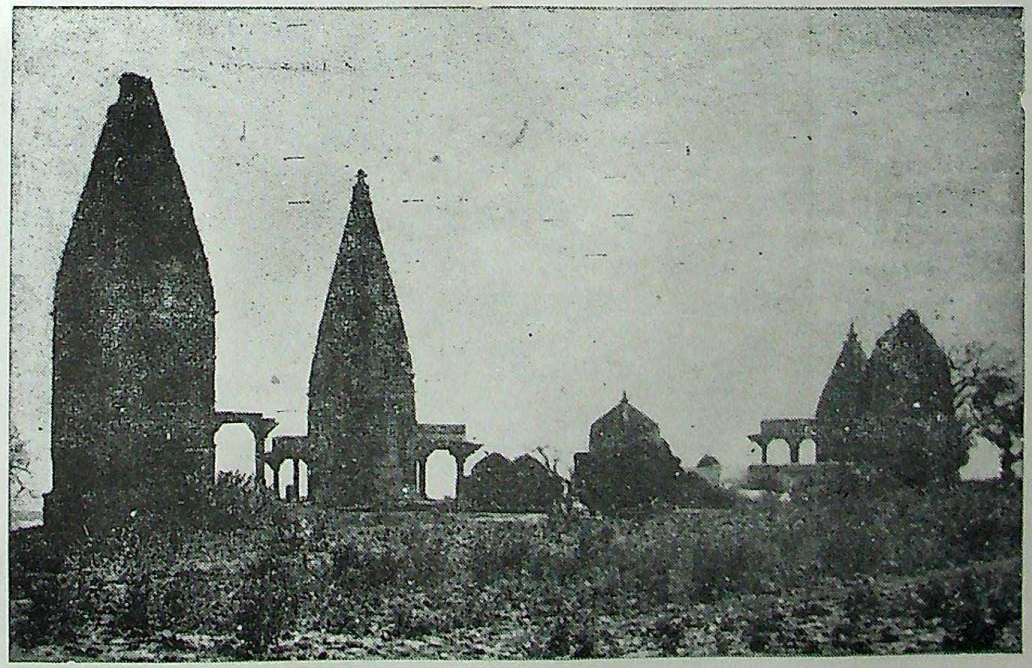

गोठानी के मंदिर : लोरिक की बारात यहीं टिकी थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोठानी की देवी जिसने लोरिक को विजयी होने का वरदान दिया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अगोरी स्थित मनियां देवी
लोरिक ने इस देवो से भी वरदान प्राप्त किया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

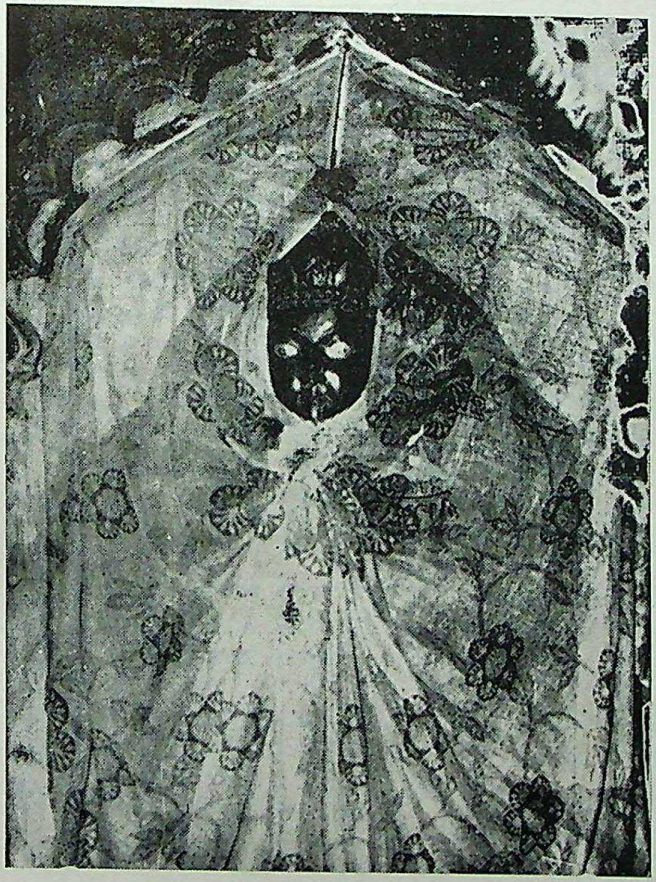

लोरिक की आराध्या बरम्हाइन देवी (बलिया)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

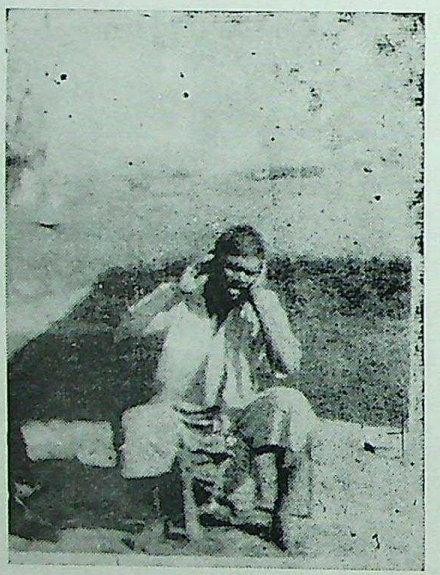

लोरिकायन के गायक नूरे जिनसे पूरी गाथा लिखी गई ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिकायन

पहला खण्ड

लोरिक-मँजरी-बालकाण्ड

(क) लोरिक के जन्म की कथा

(दूधनाथ यादव के अनुसार)

सारांश—(1) लोरिक का जन्म—गउरा गाँव में बूढ़ कूबे और खुइलन रहते थे। उन्हें कोई संतान न थी। शाम का समय था। जब खुइलन का चौथापन आया और कोई पुत्र पैदा नहीं हुआ तो उन्हें चिन्ता हुई। वह बूढ़ कूबे (पति) के पास भोजन लेकर जा रहीं थीं। मार्ग में बच्चे घर-घरौना[1] खेल रहे थे। खुइलन के पाँव से बच्चों का खेल बिगड़ गया, बच्चे रोने लगे, तब तक घर से एक ब्राह्मणी स्त्री निकली और ताना मारती हुई बोली 'तुम्हें कोई लड़का नहीं है क्या, जो लड़कों का खेल बिगाड़ रही हो।' यह बात खुइलन को लग गयी। वह जंगल में जाकर रोने लगीं, तब तक एक मुनिजी प्रकट हुए। उन्होंने आने का कारण पूछा तो खुइलन ने कहा—"मैं अब जीवित रह कर क्या करूँगी जब पुत्र न होते के कारण ताना ही सुनना है।" इस पर मुनिजी ने रविवार का व्रत रहने और गंगा स्नान करने को कहा और बताया कि इससे पुत्र-रत्न की प्राप्ति होगी। खुइलन प्रातः होने ग्रहण के दिन रवि का व्रत रहीं और जब गंगाजी स्नान करने चलीं तो उनके मन में आया कि जीकर क्या होगा, गंगाजी में ही जान दे दूं। ऐसा सोचकर ज्योंही गहरे जल में कूदीं कि गंगाजी ने प्रकट होकर कहा "जान मत दो। लो, पाँच जड़ी देती हूँ, इसे खाओ, पुत्र-प्राप्ति होगी।" गंगाजी के इस आश्वासन पर वह उठीं और स्नान करने लगीं, तब तक एक कौवा आया और एक जड़ी लेकर उड़ गया। एक घोड़ी चर रही थी। कौवे के मुख से

---

1. गाँवों में अब भी बच्चे मिट्टी का घर बनाकर खेलते हैं। उसे घर-घरौना का खेल कहते हैं।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह जड़ी गिरी जिसे उस घोड़ी ने खा लिया, जिससे मंगरू नामक बलवान घोड़ा पैदा हुआ।[1] शेष चार जड़ी लेकर घर की ओर चलीं। रास्ते में दो औरतें मिली, जिन्हें कोई पुत्र नहीं था, खुइलन ने दो जड़ी उन्हें भी दिये। अब दो जड़ी और बची।

खुइलन उसे लेकर आगे बढ़ीं। गउरा गाँव में आने पर बिजवा नामकी धोबिन मिली। उसे भी कोई पुत्र न था। बिजवा ने कहा—"गोंहिन, आप स्नान करने गयी थीं, कुछ प्रसाद लायी हों, तो दीजिए।" खुइलन ने एक जड़ी उसे भी दे दिया। बिजवा ने उसे खाया, जिससे अजई नाम का महान् योद्धा पैदा हुआ।[2] अब एक जड़ी बची जिसे खुइलन ने स्वयं खा लिया। अब ब्रह्माजी को बड़ी चिन्ता हुई कि इसे पुत्र पैदा होगा कैसे? भाग्य में तो बदा नहीं है। फिर भी, कुछ उपाय तो करना ही पड़ेगा। इतना सोचकर वे इन्द्रासन गये। वहाँ जाकर इन्द्र से कहा 'मुझे एती वीर को मृतलोक ले जाने के लिए आज्ञा दीजिए। उसे खुलइन के गर्भ से पैदा कराना है।', एतीजी सुन रहे थे, उन्होंने कहा, 'ऐसे अकेले जाकर मैं क्या करूँगा, मृतलोक में जाकर कुछ काम भी तो करना पड़ेगा। अत्याचारियों का अंत करना होगा, अतः मेरे दाहिने कन्धे पर दुर्गाजी को भी जाने का आदेश दीजिए।" ऐसा ही हुआ। एती के रूप में खुइलन के गर्भ से लोरिक का जन्म हुआ जो दुर्गा का भक्त था और जिसने इतना बड़ा पुरुषार्थ दिखलाया।[3]

पाँच जड़ी से पाँच वीर पैदा हुए जिनमें लोरिक-अजई दो मुख्य थे। जब ये बारह वर्ष के हुए तो गउरा में अखाड़ा खोदकर कुश्ती का अभ्यास करने लगे।

(क) लोरिक का जन्म

सुमिरनी—राम राम रघुनन्नन धन-धन करता नाथ भगवान।
कहलँऽ के रामइं नऽ नउवाँऽ[4] हम लेऽहल॥
देबी कऽ लेले बाटी ए रामा सरतिया न हो मनाऽऽइ।
दूऽइ जून[5] राम क नाम लेहल॥
एक संझा[6] एक सबेरवाँ[7] ले बिहाऽऽना।
एक बेरी अउरो[8] नाम हम राम क लेहल॥
के तऽ फिर गइया बयनवाँ के अड़ाऽऽर।
एक बेर अउर राम क नाम हम लेहल।

---

1. इसी घोड़े पर चढ़कर लोरिक अभोरिका ने युद्ध किये थे, 2. इसकी वीरता का वर्णन आगे किया गया है, बंठवा, लोरिक इसी के शिष्य थे, 3. आगे की कथा नूरेकेवट कुरुहुल के पाठ से सुनिये, 4. नाम, 5. समय, 6. सायंकाल, 7. प्रातः, 8, और।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जवने दिना कतहूँ लमहर[1] के ए रामाँ,
कइले हम हई पयाऽऽऽम[2]।
एठे[3] सुमिरत बाई[4] माई भुइंधरती,
ओठे सुमिरत हम-ए मइया इनरवापुर[5]क हो ऽकैलाऽऽस।
बायें सुमिरल बनसत्ती, दहिने सुमिरत रहली एऽ मावाऽ[6],
दुरुगवा[7] नऽ बड़ि होऽऽ माऽऽइ।
जीभी के टूनगा[8] पर सुमिरत बाई माई सारदा के,
जवन भूललि-भूललि अछरिया[9] मोर देलेन बताऽऽइ।
कण्ठे में सुमिरत हई कठेसर,
लेकिन हृदय में ए मइया गउरीनंदन गणेऽऽस।
अरे भागे के दायें सुमिरत बाई भगवती,
रनवाँ[10] जीतबइ करबू[11] ए मइया दुरुगवा मोरि हो माऽऽइ।
जेह समय जन्म भयल लोरिक कऽ,
ओह समय सवा पहर बरसा भइल बरियाऽऽर।
लोहे कऽ सवा पहर बरसा भइल बरियाऽऽर,
बेला बत्ती कऽ, महल भइल ह ओजरार।
तिन पल बीति गयल ह खुइलन का,
चौथे में लोरिक लेले हवंऽ अवतार।
जवने समय खुइलन चलल रहनी घरे से,
बूढ़ कूबे क पानी दाना लेकऽ गाइन के अड़ाने।
बीच रास्ते में दूठे[12] लड़िका खेलत बायँऽ खेलवाड़,
खुइलन पयर[13] से लड़िकन क बिगड़ि गयल बा खेलवाड़।
बड़े जोर से लड़िका रोवनऽ,
घर में से माता निकललि बा बड़ी जोर बरियार।
बड़ा जोर से मेहना[14] मरले बा खुइलन के,
खुइलन मन में सोचत चलि देहलेनि उपाय।
जाय के जंगल में रोदन कलइ लागलि हइँ,
ओही समय पहुँचल बायँऽ एक मुनी बरियार।
"सुनऽ माता खुइलन काहे के रोदन करति हऊ,

---

1. दूर, 2. प्रयाण, 3. यहाँ- 4. हूँ, 5. इन्द्रपुर, 6. माता, 7. दुर्गा, 8. जिह्वाग्र, 9. अक्षर, 10. रण, 11. करोगी, 12. दो, 18.पैर, पाँव, 14. ताना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकर भेद देबू तूँ हम्मइँ बताइ।
बोललि बाइँ खुइलन "सुनऽ-सुनऽ मुनीजी,
कहल करऽ आपन बिनती मानि लेबा हमार।
मरले बाइ एक ब्राह्मणी मेहना हम्मइं[1],
हमरे बूते सहलवा नाहीं जाय।
अब हम जवन बा न जाब गउवाँ पर,
जंगल में जिन्दगी देब हम आपन गँवाइ।"
तवने बखत बोलल बायँऽ मुनी जी,
"सुनऽ सुनऽ माता खुइलन।
कहल करऽ आपन, बिनती मानि लेबिउ[2] हमार,
रबी कऽ बरत रहा, गंगा जी अस्नान करा।
तोहार कारज सफल होई बरियार,"
तोहार कारज सफल होई बरियार।"
ओइ समय खुइलन ऊहाँ से चलि देलेनि घरे के,
लबटि अइनी अपने पवन दुवार।
दइउ संजोग राति बीति गइलि,
बिहना से बरत परत बा बरियार।
लागल रहनऽ गरहन करै चलल हइँ अस्नान,
जाइ कऽ गंगाजी कइले बाइँ नहनवां।
जेह समय नहाइ कऽ करारे पर आइ गइलिन,
ओदकी[3] धीती छोड़ि देहलेनि।
झुरकी[4] धोती अंग में देले बाइँ लगाइ।
फेरि से कूदि गइलि बाइँ,
देवइ बदे आपन जाऽऽन।
गइलि बाइँ जल अन्दर,
भइलि बा भेंट गङ्गाजी से बरियार।
हाँथ जोड़ि के बोललि बाइँ गङ्गा,
"सूनऽ माता खुइलन कहल करऽ आपन।
बिनती मानि लेबिउ हमार,
मति जान तूँ दाऽ हमरे जल में डूबि कइ।
हानि होई हमार बरियार,

---

1. हमें, 2. मानलोगी, 3. ब्रत, गीली, 4. सूखी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ला, पाँच जड़ी तोहइं देवइ,
तोहार कारज होई बरियार।"
एतना कहि के गङ्गा जी,
अपने लहर से फेंकि देलेनि हंऽ बरिऽयार।
आइ गइनी खुइलन करारे पर फेरि,
लोटी-धोती ले के चलि देहलेनि।
कुछ दूर पर पहुँचि गइलि बाइं,
एक नदी परलि बाइ बरियार।
बूटी धरइं लोटिया धोवइं मुंहवाँ जाऽइ,
दइउगती एक बूटी कउवा लेइ कऽ गयल पराइ।
भागि गयल बा कउवा नेउरापुर में,
जड़ी देले हऽ गिराइ।
चरति रहलि पवनी घोड़ी,
जड़ी गइलि बाइ खाऽऽइ।
रहि गयल गरभ घोड़ी के,
पैदा मँगरू भयल बाइ बरिऽयार।
जौने बखत कउवा बूटी लेइकऽ ऊड़ि गयल[1],
अ उलटि कऽ खुइलन तकलेन हंऽ।
मनवाँ में कइले बा बिचाऽर,
हो हो दइउ नरायन।
का विधि लिखले हवंऽ लिलाऽर,
अऽ एतना कहि के खुइलन।
कइले बा पयाम,
एक्कइ मरले एक्कइ कटले।
पहुँचि गइलि बाइं गउरा के अपने बजाऽर,
बीच रास्ते में एक मेहरारू[2] गोइठा[3] बीनत रहल।
ओहनउँ दूइ सवति रहनी,
ओहनउँ के लड़िका एको ना रहनऽऽ।
खूस होके खइलन जड़ी, दू ठे देले बा थम्हाइ,
कहले बाइन के "एक-एक जड़ी खाबा सो तोहनों।

1, भाग गया, 2. स्त्री, 3. उपली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तोहनों क कारज सूफल डोइ जाई बहिनी,
गउरा में बरिऽयार।"
लेके जड़ी चलि गइलि बाईं,
अपने पवन दुवार।
दुइ जड़ी बचल, पहुंचि गइनी, पवन अपने दुवार,
ओही समय बिजवा नाम क धोबिन।
आइल खुइलन के पवन दुवार।
"सुन सुन खुइलन,
कहल करऽ आपन बिगती मानि लेबिउ[1] हमार।
गई रहलू नहाये, कवनो परसाधी[2] लियाइलि होबिउ,
त हमके देबई करबिउ बहिनी।
गउरवाँ में न हो टेऽकाऽऽऽइ।
लेचल के नहाइ धोइ के हमहूँ तोहार जड़ी खाइ लेहित,
कारज सफल होतइ बहिनी
गउरवा में न हो हमाऽर।"
ओह समय खूस हो के खुइलन,
एकठे जड़ी लियाके देले बाईं मोर बहिनी।
धोबिनियाँ के न हो टेऽकाऽऽइ।
ले गइलि बा धोबिन नहाइ ये,
जड़िया लेले बाइ मोर बहिनी,
गउरा में न हो खाऽऽइ।
जौने बखत खाइ गइलि बाइ जड़ी धोबिन,
गर्भ रहि गयल बा बरियार।
समय दीन अइले पर, जन्म भयल बा गुरु अजई कइ बरियार,
बचल एक बूटी नहाइ धोइ कऽ खुइलन गइलि बाईं खाइ।
जौने बखत बूटी खइले बाईं खुइलन,
ब्रहमा गयल हवँऽ घबराइ।
अरे लीखल पूत नहिनी एन्हईं,
कवन करब इहाँ हम उपाइ।
लेकिन देहल बूटी हवइ गंगा कऽ,

1. मानलोगी, 2. प्रसाद।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कवनो करइ बदे पड़ल हम्मइं उपाइ।
ओइ समय इन्द्र भगवान के यहाँ गपल हवंऽ ब्रह्मा,
बतिया कहत हऽवंऽ समुझाइ।
बोलल बायंऽ ब्रह्माँ इन्द्र भगवान से,
"एती[1] बीर के हम्मइं देदा।
ले जा मृत्तुलोक मैदान,
ओह समय एती बीर सुनले हवंऽऽ।
ब्रह्माँ से बोलल बायंऽ बाति ललकार,
"बहुत बीर बायंऽ इन्द्रासन में।
कौनों दूसरे के ले जा मृतुलोक मैदान।"
हांथ जोड़ि के बोलल बायंऽ ब्रह्मा।
"एतीजी कहऽ करऽ आपन,
बिनती सुनऽ हमार।
चल चलऽ मृत्युलोक में,
जवन कहऽ पूरा करब तोहार।"
ओह समय एतीजी कहले हवँऽ,
"मनवइ करबा ए ब्रह्मा, कहनवां निजु कऽ हमारऽ।
दहिनी अंऽ दुर्गा के देदा
तब तऽ चलबइ हम करबइ ए ब्रह्मा।
मिरितवा भय होदाऽऽन।"
खूस होके ब्रह्मा बोलल हवंऽ के।
"पूरा करब मइया कहनवां निज के तोहार,
जौने बखन जन्म लेले बायंऽ लोरिकगउरा में।
ओइ बखत मचल खुसियाली बा बरियार,
पाँच जड़ी रहल गंऽगा कऽ।
पांचो बीर भयल बायंऽ तइयार,
जौने समय बारह साल कऽ भयल हवंऽ।
सङ्घवा धइले बायंऽ रामाऽऽ,
धोबिया कइ होऽऽ बरियार।
जौने समय खन देले हवंऽ अखाड़ा करमामेल महुबा तर,
अ दून्नों बीर लड़त हऽवंऽ अखाड़ा में बरियाऽर।

---

1. एतीवीर का नाम लोक-विश्रुत है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समीक्षात्मक टिप्पणी—लोरिक-जन्म की यह कथा प्रायः किसी पाठ में नहीं मिलती। नूरे केवट ने भी इतनी लम्बी गाथा में लोरिक के जन्म की बात कहीं नहीं की। चिरागन के पाठ में लोरिक के जन्म का उल्लेख दूसरे ढंग ले किया गया है। उसमें भी सूर्यव्रत की बात आयी है, किन्तु जड़ी का कहीं उल्लेख नहीं हुआ है। नूरे केवट की कथा के पूर्व इस वृत्तान्त को जोड़ने से लोरिक के सम्पूर्ण जीवन पर प्रकाश पड़ता है।[1]

(2) **मोलागत और महरा की स्थिति**—अगोरी का राजा मोलागत स्वभाव से दुष्ट है। वहीं का महरा अहीर भी राजा समान धनी है। क्योंकि मोलागत 12 पाल (भू-भाग) का स्वामी है तो महरा भी कई लेंहड़ा (समूह) गायों का स्वामी है। राजा से समस्त प्रजावर्ग आतंकित एवं असंतुष्ट है, किन्तु इसे उसकी कोई चिन्ता नहीं है।

(3) **दोनों में वैरभाव का आरम्भ**—एक दिन राजा अगोरी दुर्ग से निकलकर महरा के दरबार की ओर जाता है और दूर से ही उसे सोने की मचिया (आसन) पर बैठा देखता है। राजा को अपने निकट आता देखकर भी वह स्वागत में उठता नहीं है। तब राजा दस हाथ पीछे हटकर जोर से खाँसता है ताकि महरा उसका सम्मान करने के लिए उठे, किन्तु वह तब भी नहीं उठता। अन्त में, बारम्बार राजा के खाँसने की ध्वनि महरा के कानों में पड़ ही जाती है। तब वह घबरा कर उठ जाता है और कटूक्ति-स्वरूप यह कहता है—"ऐसे नामर्द राजा ने अगोरी में जन्म ले लिया है जो प्रजा का खान-पान तक निहारा करता है, इससे हम लोगों का तो अगोरी में रहना दूभर हो गया है।"

(4) **महरा की कटूक्ति से अपमानित होकर राजा की प्रतिशोध भावना**—राजा उसके इन अपमान जनक शब्दों को सुन उल्टे पाँव किले में लौटकर चिन्तित होता है। अवसर पाकर चुगुला सोनार चुगुली करने के लिए राजा के निकट जाता है और राजा की चिन्ता का विषय जानकर वह महरा को बुलवाने के लिए राजा के कुछ सैनिकों को भेजता है। सैनिक महरा को जबरदस्ती पकड़ कर लाते हैं। फलतः प्रजा-वर्ग में खलबली मच जाती है तथा महरा के पक्षधर भी वहाँ आ जुटते हैं। तदनन्तर महरा राजा से अपना अपराध पूछता हैं।

(5) **द्यूत-क्रीड़ा का प्रसंग**—उत्तर में राजा कहता है "गलती तो तुम्हारी कुछ नहीं है, हमारी ही है। सचमुच तुम्हारे समान साहसी बारहों पाल में मुझे कोई भी

1. लोरिक के जन्म की कथा प्राप्त करने के लिए इन पंक्तियों के लेखक को बड़े पापड़ बेलने पड़े हैं। संयोग से पाण्डुलिपि प्रेस में देते-देते यह कथा प्राप्त हो गयी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नहीं दिखता। तुम्हीं मेरे वास्तविक जोड़ीदार हो। हममें से कोई एक ही इस प्रदेश का राजा हो सकता है। आओ, आपस में जुआ खेलकर इसका निर्णय कर लें, जो जीते वही राजा बनने का अधिकारी है।"

(6) महरा की जीत—इस प्रस्ताव पर महरा राजा के साथ जुआ खेलने को तैयार हो जाता है। राजगद्दी पर महरा कुश की सथरी (चटाई) पर बैठ जाता है। कौड़ी छाँकी जाती है। पहिली बार की कौड़ी में महरा राजा का घोड़ा घुड़साल, दूसरी में हाथी-हथिसार, तीसरी में घटिहटा गाँव, चौथी में अगोरी पाल, पांचवीं में राजा की गद्दी, किला और दरबार सब जीत लेता है। छठी कौड़ी का दान जीत कर वह कान पकड़कर राजा को सिंहासन के नीचे उतार देता है और स्वयं गद्दी पर बैठ जाता है। राजा निराश होकर पश्चिम दिशा की राह लेता है। राजा की यह दशा देखकर कृपालु तथा चिन्तित ब्रह्मा ब्राह्मण का रूप बनाकर राजा के पास आते हैं तथा दीन-दशा का कारण पूछते हैं। राजा सारा वृत्तान्त सच-सच बता देता है।

(7) निर्वासित राजा औ कृपालु ब्रह्मा—छद्मवेषी ब्रह्मा राजा को वापल लौट कर और अगोरी के महाजनों से दो-चार सौ रुपये उधार लेकर महरा से फिर जुआ खेलने की सीख तेते हैं और इसके द्वारा राज्य के पुनः मिल जाने की भविष्यवाणी करते हैं।

●

नूरे केवट, कुरुहुल, चोपन (मिर्जापुर) का पाठ

राजा मोलागत और महरा में संघर्ष का आरम्भ

दखिन न देसवा बाड़य[1] खङार[2], एक उहाँ[3] नगर अगोरी बाय[4] पाल[5]।
सोनय भदरवा[6] के बाय तीर, खोरिया[7] में उर्दू बसल बाय बजार।

---

1. है, 2. अंगार, खंङ्गार नाम की एक वीर जाति, 3. वहाँ, 4. है, 5. टप्पा, 6. भदरवा=शोणभद्र, 7. खोरिया=गली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा मोलागत का महरा के घर जाना

बारह न पाल का मलिकार[1], रजवा[2] बैठल मोलागत जब बाय।
जेकर उर्दी कहुलवा बिहलाय[3], नेम[4] से लागत कचहरी रजवा का।
रजवा का कसी के लगत बाय कचहरी, कितनो राजा दयिवा का दरबार।
एक रोज रजवा अरथ बाय घटवले, मनवाँ में करत बाय विचार।
केऽ हम बारह पाल कऽ मलिकार, देख भाई परजा हमरे हुकूमत में बाय।
के कोई परजा में जनमल जोड़ी बाय दाऽऽर, संझा न भइल सँझेखर।
कैसों भाई बीतल रतिया ओठिन, जौन दिन भोर होत बाय बिहाऽन।
पुरुब[5] कउवा मचवले बाँयऽरोऽर, ऊठल न रजवा बाय मोलागत।
जाय कर दिसा होत बायऽ मैदान[6], छत्री कुल्ला-गलिया[7] जब करय।
जायकर चौकी करत असनान, पूजा न पाठ आपन करलेन।
राजा किला से हो गयल बायँऽ तैयार, गोड़वा[8] में सोने खड़ाऊँ पहिनले।
हाँथे सोबरन[9] न छड़िया बाय देखात, पुरुब होतय सुरुजवा[10] जब ऊदय।
बाहर राजा उतराय सिढ़िया किलवा का, राम नाम गुन गावै के ठाकुर।
एकदम जूटत उधुवा के नाऽर[11], एहर[12] एक-एक सहुआ दुकानदार।
जौन दिन घूमल पलक छत्री का, परजा ठोंकय तलवा तकदीर[13]।
वह दिन जूटत राजा बाय मोलागत, परजा निहुर[14] करत बाय परनाम।
राजा आसीरबाद बाय देत, कितना चीनी गिलास घोराय सरबत।
कितना पानी पत्तर बायंऽ टेकावैं, कितना पानय न बीरा[15] लगावैं।
राजा सबके करत बायंऽ इनकार, पैंड़े में सबके देत बायंऽ असीस।
एकदम रेंगल राजा जाय मोलागत, ऐसे तैसे बारह पाल[16] घूम गऽयल[17]।
परजा सब कोई करत बाय परनाम, जोने बखत घूमल खोरी दखिनयँ का।
जहाँ महरे अहिरे का दरबार, एकदम राजा न रेंगल बाय रेंगावल।
जायकर जूटल दुवारे महरे का, जौन अहीर बाय महरा।
ऊ फेर बैठल अऽनई में बाय, जेनकर सोने गूँजे क मचिया[18]।
जैसे बैठत पुलिसवा देखा आय, वह चाल महरा अहीर बैठल।

---

1. मलिकार=मालिक, 2. रजवा=राजा, 3. कहुलवा=छीमी फली, 4. नेम=नियम, 5. पुरुब=पूरब 6. मैदान=पाखाना, 7. गललिया=कुल्ला कर के मुँह साफ करना, 8. गोडवा=पाँव, 9. सोबरन=सोना, 10. सुरुजवा=सूर्य, 11. उधुवा का नाला, आगोरी के पास का एक स्थान, 12. इधर, 13. ताला-तकदीर ठोकने का मुवहारेदार प्रयोग, 14. झुक कर, 15. पान का बीड़ा, 16. टप्पा, 17. घूमगया (कहते हैं, अगोरी बाजार, खण्डों में बँटी थी), 18. बैठने का आसन।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा घण्टा देखत बाय छमीछा,[1] अपने में लेलेस अरथ बाय घटाय।
कितनों महरा अहीर जौन बाय, परजा ठहरल अगोरी में हमार।
हम फेर राज-दयिवा[2] का जोर। हमरे में कौनो गलती नाहीं देखाय।
गलती लौकत एठे हमार। एकदम दस हाँथ पीछे रजवा बाय पछिलल।
जायकर दुरिहैं से खखारी बाय मारत, अहिरै के काने सबद चल जाय।
एकदम ऊठल अहिर जलकाय[3], जाय कर भयल दुवरवा पर ठाढ़।
जौन दिन फिरल पलक छत्री का, अहिर जर-मर भयल खङार[4]।
कहलेन "हो-हो दई हो नरायन, का ब्रह्मा लिखला तलवा तकदीर।

महरा द्वारा राजा का अपमान तथा राजा के सिपाहियों द्वारा महरा को टेक कर राजा के समक्ष उपस्थित किया जाना :—

कौन जबाना बाय पलटल, अगोरी में गाँडू[5] सुवा बाय जनमल।
परजन का घूम-घूम तावा बाय देखत,[6] कैसे गुजर अगोरी में बाय।"
इतना न राजा सुनत बाय छत्री, गुस्सा में राजा भयल भुरकुस।
दहिने अँङुरी दाँते बाय चबाय[7], एकदम लौटल किला भण्डार।
राजा के अइसन सोच बाय सकाइल, जायकर अन्न छोड़ल बाय जलपान।
सून भइल कचहरी राजा का, झंखत बायं कचहरी के सब लोग।
जायके राजा के पलङे से जगावै, मन न ठटले बायं मंत्री।
चुगुला[8] बोलत दरियाँ बायं सोनार, राजा न सुनवा महराजा।
दरियाँ मानऽ कहल हमार, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
बारह न पलिया के मलिकार, के फेर बली अगोरी में तोहसे जनमल।
ओकरे जामल तरुनियाँ में दाँत[9], राजा जलदी आडर[10] तूं लगवैबा।
दस-बीस सिपहिया देवा दौड़ायऽ, वह दिन ऊठकर राजा पलँगे पर बैठल।
आडर न राजा बाय लगवले, दस-बारह सिपाही डहरल[11] किला से।
जाय कर छेंकलेस महरा का दरवार, महरा अहिर अङनई बाय मीलत।
सिपाही हाँथय-हाँथ लाग जाय, एकदम टेकले अहिर के लेले जानऽ।
टाइम[12] दस बजे का बाय दिन, परजा बारह पाल का बाय देखत।

---

1. घण्टाछमीछा, घण्टा-प्रहर का पर्याय है, 2. ईश्वर के समान प्रतापी राजा, 3. घबड़ा कर, 4. अंगार, राख, 5. एक प्रकार की गाली, 6. ताबा देखना मुहावरेदार प्रयोग, 7. दाँते अंगुली चबाना, 8. चुगुला, चुगुली करने वाला सोनार जाति का व्यक्ति जो उन दिनों प्रायः हर राज-दरबार में रहता था, झगड़ा लगाने वाला, 9. ताल में दाँत जामना, मुहावरेदार प्रयोग, 10. आर्डर (अंग्रेजी), आदेश 11. निकल पड़े, 12. समय (अंग्रेजी प्रयोग)।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा के विरुद्ध प्रजा-वर्ग का विद्रोह

देखतय हहरय परजा अगोरी का, "राजा के नीचे राजा बाय अहीर।
तेकर ऐसन गति बाय होत, हमहन का अगोरी में कौन बाय बुनियाद।
चलकर छेंक ला किला रजवा का, महरा कौन गलती बायंऽ कइले।
राजा देलेन सजाइ बरियाऽर", एकदम उजरल[1] पाल बाय अगोरी।
परजा जूटल किला पर बाय, कितनों राजा दयी के दरबार।
जेकर उज्जर[2] किला हो जाय, जायकर महरा अहिर के उतारय।
महरा बोलल अहीर बाय गरेर, राजा न सुनता महाराजा।
"कहना मानऽ एठिन[3] हमार, तोर[4] भाई कौन गलती बाई कइले।
कोन कइली अगोरी में नकसान, इतना देला सजाय बरियार।"
वह दिन बोलत राजा बाय मोलागत, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।

राजा का महरा के साथ कौड़ी खेलने का आग्रह

"सँही गलती अगोरी में तूं नाहीं कइला, गलती कइली अगोरी में बाई हम।
हम फेर बरहो पाल घुम गइली, परजा मिलल नवइयत[5] हमार।
घुमली दुवार जब तोहार, जोड़ी मिलला अगोरी में हमार।
एही बदे[6] कइली एठे बोलाव तोहार, छव व दान का बाय कौड़ी।
एही में लेबा कौड़ी तूं फरियाय, केतऽ[7] भाई राजा बन ऽ अगोरी तूहईं।
केतऽ बनब राजा देखऽ हऽम,दनहूँ का दान बाय बऽढ़त।"
बोलल न अहीर ललकारि, "राजा कौनों हरजा नाहीं बाय।
दान खेलब किला पर बनाय, जेन्हयँ रामयँ दीहैं ऊ[8] लेही।"
राजा बैठत गद्दी पर एक लंगे[9], अहिर बैठत सथरी[10] कुसे के।
अब कुसपैंता बगल बाय दबले, जीतय न दान कूसे का।
कौड़ी मुख-मुख करत बाय जबाब, राजा न कउड़ी बायंऽ छाँकत।
झुकल न दान छली का, अहीर बीनत कोड़ी जब बाऽय।
लेकर छाँकत दाने पर बाय, खुलल न कौड़ी अहिरे का।

महरा की जीत

पहिल न कौड़ी बाय जीतल, राजा का जीतल घोड़ा-घोड़साऽर।
दूसरी न कौड़ी बाय जीतल, राजा का जीतल हथिया-हथिसाऽर।

---

1. उजड़ना (बाहर निकल आने के अर्थ में), 2. आदमियों से भर जाना, 3. यहाँ, 4. तुम्हारा, 5. भावना, ताकत वाला, 6. निमित्त, 7. या तो, 8. वह, 9. तरफ, 10. चटाई,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरी न कौड़ी बाय जीतल, गाँव जीतल घटिहटा बाय खाँड़।
जेमें[1] जव-गेहूँ का बाय खान, चौथी न कौड़ी बाय जीतल।
राजा का जीतल आगोरी बाय पाल, पंचयें न कौड़ी बाय जीतल।
राजा का गद्दी किला दरबार, छठवें न कौड़ी बाय जीतल।
कान धर राजा के गद्दी बाय उतरले,[2] अहिर बैठल गद्दी पर जाय।
ओही न नौकर सिपाही से, डुग्गी देलेस किला पर फिरवाय।[3]
महरा अहीर भयल बाय बादसाह, राजा के किला से बाय उतरले।

राजा का देश निकाला

राह लेलेस पच्छिम[4] डहराय, रोवत न राजा बाय मोलागत।
छली का बहत नैना से बाय नीर, राजा के रसते[5] में रोयबे।
साफ-साफ देबा कड़ी बतियाय, काहे रोवत बिपतिया के ओऽर।
वह दिन राजा बोलत मोलागत; "ब्रह्मा न सुनबा भगवान।
कहना मानऽ एठे हमार, एक ठे महरा अहिर देखा रऽहल।
ओकरे[6] में गलती अगोरी में नाहीं बाय, गलती लौकल अगोरी में बाय हमाऽर।
एठे महरा अहिरे के बलवाय कर, जूवा-पासा कौड़ी देखा खेलल।
जीतल न अहिर महरा, कान धर देलेस गद्दी से बहियाऽय।
रोवत बाई बिपतिया के ओऽर," तब फेर सिरी बोलल भगवाऽन।
"एकदम लौटल किला पर जाबा, जाय कर सहुआ-महाजन[7] के दुकाने।
जायकर दुइ-चार सै रुपिया करजा लेबा, महरा से मीठी जबनियाँ बोलकर।
एक हाँथ औरो कौड़ी खेल ला, फेर से पलटी राज तोहार अगोरी।
सुनकर राजा मोलागत लौटल, उतनयँ में ब्रह्मा छपीते[8] हो जाऽय।
रेंङल न राजा बाय रेंङावल, एकदम गयल सहुअन के दरबार।
जाय कर करजा-उवाम बाय काढ़त, जाय कर किला दरबारे में जूटल।[9]
लौकत[10] न अहिर बाय महरा, "तोहार[11] भाई कौन समान बाय छूटल।
तूँ फेर लौटल अगोरी बायऽ राज", फेर[12] राजा न बोलत मोलागत।

सारांश—(8) ब्रह्मा के बताए उपाय से राज्य की पुनर्प्राप्ति—राजा ब्रह्मा के सुझाव का अवलम्बन करता है। जुए का आयोजन होता है। महरा भी पिनक (बहक) में आकर कौड़ी खेलने जाता है। इस बार राजा कुश की सथरी पर और महरा सिंहासन पर बिराजता है।

---

1. जिसमें, 2. कान पकड़ कर उतारना-मुहावरे के आधार पर, 3. डुग्गी पिटवाना मुहावरेदार प्रयोग, 4. पश्चिम दिशा, 5. रास्ता, मार्ग, 6. उसमें, 7. साहू, 8. अन्तरध्यान 9. पहुँचा, 10. दिखाई पड़ा, 11. तुम्हारा 12. फिर।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मा के संकेतानुसार राजा अपने पाँव के नीचे कुशपैंता दाब लेता है, फलतः उसकी जीत होने लगती है, क्योंकि इसी कुशपैंते को दाबने के कारण पहली बार ही महरा की जीज हुई थी, छह दान में ही राजा अपना सब कुछ वापस पा जाता है।

(9) महरिन की कोख जीतना—राजा सातवीं कौड़ी छाँकने के लिए कह कर इस बार की दान पर महरा को अपनी महरिन की कोख रखने की सलाह देता है और बताता है कि जीत होने पर यदि भविष्य में महरिन को कोई लड़का पैदा हुआ तो वह उसे अपने घोड़े का सईस बनायेगा और लड़की पैदा हुई तो उसे रनिवास में रखेगा। महरा इसे स्वीकार नहीं करता और कहता—"रानी (महरिन) की कोख नहीं, आप कहिए तो मैं गेरु पहाड़ या गाय-भैंस को दान पर रख दूँ" राजा नहीं मानता और जबरदस्ती महरिन की कोख जीत लेता है।

अब महरा अपने घर लौटता है। दूर से ही महरा को दुखी देखकर महरिन उसके दुःख का कारण पूछती है। महरा सारी बातें सच-सच बता देता है। तब महरिन उसे बढ़नी (झाड़ू) लेकर मारने दौड़ती है।

कुछ समय के उपरान्त महरिन की कोख से कन्या जन्म लेती है। राजा उसे पालकी-कहार भेज कर मँगवा लेता है। इसी प्रकार छह कन्याओं का जन्म होता है और राजा क्रमशः सबको अपने महल में मँगवा लेता है।

ब्रह्मा द्वारा राजा की सहायता

इन्द्रासन ब्रह्मा व्याकुल हो जाय, ब्रमा अपने में अरथ बाय घटवले।
महरा अहिरे के जातय हवंऽ, ई[1] फेर राजा-दयी के बाय जोर।
अहिरे के गाई-भैंसी बाईं अलम्मा[2] राजा के कौनो निगरानी नाहीं देखाय।
छली व्याकुल होय कर देस में मरिहैं, बड़ा भारी सरीरे पर अपराध।
वह दिन भगवान ब्राह्मन[3] का धइले न रूप, रास्ते में मिलत राजा से बाय।
"कहलेन राजा न सुनबा महराजा, कहना मानऽएठे[4] हमार।
तोर भाई सीधा-सवइया[5] कम होइहैं, इतनयें में घुमता दुवरवाँ दुइ-चार।
ई सब पूछ कर मतलब का करबा, वह दिन ब्रह्मा बोलत बाय ब्राह्मन।
"एक न तुहैं अगोरी के हव ऽमालिक, के फेर दीहैं भिच्छा हमार चुकाय।"
तब फेर राजा बोलत मोलागत, "बाबा रेंऽल अगोरी तूँ जाबा।
जे भाई होइहैं अगोरी में मलिकार, ते फेर दीहैं भिच्छा तोहार चुकाऽय।
नाहीं मालिक उहां[6] कोई लौकी,[7] जाय कर खैबा रजिया में अमोछ[8]"।
तब फेर ब्रह्मा व्याकुल बाय परगट,[9] कहलेन "राजा सुनबा न महाराजा।
कहना मानऽ दरियाँ हमार, न तऽ इहाँ जोगी आयल बाय फकीर।

---

1. यह, 2. सहारा, 3. ब्राह्मण, 4. यहाँ, 5. भोजन के लिए मिला अन्न, 6. वहाँ, 7. दिखलाई पड़ेगा, 8. भोजन विशेष, 9. प्रकट।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हम फेर सीरी[1] हई[2] भगवान, राम नाम गुन गावै के ठाकुर।
लरमी बोलल सबद में बाय, एक हाँथ बाय अगोरी के बाय लागल।
एक हाँथ औरो कौड़ी खेल ला, कितनो न जीतल अहीर बाय महरा।
अहिरे के पिनकल मन जब बाय[3], राजा कौनो हरजा नाहीं बाय।
फेर से खेलय दान तूँ बनाय, फेर से भय गयल दान दुनहूँ का।
अहिर गद्दी पर बैठल; राजा सथरी कुसे के बैठल।
अब कुसपैंता राजा बाय दाबत, वह दिन अहिर कौड़ी बाय छाँकत।
जेकर झुकल दान पुन[4] बाय, खुलल बाय दान छत्री का।
औमे सातय कौड़ी के बाय दान, पहिल न कौड़ी राजा जीतल।
एकदम जीतल घोड़वा आपन घुड़सार, दूसरी न कौड़ी आपन जीतल।
राजा जीतल हथिया-हँथिसार, तीसरी न कौड़ी बाय जीतल।
खाँड़ जीतल घटिहटा[5] बाय गाँव, जेमें जौ-गोहूँ का बाय खान।
चौथी न कौड़ी बाय जीतल, राजा जीतल अगोरी बाय पाल।
पंचवें न कौड़ी बाय छँकले, एकदम जीतल किला भण्डार।
छठपें न कौड़ी बाय जीतल, कान धर देलेस अहीरे के उतार।
राजा न गद्दी पर बैठल।
तब, सतयें न कौड़ी बाय बचल, फेर बोलत राजा बाय मोलागत।
"तूँ महरा न सुनबे तोयें अहीर, सङ्घी मनबे कहल हमार।
यहाँ पर हरबे कोख महिरन का[6], तबय खरीयत[7] अगोरी में बाय।
बेटवा त सूबा जनमिहैं, आयकर किला में भोगाइब रनिवास।"
तब फेर हाथय जोरय करय बिनती, महरा बोलत अहीर अब बाय।
"केतऽराजा रऽखला दाँव बखरी का, के भाई गेरुआ पर्वत पहाड़।
जहाँ गइया-भैंसी नाहीं अभाव, इन्हें दान पर रख लेबा।
छोड़ देबा कोख ब्यही का," राजा जबरी सख्ती[8] बाय कइले।
अगोरी में अपनय जात बाय पुजवले, जबरी जीतल कोख महरिन का।
महरा बड़े सबेरे के बाय बात, एकदम लौटल किला से बाय।
एकदम घरे-दुवारै अपने जाय, महरिन अङ्न बाय बहारत[9]।
जौने दिन लखत सूरत महरे का, बोलत न लिरिया[10] वहाँ बाय।

---

1. श्री, 2. हूँ, 3. मन पिनकना मुहावरा है जिसका अर्थ है उत्साहित होना, 4. फिर से, 5. गाँव का नाम इसमें आए प्रायः सभी गाँव तथा स्थान आज भी विद्यमान है, 6. कोख हारना, महरा की भावी संतान भी राजा के अधीन होगी, 7. खैरियत, कुशल, 8. शख्ती, 9. बटोरही है, 10. स्त्री (पत्नी)।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, अब सुन लेबा मथवा का महुवार।
कैसन धूमिल चेहरा तोहार बाय, हमके देबा सरेख लगाय।"
तब फेर बोलत अहीर बाय महरा, "ब्यही सम्मय राज राजा लवटवले।
जबरी जीतल कोख बाय तोहार," सुन कर महिरन बढ़नी बाय उठावत।
"के तऽ सइयाँ[1] गाय-भैंस तूं हरता, के फेर दरब[2] हार जाता पुरान।
ई का हरला कोख तूं हकार, देसवाँ में बहुत हिनइया[3] बा देखात।
कहलेस "ब्यही सुनबे तोयं हमार, बहुत न विनती राजा से कइली।
जबरी कइलेस अपने मन के काम, इतना बातय जबाब बा भयल[4]।
समय बीतत अगोरी में बाय, ऐसे-तैसे कुछ दिन बाय बीतय।
जितना जन्मत लड़की महरे का, राजा पलकी[5] कहार बाय सजवात।
ले जाय किला भोगवावत रनिवास, झंखत न धनवाँ बाय महरिन।
कहलेस "हो-हो दयी बाय नरायन, का ब्रह्मा लिखला तलवा-तकदीर।
अगोरी में रजवा फनले बाय रोजगार, वह बखत"[6] सतये गरभ बाय रऽहल।
ऐसे वैसे दिनय महीना गयल निकचाय,[7] सावन-भादो क बाय महीना।
पुरुब न डोलत बाय पुरबइया, पच्छिम बादल घेरत बाय घनघोऽर।
उत्तर न मरले बाय लवकनियाँ, दखिन काँड़य मुसरवा का धाऽर[8]।

समीक्षात्मक टिप्पणी—कथाका यह अंश प्रायः प्रकाशित रूपों में नहीं मिलता और यदि मिलता भी है तो अत्यन्त संक्षिप्त अथवा संकेत रूप में ही। 'इस्मतनामा' नामक फारसी काव्य में लोरिक मँजरी के विवाह का संकेत मात्र कर दिया गया है। 'मैना सतवंती' में मैना को मँजरी रूप में प्रस्तुत कर उसके सतीत्व रूप को प्रमुखता दी गयी है। इसी प्रकार 'साधन कृत 'मैनासत', चतुर्भुजदास कृत 'मधुमालती', दौलत काजी कृत 'सती मैना-उ लोर चन्द्रानी' गवासी कृत 'मैना सतवन्ती' आदि ग्रन्थों में भी इस कथा को विभिन्न तरीके से संकेतित भर कर दिया गया है। इसे प्रमुखता मिली है मौखिक परम्परा से प्राप्त भोजपुरी, मिर्जापुरी, मैथिली रूपों में ही। प्रस्तुत संग्रह में यह कथा विस्तार एवं प्रामाणिक रूप में प्रथम बार आयी है।

नोना चमारिन द्वारा नाल-छेदन

सारांश—(10) **सातवीं सन्तान का जन्म**—अन्त में आतवीं लड़की मँजरी का जन्म होता है। इसके जन्मते आलौकिक प्रकाश फैल जाता है, वर्षा होने लगती है। प्रहरन (घन्टों) सोना बरसता है, क्योंकि नवजाता सतवन्ती है, इसलिये उसके प्रभाव से ये दैवी घटनाएँ होने लगती हैं।

---

1. पति, 2. द्रव्य, 3. छोटाई, अपमान, 4. हुआ, 5. पालकी, 6. वक्त (समय), 7. नजदीक, 8. मूसलाधार वर्षा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महरिन अविलम्ब सुबाचन (अपने भ्राता) को बुलवाती है और कहती है—'नेग देने के लिए झट सेर भर सोना गठिया लो और नाल-छेदन के लिए नोना चमाइन को बुला लाओ।' सुबाचन ऐसा ही करता है।

वह नोना को बुलाने उसके घर जाता है, किन्तु नोना कहती है—"पहले पालकी कहार बुलाओ, तब चलूंगी। छह कन्याओं के जन्म का नेग मुझे नहीं मिला है, इस बार मैं नहीं मानूंगी, क्योंकि सतवंती कन्या का जन्म हुआ है।"

सुबाचन वापस लौट कर महरिन से नोना की बात कह सुनाता है। महरिन तदवत् व्यवस्था हेतु निर्देश देती है।

इस बार सुबाचन पालकी-कहार लेकर जा पहुँचता है। नोना पुनः आपत्ति करती हुई कहती है—"मैं इस पालकी में नहीं बैठूंगी। जिस पर महरिन नैहर से बैठकर ससुराल आयी थी, मुझे ले चलने के लिए वही पालकी चाहिए।" सुबाचन लौटकर यही बात महरिन से कहता है। महरिन के आदेश से सुबाचन वही पालकी-कहार लेकर पुनः जाता है। नोना उसे बैठने के लिए मचिया (आसन) देती और स्वयं घर में जाकर तैयार होने लगती है। वह अपना बत्तीसों शृङ्गार करती है। दक्षिण (अगोरी) की बनी चटकीले रंग की साड़ी पहनती है, जिसमें चार-चार अंगुल पर सोने का तार जुड़ा है। इस प्रकार नोना सज-धज कर पालकी में बैठती है और सोरहों कहार पालकी में उसे अगोरी ले जाते हैं।

(11) **राजा का मँजरी को पाने का प्रयास**—राजा किले से उस पालकी को देख लेता है। वह सैनिक भेजता है जो तथ्य का पता लगा कर आता और राजा को सूचित करता है। यह सुनकर राजा के सीने पर साँप लोट जाता है।

इधर नोना अविलंब महरा के घर पहुँच जाती है तथा नाल काटने के लिए सोने की कटारी माँगती है। सुबाचन तदनुसार कटारी बनवा देता है। नोना नालच्छेदन करती है और बारह दिनों तक महरिन की सेवा करती है। तेरहवें दिन साड़ी, धोती, चप्पल, आभूषण आदि के साथ उसकी विधिवत विदाई की जाती और ऊपर से उपहार स्वरूप सोने की गठरी बाँध दी जाती है। उसे पालकी में बिठा कर उसके घर भेज दिया जाता है।

मँजरी का जन्म

चौनिस[1] पानी बरसत अगोरी में, महरा बखरी दरबार।
पहरन[2] बरसत सोनवाँ-देखा बाय, लड़की न जन्मल बाय सत्यवादी।
बिना दीया न बाती के, जेकर महल भयल बाय ओजरार[3]।
तब तक भोर होत बाय बिहान, पुरुष कौवा मचवले बाँयऽ रोर[4]।

---

1. चारों ओर, 2. घन्टों, 3. उजाला, 4. शोर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह बखत बोलल धनवाँ बाय महरिन, "भइया न सुनबा तूँ सुबाचन।
कहना मानऽ एठिन हमार, सेर भर सोनवाँ तूँ गठियैबा।
एकदम नोनवाँ[1] के दरबार, जलदी चमाइन[2] तूँ बलैबा।"
सुबाचन सेर-दू सेर सोना बाय बान्हल, गोड़े[3] कसत जूता जब बाय।
रेंगल न अहिर बाय सुबाचन, अब चल जालय नोनवाँ के दरबार।
कहना मनबे एठे हमार, जायकर बरतने में सोनवाँ बाय छोड़ले।
ऐसी बोलल लरमियाँ[4] का बोल, "बहिन न सुनबे तोयँ नोनवाँ।
छव न भयनऽ कोखवा का हीन, सतवें लड़की भयल सत्यबादी।
जेमें ब्रह्मा खुशी हो जाय, चौनिस बरसत अगोरी में पानी।
राम न राम गुन गावै के ठाकुर, महरा बखरी दरबार।
बिना दीआ न बाती के, महरे का भइल बखरी ओजराऽर।
लड़की न जन्मल बाय सत्यबादी, ऊ फेर चमकत सुरजवा[5] का बाय जोति।

नाल-छेदन

इतना न नोनवाँ सुनत बाय चमाइन, दरियाँ करत बेंड़वा बाय जबाब।
"भइया न सुनबा तूँ सुबाचन हमार, छव न लड़की देखा जनमनी।
न त कइली कबों रद बाई पद, एदाँ[6] अन्तिम ममिला[7] बाय लौकत।
भइया लौटल अगोरी चल जाया, जब से पलकी कहाँर नाहीं अइहैं।
तब से चलब न महरे के दरबार," एकदम रेंगल मरद बाय सुबाचन।
जाय कर जूटल बखरी महरे का, "बहिन न सुनते तोंय महरिन।
कहना मनबे एठिन हमार, नोनवाँ न ठनवाँ बाय ठनले।
ऊ फेर माँगत पलकी बाय कहाँर," एतना न महरिन धनवाँ बाय सूनत।
कूलफी बोलल लरमियां का बोल, "भइया न सुनता तूँ सुबाचन।
कहना मानऽ एठिन हमार, जलदी दू[8] ठे कहाँर ले लेता।
डोली लेता डाड़ी फनवाय, एकदम चलल जातय नौनवाँ के दरबार।"
एकदम डोली डाँड़ी लेकर रेंङल, लियवले जातय नोनवाँ के दरबार।
लखत न नौनवाँ बाय चमाइन, जर-मर भयल कोइला बाय खङार।
भइया न सुनबा तूँ सुबाचन, "कहना मानऽ एठिन हमार।
जब तक महरिन बहिन के पलकी, नाहीं आई दुआरे[9] पर हमरे।
तब तक न जाबय महरवा के दरबार," लौटल न सुबाचन।

---

1. नोनवाँ चमाइन का नाम झाड़-फूँक के मन्त्रों में बहुत आता है, 2. चमार की स्त्री, 3. पैर, 4. मीठी, 5. सूर्य, सूर्य की ज्योति चमकना मुहावरेदार प्रयोग, 6. इस बार, 7. मामला, 8. दो, 9. द्वार पर।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकदम महरे बखरी दरबार, जायकर कहत बात महरिन से।
"नोनवाँ बहुत ठनवाँ बाय ठनले[1], बहिनजब तक तोरय पलकी नाहीं जइहें।
तब तक नोनवाँ न आई इहाँ चमाइन," वह दिन बोलत महरिन बाय धनवाँ।
"भइया न सुनबा मोर[2] सुबाचन, कहना मानऽ एठिन हमार।
रेंङल हल जाया भीतरी बाय गाँव, जहाँ बायंऽ सोरहवा कहाँर।
जलदी सोरहों कहाँर बलवैवा, खोल देवा कोठी भीतरी के।
पलकी लेवा कोठी से निकलवाय, जेमे सोनयँ पानी बाय ढारल।
पँचरंग देवा ओहार[3] गिरबाय," धड़पड़[4] सुबाचन कहाँर बाय बोलवले।
पलकी देलेस भीतरी से कढ़वाय[5], पलकी सारी पाछे देखा गऽइल।
पँचरंग देलेस ओहार गिरवाय, जेमे सोरहों लाग गयनऽ कहाँर।
ओमे हुम्मीहुम्मा[6] पलकी बाय चऽलल, जेमें लागत सोरहों बायंऽ कहाँर।
एकदम ले ले पलकी बाय लियवले, अब चल जातय नोनाँ के दरबार।
लखत न नोनवाँ बाय चमाइन, लख कर टकसी[7] चमाइन बाय गऽइल।
दुवराँ पर खटिया-मचिया बाय बिछावल, तब तक सुबा बोलत बाय सुबाचन।
"नोनवाँ न सुनबे तोंय बहिन, कहना मनबे एठे हमार।
जलदी करबे तोंय तैयारी, बैठेके टाइम नाहीं बाय"।
नोनवाँ न कोठी में बाय हऽलल, रुचकर बत्तीसों सिङार आपन कऽरत[8]।
पहिरत न सारी दखिनयं का, जेमें चर-चर आङुर पर बाय तार।
ओही के मेलय चोलिया बाय पहिरत, आपन काजर-सेन्हुर बाय कऽरत।
दँतवा देलेस बीरी[9] बाय लगाय, माथे चमकत टिकुली बाय देले।
जैसे बरत सुरुजवा का बाय जोति[10], महले से निकलत नोनवाँ बाय चमाइन।
दुवराँ पर देखत मुरुछा बाय मारत, जायके पलकी में नोनवाँ बाय बैठल।
अब लाग गऽयल सोरहों बायंऽ कहाँर, हुम्मीहुम्मा पलकी ऊठत।
लेकर रेंगल अगोरी के न बायँऽ खोर, दिन नौ-दस बजे का टाइम।
किला पर राजा का लागल बाय दरबार, घूमल न पलक छली का।
आपन ठोंकत ताल बाय तकदीर, "ई भाई कौन सुबा का पलकी।
दिनय घूमत अगोरी बाय पाल," राम न राम गुन गावै के ठाकुर।

राजा का मँजरी को पाने का यत्न प्रारम्भ

धड़-धड़[11] दुय-चार सिपाही बाय छोड़ले, निकल के जात पता लगावै।
जायकर छेंकत पलकी नोनवाँ का, जेके देखत मुर्छा बाय मारत।

---

1. हठ ठानना, 2. मेरे, (अपने) 3. परदा, 4. तुरंत, 5. निकलवा लिया, 6. तेजी से, 7. टकसी, छिपकर भागना, 8. बत्तीसों, सोरहों शृङ्गार का नाम आता है, यहां बत्तीस है, 9. मीसीं, दांत का रंग, 10. सूर्य की ज्योति की तरह, 5. तुरंत।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लखत न नोनवाँ बाय चमाइन, दरियाँ बोलत लरमियाँ का बोल।
"सुनबा सिपाही रजवा का, कहना मनबा एठिन हमार।
जायकर राजा से कह देबा कचहरी, नोनवाँ जात बाय महरे के दरबार।
ऊहाँ से लौटी बिदाई जब होई, खबर देई किला पर जनाय"।
एकदम लौटल सिपाही ऊहाँ से, चल जाय राजा किला दरबार।
रेंङल न पलकी बायँ नोनवाँ का, चल जाति पलकी नोनवाँ महरे के दरबार।
जायकर उतरत नोनवाँ बाय चमाइन, एकदम महरे बखरी दरबार।
गोड़य हाँथ धोयकर हऽलल[1], लड़की लौकत बाय सत्यवादी।
जब फेर बरत सुरुजवा का बाइ जोति, बोलल न नोनवाँ बाय चमाइन।
"बहिन न सुनबे हमार महरिन, सोनवाँ का कौनों कमती[2] नाहीं देखाय।
सोनवाँ का देती कटारी बनवाय," धड़फड़ भेजत सुबाचन के बाय।
सेर-दुइ सेर सोनवाँ लेकर गऽयल, जलदी ले अनलय कटारी बनवाय।
"बहिन ऐसन लड़की बाय भगवान,[3] कैसे देहें लोहा तूँ छुवैबा।[4]"
आयकर देलेन कटारी हँथवा में, नोनवाँ हलल कोठी में बाय।
रतयरात सोनय न सोना बाय माऽङत, आपन छीनत नरवा बाय जे बाय।
सारो कामय धन्धा बाय सपरावत,[5] ऐसे तैसे अगोरी में बीतत बाय।
ऐसे-तैसे छव न दिन ओके बीतल, फेर में बीतत बरही जब बाय।
तेरहवाँ दिन बाय बीतल, राम न राम मुन गावै के ठाकुर।

नोना चमाइन की विदाई

"बहिन न सुनबे तोंय महरिन, कहना मनबे एठे हमार।
देख भाई घरे के बाई एकसेरुवा,[6] हमार होत होई घरे नकसान।
हमरो बिदाई तूँ करबा, हम चल जाइब घरे बाय दुवार।"
तब फेर बोलत धनवाँ बाय महरिन, "भइया न सुनबा तूँ सुबाचन।
कहना मनबा एठे हमार, ले लेबा दरब बखरी से।"
एकदम ले ले बजारे में जाय, जाय कर खरीदत साड़ी दखिनयं का।
जेमें चर-चर आँङुर पर तार, ओही के मेलय चोलिय बाय खरीदत।
एकदम चप्पल सगरो बाव समान, लेकर घरे दुवारे बाय आयल।
डँटकर होय बिदाई नोनवाँ का, सगरो करत सिंगरवा नोनवाँ चमाइन।
आपन बत्तीसों अभरन[7] बाय बतवले, उहें कूँचत मघइया बाय पान।
जायकर सोनय बकुचा[8] बाय बन्हायल, नोनवाँ के गयल पलकी में बैठाय।
भइल बिदाई नोनवाँ का, टाइम आठय-नौ बजे दिन।

---

1. प्रवेश किया, 2. कमी होना, उस समय सम्पत्ति भरी पड़ी थी, 3. भाग्यवान, 4. कष्ट दोगे, 5. पूरा करती है, 6. अकेली. 7. आभूषण, 8. गट्ठर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(12) **सारांश—महरिन को बुद्धि चातुरी**—तदन्तर राजा विवरण जानने के लिए नोना को महल से बुलवाता है। उससे सारी बातें जानकर राजा हाथी पर सवार हो महरा के महल पहुँचता और कन्या की विदाई माँगता है। राजा को समझाती हुई महरिन कहती है—"आप इसे अभी ले जा कर क्या करेंगे? अपनी माता का दूध पिलायेंगे तो बहिन हो जायगी, बहिन का दूध पिलायेंगे तो भानजी हो जाएगी, अपनी पत्नी का दूध पिलायेंगे तो लड़की हो जायेगी और यदि गाय-भैंस का दूध पिलायेंगे तो इसके शरीर में कोढ़ फूट जायेगा, किन्तु इसके विपरीत यदि यह मेरी छाती का दूध पीयेगी तो शीघ्र ही युवती हो जायेगी। फिर मैं इसका विवाह किसी सामान्य अहीर से करूँगी, इससे मेरी जाँघ भी पवित्र हो जायगी और आप उस अहीर को मार-पीट कर इसे रनिवास में ले जा सकेंगे।

यह योजना राजा को भा जाती है। इधर माता का दूध पीकर मँजरी नित्य जव (जौ) भर बढ़ने लगती है। वह नित्यप्रति बाभन (ब्राह्मण), बनियाँ (वैश्य), महरा (अहीर) और कैथे (कायस्थ) की कन्याओं के साथ खेलने बाहर निकलने लगती है। एक दिन खेल-ही-खेल में कैथे की लड़की उसे ताना मारती हुई कहती है कि एक दिन उसे राजा अपना रनिवास भोगवाने के लिए ले जायगा।

(13) मँजरी की दुश्चिंता और माता-पिता द्वारा वर की खोज

यह सुनते ही मँजरी अत्यन्त चिंतित और दुःखी हो जाती है तथा दरवाजा बन्द कर घर में जा छिपती है। उसकी बड़ी तपस्या से खोज की जाती है। अन्त में, वह घर में ही जा छिपती है और कैथे की कन्या द्वारा मारे गये ताने का उल्लेख करती है, सुबाचन तथा महरिन उसे समझाते हैं, परन्तु तब तक अनशन करने का हठ करती है, जब तक कि उसका विवाह किसी बली से नहीं हो जाता। इस पर महरिन अत्यन्त दुखी होती है। अन्त में सुबाचन, मोहिनी पंडित और नाई को साथ लेकर मँजरी के लिए वांछित घर-वर की खोज में निकलता है। पूरब, पश्चिम और दक्षिण इन तीनों दिशाओं में कोई योग्य घर-वर नहीं मिलता। 7 मास 13 दिन का समय बीत जाता है। सुबाचन आकर मँजरी से अपनी उद्विग्नता प्रकट करता है। मँजरी लोक-लज्जा से डरती है, फिर भी, एक कागज पर गउरा-गुजरात का पता-ठिकाना लिखा देती है, जहाँ लोरिक की बखरी स्थित है। लेखा के अनुसार उसका द्वार उत्तर की ओर है, द्वार के सामने दुर्गा का मंदिर है, उस पर अमर ध्वजा फहराती है, सोने की खम्हियाँ लगी हैं जहाँ पिंजड़े से तोता बोल रहा है, लोरिक बोहा अखाड़े में है, भावी श्वसुर का नाम धरमी और पति का नाम लोरिक है, उसने 360 चरवाहे हैं, आदि। इस प्रकार भावी पति का ठिकाना बता कर वह यह भविष्यवाणी करती है कि विवाह निश्चित हो जायेगा।

राजा को मँजरी को पाने का प्रयास

राजा का चननी पर लागल दरबार, राजा का दुई-चार सिपाही बायँऽ छूटत।
पलकी ले ले किला में चल जाय, जायकर लखत नोनवाँ बाय चमाइन।
राजा के लखत मुरछा मार देलेस, "नोनवाँ कौन सुबा बाय जनमल।
डँटकर भइल बिदाई बाय तोहार", तब फेर बोलल नोनवाँ बाय चमाइन।
"राजा न सुनबा तूँ महाराजा, कहना मानऽ एठिन हमार।

5227

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छव लड़की ले जनमनी, छव भइनी गोबरता का हीन[1]।
सतवें लड़की जनमल सत्यवादी, जे फेर बरत सुरुजवा का बाय जोऽति।"
सगरों बात बाय बतियायिल, नोनवाँ पलकी लौटल दुवारे जालय।
अपने घरे दुवारे जुट जाय, जाय कर पलकी कहार जाय उतरले।
नोनवाँ के अपने घरे उतर जाय, राजा न करत बाय तैयारी।
पलकी ले ले कहाँर ले सजवाय, हाँथी न हौदा बाय कसाइल।
रजवा बैठल हाँथी पर बाय, जाय कर छेंकय दुवार महरे का।
तेरह न रोज का बाय लड़की, राजा माँगत लड़की का बिदाई।
लखत न लिरिया[2] बाय महरिन, जर-मर भइल कोइला खऽार।

महरिन की चालांकी : राजा वापस

राजा अगोरी में फनले बाय उदियान, कहलेस–"राजा न सुनबा तूं महराजा।
दरियाँ मानऽ कहल हमार, ले जाय कौन उपाय तूँ करबा।
राजा माता दुधवा तूं पियैबा, जोग पहुँची लड़की का तोहार।
ब्यही बहिन-दूध तूं पियैबा, जोग पहुँची भैने का तोहार।
मेहरी[3] न दूध पियैबा, जोग पहुँची लड़की का तोहार।
कहीं गैया-भैंस का दूध पियैबा, अंग में कोढ़य फूट जइहैं।
बिटिया[4] छाती न दूध हमरे पीहैं, फूट-पाक जलदी हो जैहें तैयार।
ठुटहा[5] अहिर बोलवाय कर, आपन जाँघ पवित्तर न करवाय।[6]
मारपीट देहा अहिरे के बहियाय[7], ले जाय किला भुोगवाया रनिवास।"
इतना बतिया बाय सुनत, रजवा के गयल मने बाय बईठ।
पलटत न रजवा बाय मोलागत, पलकी ले के कहाँर लवटवलेस।[8]
चढ़ जाय किला अगोरी भंडार, तब फेर सुनऽ हाल लड़की का।
जौ भर रोजय बढ़ाई होत बाय, ऐसे न तैसे दिन बीतल।
लड़की हो गइल बाय होसियार, चारी न लड़की के संघें :
खोरी में रोजय दिना बाय खेलत, एक ठे रहल लड़की बभने का।
दुसरे बनियाँ लड़की देखा बाय, तीसरे लड़की बाय महरे का।
जेकर दावन मैंजरी बाय नाम, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।

कैथे की लड़की का मँजरी को मेहना

चौथे न लड़की बाय कैथे का, जैकर बाल रूप में भयल बाय बियाह।

---

1. भाग्य का हीन (खोटा) 2. स्त्री।
3. स्त्री (मेहर), 4. लड़की, 5. कमजोर, 6. जांघ पवित्र करना या करवाना लड़की का व्याह करके ऋण-मुक्त हो जाना, 7. भगा देना, 8. वापस कर दि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओमे जबर[1] लड़की कैथे का, बजर मारत मेहना[2] बरियार।
"सुनबे न धिया महरे का, दरियाँ मनबे कहल हमार।
पमरे न माथे का सेन्हुर,[3] अपने माथे लेबे लगाय।
नाम पर जाय ब्यही का तोर, जय दिन राजा नींद बाय दबवले।
जहिया पलके तकिहैं उठाय, ले जाय किला भौगवइहैं रनिवास।"
इतना न सुनत धिया[4] महरे का, कहाँ खेलब-कूदब ओकर बाय।
एकदम भागल घरे जाय दुवारे, घरे कोई परानी[5] नाहीं लौकत।
जायकर खोलत कोठी भितरी का, जेपर लागल पलङ फुन बाय।
जायकर अगरी बेंवड़[6] बाय चढ़ावत, लड़की सुनत महरे का बाय।
जेकर दावन मँजरी बाय नाम, तब से बारह न एक बाय बऽजत।
चारी ओर मचल खोजवा जब बाय, लड़की का पता न लागत ठेकान।
जौन न मतारी ओकर महरिन, कूँच-कूँच रोवत कपार जौन बाय।
जौन न मामा बाय सुवाचन, खोरियाँ में घूम-घूम खोजतय बाय।
कहाँ पता न लागत बाय ठेकान, जौने दिना घूम कर ममवाँ बा लौटल।
वह दिन झंखत मतरिया बाय महरिन; राम न राम गुन गाबैं के ठाकुर।
कहलेन-"हो हो दयिवा हो नारायण, का ब्रह्मा लिखला मथवा ले तकदीर।
कूँच न कपरवा बाय धरती में, महरिन रोवत जनवाँ बा बेजान।
सहज में लड़की गायब हो गयल, कहीं पतवा न लागत बाय ठेकान।
तब हलल फेर ममवाँ बाय सुवाचन, जाय कर जूटल कोठी भितरी के,।
जेकर बादय फाटक बाय देखात, वही छनकल[7] ममवा बाय सुवाचन।
कहै दरियाँ का करत लरमिया कावोल, "भैने न सुनबे तोंय हमार।
केन्हयं अगोरिया में बली भऽयल, ओनके जामल तरुनियाँ में दाँत।
भैने रोह-तुकार[8] तोहके बोलत, दरियाँ देब अर्थवा बताय।"
वह दिन बोलत धिया महरे का, "ममवा न सुनबा मोर सुबाचन।
एठिनयँ मानऽ कहनिताँ[9] हमार, न तऽ ममवाँ कोई देसवा में बली भयनऽ।
न त हमें बोलल रोहवा बाय तुकार, जबर न लड़की कैथे का।
जबर मेहना[10] मरले बाल बरियार, ममवा बुते[11] सहलवा नाहीं जाय।
जब से माथे सेन्हुर नाहीं परिहैं, तबसे अन्न न करब जलपान।"
इतना जाय कर ममवाँ बाय कऽहत, महरिन सोझवा धरती में गिरजाय।

मजबूत, 2. अपमान जनक बातें, 3. सिन्दूर, 4. लड़की, 5. प्राणी, 6. दरवाजा बन्द करने के लिए लकड़ी की सांकल, 7. संशंकित हुआ, 8. कच्ची मीठी जबान कहने का पर्याय, 9. कथन, 10. अपमना या बेइज्जत करना, 11. शक्ति।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"हो हो न दयी हो नरायन,देविया न सुमिरली भगवती।
का ब्रह्मा लिखला मथवा-लिलार, इतना दिन जियावल-खियावल लड़की।
लड़की भइया सहजय मर जाय, धड़ से नाऊ-बाभन[1] बलवैवा।
जोर कर बन्हवा खर्चा घुमाय, जाय कर चारी मुलुकवा घुम जाता।

मँजरी के लिए योग्य बर की खोज :—

लख कर ठहरुक घर बाय दुवार, जहाँ जोग का लड़िका देखइहैं।
वही देहा बरछा[2] चढ़ाय, एकदम साथय साथ लियवले।
बरात ले आया अगोरी बजार," तब तक रेंगल ममवाँ बाय सुबाचन।
चल जालय मोहनी के दरबार, जाय कर मोहनी पण्डित बाय बोलावत,।
साथे नाऊ ले ले बाय लियवाय, जोर कर बन्हलेस खर्चा घुमाय।
सज कर तीनों मनई[3] बायऽ रेंगल, राह लेलेन पच्छिम तड़ियाय।
हल जाय मुलुकवा बघनाल, जायकर खोजत ग्वालन का बाय घर।
जहाँ घरय-दुवार बाय लौकत, जोग का लड़िका मिलत नाहीं बाय।
ऊहाँ तीनों जोग नाहीं बैठत, एको मनय न होत बाय परसीन[4]।
ऊहाँ से मुलुकवा घूमय दखिनयँ का, अब हल जानऽ रजिया सिंघरौली।
कहीं-जहीं लड़िका लखय में बाय आवत, ओनके घरे-दुवार के नाहीं ठेकान।
ऊहों न मनवां बाय भिनकत[5], मुलुक घूमत पुरुबवा का बाय।
ऊहाँ घरो मिलत बर नाहीं,राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
मँजरी के तीनों जोग नाहीं जूटल, घूमय सातय महीना तेरह दिन।
तीनों मुलुक बाय घूमल, नाहीं खिसियाय कर ऊहाँ से बाय लौटल।
राह लेलेन पच्छिम का तड़ियाय, चल आवै नगर अगोरी पाल।
मोहनी अपने घरे बाय गयल, सुबाचन गयल महरे के दरबार।
जाय कर बिनती मँजरी से बाय करत, "मैने मानऽ कहनवां हमार।
तीनी मुलुकवा घूम गयली, कही नाहीं बैठल जोगिता बाय तोहार।
चल कर अन्नय करऽ जलपान, कहीं जोगिता लिखल होई तोहार।
मैने हो जायी सदिया बियाह, जौन न धिया महरे का।
जेकर दावन मँजरी बाय नाम, ऊ प्रन[6] अगोरी में बाय फनले[7]।
"जब से सादी-बियाह हमार नाहीं होइहैं, तब से अन्नय न करब जलपानी।
मम्माँ अबहीं राह हम बताइब, लेकिन जान जइहैं दुनियाँ सब संसार।
बड़ा भारो होई हिनाई हमार, "तब फेर हाथय जोरय करय बिनती।

---

1. ब्राह्मण, 2. बरच्छा, 3. मनुष्य, 4. पसन्द, 5. मन को न जँचना।
6. प्रण 7. ठनले (ठानना या प्रण ठानना)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"मैने मनवे कहलवा हमार, एठे हमहीं जानब के फेर तोहीं।
दूसर कोई जनलवा नाहीं गाय," तब फेर उठल धिया महरे का।
कोरा न कागद बाय निकालल, हथवा में कलम ले ले बाय मसिहान[1]।
दू-दू न कुरसी बाय लगवले, अब रख ले ले टिबुलबा[3] बाय।
एक पर ममवां बैठल सुबाचन, एक पर अपने धिया बाव बैठल।
ममवाँ कुछ सरेख बाय लगावल, कुछु फेर लिखल असनवाँ बिलगाय।
जेमे भूठय राह एमे परल, एकदम ठेवें ठेकान जूट जाय।
"उत्तर न देसवा बाय कबूतर, एक देस नगर गउरा गुजरात।
लिखत न बखती लोरिके का, जेकर उत्तर बायंऽ दुवार।
दुवरां दुर्गा सिबल्ला बाय लीखल, जेपर अमर धुजा बाय फहरात।
जेमे लागल खम्हियाँ[3] सोनवाँ का, मुख-मुख बोलत सुगनवाँ जब बाथ।
कठइत हुमादे में बाय लीखत, लोरिका के लिखले अखाड़े में बाय।
साँखड़ लिखय बोहा मँझार, धरमी लिखले भसुरे के बाय।
तीन सौ साठ लिखय चरवाह, जौन न बैनन के बाय चरवाह।
दिना अठारह के बाय रास्ता, ममवा राती रेंगय दिन दौड़य।
पेंड़े में कुरो मोकाम[4] नाहीं बदबा, दिन नौवें जैबा गउरा नगिचाय।
जायकर जोर कर खचाँ आपन बन्हबा, राह लेबा उतरवाँ का तड़ियाय।"
चटपट मोहनी पण्डित बाय बलवले, साथे नाऊ बाभन बाय गऽयल।

समीक्षात्मक टिप्पणी—कथा का यह अंश प्रकाशित रूपों में प्रायः नहीं मिलना, चंदायन' में तो मिलता ही नहीं। मौखिक परम्परा से प्राप्त प्रस्तुत संग्रह में यह कथा बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत की गयी है। भोजपुरी रूप में भी इस कथा का क्षीण संकेत मिलता है।

सारांश—(14) **गउरा को प्रस्थान**—तदुपरान्त तीनों गउरा के लिए प्रस्थान करते हैं। सत्तू आदि साथ में ले लेते हैं। जब वे गउरा में पहुँचते हैं तो सर्व प्रथम वहाँ के राजा सहदेव की कन्या से भेंट हो जाती है। पूछने पर वे अपना परिचय देते और उससे लोरिक का ठिकाना पूछते हैं। वह अपने को लोरिक की बहिन बताती हुई सहदेव (अपने पिता का घर) का मार्ग बता देती है। वहाँ पहुँचने पर सहदेव उनका उचित स्वागत-सत्कार करता है और अपने पुत्र महादेव को वर के रूप में दिखाता है, किन्तु महदेव उन्हें नहीं रुचता। अतः वे वहाँ से उठ कर लोरिक का घर खोजने लगते हैं। अन्ततः उन्हें लोरिक का घर मिल जाता है जहाँ कठयित (लोरिक का पिता) द्वार पर बैठा मिलता है। वे अपना परिचय और आने का कारण

1. मसिहान स्याही 2. मेज (अंग्रेजी शब्द), 3. खम्मा, 4. मोकान, पड़ाव।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बताते हैं। जलपान आदि का प्रबन्ध होता है, परन्तु मोहिनी स्पष्ट कहता है—'यहाँ बहुत धोखा है, बिना वर देखे हम जलपान आदि नहीं करेंगे, ।

(15) **लोरिक का तिलक**—कठयित लोरिक को अखाड़े से बुलाने के लिये गँगिया को भेजता है, गँगिया उसे वस्तुस्थिति से परिचय करा देता है और नहा-धोकर तथा तेल लगाकर चलने की सीख देता है। परन्तु लोरिक क्रुद्ध हो जाता और उसी स्थिति में चलता हुआ कहता है—'मैं ऐसे ही चलूंगा; जिसको गरज होगी, अपनी बेटी की शादी मुझसे करेगा।' घर पहुँच कर देखता है कि द्वार बन्द है, दाहिने पैर से द्वार पर मारता है और मजबूती से बन्द की हुई किवाड़ टूट जाती है। तिलकहरु उसे देख आश्चर्य चकित रह जाते हैं। तिलक तय हो जाता है।

(16) **धरमी के विवाह का प्रसंग** :—किन्तु सहदेव विवाह में बाधा उत्पन्न करने के लिए पहुँचता है और धरमी से अपनी कन्या के विवाह का प्रस्ताव रख देता है।

गँगिया नाई व्याज पूर्वक उसे ब्योरा से बुलाने जाता हैं। धरमी घर का समाचार पूछ कर उसे बैठाता तथा उसे टिलटिलई (अहीरों का व्यंजन विशेष) खिलाता है और बाद में गायों में चला जाता है। वहाँ एक पुरानी गाय धरमी से कहती है—'तुम इस विवाह को अस्वीकार कर दो, एक वर्ष पश्चात् तुम्हारा विवाह पश्चिम में सुरावल में हो जायेगा।

(17) **चनवां से विवाह की अस्वीकृति**—धरमी गँगई के साथ चलकर अपने घर आ जाता है। सहदेव की कन्या चनवाँ से विवाह करने का प्रस्ताव अस्वीकार कर देता है। उधर लोरिक छोटा भाई होने के कारण पहले बड़े भाई का विवाह होने के पक्ष में है। बड़ा भाई धरमी (सवरूँ) लोरिक को समझाता है, परन्तु सहदेव का सम्बन्ध अस्वीकार कर दिया जाता है। लोरिक तिलकहरुओं के स्वागातार्थ सामान खरीदने बाजार जाता है तथा सारा सामान खरीद कर ले आता है। तदु-परान्त गाँव के सभी लोगों को आमन्त्रित करने के लिए नेवता घुमवाया जाता है। वहाँ का प्रसिद्ध बँठवा चमार बाजा-गाजा से दरवाजे पर पहुँचता है और धूम-धाम से तिलक चढ़ाने का कार्य-क्रम सम्पन्न हो जाता है।

(18) **लोरिक की बारात की तैयारी : सहदेव द्वारा विरोध**—तिलकहरू चाहते हैं कि बारात अविलम्ब प्रस्थान करे। इसी बीच राजा सहदेव आकर बारातियों को बहका देता है और बताता है कि अगोरी का राजा अत्यन्त बलवान है। वह सभी बारातियों को मार भगायेगा। भयग्रस्त बाराती इतस्ततः खिसक जाते हैं। अब लोरिक दुःखी होता है और सँवरू धीरज रखने की शिक्षा देता है। वह आदेश देता है—'बोहा जाकर तीन सौ घोइरयों (चरवाहों) को बुलवा लाओ वे ही बाराती बन कर चलेंगे। साठ तो यहाँ के बुड्ढे हो जायेंगे। तीन सौ साठ बाराती कम नहीं है।'

(19) **विरोध का निवारण**—तदनुसार सारे बाराती दरवाजे पर आकर एकत्र हो जाते हैं और सब के सब एक ही रंग का वस्त्र, पैंट, कमीज, टोपी तथा पाँव में जूता आदि पहने हुए हैं। सब तैयार होकर लोरिक के द्वार पर आते हैं।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुबाचन जोर कर खर्चा बाय बान्हल, तीनों रेंङल दुवारे से जाय, ।
जाय कर नाई डोगय से बाय उतरत, राह लेलेन उतरवा का तड़ियाय[1], ।
राती रेंङत बाँय दिन दौड़त, पैंड़े में कुरो मोकमवाँ नाहीं बायंऽ ।
राती दिने के रेंगैले, अब दिन नवयें गयल बाय गौंड़ियाय, ।
पैंड़े में बहत नरवा जब बाय, जेमें निरमल जलवा बाय देखात, ।
वह बखत पण्डित बोलल बाय मोहनी, तनिक गंङा करै दा नहान, ।
तीनों आदमी करत असनान जब बाय, ओठिन कपड़ा धोती बाय बदलत, ।
मोहनी आपन पूजा बाय करत, जौन नाऊ रहल छत्तीसी, ।[2]
तीन ठै दोनवां[3] सियले ओठे बाय, ओही में सतुआ चीनी बाय छोड़ले, ।
तीनों नस्ता करत बायंऽ जलपान, वह दिन बोलल नाऊ बाय छत्तीती, ।
पण्डित न सुनबा मोर मोहनी, गौहां[4] सुनबा सुबाचन हमार, ।
मँजरी के तीनों न जोग जौ होइहै, अबहीं नारे में आगम मिल जाय, ।
खाय बर तीनों दोंनवां बहवैबा, मँजरी के जानय जोगितवा देखाय, ।
तीनों न दोना बहयवेले, नाय नीयर गयल दोनवां जोरियाय, ।[5]
तब तक बोलल नाऊ बाय छत्तीसी, राम न राम गुन गवै के ठाकुर ।
"भाई जल्दी-देरी मत करबा मँजरी के तीनों जोगिता बाय देखात" ।
एकदम नगर गउँरा-गुजरात; उहाँ से तीनों दल बाय रेंङल, ।
पहिलय हललन खोरी सहदेव का, जेकर चन्ना लड़की ऊपर बाय, ।
ऊ फेर जगती कपड़ा रहल कांचत, तान कर काढ़त घूंघुट जब बाय, ।
"आप लोगय का कहाँ तैयारी भयिल, हमके देबा सरेखवां लगाय," ।
बोलल पण्डित बाय मोहनी," दखिन मुलुकवा से बाइं आवत, ।
एक नगर अगोरी बाय पाल, महरे अहिरे के बाय तीलक ।
जात बाड़य लोरिका के दरबार, कवन लोरिके बखरी देखाई, ।
हमहन के देबा सरेखे लगाय," वह दिन बोलल धिया सहदेव का, ।
"लोरिका न लोरिका का पुकरला ओनहिन[6] का खासय बहिन हई[7] हम, ।
चलऽ करब इन्तजाम दुवरा दखिनयं का" पंचय उठय बैठय ओठिनयें, ।
जाय कर घुमनयें किला सहदेव का जेकर राजा सहदेव का दरबार, ।
जहाँ माचा गिरत बाय मचहरी, जहाँ कुरसी मेज बाय लागत, ।
पानी न चीनी बाय निकलत, लखत न पण्डित बाय मोहनी, ।
खाता का एको कड़ी नाही देखात, तब बोलल फेर मोहनी ओहीदम, [8] ।

---

1. पास में पहुँचना 2. ऐसा बताते हैं कि नाई छत्तीस बुद्धि वाला होता है 3. पत्ते का दोना 4 मालिक 5. इकट्ठा, 6. उनकी 7. हूँ, 8. उसी क्षण ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"जब से घरय-बर नाहीं देखब, तब से बैठक-ऊठब नाहीं बाय,।"
चनवाँ साजत भाई बाय महरे, एक-एक देलेस मोहर पहिराय,।
मल-मल देतय कपड़ा पहिराय, जेमें सोनय धारी बाय किनारी।
कय कर सिङार महदेव का, दुवारे निकल के पलगी-प्रनाम,।
जाय कर घूम-घूम माथ बाय नवावत, जौन दिना परल नजर मोहनी का।
जर-मर भयल कोइला खँङार, कहलेन "हो-हो दयी हो नरायन।
का भइया लिखला माथे-लिलार, का भड़या गडुल खम्हाँ बाय अगोरी।
का न गड़बा गउरा-गुजरात, का फेर बनी बाँस तूं अँगेजबा।
डाड़ी देबा गँउरा में भितराय, गँउरा में बहुत सूअर बाई पँजाइल।
लाठी न गोजी तूं उठ इबा धूम-धूम करा चरवही तू हों।"
ऊहाँ से तीनों आदमी बाय पलटल, राह दूसरा खोरी जानयँ धयले।
जाय-जाय पूछत लोरिका का दरबार, जौन बखत लौकत बखरी लोरिके को,।
दुवरा पर चमकत सिवल्ला दुर्गा का, जेपर अमर धजा[1] फहराय।
लागल खम्हियाँ सोने का, जेमें सुगुना[2] बायंs छायल[3]।
मुख-मुख बोलल[4] फोटो ओनकर बाय, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
जवन कठयिन बाय कुण्ठा, कुण्डली पर मारत हुमाद जब बाय।
आयकर तीनों मनई[5] भयनऽ ठाढ़ा[6], जौन न दिन हुमाद कर के ऊठल।
वह दिन बोलल बुढ़वा बाय कठइता, "पंच कहां ओतन बायंऽ कहां गोतन[7]।
कहंवां पर टूट गयल बुनियाद," वह दिन बोलल पण्डित बाय मोहनी।
"दक्खिन ओतन बाय गोतन, एक पाल नगर अगोरी बजार।
गउरा में टूटि गयल बाय बुनियाद, आयल न तिलक महरे का,।
कौन लोरिक हवय दरबार, हमहन के देबा सरेखे लगाय।"
इतना सुनत बुढ़वा बाय कठयित, दुवरा माचा निकलत मचहरी।
केनकर कुरसी लागत बाय मेज, चीनी निकलत हव गिलास।
पंच बैठय-उठय तूं लोग, पानी-पत्तर होत बाय इन्तजाम।
वह दिन बोलत पण्डित बाय मोहनी, "इहवां धोखा बाय होत।
जब तक घरय बर नाहीं देखब, तब तक अन्नय करब न जलपानी।"
इतना न सुनत बूढ़ कठइता, चट गङिया नाऊ के बाय साजत[8]।
"गङिया न सुनबे तोयं[9] हजामत[10], कहना मनबे एठे हमार[11]।
तेलय अपटन[12] तोंय लेबे, रेंगल चल जाबे करन मेला तोंय अखाड़ा।

---

1. ध्वज, 2. तोता, 3. बनाये गये, 4. जैसे बोल देंगे, सजीव, 5. आदमी, 6. खड़ा, 7. पता-ठेकान, 8. तैयार करना, 9. तुम, 10. नाई, 11. मेरी, 12. सरसों जिसे पानी में पीसकर बदन में लगाया जाता है, उससे बदन साफ और चिकना हो जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बेटवा गयल लोरिकवा मोर बाय, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
आयकर देहें का माटी तोयँ छोड़ैबे, कह देहे ददां कयले बा बलाब।
तिलक आयल अगोरी के बाय," खटिया न मचिया सब भितरावैं।
बैठका कयले अँङनई में बायंऽ दुवरां बेंवड़ा बायंऽ चढ़वले।
तिन-तिन न मूसर लोहन का, बेंवड़ा चढ़ल दुवारी में बाय।
ओहर गड्या जूटल बाय हजामत, दुरिहैं से लोरिका बाय लखले।
अहिर निकलल अखाड़ा से बाय, जैसे भाँदव भैंसा कनवछय।
ओह चाल अहिर कनवछल देखा बाय, आय कर निहुर माथ बाय नेववले।
लोरिका देतय असिसवा बाय बाद, "गड्या आँखों अमर हो जावे।
तूं जियबे लखबा ले बरीस, कौन न गाढ़ पर गऽयल,।
आय कर धुमले अखाढ़ा तोयं हमार", वह दिन गड्या बोलल बाय हजामत।
"गौहां मानऽ मानऽ कहना हमार, कयले बायँऽ बोलाव।
तिलक आयल अगोरी के बाय, देबा देहेंका माटी तोहार छोड़ाइब।
जलदी चल चलऽ घरे तूं दुवारे," वह दिन सूनत पूत कठइत का।
जेकर दुलर लोरिका बाय नाम, जर मर कोइला भयल बाय खङार।
तड़पल गड्या पर बाय, "गड्या छूले बदन जौ नऽ हमाऽर।
खरीयत[1] आखाड़ा में नाहीं बाय, सरऊ[2] तान कर मुटुका[3] मार देबय।
तोहरो जाई झर बत्तीसों सब दाँत, हम फेर यही रुपवा में चऽलब।
जेनयें सातय बेरी होई गऽरज, आय कर पुजिहैं ठेंगवा हमार,।"
वह दिन मरगस-मरगस बाय चऽलत, जैसे भादो भैंसा मकनात।
वह चाल अहिर रेंगल बाय अखाड़ा से, पीछें गड्या ले ले बाय पछियाय।
रेंगल न अहीर बाय रेंगावल, जाय कर पहुँचल दुवरवाँ में बाय।
ददा न ददा बाय पुकरले, नाहीं बोलत कठइता सरदार।
बेंवड़ा दुवारे के बाय जऽड़ल, लोरिका दहिना एँड़ा बाय खींचत।

लोरिक की वीरता

तान कर मारत एँड़ा बनाय, केवाड़ी खलड़ी-खलड़ी-बाय नोचाइल।
मूसर गयल अँगने में पवराय, हलचल अङनई बाय मऽचल।
उठ-उठ भयनऽ सब लोग ठाढ़, लख कर हहरत[4] अहीरे के फुन बाय।
आपन-आपन ठोंकत तलवा-तकदीर, कहलेन "धन-धन पानी उतरय का।

---

1. कुशल 2. साले (गाली) 3. बाँह 4. डरता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मरद[1] फूटल बाय बलवान, ई फेर गाड़ल खम्हां देखा न करबिहैं[2] ।''
आन कर गड़िहैं गउरा गुजरात, ई फेर छाती बाँस देखा अगेंजिहैं[3] ।
तब से देखा होत बाय पलगी-प्रनाम, दुवरां बैठका बाय निकलत ।
पानी पत्तर का होत बाय इन्तजाम, राम न राम गुन गावै के ठाकुर ।

राजा सहदेव द्वारा तिलक में बाधा उपस्थित किया जाना

अब फेर कुछ देरियाँ के बाद, और न सहदेव राजा पुन बाय ।
राजा का राजा देखा हवँऽ, जात के अहिर ऊहो देखा हवँऽ ।
ऊफेर भेजत तिलक लड़की का, एकदम लोरिका बखरी दुवाऽर ।
झंखत न बुढ़वा बाय कठइत, आपन ठोंकत तलवा बाय तकदीर ।
बड़ा सच्चा जोग बाय पहुँचल, एकय खर्चा देखा बर्चा ।
लड़किन का सादी कर देहीं बियाह, गड्या नाऊ बाय दौड़वले ।
चल जाबे सांखड़ बोहा तोयं मझार, जाय कर धरमी बेटवा तोंय बलयब ।
एकदम रेंगल गड्या बाय रेंगावल, चल जानऽ सांखड़ बोहा मझार ।
जाय कर नाऊ डोंगा से बाय उतरल, घाट उतरत ब्योरा के बाय ।
जाय कर जूटत अड़ाने[4] धरमी का, जहाँ गाई-भैंसन का दरबार ।
बैना चौनिस बायीं डहरल, घोरई तिलतिलई[5] बायंऽ ओठे चुरवत[6] ।
जेनके तीन सौ साठ बायँऽ घोरई, मेड़र मरले अड़ाने पर बायँऽ ।
धरमी सथरी पर बाय बैठल, राम-राम कहत कीर्तन सब बायँऽ ।
तब फेर गड्या जूटल बाय हजामत, जाय कर निहुर[7] माथ बाय नेववले ।
धरमी देले असीयवा बाय बाद, गड्या आँखों अमर हो जावें ।
तूं फेर जियबे लखवा ले बरीस, धरमी मारे खुसियवा के मारन ।
गड्या के लेलेन पोल्थी[8] बैठाय, ''गंडी कहवा कुसल गडरा का ।
कैसन बायँऽ गउरवां का सब लोग, कसइन न ददा बायँऽ मोर कठइत ।
कैसन भइया खुइलन बाय हमार, कैसन लोरिक मोर भइया बानऽ ।
सारों देबा सरेखवा लगाय,'' वह दिन गड्या बोलल बाय हजामत ।

---

1. मर्द, 2. गड़े हुए खम्भे को उखाड़ना, यानी शक्ति का परिचय देना, 3. छाती बांस अंगेजना=वीरता पूर्वक विपक्षी का मुकाबला करना, 4. जहाँ गायें-भैंसे रहती हैं, 5. अहीरों का एक विशेष प्रकार का भोजन, 6. पकाते हैं, 7. झुक कर, 8. पल्थी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धरमी के विवाह का प्रसंग

"गौंहा नगदय कुसल गउरवाँ का, नगद बायँऽ गउरवाँ का सब लोग।
नगदय घरे के सब पलिवार, एकय तिलक आयल अगोरी दखिनयँ का।
एक ठे सहदेव राजा का जूटल, दू-दू तिलक दुवराँ पर आयल।
जूटल गउरवाँ बा गुजरात, एही बदे ददा कयले बायँऽ बलाव।
साँच देली सरेखवा लगाय", वह दिन ऊठल धरमियाँ सरदार।
चट-पट चौकी पर करत बाय अस्नान, एक दम कपड़ा-धोती बाय पहिनत।
जाय कर बैठत ठहरे[1] पर बाय, साथे गड्या नाऊ के बैठवले।
आत्भा भर खातय टिलटिलई जब बाय, खाय पीय कुला करत बाय गलाली।
धरमी हाथय मुँह बाय धोयले सुरती मऽलत बाय चुन्ना[2]।
आपन खातय अमल[3] तब बाय, एतना न बात बाय भयिल।
जाय कर घूमय लेहंड़ बैनन का, गाय बोजल पुरानी जब बाय।
"सँवई के सुनबे मोर मवार, दखिन, बरछा जौन न बाय आयल।
वह जोग पहुँचल भयहू का तोऽर, गायें तिलक जौन बाय।
गायें का सादी-काज होयल बेकार, ओमें रोजय झगड़ा होई तूफान।
एसे कौन मतलब बाय मीलत, तोर भाई एकय जवन बाय बीतल।
एक साल के और देरी बाय देखात, सादी लिखल पच्छिम बाय।
एक पाल नगर सुराबल बाय पाल," एतना बैना गाय बाय समझवले।
सगरो घोरो के धरमी बाय सरेखत, "सगरो गइया भैंस तूँ लोग देखा।
हम जात बाई गउरा गुजरात," आगे-आगे धरमी गौहाँ बाय रेंगल।
पीछे गड्या ले ले बाय पछियाय, जाय कर बेवरा नदी पर बाय जूटल।
जाय कर नाई न डोंगा से उतरय, एकदम भागल गउरा जानयं गाँव।
एकदम गण्टा बीते, जाय कर जूटय घरे बाय दुवार।
जाय कर बखरी धरमी बायंऽ हलल[4], जायकर ददा के करत बाय प्रनाम।
ददा आसीर्बाद बाय देत, जाय कर मइया खुइलन के नाम।
ऊहो देती असीस बाईं बाद, उठ कर लोरिका कइले बाय पलगी[5]।
तब बोलल माल बाय धरमी, "ददा हमरी बलाब तूँ करला।
हमके देबा सरेखे लगाय," ओह दिन बोलल बुढ़वा बाय कठइत।
"बेटवा मानेऽ कहल हमार दू-दू तिलक बाय जूटल।
एकय बेरी करदेहीं सादी सब बियाह," तब फेर बोलल माल बाय धरमी।

1. भोजन करने का स्थान, 2. चूना, 3. नशा. 4. प्रवेश किया, 5. प्रणाम।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"ददा मनबा कहलिया हमार, दक्खिन बरछा जौन बाय आयल।
ऊ जोग लौकत भयहू का हमार, गायें तिलक जौन बाय आयल।
गायें क होलय बियाह बाय खराब; ददा आजय सादी होइजइहें।
बेस्सा ऊ जात बाय चनैनी, बेस्सा जौन सकल बाय पलिवार।
काल्हय घूमी खोरी-हमहन का, रोजय चली डेंगवा बाय बाँस।
एसे कौन फैदा बाय देखात," तब फेर बोलल बीर बाय लोरिका।
"भइया पहिलय सादी ओहरय होई, पानी-पत्तर का होइ जाई इन्तजाम।
हमरय सादी हो जात हऽई, तोहके पानी देवइया कौनों नाहीं साधन।"
तब फेर बोलल माल बाय घरमी, "लोरिका बाउर मति तोयं बउखले[1]।
तोहरों[2] अकिल हरले बाय भगवान, तोंहें टिकेके गउरा बाय लीखल।
हम्मयँ[3] लिख गयल बोहवाँ बाय भंडार, कौनो हरजा जीन मनबा।
तिलक लेबा अगोरी का चढ़वाय, डंट कर करय सादी दुराने का।
नाम चली दुनियाँ संसार," वह दिन बुढ़वा कठयित बाय निकलल।
दुवराँ गयल बैठका में बाय, जाय कर हाथय जोरय करय बिनती।
"दक्खिन के पंचा बरछा जौन बाड़य।

लोरिक का तिलक तय

सादी घरे बाय मंजूरी, जौन सहदेव राजा का बाय तीलक।
भाई सादी लड़किन के नाही मंजूरी, आप लोग उठऽ लौट जाबा।"
रेंगल तिलकहरू सहदेव का, चल जानऽ राजा गढ़ी दरबार।
अगोरी का तिलक मिकल दुवराँ पर, धीरे-धीरे लोरिका का होत बाय इन्तजाम।
ऊठल न लोरिका बाय मऽरद, गउरा खोरी में गयल छितिराय।[4]
जाय कर छाँटत सरदार बाथ धमंडुवा, बरदी[5] लऽदत दुवारे पर बाय।
तिल्ली न सरसों का काय गँठिया, एकदय लद कर भयल तैयार।
चल जानऽ करय मेला बजार, जाय कर बेंचत रकम गोलवा[6] में।
जोड़ कर देलेन रोकड़ झरियाय, एकदम कसल मेला बाय बजार।
जाय कर बरय-बजार बाय कऽरत, जोरय न जोरा[7] बाय सोपारी।
कस-कस लऽदत बरदी पर बाय, एक दूय बरदा[8] नमक बाय लऽदल।
ओही में खाँड़य गुड़ बाय लऽदल, कुछ भाई चीनी ओही पर लऽदल।
कुछ कपड़ा न कीन कर[9] बाय लदले, कुछ फेर सुरती लवँङ कीनत।

---

1. बउखले = शक्ति के कारण उन्माद होना। 2. तुम्हारा, 3. हमको, 4. बिखर गया, 5. बैल, 6. मंडी, 7. जिसमें गल्ला कस कर बैलों पर लादते है, 8. बैल, 9. खरीद कर।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओही में कत्था सारो बाय समान, जितना समान तिलके का।
अहीरे के भयल बजार सब बाय, डहरल[1] बरदी फुन बाय।
राह लेलेन गउरवाँ का तड़ियाय, जाय कर दुवराँ गठिया[2] बाय छंटकत[3]।
सोपारी जोरा जौन बाय, एक-एक में दू-दू भाग अधियावै।
नेवतो[4] देलेन खोरी में घुमवाय,[5] "जाति के लेकर परजाति,
चौनिस देहा नेवता घुमाय, बलकी एकएक घरे के पीछे।
दू-दू देहा सोपारी घुमवाय, आजय न नेवता तूँ घुमैबा"।
बिहना दुवरा पर मोकाम बाय देखात, घुमायल नेवता अहीरे का।
दुवराँ पर कुरय बदल बाय मुकाम, धीरे न धीरे सब इन्तजाम।
सारो जूटत दुवारे पर बाय, घूमल न नेवता अहीरे का।
दुवराँ पर कुरय मुकाम बद गऽयल, जतिया लेकर परजात।
सारों जूटत गउरवाँ का बायंऽसब लोग, डट कर जूटत समान तिलके का।
देखला लोरिका बखरी दरबार, जौन बँठबा[6] बाम चमार।
सुन कर आपन बाजा-गाजा बाय लेले, सगरो कूदत दुवारे पर बायँ।
जेकरे दुवराँ जाजिम बाय बीछल।
जहाँ झाँप गेंस टऊ जाय, जोर कर बरहों अमल[7] बाय रक्खल।
सगरों खायत जतिया ले परजात, नाऊ न बाभन बाय जूटल।
दुवराँ पर चौक-चन्नन बाय दियाल, चढ़त बरछा लोरिके का।
बखरी में पूड़ी बाइँ छनतय, चढ़ गयलय तिलक अहीरे का।
रतिया में खानय-खियान बाय होत, ओह दिन समधी बोलत बाय सुबाचन।
"साहिबा मनबा कहना हमार, दक्खिन का हुकुम बाय मिलत।
साथे-साथे तीलक बरछा देहा; बरात ले ले अगोरी में आया।
बिहना दखिन के जत्रा[8] बाय देखात," तब तक होतय भोर बाय बिहान।
पूरब कौवा मचवले बायंऽ रोर, जब तक सूरज किरन में बायंऽ आयल।
सब लोग दिसा होत बायँऽ मैदान, जौने बखत कुल्ला गलिया बायंऽकरत।
अब चढ़ जायल फरसी कठइत का, सारो मारत जिजमियाँ पर दऽम।[9]
जौन दिन पानय मघइया बाय कूँचत, डँट कर सम्हरत बरात अहीरे का।
वह बखत सुना हाल गउरा का, जौन राजा सहदेव ऊँहा[10] का बायँऽ।
ऊ सुना एक छीन[11] धोती बायऽ पहिनत, गोड़वाँ में सोनय खड़ाऊँ बाय देखात।

---

1. चल पड़े 2. बोरा में भरा सामान 3. उतारा गया 4. निमन्त्रण 5. भेजना 6. छोटाकद का (नाम) 7. व्यसन-पान-सुपारी का, 8. यात्रा, 9. आराम करना, 10. वहाँ, 11. पतली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हाथे सोबरन छड़ी बायँ थमले, एक दम रेंगल लोरिकवा के दरबार।

समीक्षात्मक टिप्पणी—कथा का यह अंश प्रकाशित रूपों में प्रायः नहीं मिलता। मौखिक तथा भोजपुरी रूपों में इसको थोड़े परिवर्तनों परिवर्द्धनों के साथ प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत संग्रह में यह कथा रोचक तथा प्रामाणिक ढंग से आयी है। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने मिर्जापुर के जितने गायकों से सम्पर्क किया, इसको थोड़े-बहुत परिवर्तनों के साथ प्रचलमान पाया। मिर्जापुरी मौखिक रूपों में लोरिक को गउरा का बताया तो गया है, किन्तु वह गउरा कंतित राज्य में है। बारात का वर्णन लगभग समान है।

दूसरा विवाह काण्ड— सहदेव की रानी सेन्हिया को इसकी सूचना मिल जाती है। वह राजा को बुला कर उन्हें समझाती हुई कहती है—'अगोरी के राजा मोलागत को जीतना सरल नहीं है। यदि ये अहीर वहाँ से हार कर आये तो आपकी ही अप्रतिष्ठा होगी।

आप अब भी पूरे राज्य में डंका पिटवा दीजिए कि सब लोग कठयित की बारात में सम्मिलित हों और जो नहीं जायेगा, उसे दण्डित किया जायगा।

राजा ऐसा ही करता है। डुगडुइया पिटवा कर सबको बुला लेता है। कुल सवा लाख बाराती एकत्र होते हैं। सभी एक साथ प्रस्थान करते हैं। और खाते, पीते, मौज उड़ाते कोटा पहुँचते हैं।

(ख) लोरिक के विवाह में कठिनाइयाँ तथा संघर्ष की स्थिति—

(20) कोटा के राजा से लोरिक का युद्ध—कोटा में जाकर बारात टिक जाती है। कोटा में बारात के स्वागत-सत्कार का भार उठाने वाला कोई नहीं है। एक अहीरिन (वहाँ की रानी) भार उठाने के लिए तत्पर हो जाती है और भोजनादि का प्रबन्ध कराती है। कठयित भोजन चीखने (स्वाद लेने) जाता है। वहाँ तिरियों (स्त्रियों) को देख कर उन्हीं पर लिपट जाता है। कोठी में हलचल मच जाती है। जब यह सूचना कोटासे के राजा बमदेव तक पहुँचाती है तो वह अपनी गोरा-तिरंगा की पलटन भेजता है। लोरिक को इस बात से थोड़ी चिन्ता होती है कि अभी अगोरी में तो लड़ना ही है, यहाँ शक्ति क्षीण हो जायगी तो वहाँ क्या लड़ा जायगा। फिर भी, धरमी लड़ने को तैयार हो जाता है। वह देख कर लोरिक भी तैयार हो जाता है। वह गँजड़े की पेटी, अनरखा (अंगरखा कुरता), पाँवों में गुलबदन तमान, अजगर की पेटी, लोहे की जिरही जिसमें नौ मन लोहा लगता है, 60 गज का दुपट्टा (चादर) आदि सैनिक वेश धारण कर लड़ने को तैयार हो जाता है और इष्ट देवी दुर्गा का स्मरण करता है। देवी के प्रगट होने पर उनसे तलवार माँगता है और यह वचन देता है कि विजय होने पर लौट कर मैं आपको खँसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चढ़ाऊँगा और विधिवत् पूजा करूँगा। छोकरी (छोटी बालिका) के रूप में प्रगट हुई दुर्गा लोरिक को वांछित वरदान देती हैं। तदन्तर भयंकर युद्ध प्रारम्भ हो जाता है जिससे कोटा पुरुष-शून्य हो जाता है। वहाँ का राजा पराजित हो जाता है और बारात अगोरी के लिए प्रस्थान करती है।

दूसरा विवाह कांड

बारात की तैयारी—

जहाँ जतिया जूठल बाय परजात, जाय कर राजा बोलत बाय सहदेव।
"परजा न सुनबा गउरा का, पंच मानय कहलिया हमार।
बल्ली[1] न राजा बाय अगोरी, जेकर उरदी कहुला बिहलाय।
जेकरे राजा पैंड़ी पर जैबा, ओनकर गउरा बहुवर होइहैं रॉड़।"
इतना सुनतय राजा गउरा का, सगरों जतिया लेकर परजात।
केनहूँ दिसा बहाने बायंऽ टरकत,[2] केनहूँ कपड़ा का ओढ़र[3] बायंऽदेत।
ऐसे-वैसे सरकत बरतिया दुवरॉं का, ऊँहा खोजले मनई नाहीं देखात।
खाली बाजा बच गयल कँहार, बाकी बचल घरे का सरदार।
जौन दिन निकलल पूत कठइत का, जेकर दुलर लोरिका बाय नाम।
अहीर हहरल[4] दुवारे पर बाय, ठहर-ठहर बहत नीर अहिरे का।
भगवन दुवरॉं गति का देखाला, अवहीं बैठल अगोरी बाय पाल।
ओह दिन निकलल भइया बाय धरमियॉं, ऊ फेर तड़कत लोरिकवा पर बाय।
"लोरिका बाउर मति तोयं बउखले, तोहरो अकिल हरले बायंऽभगवान।
एक दिन भागल वोहवा में जाबा, जहाँ 360 बायंऽघोरई।[5]
साठ बुढ़य ठेल छाँट लेबा, तीन सै साठ बरात हिंगराय।[6]
ले ले करय मेला जाया बाजार।
जाय कर एक रङ्ङय सियैया धोती, रङ्ङय ओही के मेला बाय कमीज।
टोपी सियैबा सब सफेद, गोड़वा में दिल्लीसाही बाय जूता।
इन पर साजय बरात ललकार, चल कर करय सादी अगोरी में।
देसवॉं दखिनंय मुलुकवा संसार कौनो हरजा नाहीं बानी।
जौन दिना सादी कर के ऊहाँ से लौटब, जायकर राजा गउरवॉं में देखब मंसार।
सगरों कूँचत पान बीरवन का, एक-एक लौकत दयिवा का बाय लाल।

---

1. शक्तिशाली, 2. चल दिया, 3. बहाना, 4. भयभीत होना, 5. चरवाह, 6. समूह में ले आना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकदम पसरत[1] बरात दुबरौं से, उदमत रेङल बरात जब जाय।
आधा कोस के भयिल फसिला[2], रानी लखत बाय सेल्हिया।
एकदम भागत सहदेव दरबार, जाय कर कुलफी[3] बानी बाय कहत।
"राजा न सुनबा महाराजा, दरियाँ मानऽ कहना हमार।
पहिले लखी सुबा अगोरी का, बजर मेहना मारी बरियार।
कैसन गाड़ू[4] सुबा गउरा का, अकसर भेजले अहीरे के बाय।
दूसरे कर लेही सादी अगोरी में, अहिरे के कौनों हरजा नाहीं बाय।
बल में राजा होई मोलागत, कल में देवी-दुर्गा ओकरे पास।
नाहीं अबौं से कहना मनबा, जौन भाई डाड़ी लेकर अहीर लौटी।
रहतब[5] गउरा में नाहीं बाय।
अबौ से पाँचव रुपया लेबा गाड़, जाय कर चौधरी देवान ले लेबा।
डुगडुगिया राज में पिटवैबा, "जितना रूकल बरात अहीरे का।
जाय कर बारात करो अहीरे का, जेमें भाई एको परजा रुकि जैहें।
बिहना से पता ले लेबा ठेकान, लोग का कुल-कुल गति कर देबा।"
फेर से उदमत डुग्गी[6] बाय पिटाइल, सगरों निकलत गउरवां का बाय लोग।
जतिया लेकर परजात, कहीं कोई-सुध नाहीं बाय देखात।
मारे बरात के कारन, ऊजर चरका हो जाय बरात।
जाय कर उत्तर बरात बाय रुकल, अहीर निकल पलकी[7] से भयल ठाढ़।
ऊहाँ गनती बाय लगावत, अब सवा लाखय बरात बाय जूटल।
एक दम डहरत बरात अहिरे का, रहिया ले ले दखिनवाँ तड़ियाय।[8]
सवा लखवा बरियात, अहीरे के जातय दुरनवां के बाय देस।
अगवाँ परल गउवाँ बाय कोटासे, ओठिनयं बोलत पूत कठयिन का।
जेकर दुलर लोरिकवा बाय नाम, "ददा न सुनबा मोर कठयित।
दरियाँ मानऽकहनवाँ मोर बात, देखऽभाई मोरय मोहब्बत के कारन।
जे फेर संझा डाड़ी ले अनलय, बिहने मिलल नेवता बाय हमार।
करब चल आपन दुरनवाँ का बरात।
एको तावय-कुताव रस्ते में खाई, बूड़ जाई नमवाँ हमार।
तीन सौ छाँठी धोरई बोहवां का, अगोरी पीयलेन भंइसियन का दूध।
एक-एक बाय दयिबा का लाल, जेन ददा सातय घड़ी के खवइया।

---

1. फैल गई, 2. फासला (दूरी), 3. करुणापूर्ण, 4. डरपोक, 5. शरण
6. डुग्गी पिटवाने की प्रथा बहुत पुरानी है, 7. पालकी, 8. भागना, झूमकर चलना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पैड़े बायँऽ धोरइया कुम्हिलात, गउवाँ परल बाय कोटासे।
ददा देबा जाजिम गिरवाय, सवा लाख टीक जानऽ बरात वही दमयँ।

बारात का पड़ाव कोटासे में—

रसद देबा समान खोलवैबा, वह बखत गिरत जाजिम अहिरे का।
गाँव नगर कोटासे बाय गाँव, जेकर सवा लाख बरियात।
अहिरे का टीकल कोटासे बाय गाँव, तौन बखत रसद खूल गयल समान।
जितना रहनऽ लोगवा परिजाति, उतनयँ के बँटायल रसद समान।
जितना परजाति बच गयनऽ गुवाला, अब बुढ़वा छेकना लेकर।
जापकर घूम गयल गउवाँ देखा कोटासे, ऊहाँ आपन जाति बिरादर बायँऽपूछल।
"कोई भाई जाती अहिरवा का खानदानयं, हमरो नताई सकला बरियात।
इतना भाई कहना कोटासे में बाय हमार", घूम गयल खोरिया कोटासे।
कोई नाहीं ओजत[1] ताड़ी अहीरे का, एक ठे रानी अहिरिन देखा रऽहल।
ऊहे भाई थाम्हत ताड़ी[2] अहीरे का, "ददा तोहरय रसद लागी समान।
हम फेर देबय रसोंईं बनवाय।"
कठयित तई-तबाड़ी बाय कऽरत, अब बुढ़ लौटल जजमें पर जाय।
बोरय बोरा बाय चाउर, बोरै देलेस आटा का ढोवाय।
दाली न सबजी ले तरकारी, सगरों मेरय मसाला बाय नीमक।
सगरों देलेस दुवारे पर भेजवाय, चार थान कपड़ा साथ में भेजवावै।
ऊ फेर दुय-चार लिरिया बाय बगेरत, आपन घरय दुवार पोतवावै।
जाय-जाय करय जगती पर अस्नान, भई कपड़ा-लत्ता बाय पहिरत।
सगरों देलेन समान भितराय, रसोई[3] न पानी बाय बनावत।
कोठिया में करत लिरिया बाई ज्योनार,[4] तब फेर सुनऽ हाल जजमें का।
जहवाँ टीकल सकलवा बरियात, जितना रहतय लोगवा परजात।
ऊ भाई अपने-अपने के लेलेन रसद, खाय-खाय लोटत जजमें पर बायंऽ।
ताकत[5] बायंऽ कोटासे का गाँव, जब फेर थोड़ा न दिन बच गयनऽ।
लड़िका से देहलेस सनेसयां भेजवाय, जायकर बोलल लड़िका गउवाँ का।
"पंच न सुनबा परदेसी, एठिनयं मनबा कहनवाँ हमार।
पंचय बिजय[6] भयल बाय तैयार, चल कर करला बिजय तूँ लोग।"
इतना सूनत अहीर जजमें से, सगरों गयनऽ जजमें पर हड़बड़ाय।[7]

---

1. मानना 2. ताड़ो थामना एक मुहावरा है जिसका अर्थ—किसी की शक्ति को स्वीकार करना, 3. भोजन 4. भोजन, 5. देखना, 6. भोजन, 7. भगदड़ मचाना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लखत न बुढ़वा बाय कठइत,हींचकर तड़पत छेंकनाऽ ले बाय।
"सुनबा न लोगवा गउरा का, पंचय जतिया बिरादर हमार।
न त फेर देसय करलाजा परदेस, चढ़ला दारू देसवाँ खड्गार।
कल्ला जजमें पर रहबा, रसोई के लेहीं गनती मिलाय।
का जनी जूनयँ खर बाय सेवर, कहीं तावय—कुताव खा जाई।
बूड़ जाई खानदानी हमार, अकसर न बुढ़वा बाय रेंगल।
एक दम भागल कोटासे जाय गाँव; जहाँ बनल रसोई अहिरन का।
जाय कर खड़ा बुढ़वा हो जाय, "दा भाई रसोईं हमहूँ चीखब।[1]
कैसन बनल रसोई इहाँ का बाय, पीछे खाई बरात हमार।"
ऊहाँ न लिरिया गाय सोचत, "अकसर ददा देखा बाय।
एनके देही घरवय में बैठाय", जाय कर गोड़य हाथ बूढ धोवै।
कुल्ला करत गलाली बायँऽ जात, जाय कर बैठत कोठी ठहरे में।[2]
अगवाँ आवत रसोई जब बाय, खाली लिरियन का ऊहाँ बाय।
कहाँ खाना रसोई छोड़कर, गयलेन लिरियन पर लपलियाय।
हलचल कोठी में मऽचल, लिरिया भागल गोहार बाय कऽरत।
जाय कर चढ़य किला बमदेव का, छली परल कोंटासे में बाय।
छली परल कोटासे में बाय।
रोवत न लिरिया बाय पहुँचल, रोय-रोय देतय दोहाई चननी पर।
जहाँ छत्री के परल बाय दरबार, "राजा न सुनबा महाराजा।
दरियाँ मानऽ कहलिया हमार, के तऽ तूहें रजिया में रहलाऽ बली।
तोहरे से बऽली कहाँ का टिक जाय, सवा न लाख लेकर जनता।
टीकल बाटय कोटासे बाय गाँव, घूम-घूम घर-घ इज्जत बाय लूटत।
राजा इज्जत गइल नहीं हमरो, इज्जत गइल रजिया का तोहार।"
इतना छत्री सुनत बमदेवय, जेन फेर दंतवा अंङुरी बायंऽ चबात।[3]
इन पर देलेस सकती ठोंकवाय, जेकर गोरा-तिरंङा[4] तऽनल।
कोटासे में पलटन हो गयल तैयार, इन पर लोहा न लोहा नरियाय।
कोटासे लालय बाय लौकत, ऊहइ बुढ़ रेंगल जजमें पर जाय।
लखत न मरद बाय लोरिका, लख कर टहरल कोटासे बाय।
कहलेन "हो हो दैवा हो नरायन, का ब्रह्मा माथे न लिखला लिलार।

---

1. स्वाद लूँगा, 2. भोजनालय, 3. क्रोध करना, 4. गोरा- तिरंगा महान योद्धा थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोटासे के राजा से युद्ध :—

ददा डहरय[1] राड़ बाय मचवले[2], अवहीं लोहा बैठल अगोरी के बाय।
केकरे जाङघे जोर रही दिमाक, दरय दर थम्ही ठेंकचा बरियार।"
न सुनत बुढ़वा बाय कूँवर, हाथे में लेलय छेंकना उठाय।
अब बुढ़ डाँकल बयालित जाय हाँथ, "बेटवा यहीं नदी डोल गइल।
का लोहा लेबा[3] अगोरी बजार, चला बैठा जजमें पर तूँहों।
अब देख लेबा बुढ़वा का मंसार," तब फेर बोलत माल बाय धरमी।
"लोरिका सुन ले मोर भइया, कहना मनबे दरियाँ हमार।
बुढ़य न ददा लोहा लीहें, कहीं खाले ऊँचे पेंच पऽरल।[4]
देख भाई जलत दीप गउरा का, सगरो जाई दीपकवा बुताय।
जेकर दू-दू दयिवा का लाल," वह बखत उठल माल बाय लोरिका।
जाय कर पकड़त चेंचुरा[5] ददवा का, ओंके देलेन जजमें पर बैठाय।
"ददा न सुनबा मोर कठयित, दरियाँ मनबा कहनवाँ हमार।
कल्ला जजमें पर तूँ बैठा, जेके रामय देइहें ऊ लेही।"
डाँकल न अहिर जजमें से, आपन दुलहनी बाय उतारत।
खींचत न पेटी गंजड़े का, अब बीर अनव पहिरत बाय अनरखी।
गोड़वा गुलयबदन तमान, अब फेर बान्हत पेटी अजगर का।[6]
जेमें गोली चिपटवा[7] हो जाय, देहियाँ कसत जीरही[8] लोहवा का।
जेमें नौ मन लोहा अमान, अहीर साठी गजे का दुपट्टा।

लोरिक की जीत

अब बीर बान्हत सिर बाय घुमाय, गोड़वाँ तरकुस गूजे का पनहीं[9]।
अहीर चांयत गोड़वा बाय चढ़ाय, अब घर लेलेस पागी[10] लरमें का।
जेमे मेघय डमरू घहराय, लेतय न खाँड़ हँथवा में।
गउरा सुमिरय गँवहेर,[11] बोहवा में तनिक सुमिरत हव मुरार।
जेन बीर सूअर लेलेन दँतार, सुमिरत हव देबी बाय दुर्गा।
जे फेर आदि दिन का पुजमान, "एठिनयं जानय सकती तोहार।
देख भाई तोहरे जोरवा हम भरोसे, चढ़ली दारु देसवाँ संसार।
जब तक देबी सनमुख एठे तूहें देखाता, जब से हाथे तूँ टेकैबा।

---

1. मार्ग, 2. झगड़ा लगाना, 3. लोहा लेना मुहाबरा है, 4. बल पड़ना, 5. बांह, 6. अजगर की तरह मजबूत पेटी: 7. बेअसर, 8. कवच 9. जूता, 10. पगड़ी, 11. गाँव की देवी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब से असरा[1] नाहीं बाय भरोस, जौने दिना लौटब देबी तोरे धामें।
डँटकर करब पूजा तोहार, खँसी न भेंड़ा के कौन लेंहड़।
सौ साठ देवय भैंसा बोंगवाय,"[2] धन-धन न देबी बाय दुर्गा।
छोटय धरले छोकड़िया[3] का भेस, भइया पहिरय छींट दखिनयँ का।
जेमें अंगुल-अंगुल पर बाय तार, अहीरे के हाथे खाँड़ बाय टेकावल।
"बरुवा न सुनबे फुल झरुवा, दरियाँ मनबे कहलवा हमार।
तोर जब एको हानि होई जाई, फेर से छोड़ देहा सङह तूँ हमार।"
अहिरा छोड़कर बारात आपन जाजिम, फरके कस्सी लेलेस मैदान।
तब फेर उजरल पलटन छत्री का, जेतना हाँथी ऊहां बाय छेंकल।
उतना घोड़न का सही नाहीं देखात, जितना तीरय बान वाय चमकत।
उतना गोली ठहकत बरूद, उतना तोप चलत बाय कटारी।
एक दम मनई के बीचे, चौंनीस मारत पलटन बहियाय।
ओमें धन-धन सकती दुर्गा का, भइया देलेन आँचर ओहार।[4]
जैसे ठहरय पानी दखिनयँ का,[5] वैसे ठहरल अवार सब जाय।
देबिया घण्टा घड़ी बाय देखत, सकती देलेस कोटासे बढ़ाय।
गोली न बरूद बाय रूकल, तेगा गयल तीर उधराय।
टप्पय लोहा बाय परल, जितने रहल छत्री लड़वइया।
सबका दुर्गा मती बाय घुमवले, चानस देती लोरिका के बाय।
बरुवा पक्का लोहा बाय ओंजले[6] कचलोइया घूम गयल तोहार।
वह दिन ओसर न ओसर बाय नरियायल,[7] ओसर[8] लौटल लोरिका का बाय।
ओसरी पर कुइयाँ भरत पनिहारी, लेकर तड़पत खाँड़[9] जब बाय।
जेन चारी अंङुल रहल बाहर, लड़य गयल अकासे में बाय।
नीचे न मरले बाय दवनहरा, ऊपर दुय-चार पोरसा लवर[10] उठत बाय।
पच्छिम खाँड़ लटकवलेंस, पच्छिम से काटत दक्खिन घुम गयल।
दक्खिन से काटत पुरुबवा घुम जाय, पुरुबय काटत उत्तर घूमल।
एक फेवरा[11] देलेस खाँड़ सब घुमाय, घण्टा छमीछा के ममिला।
टाल देलेस कोटासे में गंजवाय, जो जो न जन्तू पलटन में रहनयँ।
जौन जैसे गीरत बाय तौन तैसे, बिना न मरदन का लिरिया।

---

1. आसरा, 2. कटवाना-इससे लगता है उस समय बलि-प्रथा थी: 3. लड़की, 4. अपने आँचल का सहारा, 5. दक्षिण का सम्मान बचना, 6. रोक लिया, 7. शोर किया, 8. अवसर बारी, 9. तलवार, 10. ज्वाला, 11. चक्कर (घुमाव)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गली-गली बानी रिरियात, मार काट गइल जाजिम बाय बन्हाय।
कहाँ खानय-पीनय ऊहाँ बाटय, सवा लाख होनी बरात तैयार।
एक दम उदमत बरात रेंगल, राह लेलेस दखिनवाँ का तड़ियाय।

बारात का अगोरी की ओर प्रस्थान :—

राती रेंगय दिन दौड़य, कहीं नाहीं कूरो बदत बाय मोकाम।
राह लेलेन अगोरी का तड़ियाय, अब चल अयनऽ घाट कोलिया के।
ऊपर टप्पा परल बाय मैदान, वहाँ बोलत पूत कठइत का।
जेकर दूलर लोरिका बायंऽ नाम, "बेटवा सुनवे गुरु—भाई।
दरियाँ मनबे कहना हमार, ऐसी मुनरी[1] तूँ चढ़ैबा।
इन पर बाजा ठोंकवा जुझार।

समीक्षात्मक टिप्पणी—यह कथा प्रकाशित रूपों में अत्यन्त संक्षेह में, किन्तु मौखिक रूपों में, विशेष रूप से मिर्जापुर के पाठों में काफी विस्तार से वर्णित है। भोजपुरी रूप में भी राजा मोलागन से लोरिक के संघर्ष का उल्लेख हुआ है। प्रस्तुत संग्रह से इस कथा को सप्रमाण उद्धृत किया है। गायकों ने युद्धस्थलों, बारात के टिकने तथा महरा और राजा के निवास स्थानों का उल्लेख किया है जो अद्यावधि वर्तमान हैं।

सारांश—(21) **बारात का अगोरी के लिए प्रस्थान**–कोटा से चल कर बारात शीघ्र कोलिया घाट पहुँचती है। बाँठा बाजा वालो से इस प्रकार जोर से बजाने के लिए आदेश करता है कि जिससे उसकी आवाज अगोरी के राजा के कानों तक पहुँच जाय। बाजा बजने लगता है और राजा उससे अवगत हो जाता है। चिन्तित राजा जब तक घाट के मल्लाह झीलम को यह निर्देश दे कि सभी नावों को पानी में डुबा कर छिपा दिया जाय ताकि एक भी बराती पार न उतर सके, तब तक बारात तट पर पहुँच जाती है। इसी समय लोरिक पालकी से निकल कर सुबाचन को डाँटता है। तब सुबाचन मल्लाह से पूछता है, मल्लाह अपनी कठिनाई बता देता है। तथ्य जान कर लोरिक उससे कहता है—'तुम डरो मत, तुम्हारा बाल बाँका नहीं हो सकता, मैं राजा से निपट लूँगा।' झीलम उसकी बात मान कर बारात को पार उतार देता है। बारात सोन नदी को पार कर अगोरी पहुँचती है। अब केवल तीनों बाप-पूत बचते हैं। बूढ़ा कठइत छेंकना (डण्डा) लेकर नाव पर बैठता है, नाव डूबने लगती है, झीलम डर जाता है। तब लोरिक पेटी बाँधकर तैयार हो जाता है। बायें

---

1. मुद्रिका. बाजा बजाते समय अंगुली में अँगूठी चढ़ा ली जाती है ताकि पीटते समय चोट न लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सँवरू को और दाहिने कठयित को दाबता है, छेंकना हाथ में लेता है, दुर्गा का नाम लेकर चम्फा (चौपाल) लाँघता है और नदी पार कर जाता है।

(22) घ ाती-बाराती की बुद्धि-परीक्षा—अब पण्डित मोहिनी बारात लेकर महरा के दरवाजे तक पहुँचता है। सुबाचन अन्दर जाकर अपनी बहिन को प्रणाम करता है और उसे बताता है कि सवा लाख बाराती नदी के तट पर आ पहुँचे हैं, अतः शीघ्र प्रबन्ध करना चाहिए। उत्तर में वह इसे असम्भव बताती है, क्योंकि बिना पूर्व सूचना के इतने बारातियों का प्रबन्ध नहीं हो सकता है। इसलिए बारात अभी लौट जाय और जब बुलाया जाय तो आये। सुबाचन जाकर कठयित से सारी बातें बताता है कठयित इसे नहीं मानता। कहता है मुझे जगह भर बता दो, मैं यहाँ पर 20 दिन क्या, 2-4 पुश्त टिक सकता हूँ। सुबाचन पुनः जाकर धनवाँ महरिन से कठयित की बात कह सुनाता है। धनवाँ मान जाती है और दक्षिण (अगोरी) की रीति के अनुसार वर को माड़ो बाँधने के लिए बुलाती है। कठयित इसे स्वीकार कर लेता है और कहलाता है—'हमारे यहाँ का रस्म है कि घरात की ओर से उल्टी चलनी में पानी भर कर बारात में भेजा जाय। महरिन फिर कहलाती है कि जाकर गउरा से कुआँ ले आये तब उल्टी चलनी में पानी मिलेगा। कठयित कहलाता है कि पहले अगोरी से कुआँ यहाँ भेजें तब वही कुआँ गउरा भेज कर वहाँ से दूसरा कुआँ मगवाऊँगा। महरिन इस बात को सुनकर कठयित की बुद्धि की सराहना करती है तथा बारात लाने के लिए कहती है।

"ऐसी न बाजा सँही ठोंकता, राजा के किला सबद जुट जाय।
बाजत न लकड़ी बँठवा का, राजा के किला गयल औंजाय।"
सबद न छत्री के गयल पहुँचय, छत्री झंखत किलवा दरबार
आवत न अहोर बाय उतरहा, सङ्हें में देवी-दुर्गा बाय मवार।[1]
गड़बड़ ममिला बाय लौकत, का जानी कौने लोके बाय बरात।
जेन कर बाजा औंज बाय देले, राजा एक छीन धोती बाय पहिनत।
गोड़े में सोनय खड़ाऊँ बाय देखात, हथवाँ सोवरन घड़ी धइले।
उतरल बाय किलवा का दरबार, एकदम राजा रेंगल बाय रेंगावल।
जाय कर जूठल नदी के बाय तीर, जहाँ झीमल बायँऽमल्लाह।
नइया न डोंगा बाय बोरवावत, दरे-दरे देलेस करवट बोरवाय।
"कहाँ सरऊ एकौ मनई पार करला, खरियत नाहीं अगोरी में बाय।
बालो न बच्चा के झोकवाइब, देहें के देबय चमड़ी नेरवाय।"[2]

1. मालिक, 2. उधेड़वा लूंगा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतना मल्लाहे के बाय सौंपत, राजा लौटल किला-भण्डार।
बिना नाई डोंगा के मल्लाह, झीमल टहरत करारे पर बाय।
उतरल बरात अहीरे का, सोझय ओल्हल[1] कोलियबा[2] का घाट।
सवा लाख बरियात,[3] ... ... ।
सोझय ओल्हल करगरा के घाटे, आय कर सोने किनारे टीकल।
राजा के कीला समनी बाय समना,[4] जेकर मारे बरात के मारन।
उज्जर भयल नदियवा का बाय तीर,[5] पलकी न अहीरे के बाय छीपल।
पलकी से निकलत अहीर बाय, बोलत न बोल बाय लोरिका।
"ससुर न सुनबा मोर सुवाचन, दरियाँ मानऽ कहनवाँ हमार।
के फेर घाटे के हवै ठिकेदार, केकरे घरवा के बाय मल्लाह।

राजा का विरोध

कैतन नाई-डोंडा नाहीं देखात।
कैसे के होई बारात, हमारय पार।
दुइटँगी धोती पहीर कर, झीमल टहरत घाटे का ठेकदार।
झीलम न झीलम बाय पुकारत, तब फेर बोलल झिमलवा बाय मल्लाह।
"सुनबा न सुबा उतरय का, दरियाँ मनवा कहनवाँ हमार।
बल्ली न राजा बाय अगोरी, जेकर उरदी कहुलवा बिहलाय।
नइया न डोंगा बाय बेरवले, कस कर देलेस चपेटे लगाय।"
"जब सरऊ एको न मनई पार करबा, खरीयत नहीं अगोरी में बाय।
बालो न बच्चा झोकवाइब, तोंहके देबय जाठी में फेंकवाय।
सुना उहै मतलब बाय लौकत, केकरेजोर बाय भरोसे।
तोहरो करौं बारात एह पार," ... ... ।
ओह दिन बोलत पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाय नाम।
"झीलम न सुनबा तूं मल्लाह, दरियाँ मानऽ कहनवा हमार।
भइया उहै अहीर जीन जानऽ जेन फेर माँगी बियारी खाँड़।
आज मोर लोहय ऊठन लोहा जाठन, लोहा परल प्रान बाय अधार।
हम भाई सादी करय अयली अगोरी, हम फेर देखब राजा के मंसार।
सवा लाख करबा बरात हमार ओह पार, झीमल कोई हरजा जीन मानऽ।
जे फेर सवा लाख जनता जूझी, पिछवाँ से जाई जिनगी[6] तोहार।"

---

1. प्रवेश किया, 2. घाट का नाम, 3. बारात, 4. आमने-सामने, 5. शोणभद्र, 6. जिन्दगी।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतना सूनत झीलम बाय मल्लाह, आपन बालो बच्चा बाय लियवले।
केहू थरिया[1] धयले[2] बाय कोई डोकी,[3] कोई तसला लेत बाय लोहिया।
अब घरय का परानी[4] बायंऽ लियवले, जाय कर जूटल भेड़िया माई के पास।
मुर्रा न बन्हना[5] बाय कऽसत, पानी देलेस भेड़िया के उधवाय।
उतराइल नाव नदियाँ में, बालो न बच्चा बायंऽ लौटवले।
अपने लेकर लग्गी[6] बखत चढ़ल, ओह बात कऽमय पाट[7] नदी का।
दू-चार लग्गी ऊँहा बाय लगवले, नाय देलेस एय पार लगाय।
जितना बारात अहीरे का, दस पाँचय फेरवा[8] में बाय उतारत।

बारात का पार उत्तर कर अगोरी पहुँचना—

तीनों बापय पूत बायंऽ बचल, लेकर आयल नाव जब बाय।
उठल न बुढ़वा बाय कठयित, हाँथे में ले ले छेंकना बाय जात।
अब बुढ़ हाँथय छेंकना बाय थमले, हूरा[9] धरत नाई पर बाय।
नाई न डोङा बाय बूड़त, एक-दू हूढ़क[10] पानी चल जाय।
लखकर झीमल मल्लाह, जेकर हहरल नाई पर बाय।
हाँथय न जोरय करय बिनती, दरियाँ करत लरमियाँ के बोल।
"ददा हमसे पार नाहीं होई, हमरो बालो बच्चा मर जइहैं।
टूट जाई जिन्दगिया का रोजगार," बुढ़वा न छेंकना बाय हींचत!"[11]
अब बुढ़ बोलल लरमियाँ का बोल, "ई का देखला डोलनवाँ बछरू[12] का।
कहाँ झीमल गोरु-छेंकना तूँ देखला, गंउरा कोल्हू लगावल बाय जाठ।"
तब फेर जौन माल बाय लोरिका, कस कर बाँधत पेटी बाय समाय।
बायें न सौंरु के बाय दाबत, दहिने दाबस कठइता बाय ददा।
हाथे छेंकना[13] बाय लगवले, भाई लेतय देबिया का नाम।
चंफा न अहीर बाय डाँकल, डाँक कर भयल नदी ओय[14] पार।
सवा न लाख बाय बरात, अहीरे के भयल नदिया ओय पार।
पण्डित न हीगंरय[15] बाय मोहनी, भइया हिंगरत सुबाचन बाय।
नाऊ न संहे बाय हिंगरल, चल जानय महरवा के दरबार।
जाय कर कहत भाई बाय सुबाचन, महरिन से करल पलगी-प्रनाम।
बहिन आसीर्बाद बाय देले, "भइया आँखों अमर होइ जइबा।

---

1. थाली 2. रखा है, 3. काठ की थाली 4. प्रणाली, 5. बंधन 6. बांस का छड़ जिससे नाव खेते हैं। 7. विस्तार, 8. बार, 8. लाठी के नीचे का भाग, 10. घूँट, 11. खींचना 12. गाय का बछड़ा, 13. लाठी, 14. उस, 15. चलपड़ी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तूँ फेर जीयऽ लखवा बरीस, कहा कुसल गंउरा का,"।
तब फेर बोलल भई बाय सुबाचन, "कनिक मनवे कहना हमार,।
जल्दी दुवराँ इन्तजाम तोयं करबे, बरात गइल नदी पार आय,"।
तब फेर बोलल धनवाँ बाइ महरिन, "भइया मनबा कहनवाँ हमार।
जाय कर कहबा समधी साहब से, साहेब उल्टी हुकुम समधिन का।
अगोरी में कौनो लहाने[1] नहनी[2] भयल, न तो बरय बाजार बाय भइल।
न त फेर घूमल नेवता महरे का, न त फेर साइत-सगुन बाय देखावत।
साहेब दसय-बीस रोज खातिन,[3] एक दम नगर में गंउरवाँ गुजरात।
जब फेर सगरो लहान कर लेबय, पत्री देबय गंउरवाँ में दौड़ाय।
सहवा बारात लेकर आइहैं, आय कर सादी करिहैं आपन बियाह,"।
जाय कर कहत समधी बाय सुबाचन, "साहेब दसय बीस रोज खातिन।
लौट जैबा गंउरा गुजरात, ईहों कौनो लहान नहनी भयल।
हुकुम मिलत बखरी से बाय," वह दिन बूढ़य बोलल बाय कठयित।
"साहेब दस-बीस रोज के का धमकी देला, तनिक रहे के जगह मिल जात।
हम टिक रहब पुहुतवा[4]-दुइ-चार, जब तक सादी लड़की नाहीं कऽरब।
तब से नहीं लौटब गंउरवाँ गुजरात, अपने अहथिले[5] काम कुल करबा।
हरजा कौनों अगोरी में नाहीं बाय," फेर से लौटल सुबा बाय सुबाचन।
जूट जालय महरे के दरबार, जाय कर कहत बाय महरिन से।
"बहिन ऐसन-तैसन नहनी, जहाँ होनी अहिरन का खान।
तनी बरात टिके के जगह तूँ बनैबा, अहीर टिकिहैं पुहुतवा दुइ-चार।
जब तक सादी बियाह नाहीं करिहैं, तब से न लौटिहें गंउरा-गुजरात,"।
इतना न महरिन बाय सुनत, जब न भूसा के चलौसी।

विवाह की विचित्र शर्तें—

ओढ़ना में देलेस सुबाचन से बन्हवाय, भइया जाय कर समधी से कहबा।
"यही के बरवा साहेब बनरबास,[6] फेर दखिन चाल का चलना।
रसरी बन्हिहैं माड़ो घुमाय, तब फेर सादी होई बियाह।"
इतना जाय कर कहत बाय सुबाचन, कठइत कइले नदी पर मंजूर।
तब फेर बोलत बुढ़वा बाय कठइत, "साहेब हमरो सनेस ले ले जाबय।
जाय कर कह देहा बानी समधिन से, ई फेर भूसा चलौसी बाय मंजूर।

---

1. इंतजाय, 2, नहीं 3 के लिए, 4. पीढ़ी, 5. स्थिरहोकर, 6. शादी के समय आँगन में गाड़ने वाला बांस।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उल्टी चलनी भेजिहैं हमके पानी,[1] वहीं के भेई बरब बनरवास।
तब फेर आपन माड़ो बुन्हीं घुमइहें, तब फेर शादी होई देखा बियाह।"
इतना न बात बाय सुनत, महरिन देलेस बात दोहराय।
"भइया न सुनबा तूँ सुबाचन, कहना मनबा ऐठे हमार।
जाई न समधी तूँ कहबा, जबले आवै इनारा[2] गउरा का।
तब फेर बरिहैं चलौसी का बनरबास,शे तब फेर सादी होई देखा बियाह,"।
जाय कर कहत बात कठइत से, "साहेब उल्टी हुकुम बाय, मीलल।
अब ले आवा इनारा गंउरा का, तब फेर उल्टी चलनो मिली पानी,"।
बोलत न बुढ़वा बाइ कठयित, "साहेव हमके बाय[4] मंजूर।
हमरो सनेस[5] ले ले जाबय, समधी दे दे इनारा अगोरी का।
एहर से लेतय इनारा अगोरी का, एहर[6] से लेतय इनारा जब जाबय।
वहीं से जोर कर इनारा गंउरा से आनब, तब फेर उल्टी चलनी भेजिहैं पानी।"
इतना जाय कर बात बाय सुनावत, सुन कर ठहरल धनवाँ बाय महरिन।
कहलेन धन-धन पानी उतरय का।
जहाँ अहीर फूटल बाय बुद्धिमान, ई भाई कैसों अहीर नाहीं मुरकी[7]।
डँट कर करिहैं सादी के बियाह, कहलेस "भइया सुनबा हो सुबाचन।
दरियां मनबा कहनवाँ हमार, सगरों[8] भयल बाय इन्तजाम।
डँट कर लेआवऽ बरात दुवारे पर", इतना महरिन का हुकुम बाय लागत।
ले आनऽ बरात दुवरा पर, एक दम रेंगल भइया बाय सुबाचन।
जाय कर जूटल बराती में बाय, "समधी न सुनबा तूँ उतरहवा।
कहना मनबा एठिन हमार, अब ले चलय बरात दुवरा पर।
हुकुम लागत दुवारे पर बाय," बोलत न बुढ़वा बाय कठयित।
"बेटवा न सुनबे मोर धरमी, दरियाँ मनबे कहनवाँ हमार।
लेबे न डाली[9] हंथवा में, एक हाथ देबे दखिनवाँ में देखाय।"
बोलत न सौंरू बाय धरमी, हथवा जोरय करय बिनती।
हम ददा गइया-भइंसिया देखा देखब, कबों नाहीं कयली देसवाँ में बरियात।

.1 चलनी में पानी भेजने सम्बन्धी कथानक रूढ़ि 2. कुआँ 3. बन्धन बाँधना 4. हैं, 5. सन्देश 6. इधर।

7—लचेगा, झुकेगा 8—सम्पूर्ण 9—ट्वारचार के समय डाली ले जाई जाती है। समधी उसे लेकर आगे-आगे चलता है। उसे जब कोई धराती झोन लेने में समर्थ हो जाता है तो धराती की जीत अन्यथा हार मानी जाती है। कहीं-कहीं अहीरों में यह परंपरा आज भी प्रचलित है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमके आपय मलूमवाँ नाहीं बाय," इतना सुनत बुढ़वा बाय कठयित।
हथवा में लेतय डलिया फुन बाय, तब तक देखय हाल तीरवाँ का।
एक दम सवा लाख बाय बरियात, एक दम सजग दुवरे ले होय जाय।

समीक्षा एवं तुलना

प्रस्तुत कथा भी मौखिक रूपों में अधिक विस्तार से आयी है। बारातियों-बरातियों की बुद्धि-परीक्षा जो अत्यन्त सरस है, प्रस्तुत कथानक में ही आयी है। नामों, स्थानों, घटनाओं का उल्लेख यत्किंचित परिवर्तनों के साथ मौखिक परंपरा से प्राप्त अन्य कथारूपों में भी हुआ है। इस कथा-अंश से तत्कालीन संस्कृति एवं रीति रिवाज का अच्छा परिचय मिल जाता है।

23—बारात महरा के दवारपर—बारात का आमंत्रण पाकर कठयित अपने हाथ में एक डाली ले लेता और सवा लाख बाराती थोड़ी ही देर में महरा के दरवाजे पहुँच जाते हैं।

भेड़िया बाजा बजने लगता है, लकड़ी भी बजने लगती है। बूढ़ा आगे-आगे नाचता हुआ चलता है। बारहपाल की अगोरी बाजार बसी है, उसमें बिजली की तलवार भाँजते बारात कैसे जा सकती है, इस पर लोरिक विचार करता है। जैसे भी, जब बारात महरा के दरवाजे पर पहुँचती है तो वहाँ सवा सौ गुण्डे कठयित के हाथ से डाली छीनने के लिए तैयार बैठे होते हैं, और कठयित को देखते ही छीनने का प्रयास करते हैं, किन्तु उन्हें कठयित मार गिराता है। इतने में सुबाचन दौड़ कर जाता है और गले में गमछा डाल कर कठइत से प्रार्थना करता है कि डाली दे दो, तुम्हारा सामना यहाँ कोई नहीं कर सकता।'

24 जनवासा गोठानी में—ऐसा ही होता है, कठयित डाली पकड़ लेता है। सुबाचन बारातियों को टिकने के लिए गोठानी से एक मील दूर पूरब ले जाता है। वहाँ सतयुगी देवता रहते हैं। बारातियों को यह स्थान नहीं जँचता क्योंकि वहाँ घोर बन है।'

25 बारातियों का जेवनार—सुबाचन स्थान ठीक करने के लिए कुछ उपाय सोचता घर लौट जाता है। इधर कठयित भी एक उपाय करता है, वह एक ही बार में 42 हाथ चौफाल लाँघता है और सारा जंगल रौंद डालता है। स्थान ठीक हो जाने पर सारे बाराती बिछावन बिछा कर आराम करने लगते हैं।

अब धनवाँ सुबाचन को बारातियों की संख्या का ठीक-ठीक पता लगाने के लिए भेजती है। वह संख्या का पता लगा कर आता है और बताता है कि जात-परजात मिलाकर सवा लाख बाराती आये हैं। धनवाँ उनके लिए सवा लाख मन चावल, सवा लाख खँसी, सवा लाख पसेरी घी, तथा इसी के हिसाबसे मसाला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भिजवाती है तथा कहलाती है कि यह सब एक समय का है। बाराती घबड़ाते हैं क्योंकि इतना सामान कैसे खाया जा सकता है ? कठयित उपाय बताते हुए उनसे कहता है—'आधा-तिहा खाओ, बाकी नदी में फेंक दो।'

बाजा न बाजत बाय भेंड़िया, लकड़ी देलेस खोरी औजाय।
जौन न बुढ़वा बाय कठइत, ऊ बुढ़ अगई अगई बाय नाचत।
नाचत जातय करगही[1] बाय नाच, पीछे उदमत बरात रेंगल।
बाजा बाजत खोरी में चल जाय, झंखत पूत कठयित का।
जेकर दुलर लोरिका बाय नाम, हो हो न दयीव हो नरायन।
बारह न पाल बाय अगोरी, ओमें कसल[2] बसल बाय बजार।
कैसे घुमी बिजुरिया तरवार, इतना झंखत पूत कठइत का।
एक दम दुवरा बरात बाय पहुँचत, कठयित के दुवरा पर नचवे।
सगरो गयल दुवार अनुहाय,[3] जतिया लेकर परजात।
सगरो जूटल अगोरिया के बायंऽ लोग, सवा न सै बाय गुण्डा[4]।
महरे के छूटल दुवारे पर बाय, डाली छिनले कठयित के हाँथे।
कितना दस पाँच बाहें में बायंऽ झूलत, बुढ़वा वैसन घूमत देखा बाय।
जौने बखत धर कर भुजा बाय मेल्हत,[5] कितना गिरत धरतिया में बायँ।
कितना लातय लात बायंऽ गायब, दुवरा पर भारी हलचल बा मऽचल।
तब फिर दौड़ल सुवा बाय सुबाचन, गरय अंगौछी[6] बाय डालत।
हाथ जोरय करत बिनतिया ओठे बाय, "समधी सुनबा तूँ उतरहा।
पंचय मनबा कहनवाँ हमार, कल्ला न डाली तूँ टेकैबा,[7]।
अगोरी में कोई नाहीं लौकत जोड़ियवा लोहार," इतना न बतिया जब भयनी।
कठयित देलेस डाली टेकाय, बरात उदमत दूवारे पर भइल।
हुकुम लागत महरिन का, "भइया न सुनवा तूँ सुबाचन।
एठिनयं मनबा कहनवाँ हमार, ले ले जावा सब बराती।
एक दम नगर गोठानी बाय गाँव, सोने किनारे के तीरे।
जहाँ देवता बसल बाय सतयुगी, जहाँ पोरसन बन बाय बमकत।
जेमे चर-चर अड्डुर का बाय काठ," आगे-आगे रेंगल सुवा बाय सुबाचन।
पिछवाँ सवा लाख बाय बारात, एक दम डहरत अगोरी से जाय।

---

1. अहीरों का नाच विशेष 2- धनी 3- बेहोंश हो गये 4. पहलवान 5 घुमाता था, 6. गमछा 7. दोंगो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाय कर सोनय किनारे भयल ठाढ़[1], तव फेर सुबा बोलल सुबाचन।
"समधी न सुनबा तूँ साहेब, दरियाँ मनबा कहना हमार।
दखिन न देसवा बाय जगह, महरे के ऊहै खलियवा[2] बाय देखात।
ओमें लखय लोग गउरा का, आपन आपन ठोंकय तलवा तकदीर।
भगवन ई काहै लिखय बायऽ तूँ, देखय दखिन देसवा तूँ खऽार।
इ बाबू ऐसन[3] बन बाय लौकत[4], जेमे दिनयँ जनावर होइहैं ओलियालय[5]।
कैसे बीती दरियाँ एठे दीन ?" तब फेर लखत बुढ़वा बाय कठयित।
सुबाचन जगहय बताय कर बाड़य लौटल, चल जातय महरवा के दरवार।
तव फेर देखा हाल बुढ़वा का, "सुनवा न लोग गउरा का।
पंच जतिया लेकर परजात, कबों नहीं कयला देसवाँ के परदेस।
इहवयँ दखिन देसवा खऽार," बुढ़वा चाँपत[6] जूता गोड़वा[7] में।
हाँथय लेलय छेंकना बाड़य उठाय, अब बुढ़ डांकत बयालिस बाड़य हाथ।
बुरुवय न डाँकत बाय पच्छिम, पश्चिम से डांकत दखिनवाँ चल जात।
दस-पाँच फेवरा के किनखे[8], सगरौं मैदा करले जाय पिसान[9]।
घय-घय झोर दे छेंकना हँथवा का, दसय न फेवरा के किनखे।
जैसे लड़िकन का हो जाय बदगउर,[10], वैसे मैदा पिसान बाय कइले।
झार कर गिर जाय जाजिम अहिरे का, देखा भाई सोनय भदरवाँ के तीर।
अहिरे के बैठल सकलवा सब बरियार, देख फेर सवा लाख बाय बरात।
मौज लेती नदियवा के बाय तीर, राम न राम गुन गावैं।
के ठाकुर भजली नाम हो तोहार, देबिया न सुमिरली भगवती।
दुर्गा जानऽ सकती तोहार, जितना कीर्तन भयल सतजुगी।
जोर कर देबा कड़िया बैठाय, महरिन बोलल बाय धनवाँ।
दरियाँ करत लरमियाँ का बोल, "भइया न सुनबा तूँ सुबाचन।
एक दम लौटल जजमें पर जाया, जाय कर कितना बरात बाय आइल।
जोर कर लेता गिनती लगबाय", रेंगल न सुबा बाय सुबाचन।
चल जाय जीरवा न बहत्तर बाय खेतार, जहाँ सवा लाख बाय बरात।
अहीर के टीकल नदी के बाय तीर, जाय कर सुबा बोलत बाय सुबाचन।
"साहब मनबय कहलवा हमार, कितना बरात आप कर आइल बाय।
हमके देबय सरेखचा बताय", तब फेर बोलत कुब्बा नाय बुढ़वा।

---

1. खड़ा, 2. खाल', 3. ऐसा, 4. दिखलाई पड़ता है, 5. घुसे होंगे, 6. दबाता है, 7. पाँव में, 8. लगाने से, 9. आटा बना दिया, 10. पिस जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"समधी न सुनबा मोर साहेब, दरियां मनवा कहलवा हमार।
जतिया लेकर परजात, सवा लाखय बरात बाईं आइल।"
इतना खरेख बाय लगवले, सुबाचन लौटल ऊहाँ से जाय।
एकदम खाली सुबा बाय रेंगावल, जाय जूट जाला बखरिया महरे के।
महरिन न बहिन से बाय कऽहत, "बहिन सवा लाखन बाय बरात।
जतिया लेकर सगरों परजात, अहिरे के टीकल नदियवा के तीर।"
वह बखत महरिन बोलल बाय लिरिया, "भइया न सुनबा मोर नुबाचन।
दरियाँ मानऽ कहलवा हमार, अब घुम जाबा खोरिया अगोरी का।
बैलगाड़ी ठीक तूँ करबा, टप्पर लेबा तिरपाल उठवाय।
जजिमें के बगल में जाय कर बिछवैबा, सवा न लाख मन चाउर।
अब चढ़ जाबा पहाड़ गेरुआ का, सवा न लाख बाय खस्सी।
लेंहड़न छाँटा सिङ्घारा, एक एक मरदबा के जिम्मे।
एक-एक मन बाय चाउर, एक-एक खस्सी बाय सिङ्घारा।[1]
एक-एक पसेरी बाय घीव,[2] वही के मेलय मसाला बाय समान।
भइया सगरों समान जजिमें जुटाय कर, कह देबा बात समधी से।
साहेब एकय जुआरय के खोराक, दखिनय मिलल अगोरिया से बाय।
बिहना बच जाई समान जजिमें पर, वही गोड़े लौट के बेंवत[4] बाय देखात।"
एक दम खिचवायल ठप्पर जजिमें का, बोरय न बोरा बाय चाउर।
जाय कर खूलत तिरपाले पर बाय. जैसे गोहना[5] में चाउर रास लागल।
वैसे कूरा टाल लाग जाय, मारे न खस्सी बायँऽ लेंहड़[6]।
तीरे सोवै के जगह नाहीं देखाय, टीना न टीना बाय घीव।
सगरों मेलय बाय मसाला, "साहेब एकय जुआर के बाय खोराक[7]।
मिलत बाय अगोरिया बजार, बिहने जजिमें समान बच जाई।
वही गोड़े लौटे के रस्ता बाय देखात", जिम्मा न सगरों लगाय कर।
सुबाचन लौटल महरे के दरबार, बहुत भाई झंखत लोग गउरा का।
सगरों झंखत तलवा तकदीर, जौने न दिन लोरिका पलकी से बाय लऽखत।
"ब्रह्मा कौन गतिया बाय लिखले, लौटे के पहला रस्ता बाइ देखात।
हमरे मोहब्बत के कारन, एक-एक आयल दयिवा के बाय लाल।
केनहूँ पउबय अधसेरा के बायँऽ खवइया, ऊ भाई इतना रसद कैसे खइहैं।
लौटे के अपनय बेंवत बाय देखात।"

---

1. सींग वाला, 2. घी, 3. वक्त, 4. उपाय, 5. गोला जहाँ बिक्री की जानी है। 6. समूह; 7. भोजन।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तब फेर लखत बुढ़वा बाय कठइत, 'वेटवा वाउर मति तूँ बउरवला।
तोहरे अकिल हरले बायँऽ भगवान, पंचय जतिया ले सुनवा परजात।
दरय-दर वारय दहाना अगिया का, कुछ भाई देवा खस्सी झोंकाय।
कुछ भाई चिखना लेवा हो खाय,[1] बाकी काम पर समान निकलबा।
जितना फलतू[2] समान बच जाई;[3] खस्सिया काट-काट नदिया में विगतेबा[4]।

समीक्षा एवं तुलना—द्वारचार की जिस रीति का वर्णन इस कथा-प्रसंग में आया है, वह बेजोड़ है। डाली की प्रथा विचित्र किन्तु सत्स है। गोठानी में वारात टिकती है, बुड्ढा कठयित उछल-कूद कर जमीन को समतन बना देता है। कथा का यह रूप प्रायः अन्य मौखिक पाठों में भी मिलता है। भोजपुरी रूप में इसका उल्लेख है, किन्तु अन्य रूपों में इतने सरस ढंग से उसे प्रस्तुत नहीं किया गया है।

सारांश—26. **लोरिक का रात में ससुराल गमन**—वाराती ऐसा ही करते हैं। वे खा-पीकर सो जाते हैं। कठयित के संकेत पर गँगिया भोर में चार बजे लोरिक को लेकर महरिन के दरबार पहुँचता है और कहता हैं—'वारातियों के लिए भेजी गई खाद्य-सामग्री इतनी कम थी कि लोरिक के लिए बासी ही नहीं बचा। इसकी वासी खाने की आदत है, यदि यहाँ कुछ बचा हो तो उसे खाने को दे दीजिए।' इस पर महरिन कहती है—तुम मेरी इज्जत मत लो, थोड़ी देर रुको खिचड़ी बनवा-कर खिलाती हूँ।' 'गंगिया लोरिक को एक झापड़ (चाँटा) मार कर वापस होने के लिए कहता है। इनके लौटते ही सुबाचन भी इन्हें मनाने के लिए आता है। अब कठयित सोलह स्तनों वाली भैंस की माँग करता है और चुनौती देते हुए स्पष्ट कहता है—"दो-एक दिन में इसकी व्यवस्था नहीं होती है तो बारात चली जायगी।" धनवाँ जब यह समाचार पाती है तो बेहोश हो जाती है। मँजरी को इसका पता लगता है तो वह उपाय बगाती है और उसके अनुसार सोने की भैंस बनाई जाती है। वह भैंस क्या है, सोलह टोटी की गिलास ही है जिसे सुबाचन बारात में ले जाता है।

27. **गिलासका रहस्य**—लोरिक वारात का पहरा करता है। वाराती सो जाते हैं। धनवाँ की नींद उचटती है। वह खरफर चोर को जगाती है और उसे निर्देश देती हुई कहसी है—' तुम किसी प्रकार वारात से गिलास चुरा कर ले आओ; तुम्हारा घर धन-धान्य से भर दूँगी।'

तदुपरान्त खरफर गिलास का पता लगाने वारात में आता है और जमीन के अन्दर सेंध लगाता है। इसके द्वारा गिलास प्राप्त कर उसे धनवाँ के समक्ष प्रस्तुत

---

1. स्वाद लेने के नाम पर, 2. अतिरिक्त, 3. शेष, 4. फेंक दोगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर देता है। महरिन उस कुठिला में ले जाकर छिपा देती है। उधर लोरिक की नींद खुलती है तो देखता है गिलास गायब है। वह दुर्गा का स्मरण करता है।

झार कर देबा दहे में बहवाय, खाय कर मङ्डर मछली खूब मोटाय।
गड्या सुनबे तोयं हजामत, दरियाँ मनते कहलवा हमार।
तेख भाई भोरय होई जब हुकहुर,[1] पूरब कउआ मचइहैं सब रोर।
ओही बखत धरय चेंचुरा[2] लड़िका का, अब चल जाया महरे के दरबार।
बासी न कूसी माँग के खियैबे," जौने बखत भोरवा भयल हुरहुर।
पूरुब कउआ देले बायँऽरोर, वह बखत गड्या जजमें से बाय ऊठत।
एक दम धरत चेंचुरा लड़िका का, जाय कर जूटल दुवारे महरे के।
महरिन मौके से बाय निकलल, गड्या निहुर करत बाय प्रनाम।
महरिन देती असिसवा बाईं बाद, "आँखों अमर तूँ होजैबा।
भइया जीयऽ लखवा तूँ बरीस, गड्डी कौन जरूरत पड़ गइल।
लेकर अयला लड़िका दूवरा पर;" वह दिन गँड्या बोलत बाय हजामत।
"गौहिन[3] सुनबा, तूँ हमार, एठिनयँ मनबा कहनवाँ मोर बात।
ऐसी न रसद तूँ भेंजववला, लड़िका के बसिया खाए के नाहीं बाय।
दूसरे भोरय के लड़िका हवय खवइया, बड़ा जजिमें पर करत बाय हलकान।[4]
गौंहिन बासी-कूसी जूठ-काठ होई, लड़िका के देबा दुवारे पर खियाय।"
तब फेर धनवाँ बाय महरिन, "भइया गाँड़ी सुनबा तूँ हजामत।
दरियां मनबा कहनवाँ हमार, जैसे लगबा नाऊ बराते का।
वैसे लगबा नाऊ ले हमार, काहे लूटत इज्जत अगोरी का।
तनी घण्टा छमीछा रुक जाता[5]; भइया टाटक[6] खिचड़ी बाई बनवावत।
दुय कवर तूहों खिचड़ी खाय लेबा, लड़िका के लेबा आत्मा भर खियाय।
खाय पीय के जाय जजिमें जाया," इतना सूनत गड्या बाय हजामत।
तान कर[7] मारत झापड़[8] लड़िका के, सरवा के बहुत गउबां बरजली।[9]
अब धर लेलेस पीछा हमार, तब का लोरिका बालक ई जनलेन।
टाटक खयलेन गउरवां अगोछ,[10] अब फेर हई बखरी महरे का।
बासी के बासी ठेकान बाय देखावय; धयले न चेंचुरा लड़िका का।
गड्या लौटल जजमें पर जावे, जाय कर बातय चित्त बाय बतियावल।

---

1. भोर का समय, 2. बांह, 3. मालकिन, गांव के मुखिया की स्त्री, 4. परेशान 5. प्रतीक्षा करोगें, 6. ताजा, 7. खींचकर, 8. तमाचा, 9. रोका, 10. भोजन विशेष।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब फँस गयिल ममिला गउरा का, इतना न बात बाय होत।
फेर भेजलय सुवाचन बाय समधी, वह फेर बोलल बुढ़वा बाय कठयित।
"साहेव एकय गरज बाय वराते का, सोरह चुचिया[1] का भैंस।
जौन एकय सोखे बाय पेन्हाय[2], साहेब देहा अगोरिया से भेजवाय;।
दुय एक दिनवां जोहब, जब से समान नाहीं अइहैं।
ऊठी बरात इहवां से, राह लेवय उतरवाँ का तड़ियाय।
लड़िका का करव सादी पैंड़े में, डाड़ी ले ले गउरा चलि जाबय।
आपका ऐसय भैने रह, जाई, सांचय देली सरेखवा लगाय।
साँचय देली सरेखवा लगाय, इतना न सुनत बाय सुबाचन।
चल जातय अगोरिया बाय पाल, जाय कर हलल बखरी महरे के।
जाय कर कहत बात महरिन से, "बहिन न सोरहय चुचिया का भैंसय।
जौन एकय सोखे पेन्हाय, इहै मड्ले बराते के बाय लोग।
बात के अहिर बाय बतिझर,[3] जबसे इहैं समान नाहीं भेजवइबा।
कुछय दिन ईहाँ जोही, नाहीं राह लेही उतरवाँ का तड़ियाय।
पैंडे करी सादी वेटवा का, डाडी ले जाई गउरा गुजरात।"
इतना सुनत धनवाँ बाय महरिन, ठाढ़य गिरल धरतिया में हहराय।
"भइया अबय मुसकिल भयल, कौनो जोगिता[4] लेबा दरब।
लेकर दरब बखरी का, अब घुम जाबा दुनियाँ संसार।
कौनों मुलुकवा में मिली, एकर लेबा पतवा लगवाय।
कौनों अकिल बाय फरियात[5] राम न राम गुन गावै से ठाकुर।
कयार[6] कूँचि-कंचि देलन मेड़वार[7] मचाय, सूतल[8] न धिया महरेका।
जेकर दावन मँजरी बाय नाम, बोलत न लड़की महरे का।
"मंमा केन्ह मनई कैसन भयनऽ, कैसन मचल मेड़ारी बरियार।"
इतना सुनत मंमा बाय सुवाचन, "हम तोरय सादी के कारन।
सगरों रोवत बखरी के पलिवार,[9] अहीर सोरह न सोखे के बाय भैंस।
जौन फेर एकय सोखे बाय पेन्हाय, उहैं माड्त बराते में बाय।
कोई के अकिल[10] गवाही नाहीं देत, इहै में रोवत मेंडारो[11] बाय मचाय।"
तब फेर बोलल धिया महरे का, बड़-बड़ गाढ़ माई टललेन।
ससुरु काटी हो गयनऽ मैदान, एकठे सहज बात बाय कहले।

---

1. स्तन, 2. दूध देती है 3. बात रखने वाला, 4. उपाय, 5. स्पष्ट होता है; 6. सिर, 7. भीड़, 8. सो गयी, 9. परिवार, 10. अक्ल, 11. भीड़, अशान्ति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर देता है। महरिन उस कुठिला में ले जाकर छिपा देती है। उधर लोरिक की नींद खुलती है तो देखता है गिलास गायब है। वह दुर्गा का स्मरण करता है।

झार कर देबा दहे में बहवाय, खाय कर मड्डर मछली खूब मोटाय।
गड्या सुनबे तोयं हजामत, दरियाँ मनते कहलवा हमार।
तेख भाई भोरय होई जब हुकहुर,[1] पूरब कउआ मचइहैं सब रोर।
ओही बखत धरय चेंचुरा[2] लड़िका का, अब चल जाया महरे के दरबार।
बासी न कूसी माँग के खियैबे," जौने बखत भोरवा भयल हुरहुर।
पूरुब कउआ देले बायँडरोर, वह बखत गड्या जजमें से बाय ऊठत।
एक दम धरत चेंचुरा लड़िका का, जाय कर जूटल दुवारें महरे के।
महरिन मौके से बाय निकलल, गड्या निहुर करत बाय प्रनाम।
महरिन देती असिसवा बाईं बाद, "आँखों अमर तूँ होजैबा।
भइया जीयऽ लखवा तूँ बरीस, गड्डी कौन जरूरत पड़ गइल।
लेकर अयला लड़िका दूवरा पर;" वह दिन गँड्या बोलत बाय हजामत।
"गौहिन[3] सुनबा तूँ हमार, एठिनयँ मनबा कहनवाँ मोर बात।
ऐसी न रसद तूँ भेंजववला, लड़िका के बसिया खाए के नाहीं बाय।
दूसरे भोरय के लड़िका हवय खवइया, बड़ा जजिमें पर करत बाय हलकान।[4]
गौंहिन बासी-कूसी जूठ-काठ होई, लड़िका के देबा दुवारे पर खियाय।"
तब फेर धनवाँ बाय महरिन, "भइया गाँड्डी सुनबा तूँ हजामत।
दरियाँ मनबा कहनवाँ हमार, जैसे लगबा नाऊ बराते का।
वैसे लगबा नाऊ ले हमार, काहे लूटत इज्जत अगोरी का।
तनी घण्टा छमीछा रुक जाता[5]; भइया टाटक[6] खिचड़ी बाई बनवावत।
दुय कवर तूहों खिचड़ी खाय लेबा, लड़िका के लेबा आत्मा भर खियाय।
खाय पीय के जाय जजिमें जाया," इतना सूनत गड्या बाय हजामत।
तान कर[7] मारत झापड़[8] लड़िका के, सरवा के बहुत गउबां बरजली।[9]
अब धर लेलेस पीछा हमार, तब का लोरिका बालक ई जनलेन।
टाटक खयलेन गउरवां अगोछ,[10] अब फेर हई बखरी महरे का।
बासी के बासी ठेकान बाय देखावय; धयले न चेंचुरा लड़िका का।
गड्या लौटल जजमें पर जावे, जाय कर बातय चित्त बाय बतियावल।

---

1. भोर का समय, 2. बांह, 3. मालकिन, गांव के मुखिया की स्त्री, 4. परेशान 5. प्रतीक्षा करोगें, 6. ताजा, 7. खींचकर, 8. तमाचा, 9. रोका, 10. भोजन विशेष।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब फँस गयिल ममिला गउरा का, इतना न बात बाय होत।
फेर भेजलय सुवाचन बाय समधी, वह फेर बोलल बुढ़वा बाय कठयित।
"साहेब एकय गरज बाय बराते का, सोरह चुचिया[1] का भैंस।
जौन एकय सोखे बाय पेन्हाय[2], साहेब देहा अगोरिया से भेजवाय;।
दुय एक दिनवां जोहब, जब से समान नाहीं अइहैं।
ऊठी बरात इहवां से, राह लेबय उतरवाँ का तड़ियाय।
लड़िका का करब सादी पैंड़े में, डाड़ी ले ले गउरा चलि जाबय।
आपका ऐसय भैने रह, जाई, सांचय देली सरेखवा लगाय।
सांचय देली सरेखवा लगाय, इतना न सुनत बाय सुबाचन।
चल जातय अगोरिया बाय पाल, जाय कर हलल बखरी महरे के।
जाय कर कहत बात महरिन से, "बहिन न सोरहय चुचिया का भैंसय।
जौन एकय सोखे पेन्हाय, इहै मड्ले बराते के बाय लोग।
बात के अहिर बाय बतिझर,[3] जबसे इहैं समान नाहीं भेजवइबा।
कुछय दिन ईहाँ जोही, नाहीं राह लेही उतरवाँ का तड़ियाय।
पैंडे करी सादी बेटवा का, डाडी ले जाई गउरा गुजरात।"
इतना सुनत धनवाँ बाय महरिन, ठाढ़य गिरल धरतिया में हहराय।
"भइया अबय मुसकिल भयल, कौनो जोगिता[4] लेबा दरब।
लेकर दरब बखरी का, अब घुम जाबा दुनियाँ संसार।
कौनों मुलुकवा में मिली, एकर लेबा पतवा लगवाय।
कौनों अकिल बाय फरियात[5] राम न राम गुन गावै से ठाकुर।
कयार[6] कूंचि-कंचि देलन मेड़वार[7] मचाय, सूतल[8] न धिया महरेका।
जेकर दावन मँजरी बाय नाम, बोलत न लड़की महरे का।
"मंमा केन्ह मनई कैसन भयनऽ, कैसन मचल मेड़ारी बरियार।"
इतना सुनत मंमा बाय सुबाचन, "हम तोरय सादी के कारन।
सगरों रोवत बखरी के पलिवार,[9] अहीर सोरह न सोखे के बाय भैंस।
जौन फेर एकय सोखे बाय पेन्हाय, उहैं माड्त बराते में बाय।
कोई के अकिल[10] गवाही नाहीं देत, इहै में रोवत मेंडारो[11] बाय मचाय।"
तब फेर बोलल धिया महरे का, बड़-बड़ गाढ़ माई टललेन।
ससुरु काटी हो गयनऽ मैदान, एकठे सहज बात बाय कहले।

---

1. स्तन, 2. दूध देती है 3. बात रखने वाला, 4. उपाय, 5. स्पष्ट होता है; 6. सिर, 7. भीड़, 8. सो गयो, 9. परिवार, 10. अक्ल, 11. भीड़, अशान्ति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भाई के अकिल गवाही नाहीं दे," चट-पट दुयठे सोनार बाय बलवावत।
ठीहा लेलेन समान सब लहाय, दुय सेर सोना बाय देत।
नकसा देलेस नमूना देय बताय, दूई पतुरा बाय पिटववले।
ओमे सोरह डोरा बाय बनवले, अब एकय ठे बाय सुराख।
चट से बन गयनऽ गिलास सोनवां का, दूनों देलेन पतुरा बैठाय।
ऊपर से देलेन घुमावदार चीन्हाँ, अब बन गयिल गिलास सोनवन का।
जेमें सोरह टोटी[1] बाय देखात, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
अब बन गइल गिलास सोनवन का, जेमें सोरह डोंटा बाय देखात।
अब भेज देवा गिलास बराते में, लेले न जात बाय सुबाचन।
जमा कर देय अयलेन गिलास जजमें पर, सवा लाख पियत खात करत बाय मौज।
सुबाचन लौटल महरे के दरबार, राम न राम गुन गावैं के ठाकुरभजली नाम हो तोहार।
देविया न सुमिरली भगवती, दुर्गा जानय सक्तिया तोहार।
जितना कीर्तन भयल सतजुगी, जोर कर देवा कड़िया बैठाय।
सवा न लखवा बरियात, अहिरे के टीकल नदिया के तीर।
पौले गिलास सोनवन का, डट कर पीयत मदवा जब बाय।
पीय कर मौजय न लोग बाय लेत, सवा न लाख बाय बरात।
झार कर सूतत जजमे पर बाय, परल न पहरा लोरिकाका।
वह दिन बोलल बुढ़वा बाय कठइत, "बेटवा मनबे कहनवाँ हमार।
इहो दखिन देसवा खडार, डट कर करा पहरा अगोरी में।
जेकर टुटही लतरी[2] चल जइहैं, बिहना से भगिहैं चढ़िहैं के घोड़।
जेकर टुटही डंडा चल जइहैं, बिहना से खोजिहैं पुरबवा देखा राज।
डँट कर करा पहरा देखा जजमें पर, इतना बुढ़वा कठइत बाय सरेखत।
ऊ बूढ़ सूतत जजमें पर बाय, आधी न रात बाय निचलोइया।
अम्मा न सास जौन महरिन, ओकर कबरल[3] नींद कोठिया से।
आधी न रात बाय निचलोइया, अम्मा न सास जौन महरिन।
ओकर कबरल नींद कोठिया से, रेंगल न लिरिया बाय रेंगावल।

गिलास की रहस्यमय चोरी

हल गइल खोरी बाय भितौरी, खरफर चोर बाय बलबौले।
अपने लेलेन अङनई[4] में बलवाय, कहत न बानी लरमें का।
"भइया न सुनबे खरफर, एठिनयं मनवा कहनवां हमारय।

---

1. छिद्र, 2. टूटा जूता, 3. खुली, 4. आँगन,।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देख भाई आधी रात बाय बऽखत, बहुत कइला चोरी अगोरियाँ।
एक चोरी करय एठिनय हमारय, सम्मपँ राज तोहैं छोड़वाइव।
मौज करा अगोरिया तूँ पालय, देखा पहरा बाय लोरिकवा दुलरवा का।
सोने का गइल गिलास बाय हमार, जाय कर ले आनऽ गिलास जजिमेसे।
इतनयं बानी बहुदरी तोहार," रेंगल न चोर बाय खरफर।
राह धइले नदी के बाय तीर, रेंगल न चोर बाय रेंगावल।
जाय कर पहुँचल गोठानी बाय गाँव, सवा लाख बाय बरात।
सगरों सूतत जजिमें पर बाय, ऊ भाई कुछ दूर के फसिला।[1]
छिप कर देखत तमासा बाय, जौन न पूत कठइत का,।
जेकर दुलर लौरिका बाय नाम, सोरह न सोखा का गिलास।
जेकर एकय रहल सुराख,[2] सोनवाँ का धइले पोल्थी पर बाय।
कुछ भाई घरी घण्टा का समय, कला न रख दे गिलास पोल्थी पर।
अहिरे के मारत झोंका जब बाय, अहीर बाय जजमैं पर झंपात।
लख कर लौटल चोर बाय खरफर, जाय कर हल गयल बखरी महरे के।
ओठे लेतय फरसा बाय कुदारी, सगरों सुमिरत सत्य अगोरी का।
अनिहारी न सुमिरत भवानी, जे भाई सनमुख नजरी पर बाय।
अंगने से कोंड़त[3] भुईनास, एकदम तरय-तरय[4] बाय कोंड़त।
जाय कर जूटत जिरवा बाय खेतार, जाय कर जूटत जजमें लोरिके के।
जहाँ बइठत कठइत का पूत, वहीं भाई परगट सनमुख बाय भवनी।
अब रोक देलेस हाँथ फरसा[4] का, हाथ भर ऊपर बोंगा बाय कयले।
जाजिम गयल ऊपर बाय तोपाय, जहाँ बैठल अहीर फुन बाय।
काढ़त न बाकी पल्लाँ से, कलयकल[5] धूम कर जाजिम बाय काटत।
हाथ भर कयले बेध फुन बाय, लुप—लुप ताकत चोर बाय खरफर।
पोल्थी पर गिलास सोनवाँ का, अहिरे के लागत झँपैनी जब बाय।
दहिना न हाथ बाय निकलले, ठप से खींचत पोल्थी से गिलास।
लेकर तरय-तर बाय भागत, जाय कर निकलल महरे के दरबार।
महरिन के गिलास बाय टेकावत, आपन चिन्हत गिलास सोनवां का।
दुनों साथय न साथ बाय रेंगल, अब भिनसहरा का जून बाय देखात।
गिलास देलेस दहे में बिगबाय, बहुत गिलास सोनवाँ का।
चल जाय नगर हरदी बाय पाल, हरदी में महीचन तेली के बाय लड़की।
ऊफेर लड़की रहल सत्यवादी, रोज भाई कौआ बोलल के बऽखत।

---

1. फासला, 4. छिद्र 2. खोदता है, 3. नीचे-नीचे, 4. फावड़ा 5. धीरे-धीरे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गिलास का छिपाया जाना[1]—

नेम से नदी करे अस्नान, बहल गिलास सोनवन का।
ओकरे गयील बदन में ठेंक, ऊ भाई पवलेस लड़की महीचन का।
ओकरे कहाँ कच्ची पीतर देखा रहल, दुयठे लेहलेस सोनार बलवाय।
वही न नकसा के गिलास, एक ठे लेलेस पितरी के बनवाय।
दुनों गिलास बाय उठवले, जाय कर बत्तीस गाड़े का बाय कुठिला।
जौन लोहय कुठिला लोहे का सीढ़ी, चढ़ कर देलेस दूनों गिलास गिराय।
दुय-चार घड़ी बाय बऽचल; टप से भयल ख्याल अहिरे का।
एकदम चुनती परान परगयनऽ, टप से गड़िया नाऊ के बाय जगावत।
अपन देलेस पहरा पर बैठाय, "देख भाई ठेकाने दिमाग करके।
पहरा देहें जजमें के दरबार।
भारी न धोखा बाय भयिल," इतना न अहीर बाय ऊहाँ सरेखत।
भइया लेलय दुर्गवा का नाम, "देख आदि दिन का पुजमानयं।
दुर्गा जानऽ सकती तोहार, तोहरे जोरवा बाय भरोसे।
चढ़ली दारु देसवा खड़ार, गउरा न सुमिरत बाय गौंहेर।
बोहवा कनिक[2] न सुमिरत हव मुरार,[3] जे फेर सुमिरले दँवार[4]।
सगरों सुमिरत सत बाय अगोरी, भाई लेतय दुर्गवा कानाम।"

समीक्षा तथा तुलना—

लोरिक के रात में ससुराल जाने की इस घटना का उल्लेख भी इस पाठ में सर्वथा नये ढंग से किया गया है। वह बासी भात खाने के बहाने जाता और तमाम रहस्यों का पता लगाकर चला आता है। इस प्रसंग से कथा में एक नया मोड़ आ गया है और कथा को अपने आप गति भी मिल गयी है। गिलास की चोरी की गटना का रहस्योद्घाटन भी बड़े सुन्दर ढंग से हुआ है। कथा का यह अंश प्रकाशित कथा रूपों में प्रायः नहीं मिलता। चोरी के इसी प्रसंग के आधार पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीने 'लोरिकापन' को मृच्छकटिक' के समय की रचना स्वीकार किया है।

सारांश (28) चोरी का रहस्योद्घाटन और गिलास की खोज तथा प्राप्ति— इधर लोरिक गिलास के लिए ब्याकुल होता है। तब वह दुर्गा का स्मरण करता है और सहायता की प्रार्थना करता है। दुर्गा चील का रूप धारण कर उसकी सहायता के लिए प्रकट होती हैं। वह लोरिक को अपने डैने पर बिठा कर इन्द्रलोक ले जाती

---

1. चोरी का ऐसा प्रसंग मृच्छकटिक में भी आया है,
2. तनिक, 3. लोक का देवता, 4. दाँत वाला सूक्षर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं। वहाँ चन्द्रमा का पहरा है। दुर्गा परेशान होती हैं। तरई सोनवाँ, गोबर सैंती दोनों उनकी सहायत करती और उन्हें इन्द्रलोक का मार्ग बताती हैं। साथ ही, गिलास की चोरी का रहस्योद्घाटन भी करती हैं। दुर्गा की कृपा से सबेरा नहीं होता।

इधर महरिन और खरफर को उनके इन्द्रलोक जाने की सूचना मिल जाती है। वे जाकर गिलास को सोन नदी के दह में डाल आते हैं। प्रातः काल होने पर महीचन तेली की लड़की सोन में स्नान करने जाती है और गिलास पा जाती है। वह गिलास को ला कर कुठिला में छिपा देती है। तब तक दुर्गा लोरिक को लेकर पुनः वापस आ जाती हैं। लोरिक धरमी से सारा समाचार कह सुनाता है।

धरमी बक्से में से तिसला (पीतवर्ण का कोई वस्त्र) निकालता है। लोरिक और धरमी दोनों उसे दो भाग कर पहन लेते हैं और योगी बन कर हरदी घाट पर पहुँचते हैं। महीचन तेली की लड़की भोर में ही वहाँ आती है और इनका गाना-बजाना सुन कर मुग्ध हो जाती है। तब वह उनसे पारितोषिक रूप में कुछ माँगने के लिए आग्रह करती है। इस पर वे गिलास की ही बात करते हैं। वह उन्हें गिलास तो देती है, किन्तु वह पीतल की है। दुर्गा प्रकट होकर वास्तविकता का उद्घाटन करती हैं। तब वे उससे कहते हैं किपीतल की गिलास लेकर हम क्या करेंगे ?" लड़की पुनः घर जाती है और सोने की गिलास ला कर उन्हें दे देती है। अब वे गिलास लेकर बारात में आ जाते हैं तभी रात बीतती है और दिन होता है।

इधर महरिन सुबाचन को सोने की गिलास लाने के लिए बारात में भेजती है। सुबाचन जाकर कठयित से गिलास माँगता है। कठयित के कहने पर गँगिया गिलास लाकर सुबाचन को दे देता है। सुबाचन उसे लेजा कर धनवाँ महरिन को दे देता है। महरिन को तो उसे देखते ही आश्चर्य होता है और उत्तर-देशवासियों के चातुर्य की प्रशंसा करती है।

तरई गोबर सैंती के यहाँ प्रस्थान :—

एठे जानय सकती तोहार, जब तक तोहरय गिलास नाहीं लौटब।
तब से भोर न होये बिहान," भइया देबी दुर्गा के बाय गोहरबले।[1]
देबी धइले चिल्होंरिया का भेष, लोरिका न साथे में बाईं लपेटत।
लेकर चल जाय इन्दरा का बाईं लोक, लेकर चन्द्रमा के पहरा पर जूटल।
लोरिका मारे किरोधवा[2] में होकर, ओनकर[3] फेरत मुसुक ऊहाँ बाय।
बोलत चन्द्रमा बाईं, "देख भाई हमरे पहरा के नाहीं बात।

---

1. पुकारा, 2. क्रोध. 3. उनका।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाछे सुक्कर आवत महराज, दूरै दीहें उनहूँ नऽ रस्ता तोके बताय।"

उनहुँन का राह बाय छोड़ले, जायकर सूकर राह बाय छेंकत।
बोलत सुकरवा महराज, "अन्तिम तरई सोनवाँ गोबर सैंती[1]।

इहे दीहैं रस्ता तोके बताय," ओनहूँ का राह बाय छोड़ले।
जाय कर सुक्कर राह बाह छेंकत, लेकर इन्दर न लोकवा बाय घूमत।

जब फेर मिलत तरई गोबर सैंती, जायकर फेरत मुसुक उनहूँ का।
तरई गइल इन्दर में अकबकाय, "अब बीर ढीलय बन्हना हमार करबा।

ठहरूक करीं दिमाग हमहूँ," बोलत पूत कठइल का।
जेकर दुलर लोरिका बाय नाम, "देख भाई सोनयँ गिलास बाय गायब।

गिलास वापस :—

मूँह लागल करिखा दखिनयँ में, अब डूब जाई पानी उतरय का।

जल्दी देबय सरेखे लगाय," बोलत न तरई गोबरसैंती।
"दरियाँ देलेस अर्थवा बताय, अम्मा न सास जौन तोरय महरिन।

राती न रात बाय निचलोइया, हलगयील भितौरी बाय गाँव।
झटपट खरफर चोर बाय बलवले, अङने में देलेस कथा सब समझाय।

एक दम रेंगल चोर बाय रेंगावल, चल जाय सोनयँ नदिया के तीर।
जायकर कुछ दूर के बाय फसिला, छिप कर देखलेस तमासा जजमें का।

"तोर भाई सवा लाख बाय बरात, सगरों सूतल जजिमवाँ पर रऽहल।
तूँ फेर ढार-ढार मदवा पीयत, पीयकर धरला गिलास पोल्थी पर।

सागरों लखकर हाल जजमें का, चोर लौटल खरकर ऊहाँ से बाय।
जायकर हलल अङनईं महरे के, ऊहाँ फरसा लेत बाय कुदारी।

सगरों संत बाय ऊहाँ सुमिरत, सुमिरल भवानी अनिटारी।
तरय-तर भुईनास कोंड़ल, जाय कर जूटल लोरिका के पास।

जजमें न माटी बाय कोंड़वले जोति पहुँचल गिलासी का बाय।
हाथ भर में जाजिम बाय काटत, टुप-टुप चितवत चोर बाय खरफर।

दहिना न हाँथ बाय निकलले, टप से खींचत गिलास सोनवाँ का।
एकदम तरयतर[2] भागल, जाय कर निकलल अङने महरे के।

महरिन, चोर दूनों मीलकर, चल जाय सोनयँ भदरवा के तीर।
गिलास देलेस दहवा[3] में विगवाय, बहल गिलास सोनवाँ का।

पूरुब हरदी नाय[4] में बाय पहुँचल, हरदी महीचन तेली के लड़की।

---

1. लोक की देवी का नाम, 2. नीचे-नीचे 3. गहरे पानी में 4. नाव।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जेमे भोर न करय अस्नान, ऊहो पवले गिलास सोनवाँ का।
घरवाँ बत्तीस गाँड़े का कुठिला, ओही देलेस गिलास बाय गिराय।
साँचय दैली सरेखवा लगाय," लेकर चूवल देवी बाय दुर्गा।
जहाँ सबा लखवा बरियात, अहिरे का सूतल जजमें पर बाय।
धरमी न भइया रहल सूतल, जायकर लोरिका जगाव बाय कयले।
"भइया धोखा अगोरी में भइल, जौन गिलास सोनवाँ का।

गिलास पाने के लिए धरमी लोरिक का योगी रूप धारण :—

चल गयल नगर हरदिया न बाय पाल," वह बखत ऊठल माल बाय धरमी।
सुरती मलत चुनवाँ न बनाय, चट से आपन अमल बाय खात।
जायकर खोलय बकसवा जजमें का, तिसला[1] देलेन बकसे का निकाल।
ऊ फेर दुई-दू भाग बाय कयले, बिच्चे भाग बाय कयले।
दुनों पहिरत बदने में बाय, अब बन जात जोगिया ऊहाँ फकीर।
एक भाई लेलय धरमी भाई सरंगी, लोरिका लेलेस खझड़ी[2] उठाय।
दूनों जोगी फकीर बायँऽ बऽनल, राह धयले नदी के बायँऽ तीर।
राती न रात बायँऽ रेंगल, रहिया धइले पुरुबवा का बाय।
हरदी न घटवा पनघटे, दूनों जूटल जोगिया बाय फकीर।
एकदम आसन तिरवा पर लगवले, धरमी कमानी बाय घोंटत।[3]
लोरिका मारत खजड़ी पर ताल, अब सतजुगी भजन बाय उठउले।
मोह जालय घाट हरदी, टाइम तीन बजे का रात।
जौन महीचन तेली का लड़की, उनके काने सबद बाय पहुँचत।
डँड़वा से लेती धोती बाय कपड़ा करय जालय नदिया में नहान।
आयकर करत नहान नदिया में, लिरिया पहिनत कपड़ा जब बाय।
सुनय न भजन दुनहूँ का, लड़की मोहित महीचन का हो जाइ।
"बाबा न सुनबा ले फकीर, दरियाँ मानऽ कहलवा हमार।
जितना चारी रजिया में पैबा, उतना अकसर दुवारे पर चुकाइब।
आज मोर कुटी पर चल चलबा, चलकर देबा भजन सुनाय।,'
दुनहूँ का भागी तकदीर बाय फरियाल, दुर्गा देलेस सरेखे लगाया।
आगे-आगे रेंगल लड़की महीचन का, पीछे जोगी रेंगल बाय फकीर।
जाय कर जूटे दुवरा लड़की के, दूनों के सथरी[4] आसन बाय लगवले।
"बाबा नासा-पत्ती का खाला जा, हमके देबा सरेखवा लगाय।"

---

1. पीलावस्त्र 2. लोकवाद्यविशेष 3. बजाता है। 4. बिछावन।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"बच्चा नसवा पत्ती दूसर कुछ नाहीं, एक ठे मदय अगोरी का भरोस।"

इतना सूनत लड़कौ महीचन का, चठपट मारत कछार[1] जब बाय।
जायकर बत्तीस गाँड़े का कुठिला; चढ़कर सीढ़ी उतरल बाय जात।

अब लेआवे गिलास पितरी का, आनकर देती गिलास लोरिका के।
ओमें कौनों होतय पहिचान, चिन्हकर धरमी हाथें बाय टेकावत।

महोचन तेलो के घर गिलास—लोरिक उसे लेकर बारात लौटता है :—

"भइया लेकर करबा पहचान," धरमौ हाँथे बाय पकड़त।

देबी लेतय दुर्गा के नाम, "देबिया कहँवाँ छन में भुल गइली।
सोना-पीतल करदा पहचान," सनमुख दुर्गा बाय नाचत।

"बरुआ हऽई गिलास पितरी का," जिदियाय[2] कर धरमी बाय बीगत।[3]
"बच्चा धरम करला तूँ नष्ट, पितरी देली संकल्प।

ऊहै देला हाँथय तूँ धराय," फेर से भागल धिया महीचन का।
जायकर हलल कुठिला में बाय, आनकर देलेस गिलास सोनवन का।

अहीर पवते खुसिअवा हो जाय, आयकर दूनों डेरा डंडा उठावें।
पाछे मूँहें दुवारे के पछिलत, दस-बीस हाँथय के गयलेन फसिला।

गुदरी बीगत बायंऽ समान, सरंगी कमानी बाय पवारत।
दोनों रेंगल सुबा बाय जात, लड़की करत गुहार दुवरा से।

फेर से तड़पत पूत कठइत का, देखिहैं जोगी आयल बाय फकीर।
इहे गिलास के करनवाँ, सवा लाख के करिखा[4] बाय लागत।

उतनयँ में डाँकत कुदतवा[5] बाय भागत, राती न राती बाय रेंगल।
जायकर जूटत अगोरी जजमें पर, जहाँ सवा लाख बाय बरात।

जायकर अहीर पहरा पर बैठल, तब फेर भोरय होत बाय बिहान।
पुरुब कोआ मचवले बाय रोर, सवा लाख ऊठत बरात जजमें से।

समीक्षात्मक टिप्पणी—गिलास की चोरी के रहस्योद्घाटन से सम्बन्धित यह प्रसंग भी अपने में बेजोड़ है। गिलास का पता लगाने के लिए ही लोरिक को योगी-रूप धारण करना पड़ता है। लोरिक के योगी बनने की कथा तो यत्र-तत्र मिलती है, किन्तु गिलास की चोरी और उसकी खोज, पुनर्प्राप्ति का प्रसंग प्रायः कहीं नहीं मिलता।

सारांश (29) विवाह तथा अन्य प्रकरण—इधर विवाह का उचित-लग्न होने

---

1. स्त्रियों का धोती का भेंटा मारना। 2. बिगड़कर 3. फेंकता है 4. कालिख 5. डाँकते-कूदते।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर आँगन में सम्बन्धियों सहित वर बैठता है। वहाँ मंजरी अपनी सखी-सहेलियों के साथ आती है। अहीर उनमें से मँजरी को पहिचानने के लिए लोरिक से कहता है। लोरिक गँगिया से उपाय पूछता है, किन्तु गँगिया असमर्थ हो जाता है। तब लोरिक प्यास के बहाने महरिन के घर से ठंडा पानी लाने के लिए गँगिया को भेजता है। वहाँ पहुंचने पर वह मँजरी को देख लेता है। मँजरी भाग कर ऊपर जाती है और घनवां के शरीर पर गिर जाती है। वह दरवाजे पर किसी अजनवी के खड़ा होने की सूचना देती है। महरिन निकल कर उससे रात में आने का कारण पूछती है, वह लोरिक के प्यासे होने की बात कहता है। तब महरिन उससे बिजुल या कुआँ से पानी लाकर पिलाने के लिए कहती है, किन्तु गँगिया वह पानी पीने योग्य नहीं हैं, ऐसा कहता है।

(30) **अनपी द्वारा गँगिया का परिहास**—इस पर महरिन उसे मड़ये में बैठने के लिए कहती है और घर में जाकर सुबाचन की लड़की अनपी को गँगिया को हैरान करने के लिए उकसाती है। अनपी गँगिया को साड़ी, धोती, सिन्दूर, टिकुली पहना कर विदा करती है। उसे वह मारती है तथा गड़थैया (अहीरों का नाच विशेष जो ताण्डव नृत्य के अनुकरण पर है) नाच-नचाती है। फिर पानी देकर उसे बारात में भेज देती है।

लोरिक गँगिया से मँजरी के सम्बन्ध में पूछता है, तो वह लोरिक से सारा हाल कह सुनाता है और कहता है कि 'तुम्हें तुम्हारी सास ने बुलाया है, चुपचाप जा कर ससुराल कर आओ।' किन्तु लोरिक डरता है कि कहीं पिता जी, भाई, गुरुजी जान न जायें, नहीं तो बड़ी हेठी होगी। गँगिया आश्वासन देते हुए उनसे कहती है—'तुम डरो मत, मैं उन्हें बेलहमा कर रहूँगी। उन्हें कुछ पता नहीं चलेगा।

(31) **लोरिक का रात में ससुराल गमन**—गँगिया की बात मान कर लोरिक चल देता है। महरा के घर पहुँचने पर द्वार को तीन-तीन मूसर की अर्गला से वह बन्द पाता है। लोरिक उसे पैर से मार कर तोड़ देता है और घर में प्रवेश कर जाता है। वहाँ रखी हुई सोने की मचिया पर जाकर चुपचाप बैठ जाता है। महरिन देखती है और अनपी को उसके क्रुद्ध होने का कारण जानने के लिए भेजती है। अनपी सोरहों शृङ्गार कर उसके पास जाती है। उससे कुछ परिहास भी करती है, किन्तु वह कुछ भी नहीं बोलता। अनपी समझती है कि वह गूँगा-बहरा है, इस पर सब चिन्तित होते हैं, तब लोरिक बोलता है और कहता है कि तुमसे हम किसी प्रकार कम नहीं हैं।

(32) **लोरिक-मंजरी का मिलन**—अनपी मँजरी और लोरिक के मिलन का प्रबन्ध करती है। मँजरी शृङ्गार कर मिलने जाती है। वह लोरिक को अपनी स्थिति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का ज्ञान कराती हुई कहती है—'राजा तुमसे युद्ध करेगा और मुझे किसी भी प्रकार तुम्हारे साथ जाने नहीं देगा । मैं जब तक तुम्हारे साथ गउरा नहीं चली जाती, तुम मेरे साथ बहिन का सा व्यवहार करो ।'

(33) **लोरिक को राजा के आतंक का पता चलना**—इतना सुनते ही लोरिक दुःखी होकर सो जाता है और मँजरी रोने लगती है फिर लोरिक से कहती है—'मेरे रोने से तुम्हारी पेटी भींग गयी है । मुझे तो अब अपनी नहीं, तुम्हारी चिन्ता है ।' लोरिक हँसकर क्रुद्ध होकर कहता है—'तुम चिन्ता क्यों करती हो ? मैं सब देख लूँगा ।' इस पर मँजरी कहती है—'राजा के पास पालतू बलवान हैं, मरदमल उसका प्रसिद्ध माल (मल्ल) बलवान है, जिसका कोई सामना नहीं कर सकता ।' तब लोरिक अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए उससे कहता है—'यह तो और अच्छी बात है, वीर का वीर से पाला पड़ेगा ।' फिर वह नाल (वजनी पत्थर) उठाकर अपनी शक्ति आजमाता है ।

तीरे पर दिसा होत बाय मैदान, नसता[1] न पानी बाय कऽरत ।
फरसी घूमत जजमें पर बाय, सगरो कूँचत मघइया बायँऽ पान ।
देखा जिरवा बहत्तर खेतार[2], बरात करत मौजवा देखा बाय ।
ऊहो न कीर्तन छोड़ देबा, सुनला महरे न घरे दरबार ।
जौन धनवाँ बाय महरिन, कहलेन—"भइया न सुनबा सुबाचन ।
एठिन मनबा कहनवाँ हमार, एकदम रेंगल जजमें पर जाबा ।
जौन गइल गिलास सोनवन का, कह देहा माँगत धरतिया के बायंऽ सब लोग ।"
एकदम रेंगल न सुबा बाय रेंगावल, जाय कर जूटल जजमें के बीच ।
बोलत न बानी लरमें का, "समधी न सुनबा ले साहेब ।
एठिनयँ मनबा कहनवाँ हमार, जौन सोने का गिलास देखा आइल ।
सगरो माँगत धरतियों के बायँऽ लोग," टप से हुकुम कठयित के बाय मीलल ।
गडिया देलेस गिलास बाय टेकाय, लेकर लौटल सुबा बाय सुबाचन ।
जाय कर हल जाय बखरी महरे के, जाय कर महरिन हाथें बाय टेकावत ।
उलट-पुलट चीन्हत गिलास सोनवन का, ऊहाँ लौकत गिलसिया फुन बाय ।
लख कर हहरल[3] धनवाँ बाय महरिन, कहलेन—"हो-हो न दइवा नरायन ।
का ब्रह्मा लिखला तलवा तकदीर, धन-धन पानी उतरय का ।
जहाँ पर अहीर फूटल बाय बुधिमान, दहे न खरही[4] ई बोहवावल ।
एठिनयँ मनबा कहलवावै हमार, जौन सोने का गिलास देखा आइल ।

---

1. नास्ता, 2. अगोरी के एक स्थान का नाम, 3. भयभीत हुई, 4. दह का नाम जिसमें जिलास बहवाई गयी थी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सगरों माँगत धरतियाँ के बाय लोग, टप से हूकुम[1] कठयित के बाय मीलल।
गडिया देलेस गिलास बाय टेकाय, लेकर लौटल सुबा बाय सुबाचन।

जायकर हल जाय बखरी महरे का, जायकर महरिन दायें-बायें टेकावत
उलट-पुलट चीन्हत-गिलास सोनवाँ का, उहैं लौकत गिलसिया फुन बाय।

लखकर हहरल धनवाँ बाय महरिन, कहलेन होहो न दयिवा हो नरायन।
का ब्रहमा लिखला तलवा तकदीर, धन-धन पानी उतरय का।

जहाँ पर अहिर फूटल बाय बुद्धिमान, दहे न नद्दी ई बोहवावल।
छान कर का जानी कहाँ से ले आवल, कहलेस भइया न सुनबा सुबाचन।

कहना मनबा एठिन हमार, एक दम रेंगल बराते में जाबा।
जाय कर कह दा बात समधी से, साहेब जोगय अगोरी में बाय निगचात।[2]

बाकी रहे दा बरात जजमें पर, कुछ लोग चलि आवैं दुआरे लियाय कर।[3]
आयकर कर लें सादी के बियाह," इतना लागत हुकुम कठयिता का।

मँजरी के विवाह की तैयारी—

बाजा वाला हो गयल तैयार, ओमें दसय-बीस-पचास बायँड[4] आदमी।[5]

तैयार भयनऽ बियाहे के बाजे, संझा न बखत बाय जून।[6]
जायकर जूटत दुवारे पर बायँड, नाऊ न जुटल बायंड बाभन।

सगरों मड़ए में होत बाय इन्तजाम, जायकर छिप गइल पलकी अहिरे का।
सबलोग अगले बिस्तरा बॉयऽ लगावत, ओठे आजी-भाजी बाय आवत।

उहों होतय दुवारे का नेगचार, मड़ए में भयल इन्तजाम बियाहे का।
जायकर बैठत अहीरे का खानदान, नाऊ न बाभन बाँयऽ बैठत।

कितना बैठत अगोरिया का सब लोग, बैठल अहीरे का।
कई न मेल के लड़की, जौन धिया महरे का।

वहीं में देलेन ऊहो के भुलवाय, लागब न हुकुम अहीरे का।
"सादी करे के कोई बियाह, छाँट कर लेबा लड़की हिंगराय।"[7]

लखत न अहिर कन्तित का, भाई लेतय दुर्गा का नाम।
"देबिया न हो सुनबा ले भगवती, दुगां आ[illegible] दिन का पुजमान।

तनी[8] मँजरी रोसनी पर लेऐबा, एमा कई देबा पहिचान।"
मँजरी के लेई कर बतावत, जेकर परल मँजरी बाय नाम।

आधी न रात बाय निचलाइया,[9] अहीरे के काने सबद चल जाय।
चटपट गडिया नाऊ के बाय जगवले, बोलल न पूत कठइत का।

---

1. हुकुम—आदेश 2. नजदीक—समीप 3. हैं—आदमी। 4. समय 5. खोज लेना 6. थोड़ा 7. एकान्त निस्तब्ध।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जेकर दूलर लोरिका वाय नाम, गड्या सुनबे ले हजामत।
दरियाँ मनबे कहनवाँ हमार, एक दम रेंगल जाबे तोंयँ अगोरी।
के फेर रोये लड़की बभने का, जेकर सइयाँ विजरिया में जाय।
के फेर रोये लड़की बनियाँ का, जेकर सइयाँ लदनियाँ[1] के जाय।
के फेर रोये लड़की कैथे का, ऊहो भयनी चौकवा पर राँड़।[2]
के भाई रोये गोतिन[3] महरे का, अब धर जाला पिटारी में सौगात।
जाय कर पता लेबे तोंय ठेकान," वह दिन गड्या बोलल बाय हजामत।
"गोंहा[4] ले सुनबा हमार, दरियाँ मनबा कहलवा हमार।
आधी न रात बाय निचलोइया, पहिले कहिहैं भुतवा-बैताल।
दुसरे कहिहैं चोरवा बदमास; एकर कौन जबाब हम देबय,।
देसवा दखिन बाय दुरान," तब फेर बोलल पूत कठइत का।
जेकर दूलर लोरिकवा बाय नाम, "गड्या सुनबे हजामत।
तोरय भाई बाउर बुद्धि बउखले, तोहरो अकिल हरले भगवान।
छत्तीस बुद्धि नउअन[5] के, एक बुद्धि देले अगोरी में उसराय।"[6]
वह दिन गड्या बोलत बाय हजामत, "गोंहा मनबा कहनवाँ हमार।
जहिया से छोड़ल खोरी[7] गउरा का, सगरों अकिल ज्ञान बाय भुलाय।"
सून कर तड़पल पूत कठइत का, "गड्या सुनबे तोयं हजामत।
एक दम रेंगल जाबे तोंय रेङावल, चल जावे ससुरवा के दरबार।
जायकर अम्मा सासु से कहबे, जौन न दूलर बाय दमाद।
पहरा परल जजमें पर बाय,

एकान्त में लोरिक का मँजरी से मिलन कराने का प्रयास—

जे फेर अपसन खयले बाय घोरासन, नीमक खयले अहिर बाय चटकार।
जेनके लागत पियास जजमें पर, मँगले कलसा में ठंडा जल।"
एक दम रेंगल गड्या बाय रेंङावल, चल जातय महरा के दरबार।
दूअरा न फाटक बाय खूलल, मड़ए में जलत दीपक बरियार।
लोकत न धिया महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नाम।
लखत न गड्या दुवराँ से, जेकर सोरह सौ बाई गोतिन—
महरे के सूतल बखरी में नंङा से उधार,[8] लख कर रुकल चाल गड्या का।
दस हाथ पछिलल पाछे दुवराँ से, कसकर मारत खखारी दुवरा पर।

---

1. घोंड़ा या बैल पर माल लाद कर लाने ले जाने के काम को लदनी कहते हैं। 2. बिधवा, बेवा 3. पड़ोसिन, 4. मालिक 5. नाई 6. लगा दिया। 7. गावों का रास्ता 8. नंगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मँजरी के काने सबदिया चल जाय, जकलाइल[1] न धिया महरिन का।
जेकर दावन मँजरी बाय नाम.....

गड्या का महरा के घर जाना :—

उठ कर भागल कोठी में जालय, मलका[2] न मरले बाय अन्हियार।
ओठे रहल माचा मसहरी का, जाय कर गयिल देहियाँ[3] पर भहराय।
हहरल न धनवाँ बाय महरिन, आपन ठोंकत तलवा बाय तकदीर।
"हो हो न दयिवा हो नरायन, का ब्रहमा लिखला मथवा तूँ लिलार[4]।
बिटिया साँझय सेन्हुर[5] बाय परल', आधी रात गयला काहे उखऽमज़[6]।
होवे दा भोरवा से बिहान, तोहरो कर देव बिदाई डँटकर।"
बोलत न धनवाँ बाय मँजरी, "अम्भा कौन बानी तूँ बोलला।
कुछु हमसे बुते कहलवा नाहीं जाय, दुवरा पर एकय मनइया बाय ठाढ़[7]।
का जानी चोरवा बदमास, का जानी हवय भुतवा बैताल।
नाहीं जानी कोई हवय बरतिया के हिसेदार, आज मोर चिन्हल जनलवा नाहीं बाय।
साँचय देली सरेखवा लगाय," वह वखत रेंगल धनवाँ बाय महरिन।
जाय कर ठढ़ा दुवारे पर होय, "भूतय के हवऽ बैताल।
के बापू चोरवा बदमास, के भाई हवऽ बराती के हिसेदार।
आज मोर चिन्हल जनला नाहीं बाय, हमके देबा सरेखवा लगाय।"
धीरे-धीरे गड्या नाऊ बाय नगिचायल[8],.....
जायकर निहुर माथ बाय नववले[9], महरिन देतय असीसवा बाय बाद।
"गड्या आँखों अमर हो जाबा, तूँ भाई जीयऽ लखवा ले बरीस।
तोहके कौन संकट बायऽ परल, आयकर घुमला दुवार हमार।
साँचय देबा सरेखवा लगाय, वह दिन गड्या बोलल बाय हजामत।
गौंहिन मनबा कहलवा हमार, जौन बाय दुलरवा तोहार दमाद।
जे फेर अपसन के खयले बाय घोपसन, नीमक खयले अहीर चटकार।[10]
जेनके लागत पियास जजमें पर, मड्ले कलसा गेंड़रुवा का ठंडा जऽल।
गौंहिन देली सरेखवा लगाय," बोलत न धनवाँ बाय महरिन।
"ऐसन जतिया का रहतय खरखर, सड्हवा लेतय मतारी बहिन लियाय।
ऊ फेर रखती पानी घरिलवा का,[11] नाहीं भाई दरयँ बहल सोन भद्दर।

---

1. व्याकुल होकर या कुछ आवेश में आ कर उठना, 2. घना अंधकार, 3. शरीर, 4. भाग्य-माथा, 5. सिन्दूर, 6. कुराफात 7. खड़ा, 8. समीप पहुँच गया, 9. झुकाया हुआ 10. तेज, 11. घड़ा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओहर से बिजुल[1] धारा बाय बऽहल, ऊहो से अनता जल पीये के होइहैं।
साँकड़ कुइयाँ रजवा का, ओमे से लेबय जलवा मऽगय।
इतना सुनत गड्यिा बाय हजामत, नाऊ न बोलत बाय छत्तीसी।
एक बुद्धि देलेस अगोरी में उपराय[2], "गौहिन सुनबा तूँ महरिन।
एठिनय मनबा कहलवा हमार, ...
बिजली का पानी कदाउर,[3] नदी का पानी परल बाय हिंडार।
साँकड़ न कुइयाँ रजवा का, नाईं पहुँचत रेसमवाँ का बाय डोऽऽर।
साँच देली सरेखवा लगाय, महरिन गड्यिा के लियवले।
नाऊ के देलेस मड़ए बैठाय, हल गइल कोठी भोतरी का।
धिया सूतल सुबाचन का, जेकर अनपी परल बाय नाम।

हास-परिहास :—

"सुनबे न धियवा तोंय अनपी, दरियाँ मनबे कहनवाँ हमार।
देख भाई आयल नाऊ वराते का, कहीं ऐसे नाऊ चल जाई।
हमरो सोरह सइया बाईं गोतिन, बखरी में सूतल नंघा बाई उघारऽ।
जाकर लड़ी गड्यिा जजमें पर, ऊहो सुनिहैं उतरवाँ का सब लोग।
बड़ा भारी पिटिहैं - थपोरी[4] जजमें पर, अगोरी में हो जाई हिनाई[5] हमार।
कुछ भाई गड्यिा का बिपत्ती कर देता," उठल न धिया सुबाचन का।
सगरों लेनय समान निकाल कर, जायकर जूटल तिवई मड़ये में[6]।
गड्यिा का सोरहों सिंडार बाय करत, पहिरावै सारी दखिनयँ का।
जेमे चर-चर अँगुरवा बाय तार, ओही के मेलय चोलिया बाय समान।
आपन पोजिसनवाँ बाय बनावत, गाँथकर चोटी सिरवा का।
पीछें फेंकत पिठाईं में बाय, दुइटंडी कछार बाय मरले।
पीठी बान्हत ढोल घुमाय, साजय न मड़ये में कइले।
झंखत न नाऊ बाय गड्यिा, आपन ठोंकत तलवा-तकदीर।
"इतना न ऊमिर[7] गउरा में गइल, कबों न औरत कूदल नाहीं बाईं।
दखिन देसबाँ बाय पुराना, देखा महरिन बखरी दरबाऽर।
ऐसन होतीय बिपत्तिया हमार," जौन धिया बाय अनपी।
बान्हय न मुटका हाथे का, गँड्यिा के मारत बदनियाँ में बाय।
झंखत न नाऊ बाय गँड्यिा, आपन ठोंकत तलवा तकदीर।

---

1. नदी, जो सोनमें आकर मिलीहै 2. बता दिया, निकाल दिया, 3. गंदा, 4. थपोड़ी, 5. छोटापन 6. आंगन जहां विवाह हुआ था, 7. उम्र।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाहीं भाई बाजल मुटुका अनपी का, डट कर नाचत गड्डिया बाय हजामत।
ओठियन घण्टा छमीछा बाय बीतल, तब फेर बोलत धिया सुबाचन का।

"गड्डिया न सुनबे तोंय हजामत, एठिनयं मनवा कहनवाँ हमार।
जबसे एठिन गँड़थइया नाच[1] नचबा, तबसे छुट्टी अगोरी में नाहीं बाय।"

गँड़थइया नाच बाय नाचत, नाहीं फेर नाऊ गयल बाय खिसियाय।[2]
सगरों छोड़त समान देहियाँ का,.....

सगरों छोड़त समान देहियाँ का, गड्डिया बैठत मड़उवा में बाय।
वह दिन जौन धनवाँ बाय महरिन, ऊ फेर माजत लोटवा जब बाय।

अब हल गइल कोठी भीतरी के, ऊ फेर कोठी बानी फड़हर।
जायकर खुलत पेटी कोठिया में, जेमें माघय पलवा बाय दुसाऽर[3]।

के भाई ठाड़य पेंड़ गिर जालय, ठाढ़ जानयँ पेंड़वा रुखराय[4]।
उहैं देलेस जलवा लोटवा में, लखत न धिया महरे का।

जेकर दावन मँजरी बाय नाम, "कहलेन हो-हो न दयिवा हो नरायन।
का ब्रह्मा माथे लिखला लिलार, जेन फेर ई माघी पलवा जब परिहैं।

सोझय जाई सरीरवा झुराय,[5] बल्ली न राजा बाय अगोरी।
काड़कूड़ करिहैं सतुआ ले पिसान," माघी न पलवा बाय दुसाऽर।

लेकर पहुँचल धनवाँ बाय महरिन, गड्डिया के देलेन हाथे बाय टेकाऽय।
तब फेर चटपट[6] लड़की महरे का, दूसरा माँजत लोटा फुन बाय।

जाय कर हल गयील कोठी भीतरी के, फगुनी न पलवा बाय दुसार।
जाय कर जूटत गड्डिया के पास, हाथे का लोटा बाय छीनत।

आपन देलेस लोटवा बाय टेकाय, लेकर रेंगल गड्डिया बाय हजामत।
वह बखत लखत मतारी[7] ओकर[8] महरिन, एक दम निकलल दुवारे पर बाय।

"गड्डिया न सुनवा तू हजामत, दरियाँ मनवा कहनवा हमाऽर।
जैसे लगबा नाऊ दुलारे का, वैसे लगबा नउआ तूँ हमार।

जायकर कह देहा सनेसवा दुलरे से, जे फेर अइल फुलय बन बेइल।
एक फूल फुलवा मीलल बाय कचनार, राती न फुलवा लोढ़य[9] लेड़िहैं।

भोरवा लागी जोति सुरजय का, ऊ फूल जाई अगोरी में कुम्हिलाऽय।"

---

1. नाच विशेष जो अहीर नाचते हैं। शंकर जो को भी गड़थैया नाच नाचना पड़ा था, शंकर अहीरों के आराध्य हैं। 2. जिद पकड़ना, क्रोधित हुआ।
3. माघ का दुसार पाला कँपा देने वाला, 4. सूख जाते हैं, 5. सूख जायगा, 6. तुरंत, 7. माता 8. उसकी, 9. तोड़ने।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गड़िया का मंजरी के घर से पुनः बारात को वापस होना—

साँचय देली सरेखवा लगाय, रेंगल न गड़िया बाय हजामत।
आगल न जजमें पर जाय, जाय कर जूटल जजिमें पर लोरिका के।
जहाँ बैठल अहीर पहरा पर, सवा लाख सूतत बरात देखा बाय।
कहलेन "गड़िया न सुनबे तोयं हजामत, दरियां मनबे कहलवा हमार।
ऊ फेर कौन जतिया के रहल लड़की, तीवई रोवलेस रतिया देसवा में।
गड़िया देबे सरेखवा लगाय," वह बखत गड़िया बोलल बाय हजामत।
"गौंहा मनबा कहलवा हमार, नतऽभाई रोवलिस लड़की बभने का।
जेकर सइयाँ बिजरिया में जाय, नतऽभाई रोवलेस लड़की बनियाँ का।
जेकर सइयाँ लदनी[1] के नाहीं जाय, न तऽगौंहा रोवै लड़की कैथे का।
नाहीं होती चौकवा पर राँड़, न तऽरोवे गोतिन महरे का।
नाहीं घटल भितौरी[2] में भात, रोवै न ब्यही जँघिया का।
तोहरो देली सरेखवा लगाय,"

लोरिका का मँजरी के घर जाना

तब फेर बोलत पूत कठइत का, अहीर मारत मुसुकिया[3] जब बाय।
"गँड़िया कैसे चिन्हले[4] तोंय जनले, हमके देले गारी तोंय उल्टा चढ़ाऽय।"
तब फेर बोलल गँड़िया बाय हजामत, गौंहा जौन गति अगोरी में बाय भयिल।
ऊभर जानल नउआ का तकदीर, जौन न साड़ी गउरा का।
जेमे चर चर अँगुल पर रहल तार, गौंहा उहे निसानी हमें मीलल।
ओनके हाँथे का हवय जलपानयँ, अम्मा न जैसे बाई तोहरो सास।
ऊ भाई कइले बलाव बखरी में, कहलेन अइल फूलल बनबेइल।
एक फूल फूल गयिल बाय कचनार, बिहना सूरुज लफलाग जाई।
ऊ फूल जाई अगोरी में कुम्हिलाय, गौहाँ, कौनो हरजिया[5] नाही बाई।
डँटकर करब पहरा जजमें पर, राती न रात कर ऐबा ससुराऽर।"
इतना सुनत पूत कठइत का, लोरिका तड़पल गँड़िया पर बाय।
"गँड़िया बाउर मति तोंय बउखले, तोहरों अकिल हरले बायँऽ भगवान।
सवा न लाख का बायँऽ पहरा, तीरे परल बराती का हँकाऽर।
कहीं कठइत ददा जाग जइहैं, पहिले करिहैं खोजिया[6] हमार।"
बोलल न गँड़िया बाय हजामत, "गौंहाँ कौनो हरजिया जीन[7] मनबा।

---

1. बैल लादने के लिए, 2. भोजनालय में, 3. मुस्कान, 4. पहचान, 5. हर्ज, 6. खोज, 7. मत।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कठइत न ददा जाग जइहैं, फरसी[1] बोझब चिलमी[2] बनाय।
ददा के ऐसे तैसे बेल्हमाइबय,[3] तब फेर बोलल बीर बाय लोरिका।
गँड्या सुनबे तोयँ हजामत, दरियाँ मनबे कहलवा हमार।
कहीं गुरू अजइ जाग जइहैं, पहिले करिहैं खोजिया हमार।
गौंहा गुरू अजइया जाग जइहैं, अब खोल देबय डँटा बोतले का।
ओनके ऐसे तैसे बेल्हमइबय, गौहा कौनों हरजिया नाहीं बाय।
जाय कर कर आवऽ अगोरिया में ससुरार," बोलल न पूत कठइत का।
जेकर दुलर लोरिका बाय नाम, "गँड़िया न सुनबे तोंय हजामत।
दरियाँ मनबे कहलवा हमार, कहीं भाई धरमी भइया जाग जइहैं।
पहिले करिहैं खोजिया हमार, गँड्या न सुनबे तोयँ हजामत।
कहीं कूलय[4] बरतिया जाग जइहैं, पहिले करिहैं खोजिया हमार।"
वह दिन गँड़िया बोलल बाय हजामत, "गौंहा कौनो हरजिया नाहीं बाय।
कहीं धरमी गौंहा जाग जइहैं, सुरती[5] मलब चूना बनाय।
एकय न बीरा रहिहैं खात, तब से दूसर करब तैयार।
धरमी के ऐसे-तैसे बेल्हमइबय, गौंहा कुली न बरात जाग जाई।
कब देबय गयल बायँऽ दिसवा मैदान, कौनो हरजा जीन[6] मानऽ।
राती रात करिऐबा ससुरार," तब फेर सुना हाल अहीरे का।
आपन दुलहनी[7] बाय समान, सगरो देलेस गँड्या के पहिराय।
अपने देलस पहरा पर बैठाय, अपने अनव पहिरत अनरखी।
गोड़वाँ गुलय बदनियाँ तमान, अब बीर बान्हय पेटी अजगर का।
जेमे गोली चिपटवा खाय जाय, अब बीर कसय जिरही लोहवन का।
जेमें नौ सन लोहा अमाय, साठिन गजे का दुपट्टा[8]।
अहीर बान्हत सिर बाय घुमाय, जैसे राजा बान्हय देखा बघेल।
तरकुस न गुजे का पनहीं, अहीर चाँपत एँड़ा बाय चढ़ाय।
एकदम धइलेस पागी लरमे का, जेमें मेघय डमरू घहराय।
अहीर बत्तीस पत्ता का बीरा,[9] मुहवाँ लेलेस बीरा बाय दबाय।
दुई न बजे बाड़य रात, अहीरा मरगस न मरगस[10] बाड़य रेंङल।
जैसे पुलिस रेङल बरियार, जेन कर बिहगन पनहीं[11] सुनाय।
रेङल न अहीर बाय रेङावल, चल जालय महरवा के दरबार।
जड़ल न बेंवड़ा दुवरवा का, जहाँ तीने तीन मुसर का बेंवड़वा।[12]

---

1. जिस पर चढ़ा कर तम्बाकू पो जाती है, 2. चोलम, 3. कहीं किसी कार्य में लगाना, 4. सभी, 5. तम्बाकू, 6. मत, 7. ब्याह का वस्त्र, 8. चादर, 9. पान का बीड़ा, 10. मस्ती में, 11. जूता, 12. सांकल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महरे के जऽड़ल दुवरवाँ में बाड़य, जाय कर घड़ी-छमीछा बाड़य रुकल। कौनों पता लागत बायँऽ ठेकान, वह दिन बोलत पूत कठइत का।

"दुवराँ न सुनवा दुवरइया,[1] भितरी सुनी लेबा कोतवार। भइया खोल दा फाटक दुवरा का, हमरो बाय बखरी में बलाव।"

वह दिन बोलल सिपहिया दुवरा से, "भइया के दुवरा फाटक खोल दीहैं। बिहनवाँ बिना कहले सजइया हो जाई, तोहरे जाँघी जोर और होई दिमकवा।

तोड़त-फाड़क बखरिया[2] में हल जैवा, इतना सूनल पूत कठइत का। जेकर दूलर लोरिका बाय नाम, धीरे गयल केवड़िया[3] कहाँ नगिचाऽय।

अहिरा दहिना एँड़ा बाय हींचत, तान कर मरले बेंवड़वा में बाड़य। मूसर न तीनों झटकाय,[4] केवाड़ी खलड़ी खलड़ी हो जातय।

वह कुछ भाई देवलिया[5] ले करवाँ गिर गयनी, हलचल बखरिया में मऽचल। सगरों जागी गयनऽ पलिवारय, अहिरा दूनों बले पटरी में देखाऽय।

जौन रहल बढ़इया आजमगढ़ का, छापा छपले बाड़य अजूगत।[6] जितना रहल पूंजी अहीरे का, सगरों छायतय चदरिया में बाय।

साँसड़ न बोहा बाड़य मँझार, तीन सौ साठ घोरइया धरमी का। ऊहो छयलो उड़ाने[7] पर बाड़य, धरमी के चदरिया[8] पर छपले।

राम-राम कहत रटनियाँ[9] जब बाड़य, सगरों गाई भैंसे बाड़य छापत। गउरा छापय बखरिया लोरिके का, जेकर उत्तर बायँऽ दुवरवा।

दुवरा देवी दुर्गवा का सिवल्ला, जेपर अमर धजवा फहराय। ओमे लागल खम्हियां सोनवन का, मुख-मुख बोलत चिरइया का बाय मुर्ती।

अब फेर देखय हाल ककवा[10] का, भइया खुइलन ले कठइता। दुनहुन के तरे ऊपर लड़य छपले, लखय न पूत कठइता का।

जर मर कोइला हो गयल खऽार, कहलेन हो हो दयी हो नरायन। का ब्रह्मा लिखलेन माथे तूँ लिलार, अहिरा गुस्सा में भयल भुरकुस।

अड़ुरी दहिनी चाँपत बाड़य जरियाय,[11] सरवा[12] जियतय बढ़इया अगोरी में मीलत।

सरऊ का काटित सिरवा जरियाय, सगरों गति बाड़य लिखले। ई का लिखलेस गतिवा अत्याचार, कुछ भाई बुत्ते कहलवा नाहीं जाऽत।

---

1. आरक्षक, 2. गृहस्थ का घर, 3. दरवाजा, 4. भेंका गया, 5. दीवार, 6. सुन्दर, 7. उड़ता हुआ, 8. बिछावन, 9. रहता है, 10. काका, 11. जड़से, 12. साला,।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इहाँ रखल मचिया[1] सोनवन का, जाय कर अहिर बैठत हव फेंटियाऽय।[2]
नतऽपगली असिसवा केहू के करय, न तऽअहिर ताकत पलकवा उठाऽय।
कल्ला न मूड़ी बाड़य[3] गड़ले, अहीर बैठल मड़उवा में फेंटियाय।
सवा न सइयाँ बाई गोतिन, महरे के देखत बखरी में बाईं।
बैठल न पूत कठइता का, न त अहीर ऊहाँ बोलत चालत बाड़य।
न त फुन ताकत पलकवा उठाय, रेंगल न महरिन बाय साऽस।
हल गइलेन कोठिया भीतरी के, जहाँ धिया सूतल बाय सुबाचन का।
"सुनबे न धियवा तोयं अनपी, दरियाँ मनबे कहलवा हमार।
आपन रुचकर तैयार करबे, कैसन रूसल[4] दुलरुवा बायँऽ दमाऽद।"
ऊठल न धियवा[5] सुबाचन का, जेकर अनपी परल बाड़य नाऽम।
रुचकर बत्तीसों सिङार बाड़य कइले, ढोलय बान्हत पेटिया घुमाय।
आयकर तरकत[6] मड़ये में बाड़य, कहाँ ताल बाड़य मारत।
चुटकी मारत अहीरे के अगवाँ, छन भर कौनों मन नाहीं मिटकय।[7]
न त ताकत पलकवा बाय उठाय, खिसियाइल धिया सुबाचन का।
"अगिया लागो नचबवा कुदबे, ई बाबू गूंङ बहिरवा बाड़य देखात।"
वह दिन सूनत धनवाँ बाड़य महरिन, अब फेर कहत कुलफवा बिलगाय।
"भइया न सुनबा तूहों सुबाचन, दरियाँ मनबा कहलवा हमार।
कैसे घरय देखला दुवार, तिलक देला गउरा में तूहों चढ़ाय।
फूट गयल करम मँजरी का, ई फेर गूंङ बहिरवा बाय देखात।"
तब फेर बोलत धनवाँ बाय महरिन, "कै दिन जीही बिटिया[8] हमार मँजरी।
ओनके अँङुरी से बतइहैं साँग, इतना सुनत बाड़य सुबाचन।
"बहिन लड़िका घरे ऊहाँ बतावत, लखकर देली बरच्छा चढ़वाय।
अगोरिया में भैने का किसमत डोल जाय, ई फेर गूंङय बहिरवा हो जालयँ।"
बोलत न धनवाँ महरिन, "ऐसे मनवाँ का रहतयँ खरखर।[9]
गउरा में गयनयँ लड़िकवा बुढ़ाया, केहू एनकर सादी करलेस बियाह।
डोल गयल किसमत बिटियवा का, ईहो गयनयँ कपारे भहराऽय।[10]
इतना सुनय पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाड़य नमवाँ।
पेटे में ऊठल बाड़य मुरमुरी,[11] भीतरय काँड़त करिहाँव।

---

1. बैठने का आसन 2. विधिवत 3. है: 4. रिसियायल, किसी वस्तु को पाने के लिए मौन धारण, 5. लड़की 6. कूदती है, 7. मन भिटकना, घृणा होना, 8. बेटी, 9. तेज, 10. सिर पड़ गया, 11. दर्द।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"ऐसी दलिया के रहतू खरखर, अगोरियाँ पलला पठिया जवान।[1]
कोई के तारु दाँत नाहीं देखली, चढ़कर करय दुवरां के बियाह।
पापी न राजा बाड़य अगोरी, ढोय-ढोय किला में करत बाड़य रनिवास।"
इतना सुनत तिरिया बखरी का, सगरो हलल बखरिथा का बाड़य सब लोग।
उठल न धियवा सुबाचन का।

मँजरी-लोरिक-मिलन—

जाय कर खोलय कोठी भीतरी का, जायकर पलङ बिछावत मँजरी का।
छोरय न कोठिया भीतरी का, भितरी बहुत कोठी फड़हारय।[2]
लाग गयिलय पलङ मँजरी का, दीपक जलत कोठिया में बाड़य।
जायकर लोरिका के आसन बाइँ बलवले, एकदम रेंगल अहीर चल जालय।
हल गयल कोठिया भीतरी के, जायकर बैठत पलङ्या पर बाड़य।
घण्टा छमीछा बाय बीतत, दीपक जलत कोठिया में बाड़य।
तब फेर जौन धिया महरे का, जेकर दावन मँजरी बाड़य नाम।
सोरहों सिङार बाय कइले, पहुँचल न धिया महरे का।

मँजरी द्वारा लोरिक को राजा के आतंक से आतंकित किया जाना—

लोरिका लेलेस पलँङ्या बैठाय, फिर गयल हाँथ अहीरे का।
तब फेर छरकल[3] धिया महरे का, जेकर दानव मँजरी बाय नाम।
"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, सेन्हुर मनबा कहलवा हमार।
जयदिन रहबा रजिया तूँ अगोरी, देख भई तोहरन छोड़ कर दूसरे का नहीं होबय।
कौनों ऐसन काम होजइहैं, अगोरी में बल्ली न राजा बाय मोलागत।
जे फेर कौनों बात हो जइहैं, देव-मुन छोड़िहैं सरिरवा तोहार।
बिहना लागी लोहा बरियारय, काड़कूड़ करिहैं सतुआ पिसानयँ।
जय दिन रजिया में रहबा अगोरिया, तै दिन भइया-बहिन की नताई।
जौन दिन रेंगी डाड़ी गउरा के, सइयाँ दूसर जोग जुट जाय।"
इतना न सुनत पुतवा कठइत का, जेकर दूलर लोरिकवा बाय नाम।
कहलेस "हो हो न दयिवा नरायन, का ब्रह्मा लिखला तलवा तकदीर।"
जौन दिन इतना बतिया भयील, देखा भितौरी कोठी दरबार।
बिचवाँ रक्खल खाँड़य पलङें पर, एक लंगे सूतत अहीर मटियाय।[4]
लखय न धिया महरे का, जेकर दावन मँजरिया बाय नाम।

---

1. अधिक अवस्था की, 2. साफसुथरी, 3. हट गयी, नखरा करने लगी, 4. बहाना कर के चुप चाप सो रहा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लखकर हहरय सरीर मँजरी का, "हमरे जुठनियाँ के करनवाँ।
जेकर ऐसन लाल जूझ जैहें, ऊ फेर खाय कर कनिकवा मर[1] जइहैं।"
इतना कहकर तीबई बाय रोवत, जितना बहय नीर मँजरी का।
लोरिका का भिजतय पेटी लोहवाँ का, जौन दिन समसल बदनिया में बाड़य।
गलल न बदन अहीरे का, जकलाय सुबा बाय ऊठल।
कहलेन "हो हो दयिवा नरायन, का ब्रह्मा माथय लिखला लिलार।
जहिया छोड़ल खोरी गउरा का, जोरकर बरहो नखद बाय बन्हले।
बीचय में कौन नखद छूट गयील, महरे के गयील किला में झकसाय।"
तब फेर बोलल धिया महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नामयँ।
"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, अब सुन लेबा मथवा का महुवार।
देखा भाई कौनों नखद नाहीं छूटल, नाहीं गयिली बखरिया में झकसाय।
हमरे न रोदनियाँ के करने, तोहरय भीजल पेटी सगरी बाड़य।
वह दिन तड़पल पूप कठयिता का, जेकर दुलर लोरिका बाय नाम।
ब्यही न सुनबे तोंय हमारय, दरियाँ मनबे कहलवा मोर बात।
के भाई अन्नय धन का बाय कमती, के फेर लड्डू लूल हमें देखला।
तब फेर मरद देखला तूं मझोर, ब्यही लेवा सरेखवाँ लगवाय।"
तब फेर बोलल धिया महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नाम,
"सइयाँ अनय न धन के नाहीं कमी, नऽतऽ गइया-भैंसिया के बाड़य कमती।
नऽतऽ लंगड़ लूज तोहैं देखलय, नाहीं देखलय मरदवा मझोर।
मरद देखलय कन्तित का, जहाँ होनी मरदन का खान।
कौने जँतवा खइला पीसल, कौने खइला ओखरिया के कूटल भात।
कौने न बिस्तरा ले सुतलवा, जेकर बनल दयिवा का बायँ लाल।
तब फेर बोलल लड़की महरिन का, "पालल न माल बाय मरदमल।
जेकर एकय मन बाय चाउर, एक ठे छाँठल खस्सी बाय सिंहारा।[2]
फेर भे एकय पसेरी बाय धीव, वही के मेरय सगरों बाय समान।
जेकर एकय जुआर के खोरकवा,[3] सइयाँ से नलवावाय[4] भेंजले।
पँजरे[5] बानयँ अमिलिया के पेंऽऽड़, वह बीर मारय लात अमिलिया में।

लोरिक का नाल उठा कर जोर आजमाना :—

अमली का जालय पेंड़वा देखऽहीऽल," बोलत न पूत कठइत का।
"बड़ा सच्चा जोग न बतवला, अभी खरीयत[6] अगोरी में बाड़य।

---

1. विष, 2. सींग वाला भेंड़ा, 3. भोजन, 4. पत्थर का कोल्हू, 5. पास में 6. खैरियत, कुशल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राती न रात नाल देखैबा, आपन लेहीं जोर अजमाय ।
जब भाई जुमुस[1] नाल खा जाई, तब फेर रूकब अगोरी पाऽल ।
नाहीं राती न रात भाग जाबय, अब घर लेबय उतरवाँ का राऽह ।

समीक्षात्मक टिप्पणी—कथा का यह अंश मिर्जापुर की मौखिक परम्परा से प्राप्त विभिन्न कथा-रूपों मे मिलता है, किन्तु प्रकाशित रूपों में प्रायः नहीं मिलता। इस प्रसंग से कथाकार ने कथा को आगे बढ़ाने में मदद ली है, साथ ही नायक-नायिका के मिलन द्वारा भावी विषम परिस्थितियों से अवगत कराते हुए आगे की कथा का संकेत भी दे दिया है।

सारांश 34—**लोरिक-मंजरी को महादेव, बंसरा तथा मनियाँ आदि का वरदान**—मँजरी कहती है कि गोठानी के महादेव हमारे आदि पूज्य हैं। हमचल कर उन्हें प्रणाम करलें। लेकिन लोरिक मंजरी के संतोष के लिए मंदिर में जाता तो है, किन्तु कहता है--'ये पत्थर के देवता क्या करेंगे? यदि इनमें शक्ति हो तो प्रकट होकर मुझसे बातें करें।' वह एक घंटा तक प्रतीक्षा कर लेने के उपरान्त अपनी खांड़ (तलवार) खींच लेता है, तब महादेव प्रकट होकर लोरिक को विजयी होने का वरदान देते हैं[2]। मंजरी प्रसन्न हो उठती है।

पास में बंसरा देवी का मंदिर है। दोनों देवी का वरदान प्राप्त करने जाते हैं। बंसरा भी महादेव की ही तरह प्रकट होकर बातें करती तथा लोरिक को विजयी होने का बरदान देती हैं। मंजरी तो पहले डरती है और लोरिक से प्रार्थना करती है—"तुम उस पर क्रोध मत करना, नहीं तो अनर्थ हो जायगा।' लोरिक उसकी प्रार्थना पर विचार नहीं करता। कुछ देर प्रतीक्षा करने के पश्चात् अपनी तलवार खींच लेता है। तब देवी प्रकट होकर बातें करती है तथा विजयी होने का वरदान देती हैं। फिर दोनों किले के पास जाते हैं। किले में दक्षिण की ओर मनियाँ देवी की स्थापना हो गयी है। वह देवी राजा की कुल-पूज्या है। लोरिक इस देवी से भी बात करने का हठ करता है। देवी के न बोलने पर तलवार खींच लेता है। देवी मनियाँ भी प्रकट हो कर विजयी होने का वरदान देती हैं। अब लोरिक की विजय निश्चित-सी हो जाती है।

35. लोरिक द्वारा अँगूठा से पेड़ दबाया जाना—लोरिक-नँजरी दोनों मरदमल के अखाड़े में पहुँचते हैं। वहाँ मरदमल की नाल रखी है, जिसे लोरिक दाहिने हाथ की कानी अँगुली (कनिष्ठिका) पर उठा लेता है और पत्नी से कहता है—

---

1. हिलडुल जायगी, 2. गोठानी में सोमनाथ के नाम से वही महादेव प्रसिद्ध हैं। इन्हीं के विषय में कहा जाता है कि काशी से आकर यहां गुप्त रूप से प्रकट हुए हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'कहो तो इसे गँउरा में फेंक दूँ, कहो तो सोन नदी में, या राजा के किला पर फेंक दूँ।' वह इसे दस बार घुमाता भी है—उत्तर में मँजरी प्रार्थना करती है—'इसे कहीं भी मत फेंको, नहीं तो तहलका मच जाएगा। यह इमली का पुराना पेड़ है, वहाँ धीरे से रख दो।' लोरिक पेड़ को दाहिने हाथ के अँगूठे से दबाता है, पेड़ जमीन पकड़ लेता है। दोनों पुनः महरा के घर पहुँचते हैं और भाई-बहिन की तरह सो जाते हैं। इधर भोर ही में राजा भी सेना तैयार कर मँजरी की विदाई कराने महरा के द्वार पर पहुँचता है।' महरिन बढ़नी (झाड़ू) लेकर दौड़ती है और कहती है—'हे राजा। तू यहाँ से चला जा। अब लड़की पर मेरा कोई अधिकार नहीं है। उसका पति उसे लेकर घर में सो रहा है।

देवी-देवताओं का वरदान प्राप्त करना :—

"सइयाँ सुनबा सुखनन्दन, दरियाँ मनबा कहलवा हमार।
दरिययँ बाबा बायँऽ महादेव, नेम से कइली पूजा ओनहूँ काऽ।
अगोरी का देवता हवँऽ सतजुगी, चलकर गोड़य हाँथे गिरल जाई।
साँझय कर देइहैं खयलवा हमहनों का, होय जाई अगोरिया में जीत।"
देखा रात न रात का समय, आगे-आगे रेंगल धिया महरे का।
पीछे लोरिका खोरिया जालय, दूनों रेंगल ऊहाँ से बाय रेंगावल।
चल जानयँ मण्डील महदेव का, हल गयिल लड़की महरे का।
जेकर दावन मँजरी बाय नामयँ, आयकर गोड़ेय हाँथे बाय गीरल।
बिनती करतय देवतन का धाऽम, देखा बाबा हघँऽ सतजुगी।
"एठिनयँ जानय सक्ति तोहार, कर देबा ख्याल हमनों का।"
वह दिन गोंड़य हाँथे गीरकर, ऊ फेर कइलेन पुकार अहिरे का।
"सइयाँ इहै देवता महादेवय, आयकर हाँयय गोड़ गीर जैबा।"
टप से हलल पूत कठइता का, जेकर दुलरवा लोरिका बाय नाम।
लखय न मुर्ती महादेव का, जर-मर अहीर भयल बाय खड्गार।
"इँधन तूहों देवता का पुजला, कुछ बूते कहलवा नाहीं जालय।
ऐसन न ऐसन बायँऽ देवता; गउरा बहुत गाड़ल बायँऽ थाऽक।[1]

लोरिक का महादेव से प्रकट बात करना—

हमहूँ न देवता बाई पुजले, परगट देहीं देवतन से बतियाय।
जौ भाई देवता होबा सतजुगी, जौ फेर सक्ती तोहरे में होई।
दूई बात लेता बतियाय," इतना सुनय सबद अहिरे का।

---

1. पत्थर का टुकड़ा, मील का पत्थर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धीर-धीरे महादेव धरती में बायँऽदबल, अहिरा घण्टा छमीछा बाय जोहत।
नाहीं भाई खींचत खांड हँथवा से, जेनकर चारी अंगुल भयिल बाहर।
जेकर तड़प अकासे में जातय, नीचे न मरले बाय दवनहरा[1]।
पोरसन लवर[2] बाई गुँगवात[3], जौने दिन घूमल खाड़ अहिरे का।
सक्ती देवता का बाय डोलल, महादेवय बोलल बायँऽ खखार[4]।
"लोरिका लौटल जजमें पर जावे, पापी न राजा बाय अगोरी।
तोहरो होई अगोरिया में जीत," इतना सुनय धिया महरे का।
सोझय ठोंकत धरतिया में माथ, "धन-धन पानी उतरय का।
जेनकर पुरुख मिलल बायँऽ भगवान, जव ले जानय अगोरी में भयली।
नेम से सेवा कइली सतकाऽर, कभी नाहीं बोलल मूर्ती पत्थर का।
आज पर गयल जोड़ियवा से काम, देखा पत्थरा जबबवा बाय देत।
देखा मीलत आगम दखिनयँ में, एठे रामय लगइहैं बेढ़ा पाऽऽर[5]।
तब फेर बोलल धिया महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नाऽम।

दुर्गा से प्रकट बात करना—

"आगे देबी बायीं बनसरा, जेकर परगट मूर्ती बाय बोलत।
सइयां हेमयतेन[6] जिन कऽरा, नाहीं दीहैं ठाढ़े देहिहैं सरीखा झुरवाय।,"
वह दिन बोलल पूत कठइत का, जेकर दुलर लोरिकवा बाय नाऽऽम।
"चल धन देखीं मूर्ती बंसरा का, देखकर जातय अत्मवा मोर जुड़ाऽऽय[7]।
आगे-आगे रेंगल लड़की महरे का, पीछे लोरिका लेलेन पछियाय[8]।
जायकर बंसरा सिवल्ला बाय जूटल, जाय गोड़य-हाँथे करय बिनती।
"देखा देबी हवऽ सतजुगी, तनी कर दा ख्याल हमनों पर।
अब हो जातय अगोरिया में जीत," वह दिन कइले पुकार अहिरे का।
"सइयाँ इहै देबी बायीं बंसरा, एनसे कर ला बिनती बरियाऽऽर।"
जौन दिन लखय पूत कठइत का, जर-मर कोइला हो गयल खऽार।
"देख भाई देबी हये सतजुगी, जौ फेर सत्य अगोरी तोरे होई।
दुय बात हमसे लेबा बतियाय," अहिरा घण्टा छमीछा बाय जोहत।
अब नाहीं बोलल मूर्ती बंसरा का, ऊहाँ अहीर गयल बाय जिदियाऽऽय।
एक दम खीचत खाँड़ पलवाँ से, जेकर चारी अंगुल भयल बाहर।
ओकर तड़प अकासे में चल जाय, नीचे न मरले बाय दवनहरा।
ऊपराँ पोरसन लवर गुंगुवात, अब घुम गयील खाँड़ अहिरे का।

---

1. आग की ढेर, 2. ज्वाला, 3. उठती है, 4. खांसकर 5. बेड़ा पार करेंगे, उद्धार। 6. वाद-विवाद, नाहीं नुकूर, 7. आत्मा जुड़ाना संतुष्ट होना, 8. पीछा किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बंसरा सक्ती बाय डोलल, मूर्ती बोलल बाड़य खखाऽऽर।
"बरुवा न सुनबे फुलझरुवा, एठिनयँ मनबे कहलवा हमार।
लौटल न जजमें पर जाबे, पापी न राजा बाय अगोरी।
तोर जीत होई अगोरी बजाऽऽर, गड़ल न खम्भा बाय अगोरी।
ले जावे गड़वे गउरा गुजरात," उहवाँ से दूनों मनई[1] बायँऽ रेंगल।
एकदम राती निचलोइया[2] बाय रात, एक दम रेङल किलवा अोरी जालयँ।
जायकर उतरय नगर उधुवा का, जायकर किला दुवारी पर जूटल[3]।

मनियाँ से वरदान प्राप्त करना—

किलवा के दखिन बले[4] बायँऽ दिवाले, मनियाँ जौन भवानी कुलपूज।
बोलल न धिया महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नाऽऽम।
"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, अब सुन लेबा मथना का महुआर।
ई फेर राजा के भवानी कुलपूज, एनके गोड़य हाथें गिर लेबा।
काजनो कर देहिहैं ख्याल अगोरी में, अब होजाई अगोरिया में जीत।"
वहदिन बोलल पूत कठइत का, "असली भवनियाँ भवानी जब होबे।
जब भाई सक्ती तोरें में होई, दुय बात लेबे हमसे बतियाऽऽय।
तबे खरीयत अगोरी में बाऽऽय," अहीर घण्टा छमीछा बाय जोहल।
अब नाहीं बोलय मूर्ती देबिया का, वह दिन जीदल[5] पूत कठयित का।
जौन दिनयं खिचले ओड़नियाँ बाय खाड़, जेकर चारी अंगुल भयल बाहर।
जेकर तड़प अकासे में जाय, नीचे न मरले बाय दवनहरा।
पोरसन लवर बाई गुंगुवात, कह दा भारी देवाल किलवा का।
अबहियँ जाती खलड़िरिया भहराय,[6] कैसों रोहोतुकार[7] मच जातय।
दुय हाँथ चलजात तीरे पर तलवाऽऽर, तब तक बोलत देबी बाय मनियाँ।
ऊ फेर मारत खखारी फुन बाय, "बरुवा न सुनबे फुलझरुवा।
एठिनयं मनबा कहनवाँ हमार, एकदम लौटल जजमें पर जाबे।
अब तोर जीत अगोरी में होई," उहवाँ से दूनों आदमी बायँऽ रेङल।
आगे-आगे रेंगल धिया महरे का, पीछे लोरिका लेलेस पछियाऽऽय।
जाय जुट गयील अखाड़ा मरदमल के, जाय कर देलेस नाल बाय बताय।
हल गइल पूत कठयित का, जेकर दुलर लोरिका बाय नाम।
दहिने न हाथें का कनगुरिया,[8] अहीर पेंसत[9] नाली में बाय।

---

1. आदमी, 2. शान्त एकान्त, 3. पहुँचा, 4. तरफ, 5. जिद पर आ गया। 6. गिर जाती, 7. कहासुनी, 8. कनिष्ठिका, 9. डालता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकर पोरसन नाली बाय उठवले, ऊहाँ दसय फेवरवा[1] घूम जाऽऽय।
"कह दा फेंक देहीं नाल गउरा में, चल कर देखा निसानी हमार।
के फेर सोनय भदरवा में वीग देहीं, सुनकर मगर-मछरी औंजाय[2]।
के फेर मारीं किला रजवा का, एको जातय गुरजवा[3] भहराय।
अब हेयँ रोहयतुकार मच जातय, दूय हाँथ जातय तीरवा पर फरियाय।
जेन्हें रामय देतयँ ऊलेत", इतना सुनत धिया महरे का।
हाँथय जोरय करय बिनती, "सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन।
सुनलेबा मथवा का महुवार, काहे राती राड़ बायऽ मचावत।[4]

हाथ के अँगूठे से पेड़ गिराना : राजा से युद्ध का प्रारम्भ

अब दिन गयल सवेरवाँ[5] भहराऽय, कल्ला न नाल बाय धरवले।
पेंड़ देलेस अमली के बताय, अहिरा जुटल पेंड़ अमली के।
दहिना न हांथे का अँगूठा, लेकर चाँपत पेंड़ अमली का।
एकदम देलेस जमीन धराय, आज तक परल निसानी देखा बाऽऽय।
ऊहाँ से दूनों बाय पलटल, चल जातय कोठी भीतरी के।
बिचेय[6] रखय बिजुलिया बाय खाँड़, एकदम गयील भाई-बहिनी के धरलेस नात।[7]
दूनों तानी चदरिया बायँऽ सूतत, जे फेर घण्टा रतिया रह जाती।
तब फेर देखा राजा का मंसाय[8], उल्टा न लकड़ी बाय बजबले।
पल्की देलेस कहांर सजवाय, सौ साठ गुण्डा बाय ले ले।
एकदम तरकत पेंड़े में जाऽऽय, पलकी कहाँर सब डहरवले।[9]
एकदम कौआ बोलउवाँ[10]का बाय जून, जायकर छेंकय दुवार[11]महरे का।
पलकी चिटकाय कर उतरवैले, डाँड़े निकलेके जगह नाहीं देखाऽऽय।
दुवराँ तरकत गुण्डा बायँऽ अनेत, अब फेर घूमय हाथी दुवराँ पर।
महरिन से माँगय बिदाई जब बाय, सुनत न धनवाँ बाय महरिन।
जर-मर कोइला भइलि बाय खड़गार, "राजा न सुनबा महराजा।
दरियाँ मनबा कहलबा हमार, जय दिन लड़की बस के अपने रऽहल।
तयदिन कबजा अगोरिया में हमार, देख भाई गाँठी रोकड़वा जे लगवले।
लेकर सूतल कोठिया में बाय, राजा हमसे जिकरिया जादय मचवैबा।
बिग-बाग मारब बढ़नियाँ दुय-चार", इतना हलचल दुवरा में भयील।

---

1. चक्कर, 2. व्याकुल 3. बुर्ज, 4. राड़मचाना, झगड़ा करना, 5. प्रातः हो गया, 6. बीच में, 7. रिस्ता, 8. मंसा, इच्छा, 9. लियवा चलना, 10. बोलने का, 11. द्वार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समीक्षात्मक टिप्पणी—कथा का यह अंश भी अन्यत्र नहीं मिलता। इससे नायक की वीरता का संकेत तो मिलता ही है, उसकी धार्मिक आस्था-भावना का परिचय भी मिल जाता है। वह नायिका को विश्वास दिलाने के लिए देवी-देवताओं को अपने अनुकूल करता तथा इमली के पेड़ को भी कनिष्ठिका से दबा देता है मौखिक रूपों में इस घटना का उल्लेख थोड़े हेरफेर के साथ मिलता है, लिखित रूपों में प्रायः नहीं मिलता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा : युद्ध काण्ड

सारांश(36) राजा का मँजरी को प्राप्त करने का प्रयास—भीतर से लोरिक भी यह बात सुनता है और क्रोध में अपनी तलवार लेकर आँगन में निकल आता है। पालकी कहार के आने की बात सुनकर लोरिक आँगन में से ही उछल कर बाहर आ जाता है तथा राजा के सभी सैनिकों और उसके हाथी को भी मार भगाता है। फिर जजमें पर पहुँचता है, मँजरी की माँग में सिन्दूर डालता है, जिसे उसके दो-चार साथी ही जान पाते हैं। इतने में सबेरा होने पर सभी बाराती दैनिक क्रिया में प्रवृत्त होते हैं।

(37) लोरिक के साथ चिंतित मँजरी की विदाई—महरा-महरिन आपस में मँजरी की विदाई का निश्चय करते हैं और सुबाचन को जजमे पर भेजते हैं। सुबाचन इस बात को कठयित से आकर कहता है। कठयित सँवरू से विदाई में मिले मवेशियों को लेकर चलने के लिए कहता है। सँवरू उन्हें लेकर नदी पार करता तथा कोलिया घाट पार करके चरपी डलवाता है।[1] वह वहाँ पहुँचकर प्रतीक्षा करता है और सोचता है 'ज्योंही लोरिक का बाप वहाँ आये, मैं भी राजा से लोहा लेने वहाँ पहुँच जाऊँ।' मवेशियों को लेकर धोरई गँउरा के लिए चल पड़ते हैं और संवरू वहीं पर रुक जाता है।[2]

इधर विदा होते समय मँजरी रोने लगती है। उसकी माँ उसे चुप करने का प्रयास करती हुई कहती है—'बेटी तुम्हें किस वस्तु की कमी है। विदाई में इतनी दौलत दी गई है कि तुम्हारा सारा जीवन सुख-चैन से बीत जायेगा।' मँजरी इस कथन का प्रतिकार करती हुई कहती है—'धन-दौलत के लिए मैं नहीं रो रही हुँ। सभी बाराती तो गँउरा चले गये, मेरे स्वामी ही यहाँ बचे हैं, राजा बलवाने है, वह उन्हें मार कर मुझे किला में रनिवास भोगने के लिए ले जायेगा। फिर राजा के साथ तो मरदमल जैसे बलवान हैं, उनके सामने स्वामी की क्या चलेगी ? मैं इसीलिए रो रही हूँ।'

---

1. कोलिया घाट पर पत्थर के रूप में चरपी का निशान आज भी विद्यमान है। चरपी, यानी मवेशियाँ, उनके रहने का स्थान 2. लोरिक नेचलते समय सँवरू से कह दिया था कि यदि मार्ग में मेरे ऊपर कोई आपत्ति आयी तो मै तुरन्त बाण संधान करूँगा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसी बीच अनपी बाहर निकल कर मँजरी के खूंट (आँचल) में विष बाँध देती है, ताकि लड़ाई में स्वामी के मारे जाने पर वह उसे खा कर मर जाये। इससे उसकी इज्जत बची रह जायेगी और कुल की मर्यादा भी नष्ट न होगी। मँजरी अपनी माता से सोने की कछारी तथा पिता से स्वर्ण-निर्मित सिर की पगड़ी अपनी परवरिश के लिए माँगती हुई कहती है—'वहाँ जब मुझे कोई सहारा न मिलेगा, तो इसी से अपना निर्वाह कर लूँगी।' विदाई के अवसर पर सब दुखी होते हैं। लोरिक सास से मिलने घर के अन्दर जाता है और सास तथा श्वसुर का आशीर्वाद प्राप्त करता है। मँजरी की पालकी लेकर सोलह कहार किला से हो कर उधुवा नाला को पार करते हुए गोठानी पहुँचते हैं। मँजरी की पालकी भी नदी पार पहुँच जाती है। इसी अवधि में चुगुला सोनार राजा के पास पहुँचता और राजा मरदमल को उभार कर तैयार करता है। राजा उसे वचन देता है—'यदि तुम मँजरी को मेरे समक्ष उपस्थित करो तो तुम्हें आधा राज्य दे दूँगा।'

लोरिका का बारात में वापस जाना—

लोरिका के काने सबदिया चल जाऽय, जकलायल पुतवा कठइत का।
एकदम ऊठत पलङिया से बाय, गोड़वा तरकुस गुजे का बाय जूता।
अहीर चाँपत एँड़ा बाय चढ़ाय, बत्तीसों समान बाय कसले।
हाथे में लेले बिजुलिया बाय खाँड़, एकदम निकलन अँङनईं में बाऽय।
आँख मीजत पूत कठइत का, तब फेर सासु बोलल बाय महरिन।
"अब सुन लेबा दुलरवा मोर दमाद, देखा भाई तोहरों जिन्दगिया के कारन।
दस बात सहत दुवारे पर बाई," इतना लखय पूत कठयित का।
जर-मर कोइला हो गयल खङ्गार, ऐसी न पलकी बाय लौकत।

गुण्डों को मार कर राजा को आतंकित करना—

डाँड़े निकलेके जगह नाहीं देखात, अहीर डाँकल चम्फा[1] अँङनई से।
जायकर गिरल दुवारे पर बाय, अब बान्ह देलेस मुटुका[2] हँथवा का।
तान-तान मारय दुवरा महियाय,[3] जितना गुण्डन के मुटुका बाय बाजत।
केनहूँ का हाँथय गोड़ बाय टूटल, केनहूँ का झरल बत्तीसों बाय दाँऽऽत।
लखकर राजा हाँथी पर कपसल,[4] महवते के देलेस घोड़ बाय धराय।
तब फेर सोझय भाला पेल देबे, लेकर भाग हाथी इनरावत का।
नाहीं लेही जिन्दगिया हमार," सोझय न भाला बाय धँसावत।

---

1. उछला, 2. पीछे घुमाकर हाथ बाँधना, 3. आवेश में आकर, 4. डर गया,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चिल्हाँकत[1] हाथी हनरावन, लेकर भागल किला भण्डार।
एकदम घण्टा छमीछा के जून, दुवराँ पर खोजले मनई नाहीं देखाऽऽय।
धर कर वीग दे[2] पल्की सिवाने में, खलँगी-खलँगी[3] गइले छितराय।
ऊहाँ से भागल अहीर कन्तित का, एक दम रेंगल जजमें पर जाऽऽय।
ऊहाँ दुय एक संही जागल बाय समोरी,[4] लख कर मारय मुसुकी अहिरे के।
साँझय सेन्हुर बाय डलले, अब आधी रात करत बाय ससुराऽऽर।
लोरिका हाथय जोरय करय बिनती, संहिया सुनबा मोर समोरी।
देखा भाई तूहें जाना की हम, दूसर कोई सयनवा न जानय लोग।
नऽतऽ भाई सुनिहैं लोगवा गउरा का, बड़ा भारी करिहैं हिनइया हमार।"
अहिरा देहें का समान बाय उतारत, आपन पहिरत दुलहथी जब बाय।
अब बीर अपने पहरा पर बाय बैठल, सवा लाख गयील बारात सब ऊठ।
सवा न लखवा बरियात, अहिरे के गयील तीरवाँ छितराय।
दिसा न होत बाय मैदान, पानी छूअत तीरे पर बाय।
कुल्ला न करत बाय गलाली, सगरों जुटल जजमें पर जाय।
अब चल गइल फरसी कठयित का, सगरों घूमत जजिमवाँ पर बाय।
जतिया लेकर परजात, सगरों पीसत नासा बायँड पत्ती।
ओठे नास्ता न पानी बाय होत, जेकर जौन अमल बाय माऽत।
जोरकर खातय जजिमवाँ पर बाय, लागय न बीरा पनवन का।
सगरों बँटत जजमें पर बाय, सबा न लाख बाय बरात।
अहिरे का कूँचत मघइया बाय पान, मौज न देखा बाय लेत।
एक दम सोनयँ भदरवा के तीर, गउरा न सुमिरय गँवहेर।
बोहवाँ कनिक सुमिरय मुरार, जेन बीर सूअर ले ले दँतार।
सुमिरत न देबी बाय दुर्गा, जे फेर आदि दिनवाँ का पुजमान।
जितना भयील कीर्तन सतजुगी, छनवाँ घूमल दुनियवाँ संसार।

मँजरी की तथा साथ ही बारात की विदाई—

राम न राम गावै के ठाकुर, भजली नाम हो तोहार।
सून न बखरी महरे का, बोलत न ममा बा सुचाचन।
"बहिन न सुनवा महरिन, बहनोई न सुनबा महरा।
कहना माना एठिन हमार, देदा बिदाई भैने का।
रोकले से कौन फैदा बाय देखात, डेंहुड़ी से लड़की तूं निकाला।

---

1. चिग्घाड़ता है, 2. फेंक दिया, 3. टुकड़ा-टुकड़ा, 4. साथी-संगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झगड़ा तीर पर लीहैं फरियाऽऽय, वल्ली न राजा वा आगोरी।
जेनकर उर्दी न कहुला बिहलाय, चढ़ल न अहीर उत्तररहा।
मुर्चा परल अगोरी में बाऽऽय,' एतना बात न भइनी।
सब कोई कइले बा बखरी में मंजूर।
रेंगल न मम्मा बाय सुबाचन, एक दम जूटल गोठानी वा गाँऽऽव।
जहाँ सवा लाख बा बरियात, अहीर टीकल जजमें पर बाय।
बोलल न मुवा सुबाचन, समधी माना कहल हमार।
लागत हुकुम बा डेंहुड़ी[1] से, बिदाई के मिलल बा आडर।
जेन्हें गइया भइंसिया के कमी न बाय, चढ़ जइहैं गेरुआ पर्वत पहाड़।
जहाँ गइया भइंसिया बा अमाऽऽय,[2] जेकर सोना न चाँदी के होय कमती।
दुवरा पर दीहैं खोली बिकवाय, जेनके कहीं न धन की जरूरत।
डाड़ी दीहैं दुवारे पर टिकाऽऽय," एतना बात जब भइनी।
बोलल न अहीर बा कठयित, "जतिया न सुनबा परजात।
पंच सुनबा बराते के सब लोग, जेनसे एकय मन का जाई बोझा।
ऊ दस पसेरी का बान्ह बकुचा,[3] चल कर उत्तर न जाई अगोरी।

गाय-भैंस के दहेज की प्रथा :—

एक दम धइले न राह उत्तर का, अब चढ़ चलिहैं न कोलिया का घाऽऽट।"
जितना घोरई वाहैं सौंरूँ लेकर अलगे हो जाय, जोगिता लिखल न बा गइया-भैंसिया
उहवाँ पयान कइल गेरूआ पर्वत पहाड़ तब तक सुनऽनऽ हाल मँजरी का।
लिखत न पत्ती बा लरमें का, लिख कर देहलेस सौंरू कहाँ भेजवाऽऽय।
"काकरे हलकानी पहाड़े में होयिहैं, किला के पश्चिम बले चल जाय।
जाकर बैठे नदी के तीर, जौने बखत बारह से एक न बजी।
गइया-भैंसिया न पानी पर उतरिहैं, पीकर पानी जब डहरिहैं।[4]
अगवाँ बहिले-बाँठ छोड़ दीहैं, बीचे लेहड़े भजइहैं।
पीछे बूढ़ ठेल छोड़ दीहैं, बीच-बीच गइया भैंसिया हिगँरइहैं।[5]
बछवा न लीहैं कलमिया, जेकर बाही न बछिया पँजाऽऽय।[6]
भैंसा न लीहैं कुमतिया, एकरे बाही पँड़िया पँजाय।
नान्हूँ घोरई जौने बाय, उनके दइजा में लीहैं सटवाय।
कोसन बोलारी[7] जब मारी, पीछे भागल बैना[8] सब जाय।"

---

1. दरवाजा, 2. अट जाती हैं, 3. गठरी, 4. चरने जायंगी, 5. आगे बढ़ेंगी 6. ब्यायेगी, 7. बोलेगी, 8. गायें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सवा लाख न बरात अहीरे का, चलल न बा गउरा गाँऽऽव।
अकसर न अहीर बा लोरिका, अबहीं न टिकल न दुवारे महरे का।
रोवत न लडकी बाय महरे का, जेकर दावन मंजरी बा नाऽऽम।
उतरल न गाय बाईं बैना, नदी के पानी गयल बन्हाय।
गइया न भैंसिया सब उतरनी, सोझय धरनी उत्तर का राऽऽह।
चढ़ गयल घाट कोलिया का, ऊपर से टप्पा न परल बा मैदान।
वही रुकल लेंहड़ बाय पहाड़े, टप्परी[1] बाजत बैनी में बाय।
धरती देले बाय स्थान, चरपी देहलेस टप्पा पर[2] गड़वाऽऽय।
जौन न चरपी बाय डलवौले, आज तक पथरा का निसानी ऊहाँ बाय।*
टीकल न बीर बाय धरमी, वहीं बानऽ कोलिया का घाट।
जोहत न लोहा बा अगोरी का, जब फेर मरले बाय बान ऊहाँ।
बान आहट न पता लेकर, लोरिका फेंकत कोलिया के घाऽऽट।
वह दिन डेरा डंडा बाय कबरले,[3] गाय लेहलेन ऊहाँ डहराय।
जितना घोरई बोहे बाय आयल, सगरों लेंहड़ बाय हँकले।[4]

मँजरी की कारूणिक विदाई

चल जाय साँखड़ बोहा बाय मँझार, बोलत मतारी बाय महरिन।
"बिटिया मानऽ कहल हमार, जितना दौलत में रहल।
दइजा देली गउरा पठवाय, कौन चीज का बाय कमती।
हमके देवा सरेख लगाय, रोवत लड़की महरे का।
जेकर दावन न मँजरी बा नाम, सावा लाख बा बरात चल गयल गउरा गाँव।
अकसर न अहीर बा लोरिका बचल, जेनकर कौन बा अगोरी में बुनियाद।
बल्ली न राजा बा अगोरी, पललेन माल बा मरदमल।
जेन्हें एक मन खाने रासन, एकय न खस्सी सिंहाड़ा।
पाँच सेर बा घीव, ओही के मेल बा नमक-मसाला।
जेकर एक जुआर[5] के खोराऽऽक, मारी न अहीर अगोरी म।
अहिरे के सेतुआ पिसान कर दे, निकलल लड़की बा सुबाचन का।
जेन कर अनपी बा नाम, राम न राम गुन गावय के ठाकुर।

---

1. गायों के गले का बाजा 2. अड़ान, पड़ाव 3. उखाड़ लिया 4. लेजाना 5. वक्त। *वहाँ पत्थर के रूप में निशानी देखी जाती है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मँजरी के खूँट में विष ताकि लोरिक की पराजय की स्थिति में मँजरी उसे खाकर मर जाय :—

सिन्हिया लेले बा माहुर, मँजरी के देलेस खूँटे गठियाय।
"सुनबे धिया महरे का, कहना मनबे एठिन हमार।
जौ जुझिहैं न अहीर बा अगोरी, तूं खायकर जहर मर जाये।
एहर रह गयल पगड़ी बाबिल[1] का, सँइया में धरम रह जाऽऽय।
बीच न जोग बीत जइहैं, नाम चली दुनियाँ संसार।"
बोलल न लड़की महरे का, जेकर दावन मँजरी बा नाम।
"मइया न सुनबे तूं हमार, कहना मानऽ एठिन हमार।
सोने का जौन कछारी न बाय, ऊहों दइजा में देबे भेजवाऽऽय।
सोने का छोड़ा[2] जौन बाय, जेमे आठ कानी नौ नेत
ऊहों देवा दइजा भेजवाय, अम्मा न सास बाईं खुइलन।
बज्जर मरिहैं मेहना बरियाऽऽर, हमसे बूते न सहल जाऽऽय।
रेंगल न लड़की बा महरे का एक दम रेंगल दलाने में जाय।
बैठल न बाप बा महरा लड़की न करत जबाब बाय।
बाबिल दे देबे पगड़ी सिरे का राम न राम गुन गावय के ठाकुर।
जेमें मोती न हीरा बाय, गउरवा में औखत न बिपत्ति जब पऽड़ी।
बेचकर खाब दुय-चार पुस्त" देती सनेस बा लोरिका के।
एक ठे रहल खाँड़ महरे का सइयाँ लीहैं दइजा में सटवाय।
औखत में करी ऊ काम" अहीर माँग कर खाँड़ ससुरे का।
जैसे चिरुआँ काठी फिकाय, ओह चाल गइल फिकाय।
पल्ले के खाँड़ खिचलेस, घुमाय कर मारत पथरा पर बाय।
पथरा ढोंका-ढोंका जाय फेंकाय, होत न बाय बिदाई मँजरी का।
देस नगर बा अगोरी गाँव, मँजरी न तिबई के रोइबे।
पूरा रोवत बा अगोरी बजार, अटइल न रौवै बन बटइल।
कुआँ घुरुक रोवे पनिहारिन, मँजरी के निकल के पलकी में देलेस बैठाय।
रोवन बखरी में बा मचल, सगरों रोवन बा पटाऽऽय।
लागल हुकुम बा लोरिका, के चलकर कर ले पलगी असीस।
रेंगल न अहीर कन्तित का, एकदम हलल बखरी में जाय।
बैठल न सास बाईं अम्मा, जेन फेर सोने के लेले न बाई करधन।
के फेर सोना न धारी धोती के किनारी, पानी न रखल बा बतासा।

1. पिता, 2. दही मथने की मथनी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जूटल न अहीर बा लोरिका, पानी पियत बा कुल्ला न गलाली ।
मिलत न बा बीरा पाने का, अहीर न कूंचत बाय मुँहे दबाय ।
माथे न चन्दन बाय चिटकवले, जेकर अम्मा सास बाईं महरिन ।
निहुर माथा बा नेवावत, महरिन देती न बाई आसिर्बाऽऽद ।
"दुल्लर आँखों अमर हो जाये, जैसे बाढ़े पानी गंगले का ।
वैसे बाढ़य तोहार आई, जैसे चढ़ै कमानी सरंगो का ।
वैसे चढ़ल भुजा तोहार, जैसे बाढ़े खम्भा केदली का ।
वैसे बाढ़य जँघवा तोहार, दुल्लर आँखों अमर हो जाया ।
तूं जीयऽ लाख बरीस, वहाँ से निकलल बाय लोरिका ।
एकदम गयल दलाने[1] में बाय, ससुर न बैठल बा मँहरा ।
एकदम कुरसी पर बैठल बाय, जैसे पुलिस रहें बरियार ।
जाकर लोरिका कइले बा पलगी, महरा देत बा आसीरबाऽऽद ।
"तोहार आँखो अमर हो जाय, तूं जियऽ लाख बरीस ।"
डालत न हाँथ बा कोटी में, जेन साठी न मोहर बाहर ।
लोरिका के देहलेस पलगी[2] में बाय, निकलल अहिरवा लोरिक ।
हुकुम देले कहारे के बाय, ऊठल न पलकी दुवरा से ।
जेमें लागल सोरहों बा कहार, एक दम किला की और जाऽऽय ।
दस बजे का बाय टाइम, राजा का लागल कचहरी बाय ।
राजा न लखत बा मोलागत, एकदम दाँतें में अँगुली चबाय ।
कहाँ का बैरी चढ़ल दुवरा देखीं, आज पोसल सुगिया[3] ले जाय ।
एकदम लेले जाइ डाड़ी पच्छिम, जहाँ बहल बा उधुवा का नार ।
वहाँ से घूमल न डँड़िया मँजरी का, एक दम पुरुब ले लेबा तड़ियाऽऽय ।
धइले बा नदी के तीर, एक दम नगर बाय गोठानी गाँव ।
जहाँ लागल बा मेला अगोरी का, वहाँ टिकल न बा पालकी अहिरे का ।
सोरहों जौन कहाँर, एकदम भेजले बा महरे के दरबार ।
"जब तक अगोरी में हमहूँ बलवाइब, तब तक निकाला तूं डाँड़ी ।
नाहीं त कितना लोग आकर जुझिहैं, ओमे सही न बा सबूत ।"
तब तक छीपल बा दादा कठयित, लेकर निकलल खोरी से बाय ।
लखत न मरद बा अगोरी, ढार-ढार बहत न बा लोरिका के नीर ।
"दादा न सुनबा कठइत, कहना मनबा एठिन हमार ।
सवा लाख न बा बारात, चल गयल नगर न बा गउरा गाँव ।

---

1. बैठका, बरामदा, 2. प्रणाम, 3. पालिता ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अकसर न जिन्दगी बा छोड़ले, एकदम नगर अगोरी बा पाल।
ददा मरते न जियते का पता, तूं फेर लेहा गउरा से लगवाय।"
तड़पत न दादा बा कठइत, छोड़ दा माना कहल हमार।
बेगर[1] डाँड़ी से फनववले, तौ फेर देखली गउरा गुजरात।
पहुँच कर बोंगब सिर जरियाय," इतना कहत न कठइत बा रेंगल।
एकदम धइले बा डहर[2] उत्तर का, नाई त ढोंगा से बाय उतरत।
रास्ता लेलेस गउरा तड़ियाय, छीपल न डाड़ी बा मँजरे का।
जेनकर सोनभद्र के तीर, वैठल न आसन लोरिका।
रास्ता ताकत न किला का बाय, झंखत न राजा बा मोलागत।
हो हो न दयी नरायन, का ब्रह्मा लिखला माथे तूं लिलार,
राजा न अन्ना छोड़ले बा पानी, सून[3] भाई कचहरी बाय।
मनयंमन ठठले बा मन्त्री, सुन्न भइल कचहरी बाय।
चुगुला बोलत न दरे बा सोनाऽऽर, राजा न सुनबा महराजा।
कहना माना एठिन हमार।

मरदमल से युद्ध : लोरिक की जीत

जौन पालल न माल बा मरदमल, जेनके तागत के पृथ्वी पर नाहीं बा थाऽऽह।
ओनकर करबा न बलाव, कुछ लालच न धरयबा किला पर।
आधा न राज देबा अगोरी, गाँव देबा घटिहटा न गाँव।
जेमें जौ गेहूँ के खान, किला पर आधा गद्दी देदा हाऽऽर।
बल्की राजा बनी अगोरी का, परजा बना ओकर तूं आज।
बलायकर भेजा न माल के नदी पर, और न जात मार दीहैं।
अब दिन-दिन न छूट जाई कलंकार,[4] आन कर किला पर भोगयबा रनिवाऽऽस।"
छूटल सिपाही किला से, अब चल जात मरदमल के दरबार।
ले जाय माल बलवाय के, जूटल न माल बा मरदमल।
जहाँ राजा का लागल बा दरबार, निहुर के माँथ बा नेवावत।
राजा जरभुन देत बा आसीरबाऽऽद, "आँखों अमर हो जाया।
जैसे बाढ़ी पानी गङ्ले का, वैसे बाढ़ी न आयी बा तोहार।

मरदमल को राजा द्वारा आधा राज्य देने का वचन—

एक बखत पूरा न राज बा अगोरी तेजल जाय, मँजरी से रानी न तेजल[5] जाय।
आधा न राज लिखब अगोरी, गाँव लिखत घटिहटा गाँव।

---

1. बिना, 2. रास्ता, 3. सूनी, 4. कलंक, 5. तजी जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आधा न किला देब चननी का, बल्कि राजा तूँ बना एठिन का।
परजा बनब एठिन तोहार, जातय न अहीर मार देबा।

समीक्षात्मक टिप्पणी—मँजरी की विदाई का यह प्रसंग तथा राजा निरमल से युद्ध भोजपुरी रूप में विविध परिवर्तनों के साथ मिलता है। राजा का मरदमल पहलवान को लोरिक को मारने के लिए भेजना और लोरिक द्वारा दण्डित कर वापस भेजा जाना आदि कथानक बड़ा ही रोचक हास्य रस युक्त हैं। मरदमल के सिर पर बेल का गट्ठर बाँधा जाना हास्यास्पद तो है ही, तत्कालीन दण्ड-विधान की ओर भी संकेत देता है। प्रकाशित रूपों में यह प्रसंग प्रायः नहीं आया है।

सारांश (38) **राजा का सक्रिय-विरोध**—मरदमल के तैयार होते समय उसकी स्त्री सूत कात रही होती है, वह उसे रोकते हुये कहता है—'अब तुम क्यों चिन्ता करती हो, अब तो राजा का राज्य ही मिलने वाला है।' उसकी स्त्री लोरिक की वीरता से पूर्व परिचित है, वहीं की रहने वाली है। अतः उसे सावधान करती हुई निवेदन करती है—'उसे जीतना आसान नहीं है, तुम सोच-विचार कर ही उससे लोहा लेना।' किन्तु मरदमल एक नहीं मानता और नदी के तट पर पहुँच जाता है। मँजरी उसे दूर से ही देखती है और लोरिक को उसके विषय में बताती हुई कहती है—'वह राजा का पालतू पहलवान है। पाँच मन घी, सिंहारा (सींगवाला), खँसी आदि उसका नित्य का आहार है। तुम अब भी शान्त हो जाओ।' लोरिक यह सुनते ही क्रुद्ध हो जाता है और कहता है—'मैं ऐसे कितने वीरों को देख चुका हूँ। तुम तनिक भी चिन्ता न करो।' तदन्तर मरदमल आकर लोरिक को ललकारते हुए कहता है, 'अब भी मँजरी को लौटा दो, अन्यथा कुशल नहीं है।'

(39) **लोरिक से युद्ध में मरदमल की पराजय**—दोनों में परस्पर कहा-सुनी होने लगती है जो अविलम्ब लड़ाई में बदल जाती है। लोरिक उसे मार गिराता है, दस्त-बमन करते हुए वह मँजरी की दोहाई देता है। दयावती मँजरी पहुँच कर उसे बचा लेती है। लोरिक उसके सिर पर बेल बाँधकर उसे राजा के दरबार में भेज देता है।

(40) **शत्रुओं से घिरी मँजरी की खूँट से विष खोल कर लोरिक का फेंकना**—मरदमल से सारा समाचार पाकर राजा चिन्ता में पड़ जाता है। वह पश्चिम के राजा सखलेश के पास लंबापत्र लिखता है और शीघ्र आने का आग्रह भी करता है। उसके पत्र पर दक्षिण के कोरइया तथा पूरब के बघेल राजा भी युद्ध के लिए आ पहुँचते हैं। इन राजाओं को आते देख मँजरी घबराती है। शत्रु की सेना चारों ओर से लोरिक-मँजरी को घेर लेती है। मँजरी स्वामी से विनय करती है—'आप किसी प्रकार अपनी जान बचा लीजिए, मैं विष खाकर प्राण दे देती हूँ।' लोरिक

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसे जहर दिखाने के लिए कहता है। वह खूंट से जहर दिखाती है। लोरिक उसे लेकर हाथ में मलता है, कुछ आकाश में उड़ा देता है, कुछ नदी में फेंक देता है और कुछ अपनी खांड़ तलवार में लगा लेता है। तब तक दुर्गा भी प्रकट हो जाती हैं। लोरिक दुर्गा का स्मरण कर एक वाण धरमी के पास फेंकता है। धरमी स्थिति की जानकारी के लिए एक दूसरा वाण कोलिया घाट से फेंकता है जिसे मँजरी उठाना चाहती है, किन्तु भसुर का होने के कारण वह सर्प हो जाता है।

और दिन-दिन टूट जात कलंकार, रेंगल न माल बा मरदमल।
जातय न घरे अपने बाय, लहुरी-जेठरी बा जनानी[1]
घरे कातत न चरखा पर सूत; लखत बा मरदमल।
चरखा न घर का तोड़त बा, तोड़ देहलेस जिन्दगी का रोजगार,
बोलत न माल बा मरदमल, "बुजरी[2] बैठे न करे रनिवास।
आधा न राज पवली अगोरी, गाँव पवली न घटिहटा गाँव।
जौ गोंहूँ का बा खान, आधा न किला मिलल राजा का।
राजा बनब अगोरी में हम, राजा न बनिहैं परजा हमार।
तनिक टाटक[3] खिचड़ी तूँ न बनावा, खा कर जाईं नदी के तीर।
मारीं न अहीर बा उतरहा, दिन-दिन के झगड़ा जात ओराय।[4]
राजा न किला आनकर करे रनिवास," बोलत न लहुरी बा जनानी।
लड़की रहल न उत्तर का ऊ बाय, अहिरे के मालूम कुल बाय।
कहलेस "सइयाँ न सुना सुखनन्दन, सेन्हुर माना कहल हमार।
जौन बनबा न राजा अगोरी का, मोर न जानत बा तकदीर।
जानल न अहीर बा उत्तरहा, जौने न बखत बारह बरीस का बीर रऽहल।
गउरवाँ में खोजले जोड़ी बा न देखाय, देखे में अहीर दमचोर।[5]
लोहा में बंका[6] न बा जुझार, जेन फेर अहिरे न पैंड़े पर जइहैं।
ओनकर बहुबर[7] हो जइहैं राँड़, अहीर न फूटल न बा दढ़िवार।
जेकर खोजले जोड़ी ना देखाय," मरदमल न गारी गुफारी बा देत।
एकदम रेंगल नदी पर जाय, लखत न बीर बा लोरिका।
दरियाँ करत न जबाब बाय, "ब्यही न सुनबे हमाऽऽर।
कहना मनबे एठे तोयं हमार, एकय न मरद बा आवत।
के तऽ धन देबा बताय, केऽत भाई दाही-मुदई नाहीं हउवंऽ।

---

1. स्त्री, 2. एक प्रकार की गाली, 3. ताजी, 4. समाप्त, 5. कमजोर, दुबला-पतला, 6. वीरबंका, 7. स्त्री।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आज मोर चीन्हल नाहीं बाय, हमके देबा सरेखे लगाऽऽय।"
बोलत न लड़की बा महरे का, जेनकर दावन मँजरी बा नाम।
खोलत न फाटक पलकी का, पँचरँग ओहार पवार।[1]
हुड्डी न नेत बा लगवले, लड़की न बोलत बा महरे का।
"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, कहना मानऽ एठिन हमार।
पालल न माल बा मरदमल, जेन फेर एक मन खाय रासन।
पाँच सेर घीव खस्सी सिंहारा, ओही के मेल नमक मसाला।
जेनके एक जुवार के बाय खोराक,[2] अब न बची जिन्दगी तोहार।
जेनके जोर पृथ्वी पर नाहीं बा थाह," बोलल न बीर बा लोरिक।
"ब्यही न मनबे कलह हमार, कल्लय डाड़ी न मटियैबा
हमहीं देखत न चलब मंसाय, एक न मरद में काल अन्हुयैनी।
कितना जुझिहैं दयी के लाल," जूटल न माल बा मरदमल।
जायकर करत न बात अहिरे से, "मरद न सुनबा लोरिक।
कहना माना एठिन हमार, बुढ़य न राजा बा छरियाय।[3]
जेके तालू जोइया के ख्याल, अब न छोड़ देबा डाड़ी मँजरी का।
दूसर न लेबा गउरा में तड़ियाय," ओह दिन न अहीर बा कन्तित।
"कहना न सुनबा माल राजा का, कहना माना एठिन हमार।
न भाई चोरी न करीं पचोरी, न फेर मरली अगोरी में सेन।
गाठी न रोकड़ बा लगवले, आकर करली दुवारे पर बियाऽऽह।"
बोलल न बीर बा लोरिक, "संही न मनबा कहना हमार।
बड़ा न मोहब्बत होइहैं राजा से, भाई-बहिन देबा तूं सुहराय।"[4]
सुनत न माल बा मरदमल, ऊ फेर तड़फत न मति बा राजा का।
सुनत न बीर बा लोरिक, "सङ्ही फेर मन बा बऽढ़त।
अइल न बा साठी[5] लेकर, देहें के लेब चमड़ी छोड़ाय।"
सुनत न अहीर बा लोरिक, लरमी न मीठी में बा जबाब।
"अइल न अइल तूं का करबा, अइल न देखल गउरा मे बाय।
एक न कन्हेला आन देता, सहज में नाहीं छोड़ दीहैं डाड़ी तोहार।
टूटल न मड़ई बा गउरा का, ले जाइ छाइब न मड़ई अपने।
अइसन न गोंजा काटा, जेमें अंगुल-अंगुल रहल काँऽऽट।
तनिक न काँट जीन सरोटा,[6] कुछ दिन चलत कोरो हमार।"

---

1. फेंककर, 2. खुराक 3. हठ पर आ गया है, 4. दे दो, 5. कोड़ा।
6. छीलकर निकालना 7. कान्ह का बोझा 8. तेज चाल से।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सफरत न माल बा मरदमल, लोरिका देत बा कटारी जौन बाय।
वहाँ से रेंगल बा मरदमल, चढ़ गयल गेरुआ पर्वत पहाड़।
जाकर काटत न साटी बा अइले का, हुमचत न बन्हलेस कन्हेला[1] बरियाऽऽर।

मरदमल की दुर्गति—

कान्हें फेर कइसों उठवले, एकदम जात न लुचुकिया पर बाय।
घण्टा न छमीछा के बाय; जायकर जुटल न डाड़ी के पास।
एक लेहलेस कान्हें से कन्हेला बा फेंकत, एक लंगे करत न बात बा अहिरे।
"देख भाई तोर न बात बा, ले जाया नगर तूं गउरा गाँव।"
सुनत न पूत बा कठइत का, जेनकर दुलर न लोरिका बा नाम।
जुटल न अहीर कन्हेला कहाँ, लख कर लाल न पीला देखाय।
खींचत न गोजा बा अइलन का, मरदमल के अकय-बकय बा बन्हाऽऽय।
बाजत न साठी बा अहिरे का, छड़-छड़ जाङ्ही खून फेंकाय।
मारे रुधिर के मारन, जेनकर लाल बदन हो जाय।
मरदमल करलेबा गोहार, मंजरी के न देत बा दुहाई।
"आज न जिन्दगी बा जाय, मंजरी न देबा जिन्दगी तूं बचाऽऽय"।
निकल न लड़की महरे का, जेनकर दावन मँजरी बा नाम।
जायकर पकड़त न बा बांह लोरिका का, धर कर तानत न फरके[2] बाय।
"बाउर न मति तूं बउखले बाय; सइयां न अकील हरलेबाय।
कहली तीन तूं जतिया बरकाया, देसन भाँट बभनवाँ के कहाँर।
के फेर नाहीं के बात बा जियावत," इतना न सुनत बा लोरिका।
एक दिन तड़फत न अहिर फिर बा, "ब्यही न मती बउखले तोहरों अकिल।
छानी चढ़त बा बछिया[3], कहाँ जायी मारीं कुकुर-बिलार।"
ओ दिन छोड़ दीहैं मरदमल के, बेल के पेंड़ में देहलेन चढ़ाय।
तोड़त न बेल बा मरदमल, दु-चार मन देहलेस बिछाय।
उतरल न भांट बा मरदमल, जिनका मोटिय न चुन्नी बा दिखात।
कुछ भाई गाँथय चुन्नी में बेल, बकुचा[4] देहलेस कपारे[5] पर उठाऽऽय।
लेकर तड़फत न खाँड़ बा अहिर, "न फेर सरऊ पैंड़े में मोटरा[6] गिरवला।
पहुँच कर बोंगब सिर जरिहाय," लेकर भागल न जात बा मरदमल।
किला पर लागल कचहरी न बाय, राजा न लखत बा मोलागत।
अर्थ न देहलेस घटाय, "सब दिन खैलेस नीमक हमार।
अहिरे से घूसपेंस लेकर, भागल न घरे बा जाऽऽय।"

---

1. कंधे का बोझ, 2. अलग, 3. छोटे का अप्रत्याशित ऊँचे उठने का प्रयास, 4. गट्ठर,, 5. सिर, 5. गट्ठर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देखय न हाल घरे मरदमल का, लहुरी न जेठरी बा जनानी।
आपस में झगड़ा कइलेन बरियार, "हमरों न लगिहैं नन्दोई।
गउरा से देहले बा सउगात[1], सइयाँ के आज हमें अपने घर रखबा।
अपने न करत बा टकराव," तब तक जूटल न माल मरदमल।
मोटरा न बीगत अँगने में बाय, घर भर बेल जाय छितराऽऽय।
तड़फत जनानी पर बाय लहुरी, "सइयाँ बना राजा तूँ अगोरी।
राजा बनल पूत बा तोहार, चुन्नी बोंगबा सिर का हमार।
काट कुट कर चुन्नी ओकर ठाठी के ऊपर, टेक टाक कइलेन मचहरी पर बाई।
कंहरे न माल बा मरदमल, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
जैसे न कँहरत बिमरिया बाय, जब तक घण्टय छमीछा बीतल।
राजा न छुटल किला से सिपाही बाय, एक दम गयल मरदमल के दरबाऽऽर।
देखल न सकल माले का, जेनके देखत न तीर चुपचाप।
दोनों बगल चेंचुरा पकड़ कर मरदमल का, सिपाही लेहले किला पर चलि जाय।
जूटल न माल बा मरदमल, महरा निहुर कइले बा परनाऽऽम।
आसीरबाद न देहलेन राजा, "तू फेर आँखों अमर हो जाया।
जैसे पानी बढ़े गँगले का, वैसे फेर बाढ़ै आयी तोहार।"
बोलल न माल बा मरदमल, कहलेन-आगी न लागल अइसन नोकरी।
अइसन न करब गुलामी तोहाऽऽर, आजु के नेत से मोलिता स्तीफा देत बाई।
राजा किला पर होत हमार, वल्के खण्डा न टुका खाकर बिताय।
अइसन न करब नौकरी तोहार, धन-धन न पानी उत्तर का।
जहाँ होनी अहिरन का खाऽऽन, ऊहइ जूझिहईं मरद ओनसे।
जेनकर होवैं बहुबर रॉड़," ऊठल न माल मरदमल।
रेंगल न जात घरे फिन बाय, राम न राम गुन गावैं के ठाकुर भजली नाम।
बारह न पाल बा मुखतार, मरदमल जब जबाब देहले बाय।
झंखत न राजा बा मोलागत, छली कूँचत बा तख्ता पर माँथ।
"हो हो न दयी नरायन, का ब्रह्मा लिखला माझे तूँ लिलार।
पूरा न राज तेजल जालय, मँजरी से रानी तेजल न जालय।
कोई मरद जन्मल न अगोरी नाहीं बा जात, अहिरे के मारत तीरे पर बहियाय[2]।"
मन न ठठले बा मन्त्री, चुगुला न बोलल दरियाँ बा सोनाऽऽर।‡
"राजा बाउर न मति तूँ बउखला, तोहार अकिल[3] न हरले बायंऽ भगवान।

---

1. तोफा, उपहार, 2. दौड़ाकर, 3. अक्ल, बुद्धि। ‡चुगुला सोनार का नाम लोक-विश्रुत है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा मोलागत द्वारा लोरिक से युद्ध के लिए अन्य राजे-महराजे आमन्त्रित

बारह न पाल बा अगोरी, तिरिया कस के बसल वा बजार।
राजा लिखबा पत्ती तूँ बनाय," जौने बखत कोरा न कागद बा मँगवले।
लिखत न खाता बा पच्छिम का, जहाँ न रजवा सखसेल।
पहले लिखत वा पलगी-परनाम, ओकरे बादय न आसीरवाऽऽद।
ओकरे पीछे लिखे दस्तान, जौन छत्री बंस होइहैं।
ईहाँ न अहिर गहत बा तलवार, दाना न पानी लिखत हराम।
अनय न लिखत बा मांस गाई का, पानी लिखत रुधुर बाय।
जौन बखत खात न राजा ठहरे पर, आइकर धोइहैं अगोरी में हाऽऽथ।
चौनिस न खाता बा लिखले, चौनिस न देहलेस पाती दौड़ाय।
सबसे क्रिया न लिखत बा अठान, अन्य पानी लिखल बा हराम।
जौन बखत राजा का पत्ती न घूमल, अब घूम गइल न छलीन के हाथ।
लेले बाँचत खाता बा पुरान, एक लंगे राजा का पत्ती बाँचत न बाऽऽय।
एक लंगे फौद[1] न होत बा तैयार, पच्छिम न राजा बा सखसेल।
जे बीर बान्हय तीर बरियार[2], दखिन न राजा बा कोरइया।
जेन फेर बायंऽ गोली में मजबूत, पुरुब न राजा बा बघैल।
जेनकर बारह न मनवाँ गिरी मूसर[3], जेन फेर मूसर के सङ्धें गड़ाय।
उत्तर न राजा बा सखसेल, जेन बीर बायँऽ तेगा में बरियार।
जौन बखत चौनीस न छली बा जूटत, एक दम नगर न अगोरी पाल।
ओह बखत गाँवैं के पलटन बाय सुनले, उदमत न बाजत लकड़ी बा जुझाऽऽर।
जहाँ फौजी न बाजा बा बाजत, छली लोहा न लोहा बाय नरियाय।
जितना चमकत बा गोरा-तिरंगा[4], सन-सन सनकत बा पच्छिमहाँ[5]।
कट-कट न चलत बा कटारी, झहझह झहकत[6] न गोली बा बारूद।
अब भयभीत भयल अगोरी बालय, लखत न रानी बा मँजरी।
"लोरिका करत बा जबाब, ब्यही कैसन न ऊजर भयल फौज।
के फेर दाही मुदइया होत बा तैयार," बोलत न लड़की बा महरे का।
पँचरँग देहले बा ओहार पवार, हुंडी न नेत बा लगवले।
लड़की न बोलत बा महरे का, जेनकर दावन मँजरी न बा नाऽऽम।
"सइयां न सुनबा सुखनन्दन, कहना माना एठिन हमार।

---

1. फौज, 2. मजबूत 3. लकड़ी का छड़ जिससे अनाज कूटा जाता है।
4. गोरा तिरंगा लोक में महान योद्धा के रूप में विश्रुत है, 5. पच्छिम का राजा,
6. चलरही है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब एठिन नाहीं बची जिन्दगी तोहार, माघी न मेहुड़ी बा खाँखड़।
फगुनी न मेहुड़ी बाईं झंझकार, जायकर जिन्दगी लेबा बचाय।
सइयाँ न हमरे जुठइया के कारन, जेकर ऐसन लाल जुझ जइहैं।
मइया खा कर कनिक मर जाय," तब तक चौनिस[1] पलटन बा छेंकले।

युद्ध की तैयारी

उदमत न चली बाय गोली-बारुद, सात न पलट[2] बा पलटन।
अहिरे के छेंकले न बीच में बाय, जितना चलत न तेगा बा कटारी।
उतना चलल बा गोली बरूद, अकुलायिल लड़की बा महरे का।
"सइयां खाकर जहर मर जाय," बस एतना सुनत बा लोरिका।

मँजरी का भयभीत होकर विष खाने का प्रयास

मन में करत विचार बाय बरियार, वह दिन जूटल अहिर फुन बाऽऽय।
मँजरी से माँगत बा माहुर[3] ओठे, मँजरी न कलय[4] खूँट बा देखवले।
अहिरा काटे न खूँटे के बाय, लेकर मलत न माहुर हाथे में बाय।
एक दम सरगे[5] देहलेस कुछ उधिराय[6], कुछ भाई फेंकत बा नदी सोनभद्र।
खाकर मगर-मछली मर जाय, कुछ भाई लेले न माहुर बा हाथे में।
वह खाँड़ देहलेस महुरे से महुलाय,[7] वह दिन देखल न हाल दुरगा का।
देबी जीतल तेगे पर बाय, अब बन्द कर देहलेस न गोली बरूद।

धरमी का बाण जो मँजरी के स्पर्श से सप हो जाता है।

तेगा न चलल उधिराय, तीर गयल पताले में समाऽऽय।
वही बखत गिरल बान बा धरमी का, मँजरी न बीने तीर बा जात।
तीर रहल भसुरे का, तीर न भय गयल सरप।
लोरिक वही दम तड़फत बा, ए भाई धरमी न भइया के बान।
वही फेर बीनत न तीर बा बीर लोरिक, कोलिया देहलेस घाटे पर पवार।

समीक्षात्मक टिप्पणी—इस कथा-प्रसंग में मँजरी के खूंट में विष बांधने की घटना जहाँ एक ओर आदर्श भारतीय नारी मँजरी के चरित्र को उभाड़ती है, वहीं लोरिक द्वारा उसे फेंक दिये जाने पर नायक के आत्मविश्वास का भी परिचय देती है। कथा का यह रूप भोजपुरी में तथा मुख्य रूप से प्रस्तुत गाथा में विस्तार के साथ आया है। मौखिक परम्परा के मिर्जापुरी गायक इस घटना का उल्लेख अवश्य करते हैं। प्रकाशित संस्करणों में कथा का यह रूप देखने को नहीं मिलता।

---

1. चारों ओर से, 2. उलरी है, 3. विष, 4. धीरे से, 5. आकाश में, 6. उड़ा दिया, 7. मन दिया।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सारांश (41) इनरावत हाथी से लोरिक का युद्ध—वाण पाकर सँवरु भी युद्ध के लिए प्रस्थान कर जाता है। वहाँ भयंकर युद्ध होता है और लाखों की संख्या में योद्धा मारे जाते हैं, जिससे धरती लाल हो जाती है और सोन नदी खून की नदी में परिणत हो जाती है। पतियों के मार डाले जाने पर पत्नियाँ बेसहारा हो बिलखने लगती हैं[1]। सभी राजा को गालियां देने लगते हैं। तब भी राजा इसकी परवाह नहीं करता। उधर चुगुला सोनार उसे चंग पर चढ़ाता जाता है। कहता है—'इनरावत हाथी के सूँड़ में मूसल पकड़ा दीजिए वह लोरिक को परास्त कर मँजरी को ले आयेगा।'

ऐसा ही किया जाता है। हाथी सूँड़ में मूसल लेकर लोरिक की ओर बढ़ता है, जिसे देख कर मँजरी डर जाती है और लोरिक से चुपचाप राजा की अधीनता स्वीकार कर लेने के लिए निवेदन करती है। लोरिक नहीं मानता तो मँजरी हाथी से बहिन का नाता जोड़ती है। हाथी उसकी बात मान कर लौट आता है, किन्तु चुगला सोनार के कहने पर राजा उसे नशा (शराब, धतूरा आदि) खिला-पिला कर पुनः भेजता है। मँजरी फिर डर जाती है और समझ जाती है कि इस बार उसे नशा पिला कर भेजा गया है।

(42) लोरिक द्वारा इनरावत पराजित—हाथी पहुँचते ही एकाएक लोरिक पर आक्रमण कर देता है। लोरिक का पता नहीं चलता तब तक दुर्गा प्रकट होती हैं। लोरिक पुनः आकश से पृथ्वी पर चू पड़ता है। दुर्गा लोरिक से हाथी पर प्रहार करने के लिए कहती हैं। लोरिक डरता है किन्तु दुर्गा के हठ पर वाण चलाता है। वाण इनरावत हाथी को काट देता है और वह मारा जाता है[2]।

(43) राजा का निरमल को पत्र—हाथी के मारे जाने पर राजा चिन्तित हो जाता है। चुगुला सोनार उसे पुनः सांत्वना देता है और उभारते हुए कहता है—'आप कोटा के राजा निरमल के पास भी एक पत्र लिखिए, वह आपकी सहायता करेगा।' राजा निरमल को पत्र लिखकर बुलाता है। निरमल अभी अभी विदाई करा के लौटा है। वह कपड़ा ही बदल पाया है कि राजा का आदमी दावन वहाँ पत्र लेकर पहुँच जाता है। निरमल की माँ उसे अगोरी जाने से मना करती है। अन्त में उसकी

---

1. अगोरी में नदी के तट पर लाल पत्थरों की पहाड़ी है जिसके विषय में लोगों का कहना है कि ये योद्धा ही हैं जो मृत्यु के घाट उतार दिए गये थे।

2. अगोरी किले के पास नदी में आज भी पत्थर के रूप में हाथी का निशान विद्यमान है। मीरजापुर गजेटियर में डब्ल्यू० क्रुक ने भी अपनो पुस्तक में इसे कर्ममेल हाथी के नाम से सम्बोन्धित किया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नव-बधू जयकुंजर भी मना करती है, लेकिन वह किसी की नहीं सुनता। उत्तर में वह कहता है--'मामा किसी विशेष संकट में हैं। उन्होंने अन्न-जल ग्रहण करने की भी मनाही कर दी है। मैं अभी जाऊँगा।' यह कह कर वह चल पड़ता है। रानी रास्ता रोककर कहती है—'आपका समाचार मुझे कैसे मिलेगा? इसके लिए कुछ उपाय करते जाइये।' तब राजा कच्ची मिट्टी का पुरवा कच्चे धागे में बांध कर कुएँ में डुबो देता है और बताता है—'जब यह डूब जाय या गल जाय तो समझ लेना कि जीवित नहीं हूँ।' वह इस पुरवा में तुलसी और दूध डाल कर कहता है—'मेरा कुछ भी अनिष्ट हो जाने पर दूध रक्त वर्ण का हो जायेगा, तुलसी-दल सूख जायगा और धागा भी गल कर नष्ट हो जायेगा[1]।'

तदनन्तर वह चौराबछेड़ी पर सवार होकर अगोरी पहुँच जाता है। वहाँ उसका स्वागत होता है। वह राजा को युद्ध न करने के लिए समझाता है, किन्तु राजा के न मानने पर युद्ध के लिए चल भी पड़ता है। लोरिक उसे द्वार से ही आते देखता है। मँजरी अब भी लोरिक से अधीनता स्वीकार कर लेने के लिए कहती है, किन्तु लोरिक इसे अपना अपमान समझता है।

सौंरु पाय गयल बान, हाथे में डेरा डंडा देहलेस ओठिन कागज।
एहर अहिर ओसर बा नरियायल, ओसरी पर कुइयाँ भरत न पनिहारी।
पक्का न लोहा बा अँग्रेजले, अब कचलोइया थामा हमाऽऽर।
अन्य न पहिरत बा अनरखी, गोड़वा गुल बदनियाँ बा तमान।

लोरिक भी युद्ध के लिए तत्पर

जेन बीर बाँधत न पेटी अजगर का, जेमे गोली न ठहक खाय जाय।
कसत न जिरही बा लोहे का, जेमे नौ मन लोहा बाय अमाय।
साठी न गजे का दुपट्टा, अहिर बान्हत न सिरे पर घुमाय।
तरकुस न गुजे का बा पनहीं, अब फिर चाँपत एँड़ा चढ़ाय।
बाएँ न खाँड़ देखात, दहिने चमकत बिजली बा खाँड़।
जेन फेर धरय पागी लरमें का, जेमें मेघ डमरू बाघ घहराऽऽय।
चारी न अंगुल बा बाहर, जेन कर तड़प अकासे में बाय।
नीचे न मरले बा दौनहरा, पोरसन लवर बाईं गुँगुवात।
तड़फत न देवी बा दुर्गा, "बरुआ मनवे कहल हमार।
जैसे काटे कुल कोइरी के, जैसे कोइरी बगवान।

---

1. कथानक रूढ़ियों में जीवन निमित्तिक वस्तु का इसी प्रकार उल्लेख मिलता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वैसे कुल कटबा कठयित का, घूमल न पलक बा छली का।
खाँड़ गइल गरदने बा भहराय," पच्छिम न काटत बा घुमाय।
एकदम घूमल दक्खिन के बाय, ऐसन न लोहा बा लागल।

युद्ध प्रारम्भ

दक्खिन से काटत घूमल पूरब, पूरब से घूमल उत्तर बाय।
एक के फेवरा घुमवले, टाल गइल लास बा गँजाऽऽय।
रुधिर बहत न नार फिर बाय, खून के बहले कितना बहल न पगड़ी बा जाऽऽत।
राजा एक न सेन्हुर के कारन, नौ मन सेन्हुर करत खयकार।
इतना न मरद बानऽ तिबई, राँड़ गल्ली न गल्ली बाईं रिरियात।
ऐसन न राज रहल अगोरी, अब राज देहलेस खड्गार बा।
जहाँ राती के दिन रहल भयल, राजा ऐसन राज बा करवले।
दिन न फेंकरत बँड़वा बा सियाऽऽर[1], राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
चौनिस न पलटन बा जूझल, देस नदी के किनारे पर तीर।
राजा न झंखत बा मोलागत, और माथ तख्ता पर पटकत बा।
"ए बखत पूरा बा राज अगोरी, मँजरी से रानी छूटल नाहीं जाय।
देस न कोई बल्ली नाहीं मीलल, अहिर के मारत नदी पर बहियाय[2]।
दिन-दिन का टूट जात कलंकार, आनकर करित किला रनिवाऽऽस।"
मन न ठठले[3] बा मन्त्री, चुगुला देहलेस सरेख लगाय।
"राजा न सुनबा महराजा, कहना माना एठिन हमार।
जौन न हाँथी बा इनरावत, जेकरे जोर का पृथ्वी पर न बाय ठेकाऽऽन।
जाकर करब हाँथी से बिनती, मूसर[4] न देवा सूँड़े में धराय।
जातय न अहीर मार दीहें, वह दिन-दिन का टूट जाई कलंकाऽऽर।
जायकर किला भोगवैबा रनिवास," उतरल न बीर बा राजा।
परात धइले हाथे में बाय, चावल गुड़वा बाय बट्टी।

लोरिक का इनरावत हाथी से युद्ध : लोरिक की जीत

लेकर राजा बा ठड़ा[5] भयल, "हाँथी न सुनबा इनरावत।
कहना मानऽ एठिन हमार, बड़-बड़ न बीपत पड़ल।
पूरा न राज बा छूटल अगोरी, मँजरी से रानी छुटल नाहीं जाऽऽत।
जात न अहीर तूं मरता, रानी लिहता किला में भिताराय।"

---

1. अशुभसूचक, 2. दौड़ाकर, 3. बहकाता है, 4. अनाज कूटनेवाला लकड़ी का छड़, 5. खड़ा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिपत्ति न कहले बा हाँथी से, हाँथी न गयल बाती के समऽझ।
सूँड़े में देहलेन मूसर हो धराय, छूटल न पैरी[1] बा गोड़े का।
हाँथी न जाती बा अनुहात,[2] लखत न बीर बा लोरिका।
दरियाँ करत बा जबाब, "ब्यही न सुनवे तूँ हमाऽऽर।
कहना मनबे एठिन हमार, पाँच न गोड़वा[3] का जनावर[4]।
एक ठे आवत अगोरी से बा, दाही मुदइया नाहीं आवत।
आज मोर चिन्हल जानत नाहीं बाय, हमके देबा सरेख लगाय।"
सुनत न लड़की बा महरे का, जेकर दावन न मँजरी बा नाम।
खोलत न फाटक बा पलकी का, पँचरँग देहलेस ओहार पवार।
हुंडी न नेत कइले, लड़की बोलत न महरे का बाय।
"सइयां न सुनबा सुखनन्दन, सेन्हुर मनबा कहल हमार।
हाँथी न आवत बा इनरावत, जेकरे जोरे पृथ्वी पर बाय नाहीं ठेकाऽऽन।
आल न जिन्दगी बा मारल, न कौनो उपाय एकर बान्हऽ।
जिन्दगी लेबा आपन बचाय," तबतक बोलल न बीर बा लोरिक।
"ब्यही न बाऊर मति तूँ बउखले, अकिल न हरले बा भगवान।"
जूटल न हाँथी बा इनरावत, निकलल न लड़की बा महरे काऽ।
चरन धरत इनरावत का, "बहिन मनबा कहल हमार।
वह जनम के दूनों बहिन रहली, एह जनम के पौला हाँथी का।
हम जनम पवली तिरिया[5] का, सइयाँ लहुरा[6] लगिहैं बहनोई[7]।
हमके कौन असरा बाईं देत, हमार सेन्हुर करत बाईं नकसान।"
बहुत न बात बा समझौले, इनरावत मानत न कहना के बाऽऽद।
एकदम लौटल न हाँथी बाय इनरावत, चढ़ गयल किला न राजा का।
राजा गारी न देत बा गुफारी, "बुजरी लागी पहले के चिन्हार[8]।
छोड़ले न अहीर बा तीरे पर, हाँथी लौटल न किला पर आवै।
केकर ठोंकत ताला बा तकदीर," राजा न रोवल बा मोलागत।
जेनकर उरदी कहुला बिहलाऽऽय, मन न ठठले बा मन्त्री।
चुगुला दरें[9] न बोलल बा सोनार, "राजा न सुनबा महराजा।
कहना माना एठिन हमार, हवली[10] न भट्टी तूँ बनवइबा।
अच्छा देबा धतूर पिसवाय, सच्चा न बनैबा अगोरी।
बढ़ई लेबा लोहार तूँ बोलवाय, लोहा न सिर बा कढ़वले।

---

1. जंजीर, 2. झूमती हुई, 3. पाँव वाला, 4. जानवर, 5 .स्त्री, 6. छोटा, 7. बहिन का पति, जीजा, 8. जान-पहचान की, 9. तुरन्त, 10. मदिरालय।

लोरिकायन CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चद्दर न देबा पतुरा तूं पिटवाय, एकदम देंह भर तावा तूं पिटवइबा।"
सिरिफ निटई[1] कहाँ का खाली बा, जैसे पानी न हाँथी से घोटाऽऽय[2]।
तावा देंह भर पिटवाय कर, नासा देहलेस हाँथी के अगोरी पियाय।
बारह न बजे दिन के टाइम, सूँड़े में देहलेस मूसर बन्हवाय।
छूटल न हाँथी बा इनरावत, एकदम कूदल खेतन बाय जाऽऽत।
जाती न हाँथी बा पैंतरा[3] पर, दुय चार बिगहा जमीन बा घूमल।
गरदा न उड़त बा सरगे, परल न नजर बीर लोरिका का।
दरियाँ करत लरमें बा जबाऽऽब, "ब्यही न सुनबे तूं हमार।
कहना मनबे एठिन हमार, लौटल न जनावर बा अगोरी का।
पाँच न गोड़वा का बा सौंजा,[4] उदमत न आवत न आवत बा तेजी से।"
लखत न लड़की बा महरे का, जेनकर दावन न मँजरी बा नाम।
"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, सेन्हुर मानऽ कहल हमाऽऽर।
पलटल न हाँथी बाय इनरावत, नासा में डाउन बा हाँथी।
तावा देंह भर पिटववले, जेनके तागत के थीत[5] नाहीं बाय।
एदाँ[6] कइसों जिन्दगी नाहीं बची," तबतक बोलल न अहीर बा कंतित का।
"ब्यही बाउर न मति तूं बउखला, तोहरो न अकिल हरले बा भगवाऽऽन।
कल्ला न डाँड़ी पर बैठे, अबहीं चल देखबे मंसाय।"
तबतक जूटल न बा हाँथी इनरावत, सुमिरत न देबी बा दुरगा।
जे फिर आदि न दिन का बा पुजमान, "मइया जानी सकती तोहाऽऽर।
तनिक करा खयाल हमरे पर," इनरावत न हाँथी फुन बाय।
हाँथी नासा में जब डाउन बाय, देंहें के लोहा बा गरमाल।
कूदल न हाँथी बा पैंतरा पर, अहिर बत्तीसों सामान बाय कसले।
एकदम कूदल पैंतरा पर बा, झूकल न हाँथी बा इनरावत।
दुरगा न छमकल[7] देबी फुन बा, अहिरे के घण्टा न ऊपर थाम।
हाँथी न अहर जोहे-पहर,[8] देहें के तावा भर गरमाल।
नासा में डाउन[9] बा हाँथी, अहीरे के पता न लागय कहीं ठेकाऽऽन।
एकदम कूदल दहे में बाय, पँवरत न हाँथी किला के ओर।
धीरे-धीरे जात अब बाय, अहीर न चूअल पृथ्वी पर बाय।
वह बखत चमकल न देबी बा दुर्गा, लरमी बोलत न बा जबाऽऽब।

---

1. गर्दन, 2. निगलना, 3. पैंतरा भाँजती हुई, 4. जानवर, 5. सीमा, 6. इस बार, 7. कूद पड़ी, 8. घण्टा-प्रहर, 9. अंग्रेजी शब्द।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"बरुआ न सुनबा फुलझरुआ, कहना मनबा एठिन हमार।
अब का माई न मौसी तोर लागी, हाँथी न लौटल किला ओर जाय।
लेबा न खाँड़ हाथे में, एकदम कूद जाय नदी के दऽह।
नीचे न खाँड़ तूँ मरबे, अब तूँ दू भाग देबा भगियाय[1]"।
तब फेर बोलल न बीर बा लोरिक, "एक बेर[2] जिन्दगी बऽचल।
एदाँ[3] बची न जान हमार," तब फेर तड़फत दुरगा बा मइया।
वह दिन फूंकत न देबी बा दुरगा, कुहरा छौले देस में बा।
"बरुआ न सुनबे फुलझरुआ, तोहरो अकिल हरले बा भगवाऽऽन।
लेकर खाँड़ तूँ कुदबा, चारी न अंगुल बाहर करबा।"
जेनकर तड़फ न जाय अकासे, नीचे न मरले बा दवनहरा।
पोरसन न लबर बाईं गुँगुआत, फिरल न पलक इनरावत का।
खाँड़ गिरल गरदने पर बाय, दुई न ढोंका बा ढोंकियवले[4]।
तब तक पत्थर का निसानी बाय, चढ़ कर खाँड़ बा टेकत।
राजा कपसल[5] कचहरी में बाय, कूंचत न माथ बा चननी[6] पर।
आपन ठोंकत न ताला बा तकदीर, "हो-हो न दइब तूँ नरायन।
का ब्रह्मा माथे लिखला तूँ लिलार, एक ठे हाँथी रहल इनरावत।
अहीर दिन-दिन तोड़ देहलेस कलंकार," राजा ठोंक-ठोंक तकदीर बाय रोवत।
अहीर उतरल न हाँथी से बाय, धयलेन तीर बा नदी का।
चल गयल जिरवा बहत्तर बा खेतार[7], जहाँ डाँड़ी छिपल बा ब्यही का।
अहीर पच्छिम मुहें आसन लगवले, रास्ता ताकत न किला का बाय।
राम न राम गुन गावै के ठाकुर भजली नाम हो तोहार, रोवत न राजा बा मुलागत।
जेनकर अन्न न पानी छुट जाय, भगवन भारी बिपतिया देखल।
नगर अगोरी बा पाल, सून भइल कचहरी राजा का।
वह दिन मनन बोलल बा मन्त्री, चुगुला देहलेन सरेख लगाऽऽय।
"राजा न सुनबा महराजा, कहना मानऽ एठिन हमार।
एक ठे लिखा खाता अगोरी, भेज देबा नगर कोटासे बा गाँव।
जहाँ राजा बा निरमल, जेकर हेरले मृत्यु नाहीं बाय।

---

1. विभाजित, 2. बार, 3. इस बार, 4. दो भाग कर दिया। अगोरी के पास सोन नद में कटे हुए इनरावत हाथी का निशान आज भी पत्थर के रूप में वर्तमान है, 5. डरा हुआ, 6. चौखटे पर, 7. इस नाम का स्थान अगोरी के पास आज भी है जहाँ गायें चरती हैं।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और न अहीर मरिहैं, और दिन-दिन के झगड़ा जइहैं ओराऽऽय।
ले लेवा डाँड़ी किला में," एतना भयल बा सब बात।
आनकर करे किला रनिवास, इतना बात राजा न सुनले।
मन न बैठल सुवा का बाय, कोरा न कागद बाय लेहले।
हाँथे लेहले कलम मसिहान, रो-रो लिखत पत्ती बाय।
पहिले न लिखत बा पलगी आसीरबाद, तौने के पीछे लिखत अगोरी के खाता।
"बारह न पाल बा अगोरी[1], जहाँ कस्सी[2] न बसल बा बजार।
अहीर चढ़ल बा उतरहा, गाँव न नगर गउरा ओकर बा।
एकय तिरिया के पीछे, नौ मन सेन्हुर हो गयल नकसान।
पूरा न राजा बा अगोरी, राजा तेजत अगोरी में बाय।

राजा निरमल को पत्र लिखता है : युद्ध के लिए निरमल आता है, युद्ध तथा दुर्गा की सहायता से लोरिक की जीत

मँजरी से रानी तेजल न जाय, जेनकर दावन न मँजरी बा नाम।
जौन छत्री न बंस होइहैं जनमल, इहाँ अहीर गहत बा तलवार।
अन्य न पानी बा हराम," क्रिया लिखत ओठे अठान[3] बा।
अन्य न लिखत गाइन के माँस, पानी लिखत रुधुर[4] फुन बाय।
जौन खात होइहैं भैंने निरमल, हाँथ धोवे अगोरी में आवैं।
दिना अठारह का रास्ता, जौन राती रेंगल दिन दौड़ल।
नौवें कोटासे जुट जाय," लेकर पहुँच दावन राजा का।
और जूट गयल निरमल के दरबार, ओही न टाइम से आगे।
राजा न ले आल डाँड़ी गौना का फुन बाय, एकदम छूटल गाँठ बा कोहबर का।
राजा करत बा पलगी आसीरबाद, एकरे बाद कपड़ा बदलत फुन बाय।
एकदम गयल अखाड़ा में बाय, वह बखत लेखनी पत्ती।
दावन लेकर जुटल दुवारे फुन बा, निरमल निरमल वहाँ पुकारत।
तब फुन सुनत न मतारी बाइ, "कहले कहाँ ओतन बा गोतन।
कहाँ टूट गयल बुनियाद, कहिया भइया से भयनी राजा के लेत नाम तूं बायऽ।
भइया गयल अखाड़े में फुन बाय, अबहियें डाँड़ी लेकर अइलेन।
आदमी भरल कुल दुवारे में बायँऽ, माथे चन्दन न लागल होई निसाऽऽन।"
वह बखत लेकर रेंगल बा पत्ती, दावन जुटल अखाड़ा फुन बाय।

---

1. कहते हैं अगोरी पहले 12 खण्डों में 52 बाजार में बसी थी। इसके कई प्रमाण यहां से प्राप्त हुए हैं, 2. कस कर, भारी भीड़ वाली, 3. अट्ठावन, 4. रक्त।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वहाँ एक-एक लाल बा दई का, कौनो चीन्हा परिचय वहाँ बाय।
दावन लौटल बखरी के बा जाय, जाकर पूछत मतारी निरमल के।
"माता ओठिन बहुत से चेला वहाँ पर बाएन, एक-एक न दई के लाल बायँऽ।
कौनो होत न बाय पहिचान," तब फेर तड़फत मतारी निरमल का।
"दावन बाउर मति तूँ बउखला, अकिल हरले सिरी भगवान।
ऐसन तैसन बेटवा न हवँऽ, वहाँ बाइँ दई के लाऽऽल।
जौन बखत उठी जोड़ निरमल का, जोर से होइहैं कुस्ती बदद से[1]।
राजा मारी कुस्ती अखाड़ा में, ताल बाजी न कोटो पर जाय।
जैसे भादों दई घहराय," तब फेर पलटन दावन लेकर जाला।
जायकर जुटल अखाड़ा पर बाय, वही बखत ऊठल न जोड़ बा निरमल का।
कुस्ती होत अखाड़ा में बाय, तड़ से मारल कुस्ती राजा निरमल।
अब ताल ठोंकत ओठे न फुन बाय, जैसे भादों में दई घहराय।
वैसे सबद गयिल अनुहाऽऽय, टप से देहलेस पत्ती बा टेकाय।
देकर निहुर के करत बा प्रनाम, राजा न देत आसीरबाद।
देख न बाँचत खाता बा अगोरी का, जौन बखत अगोरी का पत्ती पढ़लेस।
वह बखत बाँचत न वहल बा नीर[2], कहलेन "हो हो न दई बा नरायन।
वहाँ बरम्हा न लिखला लिलार, मम्मा न मुदई[3] मोर भयल।
राज देहलेस अगोरी में उजाऽऽर, चलकर कौन नाम कमावल।"
रेंगल न राजा बा निरमल, एकदम आयल घरे में बाय।
खोलत न बा घोड़ी चौरी, कसकर कइले बा तैयार।
चट-पट हलल[4] न राजा कोठी में, वह दिन पहिरत बा तरबा तमान।
अन्य न पहिनत बा अङ्रखा, गोड़वाँ तेउर पहिनत बा तमान।
बान्हत न पेटी बा लरमें का, जेमे साठी न बेंड़ हो जाय।
साठी गजे का दुपट्टा, छली सिरे बा बान्हत घुमाय।
डिल्ली न साही बा जूता[5], एकदम चाँपत न एँड़ा बाय चढ़ाय।
हलल न राजा बा कोठी में, जहाँ गाड़ल हजरिया बा साऽऽन।
पृथ्वी से सान बा कबरले, नीचे न डोलत बा धरती।
ऊपर डोल गयल आसमान, कोटवा घर-घर टाटी[6] दहलेन।
किनका मृत्युक गइलेन निकचाय, निकलल न राजा बा निरमल।

---

3. तुरन्त, झटके से गिर पड़ना, 2. आँसू, 3. शत्रु, 4. प्रवेश किया, 5, दिल्ली का शाही जूता, 6. बाँस का बना टट्टर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकदम जुटल बँछेरी के पास, तब तक देखे रानी जयकुंजर।
जायकर धरत बा चौरी के बार, बोलत न कितनों महा गरीबिन का लड़की।
दस पाँच राती घरवाँ में रऽहल, ऊ फेर राजा दई की लड़की।
सात न घड़ी के दिन उतरल, दस बजे डाड़े निकलल फुन बा।
कहलेस "सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, अब सुन लेबा मथवा का महुआर।
काहे तूँ बछिया[1] बन्हला, अपने भयलऽ रयनी पर तैयार।
घड़ी न घण्टा रुक जातय, टाटक[2] खिचड़ी देहित बनाय।
दुई कौर[3] खाला हाँथ का रसोई, तब फेर जातऽ अगोरी बाजाऽऽर।"
वह दिन खोल कर बाँचे पत्ती राजा निरमल, "ब्यही मम्मा न मुद्दई भयल।
अन्य पानी लिखत बा हराम, अन्य न लिखत बा गाई का माँस।
पानी लिखलन रुधुर फुन बाय, कैसन करीं अन्य तोहार पानी।"
बोलत न राजा बा निरमल, "ब्यही छत्री होकर पीछा देबा"।
वहाँ अहीर गहत बा तलवाऽऽर, तब फेर बोलल न रानी बा जैकुंजर।
"सइयाँ मानऽ कहल हमार, जानल न अहीर बा उतरहा।
जौने बखत बारह बरीस का रहल राजा, जेनकर खोजले जोड़ी नाहीं देखाय।
पावत धन-धन न पाती उत्तर का, जहाँ अहिर फुटल बा दढ़िवाल।
जेन सइयाँ अहीर पैंड़े न जइहैं, उन कर बहुबर[4] होइहैं राँड़[5]।"
बहुत न बात बा समुझावत, राजा मानत कहल नाहीं बाय।
क्रिया न लिखल बा अठान, तब फेर बोलल न रानी बा जैकुंजर।
"सइयाँ भैला रयनी पर तैयार, हमके कौनो नाहीं आसा बा देत।

जीवन निमित्तक वस्तु से निरमल के विजय-पराजय की परीक्षा

जौन भाई कौनों बात हो जाई, कैसे पाता लागी अगोरी बा पाल।"
वह दिन कलय[6] सान्ह[7] बा ओठङ्घावल[8]; राजा रेंगल कोंहारे के दरबार।
कच्चा न माटी के वा घरीला[9], अब कच्चा मनिहार न कहाँ के सूत।
लेकर फनले कुएँ में बाय, "कहीं ब्यही न कहल सुनबे हमरो।
जै दिन जियत राज अगोरी, तै दिन करब डँट कर स्नान।"
एक भाई ऊहाँ न जुगता बा बतवले, एकदम रेंगल न राजा वा रेंगावल।
जायकर हलल न कोठी में बाय, जायकर दूध डब्बा में बाय धइले।

---

1. युवती लड़की के अर्थ में, 2. ताजा, 3. ग्रास, 4. पत्नी, 5. विधवा; 6. धीरे से, 7. एक प्रकार का क्षेप्यास्त्र, 8. सहारा देकर रखा हुआ, 9. धरिला, धरिया, मिट्टी का पुरवा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुलसी के खोंटत न फुनगा बा, "ब्यही न सुनबे कहल हमार।
जय दिन जिन्दा रहब अगोरी, तै दिन जैसे-तैसे तोहय लौकी[1]।
जहिया नावा बात कौनों होई, घरिया न कूआँ में बाय घूली।
सूत कच्चा न जाई चोथाऽऽय[2], तुलसी के फुनगा बाय कुम्हलाय।
दूध लाल न रुधुर हो जाय," वह दिन रानी ठोंकत ताल बा आपन तकदीर।
एतना बात राजा बा समझावत, जायकर पहुँचत चौरी के पास।
कान्हें पर धरत साँह बाय हजरिया, डाककर भयल पीठे पर असवार[3]।
ठनकत चौरी का बँछेड़ी, नीचे बन छोड़े भूथि धरती।
ऊपराँ छोड़ दिहलेन बा आसमान, बादल न रेख बा भिनउवाँ।
छली के हवा खियावत चल जाऽऽय, घण्टा न जाने बा छमीछा।
घोड़ी चूवल अगोरी बाजार, अब चुइ गयल किला राजा के।
जहाँ राजा के लागल बा दरबाऽऽर, उठल न राजा बा मोलागत।
बाघ[4] न थामत बा बँछेंड़ी के, उतरल न भैने बा निरमल।

निरमल का अगोरी पहुँचना

उठ कहे करत बा पलगी, मम्मा देलय न आसीरबाद।
'भैने आँखों अमर हो जयबा, जैसे बाढ़य पानी गङ्गे का।
वैसे बाढ़ै आयी तोहार," वह दिन कुसल भलाई सब होय।
राजा के अगोरी न किला पर बा दरबार, जूटल न राजा बा निरम्मल।
अब घूम गयल किला ममवाँ का, चौनिस न देखत घूर के बाय।
राजा न बोलत बा मोलागत, "भैने माना कहल हमार।
जायकर अहीर मारऽ तूँ तीरे पर, दिन-दिन का झगड़ा जात ओराऽऽय[5]।
ली आनऽ किला में डाड़ी, राजा किला बोलबा रनिवास।"
भैने न बोलल निरमल्ल, "जेनकर हेरले मिरतुक[6] नाहीं बाय।
वह दिन बोलल न भैने बा निरमल्ल, मम्मा बाउर तूँ मति बउखला।
अकील न हरले बा सिरी भगवान, काम कहिके दे देहला बगड़ाय[7]।
जबरा अहिर देखला उतरहा, हेलमेल सोहरत देला बनाय।
अब वह पत्ती देता हमरे पास, औरत न मारी अहिरे के बहियाय।
पाछे से कौन काम हम कऽरब, का नाम चली दुनिया संसार।
नौ मन सेन्हुर करला नकसान, मम्मा एक न लिरिया के पीछे।

---

1. दिखलाई पड़ेगा, 2. टूट जायेगा, 3. चढ़ गया, 4. लगाम, रस्सी, 5. समाप्त, 6. मृत्यु, 7. बिगाड़ दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एतना न देस का तिबई, बिना मरद का बाईं लिरिया।
देस में रौवे रतन के धार,[1] जहाँ राती न दिन रहल जगमग।
कहाँ दिनय न फेंकरत बा सियार," रेंगल न राजा बा निरमल।
कान्धे पर धइले हजरिया बा साँह, उतरल न नार[2] बा उधुवा का।
लोरिका लखत न बीर बाय, बोलत न बोली बा लरमें का।
"ब्यही न कहल एठिन मनबे हमार, आवत न एक मरद बा अगोरी से।
केतऽ भाई दाही के मुदई नाहीं हउवंऽ, मोर चीन्हल जानल नाहीं हउवंऽ।"
लखत न लड़की बा महरे का, जेनकर दावन न मँजरी बा नाम।
खोलत न फाटक पलकी का, पँचरँग देहलेस ओहार पवाऽऽर।
हुंडी न नेत बा लगवले, लड़की न बोलत बा महरे का।
"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, दरियाँ मनबा कहल हमार।
आवत न राजा बा निरमल, जेनकर खोजले मिरतुक नाहीं बाय।
सइयाँ कौनो एठिन एक उपाय करबा, अब नाहीं बची जिन्दगी तोहाऽऽर।"
वह दिन बोलल पूत कठइत का, जेनकर दूलर न लोरिका बा नाम।
"ब्यही न बाउर मति तू बउखले, अकिल हरले बा भगवान।
कल्ला न डाड़ी में मटियैबा, अब न देखत चल जा संसार।"
जूटल न राजा बा निरमल, अहिर उठकर भयल बा तैयार।
निहुर न माँथ बा नेववले, राजा जरभुन देत बा आसीरबाद।

समीक्षात्मक टिप्पणी—लोरिक द्वारा इनरावत हाथी के मारे जाने तथा राजा द्वारा निरमल को आमंत्रित किये जाने का यह प्रसंग भी अब लोरिकी गीतों के अतिरिक्त दन्त कथा के रूप में भी रूढ़ हो गया है। पाश्चात्य विद्वानों ने इसका यत्र-तत्र उल्लेख किया है। क्रुक महोदय ने इनरावत की जगह करमामेल हाथी का नामोल्लेख करते हुए लोरिक द्वारा उसके मारे जाने का वर्णन किया है। इस प्रसंग से नायक की असीम पराक्रमशीलता तथा खल नायक के दुर्बल व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।

सारांश (44) निरमल-लोरिक युद्ध—लोरिक पहले निरमल को समझाता है, जिससे निरमल लौट जाता है और जाकर राजा को समझाता है, किन्तु वह किसी प्रकार नहीं मानता। उल्टे ही उसे डरपोंक, कायर आदि की संज्ञा देने लगता है। निरमल विवश होकर युद्ध करने के लिए लौटता है। फलतः दोनों में घमासान युद्ध होता है। देवी दुर्गा लारिक की सहायता करती हैं। निरमल बार-बार लोरिक

1. रतन के आँसू रोना, 2. नाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का सिर काटता है, किन्तु लोरिक बार-बार जीवित हो जाता है। एक बार लोरिक गिरता है और उठता ही नहीं। मँजरी विलाप करने लगती है और दुर्गा से सहायता की प्रार्थना करने लगती है। दुर्गा जाकर मोहिनी पण्डित का पन्ना-पन्ना खोलकर देखती हैं तो तीन दिन-तीन रात का भद्रा लिखा मिलता है। तब तक राजा निरमल किले को लौट आता है। वह मोलागत से मँजरी को लौटाने के लिए कहता है। राजा उसी मोहिनी पंडित को बुलाकर उससे मँजरी को लाने की साइत पूछता है। मोहिनी तीन दिन तक भद्रा की बात बता देता है। राजा तीन दिन तक प्रतीक्षा करने का निश्चय करता है।

(45) **लोरिक की दुर्गा द्वारा सहायता**—इधर दुर्गा इन्द्रासन पहुँचकर आग लगा देती हैं। ब्रह्मा-ब्रह्माइन दोनों व्याकुल होकर समुद्र में कूद पड़ते हैं। समुद्र का पानी खोलने लगता है। तब वे ताल में जाते हैं। ताल की भी वही दशा होती है। तब तक ब्रह्माइन दुर्गा को देख लेती हैं और पूछती हैं—'ननद ! तुम ऐसा क्यों कर रही हो ?' दुर्गा आग शमित (शान्त) कर देती हैं और ब्रह्माइन से सारा हाल सुना कर अन्त में कहती हैं कि किसी प्रकार निरमल की मृत्यु होनी चाहिए। ब्रह्मा-ब्रह्माइन दोनों पन्ना खोलकर देखते हैं। निरमल की मृत्यु कहीं लिखी नहीं मिलती। अपितु, निरमल के हाथ से लोरिक की मृत्यु ही लिखी देखती हैं। दुर्गा बहुत दुःखी होती हैं और कुछ उपाय करने के लिए ब्रह्मा से कहती हैं। वह क्रोध में आकर पन्ना फाड़ कर जमीन पर गिरा देती हैं और इन्द्रासन में आग लगा देती हैं। ब्रह्माइन दुर्गा के पास जाकर विनती करती हैं। ब्रह्मा को निरमल की आयु कम करना पड़ता है और लोरिक के हाथ निरमल की मृत्यु लिख दी जाती है, किन्तु ब्रह्माइन कहती हैं कि छह बार उसका सिर काटा जायेगा और पुनः जुड़ जायेगा। सातवीं बार काटने पर वह मरेगा। उसके रक्त की जितनी बूँदें पृथ्वी पर गिरेंगी उतने ही नये वीर उत्पन्न होते जायेंगे। तीन दिन का समय बीतते राजा मँजरी को लाना चाहता है और निरमल को पुनः तैयार करता है। निरमल युद्ध के लिए आता है। इधर लोरिक भी तैयार हो जाता है। दोनों में पुनः घमासान युद्ध होने लगता है। निरमल का छह बार सिर कटता और पुनः जुड़ जाता है। जब वह कट जाता है तो कभी गंगा में जा गिरता है, कभी लाश पैंतरा पर नाचने लगती है। वह कभी ठाकुरद्वारे, कभी प्रयाग आदि तीर्थों में जाती है। वह इन्द्रासन को भी जाती है। वहाँ ब्रह्मा कहते हैं—'जाओ तुम्हारे रक्त की जितनी बूँदें पृथ्वी पर गिरेंगी, उतने ही निरमल पैदा होंगे।'

(46) **निरमल की मृत्यु**—निरमल का सिर वापस आ जाता है। इस बार भी लोरिक उसे धड़ से अलग करता है। दुर्गा उसे अविलम्ब भूमि में गाड़ आती हैं। फलतः वह मरकर गिरता है तो धड़ से सारी भूमि ढँक जाती है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिक-निरमल वार्ता

"सुनबा मरद बीर लोरिका, एठिनयँ माना कहल हमार।
अब छोड़ देबा न डाड़ी मँजरी का, दूसर लेबा डाड़ी फनवाऽऽय।"
बोलल न बीर बा लोरिका, "राजा मनबा कहल हमार।
चोरी न करली पचोरी, न फुन मरले बाई अगोरी में सेऽन।
गाँठी न रोकड़ बाई लगवले, चढ़कर करली दुराने में बियाह।
कैसन पानी सुवा अगोरी का, राम न नाम गुन गावै के ठाकुर।

निरमल वापस : राजा कुद्ध

परजा से फनले लड़ाई फुन बाय," बहुत न बात बा बतियावल।
राजा समझा बात के बाय, पलटत न राजा बा निरम्मल।
एकदम लौटल न किला पर जाय, वह दिन देखल राजा बा मोलागत।
भैने के गारी-गुफारी बा देत, "नाहक न जनमला छत्रिन के कोखी।
नाम देहला अगोरी में बोऽऽर, परल न काम बा जोड़ी से।
भैने फाटत न गाँड़ बा तोहार, चलकर होतय न जात चमाऽऽर।
खिल्ला न खिचता दाँते से जरियाय," बहुत न बात राजा बोलल।
क्रिया देहलेस अट्ठान बा धराय, सुनत राजा बाय निरमल।
छली गुस्सा में भुरकुस[1] हो जाय, एकदम पलटत राजा बा निरमल।
अब चल जात नदी के तीरे, जूटल न राजा बा निरमल।
अड़बी न बोलत तड़बी जात,[2] अहिरे के गारी गुफारी बा देत।
संही छोड़ दा डाड़ी मँजरी का, तब फेर खरीयत अगोरी में बाऽऽय।"
अहिर न तड़फत बाय लोरिका, "राजा बढ़ल न मन बा जात।
ऊहै अहिर जिन जानय कम सादी न करे चलय,
अगोरी मेटय ढेर त राजा न देखय घलत मंसार।

निरमल वापस : युद्ध के लिए तत्पर

बात न चीत के सरबर, बात न कस लेहलेन मैदान।
राजा अपने पुजीसन में बाय कसले, अहिर न पहिरत बा अपनो बत्तीसों समान।
दुनों न पैंतरा पर चलनऽ, तब फेर बोलल न राजा बा निरमल।
"मरबा न मरबा तूँ अहीर," जौन तोरे अवार के होइहैं घाव।
वह दिन बोलल न पूत बा कठइत का, जेकर दुल्लर न लोरिका बाय नाम।
"आगे धाव नाहीं छोड़ब, न फेर पीछे रखब छिपाय।"
तब फेर सुनऽ हाल छली का, धइले सान बा हजरिया।

---

1. चूर-चूर, 2. अटपटी वाणी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकदम घूमल पैंतरा पर बाय, मारत न सिर बाय अहिरे का।
परगट न देबी बायीं दुर्गा, जेन फेर छोट न बड़ कर दे।
झुकल न सान बा हजरिया, जेनकर रती-रती बार धरत।
फिर खींचत न सान बाय हजरिया, एकदम जूटल पैंतरा पर बाय।
जौन बखत घूमल पलक बाय अहिरे का, राजा मारत न पेटी बाय लहाऽऽय।
धन-धन न देबी माई दुर्गा, अहिरे के बाएँ दहिने कर दे।
दू-दू अवार बाय झूकल, छत्री ठोंकत ताला बाय तकदीर।
"हो-हो न दयी तूँ नरायन, का ब्रह्मा लिखला माँझे तूँ लिलार।
आज मोर दू-दू अवार झूकल, मम्मा मरी मसान नाहीं पुजले।
कौनों होतय सरीरे पर असवार, तनिक न देखित तागत लोरिका का।"
वह बखत जौन भवानी बाय किला का, जौन राजा का कुल-पूज।
सनमुख न भयिल बाय निरमल पर, छत्री देखत बान बा उठावत।
धन-धन सक्ति देबी दुर्गा, अहिरे के नाचत भुजा पर बाईं।
वह दिन बोलल राजा बाय निरमल, "तनिक देबी न दुर्गा सङ्हें[1] बाई।
नाहीं फेर देखित जाँघ के बलसार,[2]" तब फेर बोलल न अहीर बाय कंतित का।

निरमल-लोरिक के बीच युद्ध

"का ठेंङ न चटिहैं दुर्गा माई हमार, हमरे खुद जाँघी बाँई जोर।"
इतना न सुनत बाईं देबी दुर्गा, छन भर छोड़ न अहीरे के बाय।
वह दिन राजा बा निरमल सम्हरल, एकदम चलल पैंतरा पर बाय।
अहिरे के छौले बा सुस्ती, आँखी में चलत लोहू[3] जब बाय।
हींचत सान बाय हहराय, पोंगी[4] मारत न अहिरे के बाऽऽय।
डगमग न लास बाय झरुआली, एकदम गिरत बाय जिरवा खेतार।
लोरिका के कोटा गिरबे, राजा फेर से हलाली[5] करे न जाय।
एकदम न पलटल बाय राजा निरमल, एकदम लौटल किला पर जाय।
वह दिन जौन न लड़की बाय महरे का, जेनकर दावन मँजरी बाय नाम।
कूँचत न माथ धरती में, अपने ठोंकत न ताला बाय तकदीर।
अब रोवत आँसु रतन के, वह बखत धन-धन न सक्ती देबी दुर्गा।
परगट न भयिनी देबी पुजमान, जे फेर बारह बरिस के छोकड़ी।
अब चीर पहिरत दखिन के बाय, जेमें चार-चार अंगुल पर तार।
वह दिन तड़फत न देबी बाय मइया दुर्गा, "मँजरी न बाउर मति तूँ बडखले।
तोर अकिल न हरले बा भगवान, सूतल न बरुवा मोर बाय।

---

1. साथ, 2. शक्ति-मुहावरेदार प्रयोग, 3. रक्त, 4. पांव में, 5. मरे को मारना।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब चाहब तब लेब जगाय, तनिक भट्ठी के पहरा करे बरियाऽऽर।
कुक्कुर न देखबे तूँ बिलार, अब न देखले हैं तूं बँड़वा सियार।"
एतना न सरेखत बा देवी माईं दुर्गा, वह दिन ऊड़त न देवी बा दुर्गा।[1]
एकदम भयली न बहियर बतास[2], राम न राम गुन गावै के ठाकुर।

दुर्गा द्वारा इन्द्रासन जाकर ब्रह्मा के हाथ से लिखी निरमल के हाथ लोरिक की मृत्यु की जगह लोरिक के हाथ निरमल की मृत्यु लिखवाना

जाकर खोलत पत्रा बा मोहिनी का, तिन न दिना तिन रात।
भद्रा न डलले पत्रा में बाईं, कहीं खोजले साइत नाहीं बाय।
कहीं घड़ी छमीछा के बाय, आन्ही न पानी चक्कर बा लीखल।
चौथे न दिन सात घड़ी चऽढ़त, साइत लीखल किला का बाय।
तब तक सुना हाल किला का, जूटल न राजा बा निरमल।
जायकर कहत न मम्मा से बाय, "असिला न अहीर जिरिवा में।
आनकर करा किला रनिवास", आडर न राजा बा लगवले।
जहाँ तुर्की सिपाही छूट जाय, रेङल सिपाही राजा का अब चल जात मोहिनी के दरबार।
"पण्डित न सुनबा मोहिनी, कहना माना एठिन हमार।
पोथी न पोस्तक[3] अपना लेबा, राजा न किला करले बा बलाव।"
काँख न कम्बल बा दबले, गोड़े पहिरत खड़ाऊँ बाय।
पोस्तक आपन पण्डित लेहलेस; हाथे में सोबरन न छड़ी बाय लेहले।
अब रेङल न बाय पण्डित मोहिनी, जाय कर पहुँचत किला पर बाय।
जहाँ राजा का लागल दरबार, पलगी न होत बा परनाम।
ओठिन होती न बा आसीरबाद, बैठल न पंडित बा मोहिनी।
कम्बल देहलेस बिछाय, पोस्तक न आपन बाय फैलवले।
तब फेर बोलल न रजवा मोलागत, दरिवाँ कहल माना हमार।
साइत पूछत किला का बाय, एकय न तरफ से पन्ना।
एक तरफ देहलेन पन्ना उलऽट, तब फेर बोलत न पण्डित बा मोहिनी।
"राजा न सुनबा महराजा, कहना माना एठिन हमार।
तीन न दिनवाँ बाय तीन रात, राजा ठहरुक[4] साइत नाहीं देखाऽऽत।
घड़ी छमीछा के बाय, भद्रा लिखल साइती में बाय।
चौथी दिन सात घड़ी चढ़त, साइत लौकत किला का बाय।"

---

1. दुर्गा के उड़ने का बात कई बार कही गई है। वह हवा होकर आकाश-पाताल तक की यात्रा करती हैं, 2. हवा की तरह, 3. पुस्तक, 4. स्थिर, कायदे की।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एतना कहत बात बाय मोहिनी, वही के मानत राजा फुन बाय।
दुर्गा टप्पय काम उतना करलेस, पंडित लौटल डेंहुड़ी पर जाय।
ऊठल न देवी बा दुर्गा, एकदम भागल इन्द्रासन पर जाय।
जायकर फूंकत बा देवी इन्द्रासन, ब्रह्मा न धइले बाय पछुआ[1]।
अब ब्रह्माइन न लहर बा बटोरत, ब्रह्मा न ब्रह्माइन बा अकुलायल।
दूनों कूदत समुन्द्र में बाय, समुन्द्र न दहे बा कूदल।
पानी अदहन[2] भयल जात, वहाँ जिन्दगी नाहीं बचल।
कहीं ताले-पोखरे[3] कूद जाय, पानी चूरत[4] ताले का बाय।
नाहीं दूनों से बाय अनुहायल, आगी कौनों तरह नाहीं बुझाय।
जब जात न बा इन्द्रासन, देवी मारत पटेन फुन बाय।
लखत न भौजी बा ब्रह्माइन, दुर्गा मारत खखारी बाय।
हाँथ न जोरे करे बिनती, "ननदा माना कहल हमार।
आपन न लहर तूँ बटोरबा, जौन न माङ न तूँ मङबा।
ऊहो पूरा न देबा करवाय," वह दिन धन-धन देवी बा दुर्गा।
आपन न लहर देहले बा बटोऽऽर, धड़ से आगी न काठी जाय बुताय।
एकदम ठंडा न बहियर[5] बाइँ बऽहल, सबका सरीर तर[6] हो जाय।
तब फेर बोलल देवी बा दुर्गा; "भौजी न सुनबा कहल हमार।
सात न बहिन बा देवी दुर्गा, भइया देहलेन मिरतुक बाय उतार।
छव बहिन पौलेन[7] बैठक, हमके कहीं नाहीं ठेकान देखात।
अहीर बा धइले लोरिका, ऊहो के नाहीं बचत बाई बुनियाऽऽद।
राजा न जौन बा निरमल, बरुवा के मरले नदी के बाय तीर।
राजा निरमल के आयी, भइया देता ओनकर घटाय।
बरुवा न आयी बा बढ़वताऽऽ, राजा निरमल का मिरतुक।
अब लिख देता लोरिका के हाऽऽथ," एतना सुनत ब्रह्मा जब बाय।
अब हल गयल अपने कोठी, जाय कर उलटत कुल कागद बाय।
मूड़ माड़ कागद बाय हटवले, तय दिन नीचे न पन्ना पर बाय जूटल।
मिलल न खाता बा निरमल का, ब्रह्मा बाँचय आँख बिलगाऽऽय।
पढ़त न कड़ी फिन बाय, "जब से रेखिया उठान राजा भऽयल।
जब से खोजले मिरतुक नाहीं बाय, ब्रह्मा न लखत बा ऊँचे।
अपने ठोंकत न बा ताला तकदीर, जेनके मूखे से अमर करली।

---

1. पीछे को धोती, पीछा, 2. गरम, 3. तालाब, 4. खौल रहा है, 5. हवा, 6. ठंडा, 7. पा गयी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओनकर कैसे मिरतुक हम घटाइब," झूठय न कागद बा लीखत।

एकदम दुर्गा के देहलेन टेकाऽऽय, दुर्गा कुछ न दूर बाइँ आइल। खोलकर बाँचत न कापी जब बाइँ, ओमे न खाता फिन लिखा अजगूत।

राजा निरमल के हाँथे, लोरिका के लिखले मिरतुक जब बाय। अब अकुलाइल देबी बाय दुर्गा, आपन ठोंकत न ताला तकदीर।

"ओमें हमहूँ[1] कौनो उपाय जब बान्हित, कैसों लेहित न बरुवा बचाय। एमें कौनों रस्ता नाहीं लौकत," मइया लिखल न पापी के बाय हाँथ।

अब जेदियायल[2] देबी बा दुर्गा, धइकर चीरत न कागद बाय कापी। चीरकर देहलेस धरती बाय गिराय, ऊपर न मूँह बाय उठवले।

दुर्गा फूँकत न इन्दरवा बाय लोक, अब न इन्द्रासन में आगे बाय फड़ले। सगरों जरत न इन्द्र का बाय लोऽऽक, सोना न चाँदी का बाय मण्डिल[3]।

जरजर गिरल खड्गार न बाय, अपने से देबी बा पलटल। नीबी में मारत न बाइँ पटेन[4], ब्रह्माइन इन्द्रासन बाय बगदल।

ब्रह्मा के गारी-गुफारी बाय देत, "राजा न निरमल जौन बायँऽ। ब्रह्मा लगिहैं न बाय तोहार, आल न जिन्दगी बा लेहले हम्मन का।"

वह दिन ब्रह्माइन कूदल सोझय, जायकर पहुँचल दुर्गा के पास। हाँथ न जोरे करे बिनती, "ननद माना कहल हमार।

आपन न लहर तूँ बटोरा, हम फेर सङ्घे न सङ्घे चलब। तोहार काम पूरा न देबा कराय," सुनत न बात देबी बा दुर्गा।

आपन न लहर बायीं बटोरत, इन्द्रासन ठंडा न सरवर हो जाऽऽय। ननद न भौजी बा दूनों चलत, एकदम जाती न इन्दर बाय लोक।

एकदम ब्रह्मा के कचहरी में बाइँ जूटल, ब्रह्माइन खोजवावे न खाता निरमल का। ब्रह्मा न बाँचय आँख बाय बिलगाय, बोलत न ब्रह्मा लरमें का।

"बहिन मनबा कहल हमार, जब से रेखिया उठान[5] राजा भयल। तब तक खोजले मिरतुक नाहीं बाय, कैसे मुख से कोई अमर कर ले।

कैसे मिरतुक ओनकर घटाय," कोरा न कागद बाय मऊवले। अब लेलेन कलम मसिहान, पीठ पर कागद दुर्गा थमलेन।

ब्रह्मा लेहलेन कलम मसिहान, पाछे न हाँथ कर के। अगवाँ न देहले आयी बाय घटाय, वह दिन मालुम न राजा निरमल के।

छत्री के सरीर धड़कल न बाय, राजा निरमल के आधी।

---

1. हम भी, 2. क्रोध या जिद में आ गयीं, 3. मन्दिर, 4. झूला, 5. दाढ़ी-मूँछ वाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मा देहलेन आई घटाय, लोरिका न आयी बाय बढ़वले।
राजा निरमल के मिरतुक, अब लिख देहलेन लोरिका के हाँथ।
एतना न काम दुर्गा करवलेस, आयकर चूवल नदी के तीर।
जहाँ न डाड़ी के मँजरी का बाय छीपल, तब फेर ब्रह्मा न आँख बा लिखले।
"दुर्गा माना कहल हमार, सक्के[1] न राजा बा मराइल।
नारा न डोरा एक लग जाई, छव न बेरी सिर कट जाई।
छव बेरी न कटी धाम घूमे, लास नाचत पैंतरा पर रही।
सतयें न छली के सिर उड़ जइहैं, कम भई बिठरे जाई पकड़ी सिर के जरूर।
नाहीं भाई सतयें न सिर उड़ जाई, राजा कैंसों ना मारल न मरिहैं।
देस में तीन मुलुक क बा पृथ्वी, जै टोप चुई न खून सिरे का।
तय ठे होइहैं छली तैयार, एक न लोरिकवा के कौन गनती।[2]
चाहे सौ पच्चास अहीर जूटल, राजा कैंसों नाहीं हो मराय।"
चूवल न देबी बा दुर्गा, आयकर भयली डाड़ी के पास।
सूतल न बरुवा बा जगवले, राम राम करत अहीर उठ जाय।
वह बखत सात घड़ी का बखत, राजा न करले बाय तैयारी।
लेकर पलकी न लेकर बाय कँहार, बाजा न गाजा से बाय आवत।
एकदम जिरवा न बहत्तर खेतार, दुरिहैं से राजा बाय लऽखत।
सोझय कूदल पलकी से बाय, जेनकर ओंगी न टूट गयल पोंगी।[3]
मोलागत लौटल न किला पर जाय, भैने के गारी न देत बाय गुफारी।
भैने भयल दुस्मन हमार, आल न जिन्दगी बाय लेत।
अहीर न टहरत जिरवा बा खेतार, "नऽ तऽ लोहा के मरले न मरी।

निरमल और लोरिक में युद्ध

नऽ तऽ फेर जरी अगिन के धार,"[4] सूनत न राजा बा निरमल।
आपन ठोंकत न ताला बा तकदीर, बहुत न रानी बाय सहेजलेस।
"कहना न मनलू कोटा में बाय गाँव, धड़-धड़ न धड़के बदन छली के।
मिरतुक गयिल अगोरी में निगचाऽऽय।
राम न राम गुन गावै के ठाकुर भजली नाम हो तोहार।
जौने बखत रेंगल न राजा बा निरमल, छत्री न ठोंकत ताला बाय तकदीर।
उतरल न नार बाय उधुवा का, बायें दहिने बोलत न बाई सूई जात।
धीरे-धीरे राजा गयल निगचाय, उठल न अहीर बाय लोरिका।

---

1. सहज में, 2. गणना, 3. पांव का जोड़, 4. मुहावरेदार प्रयोग।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह बीर अन्य न पहिरत बा अनरखी, गोड़वा गुल न बद न बा तमान।
बान्हत न पेटी बाय अजगर का, जेमें गोली चिपटा खा जाय।

कसय जीरही लोहे का, जेमें नौ मन लोहा बा अमाय।
साठी न गजे का दुपट्टा, वह बीर बान्हत न सिर बा घुमाय।

जैसे अब बान्हय पुरबा बघेल, तरकुस न गुजे का बाय पनहीं।
वह बीर चाँपत एँड़ा बाय चढ़ाय, छप्पन न छुड़ी बा कटारी।

बीर के घूम गयल कुसियार, धरत न पागी बा लरमें का।
जेमें मेघ न डमरू घहराय, मरगस न मरगस[1] बा घूमल।

जैसे घूमत हँथिनियाँ बाय, अब बीर ओसर न ओसर बा नरियायल।[2]
ओसर न लौटल अहीरे के बाय, पक्का न लोहा बाय अडेजले।

राजा कचलुयिला न थमवा हमार, लेकर खाँड़ बा सम्हरल।
अहीर चलत पैंतरा पर बाय, एक लंगे[3] राजा पैंतरा पर चऽलत।

सोन भद्दर के बायँऽ तीर, दूनों न सुबा बाय सम्हरल।
रहत न झनखत न बाईं तलवार, वह दिन तड़पत न देबी बाय दुर्गा।

"बरुवा न सुनबे फुल झरुवा, कहना मनबे एठिन हमार।
जैसे काटे पूत कोयरी का, वैसे काटे कोयरी बगवान।

वैसे न कटवा पूत कठइत का," खींचत न खाँड़ बाय दोगाहय।[4]
जेनकर चार न अंगुर भयल बाहर, जेनकर तड़प न गयल बाय अकासे में।

नीचे न मरले बा दवनहरा, सरगे बाईं लहर गुंगुवात।
घूमल न पलक छत्री का, खाँड़ गिरल गरदनें पर बाय।

सिर न ऊड़ल बाय निरमल का, एकदम भागल समुन्द्र में जाय।
लास नाचत पैंतरा पर बाय, जायकर गोता न मरले बा सुमुंद्र में।

सगरों करत न देवतन का बाय धाऽऽम, फिर भे पलटल न सिर बा निरमल का।
आयकर बैठत लासे पर बाय, फिर राजा कूदत पैंतरा पर बाय।

फिरल न पलक छत्री का, दूसर न गिरत गरदने पर बाय।
फिरभे कटत सिर निरमल का, जायकर गिरल गंडा जी में बाय।

लास नाचत पैंतरा पर बाय, ऊहाँ गोता सिर मरलेस।
सगरों करत देवतन का बाय धाम, फिर भे पलटल न सिर बाय छली का।

आयकर बैठत गरदने पर बाय, तिसरा लेकर खाँड़ बा सम्हरल।

---

1. मस्ती में, 2. चिल्लाया, 3. तरफ, 4. तेजी से डंडा की तरह तलवार खींचा, गोदाहासोंटा, डंडा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छली का मारत न गरदन बा लहाऽऽय, फिर भे ऊड़ल न सिर बाय छली का।
लास नाचत पैंतरा पर बाय।
एकदम ऊड़ल सिर बाय निरमल का, अब न जात बा ठाकुर के दुवार।
जाय कर मारत गोता[1] ओठे, सगरों करत मूर्तिन का धाम।
फिर भे[2] पलटल सिर बा छली का, आयकर बैठत न लासे पर बाय।
फिरभे खींचत खाँड़ बाय दोगाहे,[3] जेनकर तड़प न जाय अकासे।
एकदम फिरल न पलक छली का, खाँड़ गिरत गरदने पर बाय।
ऊड़ल न सिर बा छली का, एकदम भागल प्रयाग में जाय।
जायकर वहाँ बा गोता मरले, सगरों करत न मुर्तिन का बाय धाम।
आयकर बैठत लासे पर बाय, पँचयें न खाँड़ बा घुमवले।
लेकर गिरल गरदने पर बाय, उड़त न सिर बाय छली का।
जायकर घूमत कोटासे बाय गाँव, ऊपर न ऊपर बाय मूर्ती।
सगरों देखय राज न आपन धाम, पलटल न सिर छली का।
आयकर बैठत गरदने पर बाय, छठयें न दफे खाँड़ खिचलेस।
छलीन के मारत गरदन बाय बनाय, अब घूम गयिल न पलक बा छली का।
खाँड़ गिरत गरदने पर बाय, लास नाचत पैंतरा पर।
सिर ऊड़त इन्द्रासन पर जात, जहाँ ब्रह्मा के लागत कचहरी।
जायकर घूमत न मूर्ती बाय निरमल का, जेहर-जेहर ब्रह्मा चेहरा बाय घुमावत।
ओहर-ओहर घूमत न सिर छली का, बोलत न सिर बाय निरमल का।
ब्रह्मा मानऽ कहल हमार, "तोहरे मुख से गाँड़ बनाये क रऽहल।[4]
काहे अमर करके हमें भेजला, हाँथ न जोरे करें बिनती।
राजा न सुनबा महराजा, कहना माना एठिन हमाऽऽर।
जैसे एक बेरी हमरे कहाँ अयला, जायकर एक बेरी औरों लौट कर आया।
राजा एक न लोरिका के कौनों गिनती, चाहे सौ दू सौ न अहीर जुट जाय।
जय टोप[5] चूई न खून सिरे का, तय ठे होइहैं निरमल तैयाऽऽर।
अहीर तीन भवन का बाय लोक, तीनिन लोक अहीर घूमी।
तबों[6] न खोजले मिरतुक पायी तोहार, अमर न राजा होबा निरमल।
देसवाँ तीन मुलुक बीत जाय," फेर भे पलटत सिर बाय छली का।
लास नाचत पैंतरा पर बाय, आय कर बैठत न सिरे फुन बाय।

---

1. डुबकी, 2. फिर से, 3. झटके से, 4. बात का वजन न होना, बदल जाना : मुहँ गाँड़ एक होना मुहावरे के आधार पर, 5. बूंद, 6. तब भी।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकर दौड़ल न खाँड़ बाय दोगाहें, मइया न तड़पत दुर्गा हो ले आवत बाय।

"बरुवा न सुनबे फूलझरुआ, कहना मनबे एठिन हमार।
कम न घाव एठिन चलैबा, ढेर भाई पकड़ा सिर राजा का।

नाहीं एदाँ सिर उड़ जाई, राजा कैसों फेर नाहीं मराई।
देसवाँ तीनों मुलुक[1] बीत जाई," जेनकर चार अंगुल बाहर भयनी।

तड़फ जातय अकासे में बाय, नीचे न मरले बाय दवनहरा।
पोरसन बायीं लहर गुँगुवाल, घूमल न पलक बाय छली का।

खाँड़ गिरल गरदने पर बाय, भगल न सिर जाय निरमल का।
मइया न छमकल[2] दुर्गा जब बाय, जायकर पकड़ा न सिर बा छली का।

लोरिका के देहलेस न हाँथे में बा धराय, जायकर पकोड़त रिथवी जमीन बाय।
कोड़कर गाड़य सिर बाय छली का, वह दिन आँसू न डोर बाय टूटत।

लास न बानी पिरथवी पर डगमगात, गीरत न लास बाय छली का।
बिगहन गयिल जमीन तोपाय, देस न मच गयल हाहाकार।

अब जूझ गयल राजा बा निरमल, आयकर नगर न अगोरी बाय पाल।

सारांश (47) निरमल का अंतिम संस्कार—जयकुंजर (निरमल की ब्याही) राजा मोलागत के पास आती है। उधर कुआँ जाकर देखती है तो कुआँ में घरिला गला, सूत टूटा और तुलसी दल सुखाया दिखाई पड़ता है। वह तुरंत घोड़ी पर सवार होकर वहाँ पहुँच जाती है। वह जाकर राजा मोलागत से अपने पति की लाश का पता पूछती है। वह ठीक से नहीं बता पाता है। फिर लोरिक और मँजरी से पूछती और रक्त के आँसू रोती है। लोरिक बतलाता है और चिता तैयार करता है। रानी सोन में लाश धोती है, पुनः लाकर चिता पर रखती और अपने सत से आग पैदा कर के पति को गोद में लेकर सती हो जाती है। बाद में यहाँ बेर के दो पेड़ पैदा होते हैं जो 'सतिया[3] बेर' के नाम से प्रसिद्ध हो जाते हैं।

(48) **लोरिक को मारने का षड़यन्त्र**—चुगुला सोनार राजा को पुनः बहकाता और राजा से कहता है कि हे राजा! आप लोरिक को यहाँ बुलावें और किले के अन्दर घेरकर मार डालें जिससे यह झंझट सदा के लिए समाप्त हो जाय। राजा महरा को बुलाता है और महरा लोरिक को बुलाकर किले में लाता है। किले में लोरिक को मार डालने का षड़यन्त्र किया जाता है। दुर्गा सहायता करती हैं और प्रेरित करती हैं कि किसी तरह लोरिक भाग चले। लोरिक अपने श्वसुर को कंधे पर बैठाता और चौफाल कूदकर किले के बाहर बंसरा देवी के पास आ जाता है।[4] वहाँ

---

1. मुल्क, 2. कूद पड़ो, 3. कहते हैं सतियाबेर बहुत दिनों तक, गोठानी में सोन के तट पर था, 4. गोठानी में बंसरा देवी का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर आज तक गड्ढे के रूप में निशान बना हुआ है।

अब लोरिक मँजरी को लेकर गोठानी पहुँचता है। मँजरी सखियों से भेंट मुलाकात करती है तथा लोरिक के साथ गउरा के लिए चल देती है। एक मँजरी के लिये कितने ही योद्धा मारे जाते हैं।

छोड़ देबा कीर्तन अगोरी का, घर लेबा नगर कोटासे बाय गाँव।
राम नाम गुन गावै के ठाकुर, भजली नाम हो तोहार।
जहाँ रानी बाय जयकुंजर, धइले न घोती बा डारा[1] से।
एकदम गयिल अङनी में बाय, जायकर देखत कूआँ का बाय तमासा।
सूत न टूकय दू बा टूटल, घरिला घूलत न कूआँ में बाय।
रानी न छाती बा पीटत, एकदम भगल न कोठी में जाय।
जहाँ दूध न बाय डब्बा में धऽयल, तख्था में ऊपर का डब्बा बाय खोलत।
तुलसी न फुनगा बाय कुम्हलाय, दूध लाल न रुधुर बाय देखायल।
वह दिन रानी देखय जयकुंजर, आपन ठोंकत ताला बाय तकदीर।
"बहुत न बार एठिन बर्जल, सइयाँ मनलेन न कहना हमाऽऽर।
चल गयलेन अगोरी बाय पाल, जायकर जुझनऽ रयनी के पास।"
वह दिन घोड़ी न कसत बाय भेलाही, अछत[2] न देहलेस घोड़िया छिछकार।[3]
चाभी न ताला बाय उठवले, अम्मा न देती सासू के बाय।
"ससुवा न सुनबा गोसाइं, कहना मानऽ एठिन हमार।
घर न देखबा आपन दुवार, हम जात बाई अगोरी न पाल।
सइयाँ जायकर रयनी पर बाय जूझल, खोजकर लेकर सती हो जाऽऽय।"
जायकर धयले बार भेलाही का, डाककर पीठी पर भइल असवाऽऽर।
ठनकत न घोड़ी बाय भेलाही, नीचे न छोड़त भुइंधरती।
ऊपर छोड़ देहलेस असमान, बादल न रेखवा भिनउवाँ।
तीबई के हवा खियावत चल जाय, घंटा न छमीछा के बाद।
चूवल न नगर गोठानी बाय गाँव, जहाँ एक लिरिया के पीछे।
तहाँ नौ मन सेन्हुर भयल नकसान, घोड़ी न चुवल बा भेलाही।
जयकुंजर उतरल रकैबी से बाय, लखब न हाल तीरे का।
लासे के मारे ताल बाय गँजाल,[4] रानी न बोलत जयकुंजर।
"भइया मोना कहल हमार, बहुत न सइयाँ के बर्जली।[5]

---

1. लंबा बाँस जिस पर कपड़े टाँगे जाते हैं, 2. अक्षत, 3. छिड़क दिया, 4. टाल लग गया, 5. रोका।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहना मान लेतऽ एठिन हमार, कहाँ लास बाय सइयाँ का।
हमके देवा तीरे फेर बताय,' लखत न बीर बाय लोरिका।
ओठे करत न मजाक बाय, "एतना न लास बाईं गँजाल।
चीन्हकर लेबा लास बराय,"[1] वह दिन कहत रानी बा जयकुंजर।
"सुनबा न भइया लोरिका, का तूँ कहना माना एठिन हमार।
ऐसन तैसन सइयाँ नाहीं रहनऽ, सइयाँ रहनऽ दयी के लाऽऽल।[2]
भोर में डोरा एक लग गयील होई, सक्के न राजा होइहैं मराल।"
रानी रोवै रतन के आँसू, रो रो न पूछत लास फुन बाय।
लखत न लड़की बाय महरे का, जेनकर दावन न मँजरी बा नाम।
एकदम निकलल तीबई वहीदम, जहाँ न गाड़ल सिर बाय निरमल का।
जायकर देहलेस तीबई बाय बताय, तब फेर जूटल न रानी बाय जयकुंजर।
लोरिका से करत बिनती जब बाय, "भइया एको न पेंड़ तूं ढहता।[3]
चित्ता[4] देता अगोरी में बनवाय," जायकर मारत खाँड़ बीर बाय।
एक ठे भूर[5] पेंड़ बाय देखाय, गिरल न पेंड़ अरराय[6] कर।
खाँड़ देहलेस बीर बाय दोहराय, एकदम कुटी-न-कुटी बाय करले।[7]
वह चित्ता देहलेस अगोरी में बनवाय, रानी जयकुंजर मरले बाय कछार।
निरमल का लास सिर बा उठवले, एकदम हलल सोंन भद्दर में जाय।
जायकर मल-मल नहवैलेस; अपनो न बूड़-बूड़ नहैलेस।
लास न सिर बाय उठवले, लेहले जाय चित्ता पर बाय।
जायकर पोल्थी न आसन बा लगवले, पोल्थी पर धरल निरमल का लास।
लास न सिर बाय रखले, अँचरा[8] देहलेस ब्रह्मा के फयिलाऽऽय।[9]
"एक न बाप के होबैं लड़की, जब फेर एकय पुरुष के होब नाऽर।
ब्रह्मा छोड़ऽ खड्गार ऊपर से, जेम्मे लेकर सती हो जायिब।"
वह दिन गिरल बायँ खड्गार इन्द्रासन से, आयकर पकड़त न अँचरे में बाय।
बमकल न आगी बाय चित्ते में, तीबई[10] न राम न राम बाय करत।
जेमे लेकर सती हो जाय, राम न राम गुन गावै के ठाकुर भजली नाम हो तोहार।
राजा न छली बा निरमल, ओकरे रानी लेकर जयकुंजर।
अगोरी खेत में सती हो जायँ, कुछ दिना के बाद।
दूइ पेंड़ बइर जामल ओठिन फुन बाय, सत्तिया न बइर परल नाऽऽम।

---

1. खोज लो, 2. महानवीर, 3. गिराते, 4. चिता, 5. सूखा, 6. गिरने की आवाज, 7. खण्ड-खण्ड, 8. आँचल, 9. फैलाया, 10. स्त्री।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जेमें फलय न फल कभी लागल, कुछ दिन रहल निसानी अगोरी में।
जब फेर नदी न पाट बाय बऽढ़ल, अब सोन भद्दर ले गयल बहवाय।
राम न राम गुन गावै के ठाकुर, भजली नाम हो तोहार।
राजा न लखत बा मोलागत, सोझय पटकत तख्ता पर माँथ।
मन न ठटले बा मन्त्री, चुगुला लागल न बायँऽ सोनार।
"राजा न सुनबा महराजा, कहना माना एठिन हमार।
महरा न अहीर के बलैबा, सनेस देबा ओठे भेजवाय।
छव न लड़की जौन बाईं जेठसर, ले जाय किला भोगवउलेस रनिवास।
राजा न आवै किला से नाहीं देत, कइलेन बलाव किला में।
लोरिका के जा करे प्रनाम, अहीरे के लेबा बलवाय।
चारी न गुर्जे के कोना, बरूद देबा गोली रखवाय।
अहीरे के अङनई में बलवाय कर, चौनिस[1] न बेड़ा बाय।
चौनीस न चलिहैं गोली, अहिरे के मरदा न कर देबा पिसान।[2]
वह दिन-दिन के टूट जाई कलंकार,[3] आन कर करा किला रनिवास।"
महरा न अहीरे के बलवाय कर, सनेस देहलेन तीरे पर भेजवाय।
जूटल न ससुर बाय महरा, जायकर कहत न लोरिका से बाय।
ससुरों न रेङल बाय दमाद; दूनों न रेंगल किला से जाय।
आगे-आगे रेंगल अहीर बाय महरा, पीछे लोरिका रेंगल बा जाऽऽत।
ससुरो न रेङल बाय दमाद, एकदम हलल किला में जात।
ऐसन राजा जुगुता बन्हबे, जितना हलल फाटक में चल जाय।
ऊँचे न छत के गुरुजे में, दूनों न हल गइलेन।
जौनों चारो कोनवाँ के बुर्ज, चौनिस न फाटक बन्द कइलेन।
चौनिस न चलत गोली बाय बरूद, झह-झह झहकत किला में जब बाय।
धन-धन न देवी बाय दुर्गा, आँचल देहलेस दूनों के ओढ़ाय।
जैसे ठहरे पानी दयी का, वैसे ठहर अवार[4] सब जाय।
घण्टा न दू-चार बीतल, दुर्गा न गइल किला में अकुलाय।
"कहलेन बरुआ न सुनबे फुलझरुआ, कहना माने एठिन हमार।
कौनो न जुगुता एठिन बन्हबे, जिन्दगी बचे के नाहीं बा ठेकाऽऽन।"
झंखत न पूत कठइत का, जेनकर दुल्लर न लोरिका बाय नाम।
"धन-धन न मइया देवी दुर्गा, पक्का में कैसे चली तलवाऽऽर।"

---

1. चारों ओर से, 2. धूल में मिला देना, 3. कलंक, 4. मार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ससुरे के गोदी में बाय लेत, लोरिका डाँक न चंफा जब बाय।
सिवला गिरल बंसरा के पास,[1] राम न नाम गुन गावै के ठाकुर।
जहाँ गढ़ई[2] परल नाम, आज तक सतजुग पड़ल निसान।
ससुरो न रेंगल बाय दमाद, अब चल जात महरे के दरबार।
जहाँ सोरहों बायँऽ कहाँर, एकदम लेहले सोरहों बायँऽ कहाँर।
चल जात गोठानी बाय गाँव, राम न राम गुन गावै के ठाकुर...।
आडर न अहीर बायँऽ लगवले, जितना सङ्ही न बायँऽ साथ समोरी[3]।
मँजरी से भेंट न करत मुलाकात, एक न तिबई[4] के कारण।
नौ मन सेन्हुर करलेस नकसान, अगोरी में कोयला न देलेस बोवाय[5]।
बिना मरद के तिबई, देस-देस न बाइँ चिल्लाय।
आडर न बीर बाय लगवले, सोरहों लाग गइलेन कहाँर।
ऊठल न डाड़ी मँजरी का, एकदम गयल नदी पर निकचाय।

मँजरी की बिदाई

झीमल न नाई डोंगा बाय लगवले, पलकी चढ़त न नाई पर बाय।
चढ़ गयल सोरहों बायँऽ कहाँर, अहिर न बीर बायँऽ चऽढ़ल।
नाव न खेवत मल्लाह जब बाय, खेयकर ओही पार बाय लगवले।
डाड़ी उतरत घटिहरा में बाय, उतऽर न पलकी बाय छीपल।
उतऽर न गयनऽ सोरहों कहाँर, अहीर न बीर बाय उतरल।
मल्लाह बान्हत नाय फुन बाय, उतरल न मल्लाह गयल फुन बाय।
जाय कर अहिरे के करत बाय प्रनाम, साठी न मोहर का हार।
झीमल के असीसे में दियाय, झीमल न वहीं पार का बिदाई।

समीक्षात्मक टिप्पणी—निरमल-लोरिक युद्ध का यह प्रसंग प्रायः सभी रूपों में यत्किञ्चित परिवर्तन के साथ मिलता है। प्रस्तुत कथा में इसका वर्णन विस्तार से आया है। इस प्रसंग में दुर्गा जी का चरित्र उभड़ा है और निरमल का बार-बार सिर कटने-जुड़ने का प्रसंग राम-रावण युद्ध जैसा है। इसमें काव्यात्मक रूप अधिक मुखर हुआ है।

सारांश (49) **लोरिक-पत्थर**—झीमल मल्लाह मँजरी की पालकी पार उतारता है। लोरिक उसे उतराई के रूप में साठ मोहर का हार प्रदान करता है। जब मँजरी की पालकी मारकुण्डी घाट पर पहुंचती है तो मँजरी वहाँ कुछ स्थायी निशान बना देने के लिए लोरिक से कहती है। लोरिक मँजरी से पूछता है कि बताओ

---

1. अगोरी की ऐक देवी जो अभी वर्तमान हैं, 2. गड्ढा, 3. साथी, 4. स्त्री, 5. स्त्रियों के लिए अशुभसूचक, कोयला दराना उनके पतिहीन होने का प्रतीक है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं कैसा निशान बनाऊँ। ठीक उसी समय मँजरी को एक विशाल चट्टान दिखायी पड़ती है। लोरिक उसे ही दो भागों में विभाजित कर देता है। एक भाग जमीन पर गिर जाता है। तब मँजरी कहती है—'ऐसे नहीं, ऐसी तलवार मारो कि गिरते हुए पत्थर को बायें हाथ से रोक भी लो, पत्थर जमीन पर न पड़ने पावे।' लोरिक ऐसा ही करता है। वह तलवार से वार करता है और पत्थर के कटे हुए भाग को बायें हाथ से रोक लेता है। मँजरी अपने मांग का सिन्दूर पोंछती और पत्थर में लगा देती है।[1]

(50) गँउरा की कथा—अब मँजरी की पालकी गउरा के लिए आगे बढ़ती है। उसके गउरा पहुँचने पर आमोदपूर्वक उत्सव मनाया जाता है। दुर्गा की विधिवत पूजा की जाती है। पूजा में सवा लाख मन घी का हवन होता है। हवन की गंध इन्द्रासन तक पहुँचती है। उस क्रम में सर्वप्रथम परछन की जाती है, फिर वधू प्रवेश होता है। लोरिक सब को प्रणाम करता तथा चरण छूता है। सब उसे अशीर्वाद देते हैं।

लोरिक-मँजरी का गउरा के लिए प्रस्थान

देत बाय नदी के तीर, झीमल पउले बा मल्लाह।
लेकर खुसी मल्लाह हो जाय, चढ़त न घाट ऊहै बाय।
जौन धिया बाय महरे का, जेनकर दावन मँजरी बाय नाऽऽम।
खोलत न फाटक पलकी का, दक्खिन ताकत इलाका बाय अगोरी।
तिबई बोलल न लरमें का बोल, "सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन।
सेन्हुर मानऽ कहल हमार, नऽतऽ करे के बाय अगोरी में नइहर।
नऽ तऽतोहे करे के बाय अगोरी में ससुराल, कुछ पथरा पर निसानी एठिन देबा।

लोरिक पत्थर : लोरिक की वीरता की निशानी

जिसमें लखिहैं कलउवा का सब लोग," वही न आडर लोरिका बाय लगवले।
डाड़ी देहलेस मँजरी के छिपवाय, निकलल न लड़की बा महरे का।
जेनकर दावन न मँजरी बा नाम, बत्तीसों सामान अहिर पहिनले।
हाँथ में लेले बिजुल बायँऽ खाँड़, जेनकर चारी न आँगुर भइल बाहर।
जेनकर तड़प गयल अकासे, नीचे न मरले बा दवनहरा।
पोरसन बाई लवर गुँगुवाऽऽत, लौकत चट्टान बाय पथरा का।
खाँड़ गिरत अहिरे के बाय, दखिन लेकर पूरब पत्थर गिरत खलहीं[2] बा भहराय।

---

1. लोगों का कहना है कि आज भी सिन्दूर के निशान, जब ब्याह-शादी की लगन चलती है तो स्पष्ट दिखलाई पड़ने लगते हैं। बीच से छँटी चट्टान आज भी विद्यमान है 'तथा लोरिक पत्थर' के नाम से प्रसिद्ध है, 2. नीचे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तब फेर बोलत लड़की बाय महरे का, जेनकर दावन न मँजरी बा नाम ।
"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, सेन्हुर मानऽ कहल हमार ।
बाएँ न हाथे खाँड़ मरबा, दहिने न दोनों दल देबा थाऽऽम ।
जैसे दोनों ढोका रहे ठाढ़,[1] जेके लखिहैं कलउवा के सब लोग ।"
तब फेर जौन लड़की बाय महरे का, जेनकर दावन न मँजरी बाय नाम ।
वह दिन डोलल न सत बाय सतजुगी, माथे में बहत सेन्हुर उन कर बाय ।
हाँथे में मँजरी काछ कर[2], पथरे में देती बाय छिड़ीक ।
सतजुगी न कीर्तन बाय बोलत, "जौन असली सेन्हुर के माँगे के होबे ।
लगन में हो जाय पहचान," एतना न बात भयल बाय ।
लड़की बैठत न पलकी में बाय, फेरभे डहरल न डाड़ी मँजरी का ।
राह लेलेन उत्तर का तड़ियाय, राती न दिन के फेर दौड़त ।
पैंड़ा में कहीं मोकाम नाहीं बाय देखात, रेङल न डाड़ी बाय उत्तर का ।
जौन दिन चढ़ल सिवल्ला बाय गउरा का, हलचल न गाँव में बाय मचल ।
लखय न लोग गउरा का, अपन सब कोई ठोकत ताला तकदीर ।
धन-धन न पानी बाय गउरा का, जहाँ अहिर फूटल बाय बलिवान ।
जीतल न लड़ाई बा अगोरी का, डाड़ी देहलेस गउरा में चढ़वाऽऽय ।
आगे न पता मिल गइल कठइत के, देखल देवी दुर्गा के धाम ।
बाजा न गाजा से सब जूटल, कुंडली भइल बाय तैयार ।
कढ़त न घीव बाय बखरी से, कठइत बहुत हुमाद[3] जब बाय ।
जूटल न डाड़ी मँजरी का, छिप गइल दुर्गा के धाम ।

गउरा में खान-पान का उत्सव

डटकर भयल न पूजा बाय देवी का, खस्सी भेड़ा का कवन सऽही ।
लेहंड़ कटत भैंसे के बाय,[4] डँट कर करत पूजा बाय दुरगा का ।
अब सवा लाख मन के दे हुमाद, कठइत न टिकल बाय डाड़ी मँजरी के ।
डाड़ी न उठय देवी के धाम, अब लग गयनऽ सोरहों बाय कहाँर ।
जेनकर पँचरंग गिर गयल ओहार, जायकर जुटल पलकी बाय दुवारे में ।
पलकी दुवरा पर बाय छीपल, अहीर बैठल पलकी में बाय ।
दूनों के खूँट बाय जोड़ायल, पलकी लेहलेन कहाँर उठाय ।
परछन दुवरा पर होत बाय, सगरों देखत जतियऽ परजात ।

---

1. खड़ा, 2. पोंछ कर, 3. हवन, 4. इससे पता चलता है कि उस समय भैंसे को बलि चढ़ाई जाती थी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परछन न दुवरा पर भयल, पलकी छिपल दुवरा पर न बाय।
आगे न अहीर बाय निकलल, पीछे न निकलत लड़की बाय महरे का।
जेनकर दावन न मँजरी बाय नाम, आगे न आगे अहीर रेङल।
पाछे लिअवले मँजरी के सब जाय, जायकर छेंकत दुवार सब बाय।
ऊहाँ करलेन देवे के खातिर करल इनकार, छूटल न दुवार फुन बाय।
दूनों न दल बाय रेङल, लियवले जातय कोहबरे फिन बाय।
दूनों न दल बाय बैठत, ओठे[1] हूमो न होत बाय गरास।
माँथे न गयल चन्दन चिटकाय[2], छूटल न खूँट बाय अहीरे का।
अहीर न निकलत बखरी[3] में बाय, जायकर बैठत माई बायीं खुइलन।
पलगी करके चरन धरत माता के बाय, खोइलन आसीरबाद बाय देत।
"भइया आँखों न अमर होबे, जैसे बाढ़े पानी गँगले का।
वैसे बाढ़े आयी तोहार," ऊहाँ से बीर बाय रेंगल।
ददा बैठल कठइत फुन बाय, जायकर ऊनहों के चरन बाय धइलेस।
हँसकर देत बाय आसीरबाऽऽद, "बेटवा आँखों अमर तूं होबे।
जैसे बाढ़े खम्भा केदली का, वैसे बाढ़य आयी तोहार।
जैसे चढ़ै कमानी सरंगी का, वैसे चढ़ै भुजा तोहार।
बेटा जीयऽ लाखों बरीस," ऊहाँ से रेंगल अहीर बाय लोरिका।
सब के करत बाय प्रनाम, पलगी न असीस बाय भयल।
सगरों हो गयल लेखा चार, लोरिका न बखरी में बाय हऽलल।
पहिरना[4] देहलेस आपन बटऽल, एकदम रेङल अहीर बाय रेंङावल।
एकदम जातय न अखाड़ा में बाय, अखाड़ा में दाँव-पेंच कुछ सिखवलेन।
आपन जोर लेहलेन अजमाय, पलटल न अहीर बीर बाय लोरिका।
अपने घरे दुवारे आ जाय, खान न होत बाय खियान।
मौज न होत बाय गउरा गाँव, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।

। पहला खण्ड समाप्त ।

---

1. वहीं, 2. लगा दिया गया, 3. मालिक का घर, 4. पहनावा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समीक्षात्मक टिप्पणी—मारकुण्डी घाट पर लोरिक द्वारा विशाल शिलाखंड के काटे जाने की यह कथा भी अब दन्तकथा बन गयी है जिसका उल्लेख पाश्चात्य विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से किया है। लिखित कथाओं में इसका उल्लेख नहीं मिलता। प्रस्तुत गाथा में इस घटना का उल्लेख रोचक ढंग से किया गया है। इससे नायक और नायिका दोनों की वीरता का परिचय मिलता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा खण्ड

चौथा : सँवरू-काण्ड

सारांश (51)—दुर्गा का इन्द्रलोक प्रस्थान—लोरिक के कार्य की सिद्धि हो जाने पर ब्रह्मा सातों दुर्गा को मृत्यु-लोक भेज देते हैं, जिनमें छह तो-यथास्थान—विन्ध्याचल, कूड़ारी, (कुण्डवासिनी देवी-मीरजापुर के दक्षिणांचल में) स्थित हो जाती हैं, किन्तु सातवीं लोरिक से ही पूजा माँगती हैं। लोरिक बोहा के अन्य देवताओं से डरता है तब दुर्गा मिट्टी की मूर्ति से बोलती हैं। तदनन्तर इन्द्रलोक प्रस्थान कर जाती हैं। मिट्टी की मूर्ति की चिता जलाई जाती है।

(घ) सँवरू का सतिया से विवाह तथा संघर्ष—गउरा में लोरिक का बारह मास तेरह दिन का समय बीत जाता है। तब उसे सँवरू की चिन्ता हो जाती है। वह उसकी खोज-खबर लेने के लिए गड्डिया नाई को बोहा भेजता है। सँवरू गँगिया से घर का समाचार पूछता है। गँगिया कुशल-क्षेम की सूचना देकर कहता है—"लोरिक फगुवा (फाग) खेलना चाहता है, उसके लिए डंफा (बाजा विशेष) बनवा दीजिए।

(52) सहदेव की लड़की चनवाँ से लोरिक की होली—सँवरू लोरिक दोनों टिलटिलई (अहीरों का भोजन विशेष) बनाते-खाते तथा शिकार खेलने चल देते हैं। सँवरू सामर का शिकार करता है। सामर के गिरने पर गड्डिया उसकी पीठ ठोंकता है। सामर का चमड़ा निकाल लिया जाता है। फिर उसी से डंफा बाजा बनवाया जाता है। वही डंफा सँवरू लोरिक के लिए भेजता है, जिसे प्राप्त कर लोरिक प्रसन्न होता है और गउरा गाँव में अन्य साथियों को लेकर फाग खेलने निकल पड़ता है। घूमते-घामते वह सहदेव राजा की गली में पहुँचता है। वहाँ सहदेव की लड़की दिखलाई पड़ती है। लोरिक उस पर गोबर-माटी फेंकता है। वह भी परात-के-परात गोबर-माटी फेंकना प्रारंभ करती है। लोरिक चौफाल लाँघ जाता है और उस पर पानी नहीं पड़ता। वह पुनः पानी और रंग फेंकता है। चनवाँ जमीन पर गिर जाती है। उसकी माँ सिन्हियाँ देखती है तो दाँत पीस कर रह जाती है। वह लोरिक से कहती है—"अगोरी के लोगों को जीत लेने से तुम अपने को बहुत बड़ा वीर समझने लगे हो। अपने भाई सँवरू का यहाँ ब्याह करो तो पता चल जायेगा।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा खाता (द्वितीय खण्ड) प्रारंभ

चौथा : सँवरू-काण्ड

सुमिरनी (मंगलाचरण)

जवन दिना कहत रहली रमायण, कैसे ठाकुर पर जियरा भोऽऽर ।
एठिन सुमिरली धरती माई, ऊपर सुमिरली सिरी भगवाऽऽन ।
जवन दिना इहैं सुमरली डीह ठाकुर बाबा, के सुमिरली मरी और मसान ।
के त भाई सुमिरली देवता गोरइया, जेन बीर सूअर ले लेबा दँतार ।
के भाई सुमिरली देवता बरम बाबा, जेन बीर रहल बभिनी[1] का पूत्र ।
एठिन सुमिरली बाबा बघउत, जेन बीर टोनहिन के मलिकार ।
टोनहिन का टोना बान्हें, टोनहिन के मारै टोनवाँ भवानी ।
ओझवा के मारै भौंवा लिलार, अब मार देहलेन दमाद डयनी का ।
देसवाँ सोख मिलहुवाँ मर जाय, संझा न सुमिरली सँझेखर ।
अवधि रतिया अर्जुन फुन बाय, भोरैं सुमिरली जैकरन ।
इहै तीनों धरम करम के हईं जून, राम न सिरजत बायँऽ रमायण ।
लक्षमण सिरजत कसिया प्रयाऽऽग, सीता न सिरजत आपन नइहर ।
जेनकर धनुष तोड़त बायँऽ भगवान, सहदेव सिरजत आपन पोथी ।
जेन फेर बाँचे बेद पुराण, कंठा न बैठी देबी कठेसर ।
हृदय में गौरी न बैठ गनेस, जीभ न टुनगा[2] देबी सारदा ।
जौन भाई भुलिहैं कड़ी देबा जोर, तिरिया[3] न नोना बाई चमाइन ।
धन में गइया कपिला धनु गाय, कपड़ा न नोना बाईं कम्बल ।
जेन फेर कभी धोबी के घर न जाय, गउरा न सुमिरली गँवहेर[4] ।
बोहवा में कनिक सुमिरली मुरार, जेन बीर सुअर लेलेन बरियाऽऽर ।
देबिया न सुमिरली भगवती, दुर्गा जाने सक्ती तोहार ।
जितना गयील कीर्तन बाईं सतजुगी, देसवा में घूम गयील हाहाकाऽऽर ।
ऐसी कीर्तिया देबी जुटैबा, जोर कर कहत कलउबा के सब लोग ।

दुर्गा का इन्द्रलोक प्रस्थान

सात न बहिन देबी दुर्गा, ऊ सब रहनी इन्द्र बाईं लोके ।

---

1. ब्राह्मणी, 2. जिह्वाग्र, 3. स्त्री, 4. गाँव की देवी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मा जौन उन लोगन का भाई, मिरतुक लोक लिखत नीचे फुन बाय।
सातों न बहिन देवी दुर्गा, ब्रह्मा देहलेन मृत्युलोक में भेज।
छव न बहिन जौन जेठा, जगह-जगह लेत बाईं अस्थान।
केनहूँ बिन्ध्याचल पावैं अस्थान, केनहूँ पावत कुड़ारी[1] में वायीं।
ऐसे तैसे छव बहिन जौन रहलिन, मुलुक संसार में पाय गयनी अस्थान।
सतयें देवी न लहुरी जौन बाई बहिन, ओनके कहीं आसन नाहीं लौकल।
देसवाँ में पागल न देवी बाय दुर्गा, अब देस-देस हलका बाईं घूमल।
जेकर सवा न सै बानी छोहरी[2], सबके लेत घण्टे के जनमल।
आधी न रात बाय निचलोइया, देवी चूवल साँसड़ बोहा बाय मँझार।
वह दिन जजकल गाय धरमी का, एकदम साँसड़ बोहों मँझार।
उठ कर दूनो भाई बायँड बोलल, सौरूँ न दूनों लोरिका सरदार।
के फेर भूत न चढ़ गयन बैताल, के फेर चोर न हवँड बदमास।
के रतिया में कौन जनावर बाय चऽढ़ल, लेंहड़ जजकल रतिया में बाऽऽय।
तब फेर बोलल न देवी बा दुर्गा, "सेवई के मनबे कहल हमार।
हम फेर सात बहिन देवी दुर्गा, देसवा में खोजत ओतन आपन बाई।
तनिक पांच न हरफ सुनैबा, तोहरे कण्ठे हो जाइत असवाऽऽर।
कुल न दुवरा लिहित पूजा, गाढ़े भुजा पर करित तोहार काम।"
तब फेर बोलल अहीर बीर लोरिका, "भइया बारह बरीस का बाईं अमीर।
सूर कोइल नीयर बाय बिंहकल, के फेर सुनिहैं देवता फुन बोहे का।
जौन कनिक हउवंड मोरार, जेन फेर सूअर लेहले दँतार।
के रोक दीहैं सूरियाँ हो हमार, के फेर सुनी डाइन बाय गउरा का।
जेकरे पिपरे में बाय धाम, अब मार दीहैं सुरियाँ हों हमाऽऽर।"
तब फेर बोलल देवी बाय दुर्गा, कहलेन-"बरुवा न सुनबे फुलझरुवा।
तोहरे पर गयलेन चेहरा फरियाय, कौनो हरजिया[3] तूं जीन मानऽ।
सबके देखब तागत हो दिमाग," वह दिन दूनों न भाई बाय बैठल।
राम राम कहत भजन जब बाय, कहैं जोग हो पुराना।
देवी गयल कंठे लपटाय, घरे अहीरे के पुजैनी।
दुवारे बन गयल देवी धाम, जेनकर अमर धजा फहराय।
लागल न खम्हियाँ सोने का, जेमें छायल सुगना[4] सब बायँड।
छूटल न दूत बाय बरम्हाँ का, अब ब्रह्मा देहलेन मृतु-लोक उतार।

---

1. मीरजापुर दक्षिणांचल में स्थित एक स्थान, 2. सखो, 3. हर्ज, 4. तोता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कउनो पिंजड़ा का परान, दूत हींचले[1] इन्दर जानऽ लोक।
वह दिन बोलल परान लरमें का, "सुनबा न दूत ब्रह्मा का।
कहना मानऽ एठिन हमार, तनिक ढीले परान के छोड़बा।
जाइकर मिट्टी में हो जाइत अवतार, सबके देतऽ ओठिन समुझाय।"
वह दिन ढीलै परान बाय कइले, मिट्टी से बोलत परान बाय जात।
"बाबिल न सुनबा हमार, कहना मानऽ एठिन तूँ हमार।
मति रोवऽन गावऽ, मति कूँचऽ धरती में माँथ।
जब तक मृत्युलोक में रहली, तय दिन करला असरा तूँ हमार।
अब फेर इन्दर लोक हमें लीखल, तोहार कबों ख्याल जब भुलिहैं।
बाबिल दूसरा गदेला[2] हो जाय," वहीं तरह माता के देहलेन समझाय।
ऊहाँ से पलटल परान फुन बाड़े, जायकर बहिन के देहलेस समझाय।
"बहिन मति रोवऽ न गावऽ, मति कूँचऽ धरती में माँथ।
जय दिन रहली लोक मृतुलोकी, तय दिन करला असरा हमार।
बहिन कबों खयाल जब भुलिहैं, जबके दूसर भइया हो जाय।"
जायकर ब्यही के देहलेस समझाय, "अब धन मति रोवऽ न गावऽ।
न मति तूँ कूँचऽ धरती में कपार,[3] जय दिन जिन्दा रहली मृतुलोकी।
तय दिन करला असरा तूँ हमार, अब हमें इन्दर न लोक बाय लीखल।
ब्यही कबों खयाल जब तोर भुलिहैं, जब दूसरे न करबा धिङ्कार"।
वह दिन लागल दूत ब्रह्मा का, अब ले गयल परान इन्दर लोके।
मिट्टी मृतुलोक बऽचल, सब कोई करलेस रोदनियाँ[4] बरियार।
कपड़ा न खप्फन बा मँगवले, सौ पच्चास जातय लोग लेकर बाय।
चिता तीर पर बनावे, मिट्टी देहलेन कैदे में बैठाऽऽय।
आगी घूम-घूम बाय लगवले, राम राम बोलत सब कोई बाय।
बमकल[5] चिता तीर पर, मिट्टी बरै सिवाने पर।
ऊँहाँ सब लोग लौटल, दिनवाँ नौ दस रोज बरकावैं।
जात पूरा न पूछले बाय बिरादर, आकर बार मुलुक करावैं[6]।
जितना नेग इहाँ चार लागल, सगरों देले करले बाय बराबर।
सब के खान खियान ले खियावै, सब के बाँटत दुखँ के बाय।
सब लोग बाल न बच्चा में अपने गऽयल, अब फूट गयल खयाल भइया का।

---

1. खींचकर, 2. लड़का, बालक, 3. सिर, 4. रोने लगे, 5. प्रज्ज्वलित हुई, 6. बाल कटवाया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आपन करत काम सब बाय, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
भजली नाम हो तोहार।

फाग खेलने के लिए डंफा का बनवाया जाना

राम न राम गुन गाव के ठाकुर, भजली नाम हो तोहार।
देविया न सुमिरनी भगवती, दुर्गा जानऽ सक्ती तोहार।
जितना किर्तन गयल सतजुगी, जोर कर देवा कड़ी बैठाय।
तीनी न चार दिन बीतल, लोरिका बोलल लरमें का बोल।
"गड्या न सुनबे हजामत, कहना माने एठिन हमार।
बारह महीना तेरह रोज बीत गऽयल, नगर अगोरी बाय पाऽल।
बीतल दिन फगुवा का, ललसा उतना न गउरा में।

गड्या का डंफा बनवाने के लिए बोहा प्रस्थान

रेङल न गड्या तूँ रेङावल, चल जयबा साँसड़ बोहा तूँ मँझार।
जहाँ सौंरू न भइया बायऽ मोर, जायकर कहबा सनेस ओठेन हमाऽऽर।
जीयत सामर मरिहैं, ढंफ दीहैं मढ़वाय।
गउरा दीहैं नाऊ से भेजवाय," रेङल न गड्या बाय नाऊ।
जायकर जूटल नदी ब्योरा के, ऊहाँ नाई न डोङा में चऽढ़ल।
उतर कर धइले न रस्ता बाय बोहे का, जायकर सात घड़ी दिन चऽढ़ल।
गड्या जूटल धरमी के पास, नीहुर न माँथ बाय नेवावत।[1]
सौंरू न देत बाय आसीरबाऽऽद, "आँखों न अमर तूँ होबा।
गड्या जीया लाख तूँ बरीस," धरमी मारे खुसी के मारन।
गड्या के ले ले पोल्थी पर बैठाय, "गड्ी कहबा कुसल गउरा का।
कैसन बानऽ गउरा का सब लोग, कैसन मइया न खुइलन बाईं हमार।
कैसन ददा न बाय मोर कठइत, लोरिका लौटल अगोरी से नाहीं बाय ?"
वह दिन बोलल गड्या बाय हजामत, "गौंहा माना कहल हमार।
नगद[2] न लोग बायँ गउरा का, नगद मइया न खुइलन बायीं तोहार।
मौज न करल बाय कठइत कका तोहार, लोरिका न गौंहां जौन बायँऽ।
डाड़ी लेकर गउरा लौटल न गाँव, चारी न दिनवां भयल अइले[3]।
गाँव न गडरा बाय गाँव, राम राम गुन गावै के ठाकुर.....।
देहलेस सनेस ऊहाँ से बाय, धरमी गौंहां न सुनबा हमार।
ओनके बारह महीना तेरह रोज, बीतल न नगर बाय अगोरी गाँव।
सब दिन खेललेन फगुवा गाँव गउरा का, अहिरे के ललसा उतनै देखऽ बाय।

---

1. झुकाता है, 2. अच्छा, 3. आये।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जीयत न सामर लियैवा, डंफ देवा बोहे में बनवाय।
मिल जाती हाँथ हमरे, ले जायकर लोरिक न गौंहां के टेकाइब।
जायकर खेलिहैं फगुवा ललकार," वह दिन गड्या के पोल्थी से उठवले।
अपने ऊठल सथरी से बाय, जायकर करत अस्नान जब बाय।
धोती न कपड़ा बाय बदलत, तिलतिलई[1] चूरल[2] डेरा में बाय।
अपने न बीर बायँऽ बैठल, पँजरे लेलेन नाऊ बैठाय।
दूनों न मिला के परोस, आत्मा भर ओठे खात न बाय।
खाय करपानी बाय पीयत, धरमी कुला न करत बाय गलाली।

सँवरू द्वारा सामर का शिकार

ऊठल न बीर बायँऽ सांवर, हाँथ पोछत आपन जब बाय।
सुर्ती न चूना बाय बनावत, अब बीर खात नऽ मूहें में बाय।
तीर न बान बा उठावत, धरमी हलल बोहा के बने।
जायकर कुछ न दूर गऽयल, सौंजा बाय न बोहा तजबीजत।
एक ठे निकलल सामर बरियार, जैसे-जैसे भागत सौंजा बाय।
आगे न पेंड़ बाय धौरा का, पेंड़ के ओही बले जरी से[3]।
जायकर ठाढ़[4] भयल सामर, परल न नजर बाय धरमी का।
धरमी बहुत न दूर के बायँऽ फासिला, वह दिन दाँत न पंची बाय चढ़ावत।
अब लेलेस धनुष बाय बान, मारत न निसाना बाय समरे के।
जायकर धौरा के पेंड़े में हऽलल, जायकर कुछ न तीर बाय निकलल।
समरे के जायकर घूसल पेटे में बाय, वह दिन जूटल माल बा सांवर।
जितना चमड़ा के होबै डंफर, धरमी लेहलेस नाप बाय लगाय।
सामर कल्ला न ठड़ा जब बाय, नापकर चमड़ा बाय छोड़वले।
तीर खींचत धौरा से बाय, हिंचाई तीर समरे में का।
सामर जातय पृथ्वी पर डगमगाय, जायकर धरमी पीठ बाय ठोंकले।
बिना चमड़ा के सामर, भागल जात न बोहा बाय मँझार।
लौटल न माल बाय धरमी, मेड़रा देहलेम डंडा बनवाय।
धड़-धड़ करत बाय तैयार, अब भेज देत गड्या के हाथे।
गड्या रेऽल न नाऊ लेकर जाय, जायकर जूटल नदी ब्योरा के तीर।
जायकर नाई पर गड्या बाय बैठल, नाई से उतरल ब्योरा के बाय घाट।
रेऽल गड्या बाय रेऽावल, चल जात लोरिका के दरबार।
जायकर लोरिका के डंफा बाय टेकवले, अहीर बान्हत न सामर फुन बाय।

---

1. अहीरों का भोजन विशेष, 2. पकता है, 3.जड़ के पास, 4. खड़ा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हलल न गाँव बा गउरा, दस-बारह छँटले बाय घमंडिया सरदार[1]।
सङ्हें समोरी बाय लियवले, ढोली मजीरा जुटावै।
ऊ बीर ले ले बाय मँगवाय, भाङ् सिले पर घोंटाय[2]।

गउरा का फाग

सरबत लेलेन दूधे में बनाय, सब कोई ठाढ़ नासा में बाय।
अबीर न सबके बाय पोतले, रँङ् गयल दू-चार बल्टी बाय घोऽऽर[3]।
ढोल न बान्ह पेटी में, केनहूँ ठोंकत मजीरा बाय छऽऽड़।
छुट्टा न फगुआ बाय उठवले, अहीर गावत न खोरी गउरा के।
बरहो न खोर[4] बाय घूमल, सब कोई मिलत नवइत[5] में बाय।

सहदेव की लड़की चनवाँ से होली

घूमल न खोरी सहदेव का, जौन सहदेव न राजा का बाय लकड़ी।
जेनकर चन्ना धरल बाय नाम, बेस्सा[6] चनवाँ बाय चनैनी।
जेनकर बेस्सा सकल परिवार, अहिरे के लखती गोल[7] जब बाय।
चननी पर गोबर न माटी बाय जुटावत, दस-बीस गगरी पानी लेले मङवाऽऽय।
दू-चार परात लेलेस मङवाय, नीचे जूटल गोल बाय अहिरे का।
मौज न होत बाय फगुआ अनेत, चनवाँ साजत परात बाय।
गोबर न माटी बाय घोरत, पानी देहलेस गगरी[8] में सब घोर।
तान-तान मारत परात चननी से, खेलल न मरद गउरा का।
जहाँ होनी मरदन का खान, केनहूँ चंफा बीर बा डाँकत।
केनहूँ बायें-दहिने घूम जाय, धड़ाधड़ परात चले चननी का।
नीचे जमल गोल अहिरे का, धुआँधार फगुवा कहत बाय।
पानी न गोबर बाय ओरायल, चननी क रुकल परात जब बाय।
लोरिका ओसर न ओसर बाय नरियायल, ओसरी कुइयाँ पर पनियारी।[9]
ओसर लौटल अहिरे के बाय, पक्का अवार बा सम्हरले।
अब कचलोइया थमवे तोंय हमार, भरत न रङ डंफों में।
जेमें आधा बाल्टी अमाय, लेकर तानत निसाना, चनवाँ पर।
बाजलन पींच अहिरे का, चनवाँ का दहिनी ढीप[10] फेंकाऽऽय।
मूहें न बगल गीरल, रुधुर बहे सीना से बाय।
चढ़ल मतारी ओकर सिल्हिया, रूप लखत बिटिया के बाय।

---

1. जवान साथी, 2. भांग घोंटी जाती है, 3. घोल, 4. गल्ली, 5. प्रेमपूर्वक, 6. वेश्या, 7. समूह, 8. घड़ा, 9. पनिहारिन, 10. कुचाग्र।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चननी के नीचे कऽ पलक बाय घूमल, लोरिका पर परल नजर जब बाय।
सिल्हिया दाँत बाय अँङुरी चबावत, आपन ठोंकत ताला बाय तकदीर।
बज्जर न मेहना बाय अहीरे के, कुरख[1] बोलल नजर से बाय।
"लोरिका न सुनबे मरद, कहना मगबे एठिन हमार।

सिल्हिया का सँवरू से चनवाँ का विवाह करने का ताना

अब्बर न मरला दुब्बर, दुब्बर मरला अगोरी किसान।
हाँथी न मरला तूँ अजरही,[2] बाँह देला गउरा में जोराय।
तोहें मरद बीर मानित गउरा में, सौंरू बोहा परल कुँवार।
ओनकर करता सादी सुरावल, तब फेर मरद बीर मानित गउरा में।
जहाँ होइहीं मरदन का खान, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।"

समीक्षात्मक टिप्पणी—लोरिक-मँजरी के गउरा पहुँचने के साथ कथानक की तीव्रता समाप्त हो जाती है। इसके बाद चनवाँ से लोरिक का प्रेम-प्रसंग चलता है जिससे उसकी वीरता का नहीं, प्रेमीचित्त का परिचय मिलता है। लिखित, प्रकाशित तथा अप्रकाशित प्रायः सभी रूपों में लोरिक-चन्दा के प्रेम का प्रसंग विस्तार से आया है। 'चन्दायन' (दाउद मौला कृत) में भी इसी कथा को प्रमुखता मिली है।

(53) **सँवरू का विवाह**—लोरिक यह सुनकर बहुत दुःखी होता है। वह घर जाता है और चादर ओढ़कर सो जाता है। मँजरी इसका कारण पूछती है। कठयित को भी इसकी सूचना मिलती है। अजई उसके पास आता है। वह लोरिक से उसकी व्याकुलता का कारण पूछता है तथा समझाते हुये कहता है—"चिन्ता की कोई बात नहीं है। तुम सुरावल जाकर राजा भिमली को बुला लाओ, दुर्गा तुम्हारी सहायता करेंगी ही, बस राजा से युद्ध छेड़ दो, तुम्हारी विजय होगी।" इधर लोरिक वीर सरदारों को छाँटने के लिए गाँव में निकल पड़ता है। सँवरू की बारात में सवा लाख बाराती जाने के लिए तैयार होते हैं। पूरी बारात सुरावल के लिए प्रस्थान करती है। लोरिक पश्चिम की ओर चला जाता है।

(54) **बारात दानव के पेट में**—इधर बारात दानव के पेट में समा जाती है। बारात की मुक्ति के लिए लोरिक दुर्गा का पुनः स्मरण करता है। दुर्गा उसे इन्द्रलोक ले जाती हैं। वहाँ चनरमा (चन्द्रमा) दिखलाई पड़ती हैं। लोरिक उनसे बारात के विषय में पूछता है। उसके द्वारा ठीक पता न बताये जाने पर लोरिक उनका मुसुक (बाँह) फेरता है। तब वह अपनी असमर्थता बतलाती हुई आगे जाकर सुक्कर देवता (शुक्रदेव) से जानकारी करने के लिए कहती हैं। लोरिक शुक्रदेव के पास जाता और बारात का पता पूछता है, परन्तु शुक्रदेव भी अपनी असमर्थता बताते

---

1. लगने वाली बात, 2. बीमार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और आगे जाकर—'तरई गोबर सँती' से पूछने के लिए कहते हैं। लोरिक उनके पास भी जाता है, किन्तु वह भी पता बताने में असमर्थता व्यक्त करती तथा पाताल-पुर जाकर वासुकि नाग से सही पता लगाने के लिए राय देती हैं। लोरिक वहाँ जाना चाहता है. किन्तु मार्ग ही नहीं मिलता। दुर्गा की सहायता से धरती फट जाती है, फलतः लोरिक पातालपुरी पहुँच जाता है। वहाँ जाकर लोरिक वासुकि नाग को सोता हुआ देखता है। नागिन भी चँवर डुला रही है। लोरिक नागिन से नाग को जगाने के लिए कहता है। नागिन लोरिक को डराती है और कहती है, 'नाग देवता जागेंगे तो तुम्हारी बुरी दशा होगी' किन्तु लोरिक नहीं मानता। अन्त में नाग को जगाना पड़ता है। लोरिक उससे बारात का पता लगाकर लौटता है। बारात आगे बढ़ती है और एक तालाब में जाकर डूब जाती है। लोरिक दुर्गा की सहायता से सभी बारातियों को पुनः बाहर निकाल लेता है।

लोरिक चिन्तित

सुनत न पूत कठइत का, जेनकर दुलर न लोरिका बाय नाम।
अहिरे के पेट से उठल बाय मुरमुरई,[1] घर-घर मुसरे कांड़ै[2] करिहांव[3]।
"हो हो न दयी हो नरायन, का ब्रह्मा लिखला माथे तूँ लिलार।
देखल न राह बाय सुरावल का, राम न राम गुन गावै के ठाकुर t
ढोल देहित सुरावल में बजवावत, भारी न फीकिर बाय लपटियाइल[4]।"
अहीर लौटल घर बाय जात, जायकर अंफू न डंफू बायँऽ बीगत[5]।
एकदम हलल कोठी में बाय, जायकर चनूदर बाय तनले।
जेनकर अन्य न छूटल बाय जलपान, जेन बीर सात घड़ी के खवइया।
ओनकर दिन बीतल जात जब बाय, चारी बजे के भयल टाइम।
निकलल लड़की महरे का, जेनकर दावन न मँजरी बाय नाम।
बैठल न दादा बाय कठइत, जायकर कहत लरमें के बाय।
"ददा न सुनबा कठइत, कहना माना एठिन हमार।
कैसन पूत बायँऽ तोहार, जेन बीर सात घड़ी के खवइया।
चदरी तनले कोठी में बायँऽ," सुनत न ददा बाय कठइत।
गोड़े में जूता पहिरत जब बाय, हाथे न लेले बाय छेंकना[6]।
रेङल न जात अजई के दरबार, लखत न गुरू बाय अजई।
जल्दी देहलेस कुर्सी लगाय, बैठत न ददा बाय कठइत।
गुरू निहुर करत बाय प्रनाम, कठइत न आसीरवाद देहलेन।

---

1. दर्द, 2. पीटने लगा, 3. कमर, 4. लग गयी, 5. फेंकता है, 6. डंडा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"धोबी आँखों अमर हो जाये, जैसे बढ़ै पानी गँगले का।
वैसे बाढ़े आयी तोहार," "ददा कवन जरूरत पड़ गऽइल।
आयकर घुमला दुवार हमार," बोलत न कका बाय कठइत।
दरियाँ करत लरमें बा जवाब, "जवन चेला तोर बाय लोरिका।
सब के अकिल घबिड़ कर दे,[1] ऊ बीर अन्य न छोड़ले बा पानी।
चदरी तनले कोठी में बाऽऽय, इहैं न बात का बाय कहना।
चलकर देवा चेला के समझाय," दूनों न सूवा बाय ऊठल।
एकय रेङ्ल अहीरे के दरबार, हलल न गुरू अजई।
पूछे न कोठी अहीरे का, जायकर हलल कोठी लोरिका का।
जहाँ बीर तनले चद्दर जब बाय, जायकर चद्दर गुरू अजई तानत।
धोबी तड़पत ओही बाय दम, "चेला बाउर तूं मति बउखला।
तोहार अकिल हरले बाय भगवान, के फेर रोह तुंकार[2] तोहें बोलल।
केके फेर तरुवा में जामल दाँत, चेला साँच[3] न हाल बतैवे।
ओनकर कुल-कुल गति देहित करवाऽऽय," वह दिन बोलल पूत कठइत का।
जेकर दूलर न लोरिका बाय नाम, "सुनबा न गुरू मोर अजई।
कहना भाना एठिन हमार, कोई देसवाँ में जनमल बऽली।
नऽ तऽ कोई के तरुवा में जामल दाँत, बारह महीना के रहल दिन।
बीतल नगर अगोरी बाय पाल, हमके लागल ललसा फगुवा का।
गुरू बारह न खोरी बाय गउरा, दस-बारह लेलेहीं सरदार।
घूमकर गावल फगुआ गउरा में, सब कोई मिलत नवयत से बाय।
घुमली न किला सहदेव का, जेनकर लड़की चन्ना रहल नाऽऽम।
ऊ फेर सहदेव राजा के लड़की, पानी न गोबर माटी चलावे।
गुरू ओकर ओसर चूकल, दुवारे पर ओसर लौटल हमार।
जायकर बल्टी न रङ् बाईं भरले, निसाना देहली चननी पर लगाय।

राजा भिमली से अजई पराजित

मारल सीना चनना का, दहिना गयल ढेपुनी[4] चोथाय।
ऊ फेर मुँह बगल गिर गयल, ओकर मतारी चढ़ल चननी पर बाय।
दरियाँ बोलत बजर बाय मेंहना, बड़ी न बात बाय कहले।
गुरू बूते कहल नाहीं जाय, रस्ता देखत सुरावल के बाय।

---

1. घबड़ा देता है, 2. गाली-गलोज, 3. सत्य, 4. कुचाग्र।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोल देहित सुरावल में भिजवाय, एही से सरीर बाय भुरकुस[1]।"

वह बखत तड़पत गुरू बाय अजई, चेला मनबा कहल हमार।
करबे पयाम सुरावल का, रास्ता देखल सुरावल का हमाऽऽर।

वहाँ जनम हमार रऽहल, राजा न जनमल बाय भिमली।
जेनकर देंहें में दँउरी हाँथी का घूमल, लड़कई ऊमिर में रऽहल।

ओही होती हम्मन से रहल, एक लंङे गुरू अजई रहत रहनऽ।
एक लंङे राजा भिमली रहत रहनऽ, गोटी न ओठिन बुझाइल।

गोटी खुलल गुरू अजई के बाय, राजा भिमली के बद्दी बाय खूलल।
अजई बद्दी में राजा के बाय मरले, राजा कुरुख नजर से बाय दौड़ल।

तानकर मरलेस एँड़ा बाय बनाय, अजई गयल धरती में समाय।
ओकर ससुर रहल खदरुबा, जेकर बारह जोड़ी गिरल फरसा[2]।

बारह न जोड़ी बाय कुदार, कोंड़ खन देहलेस धरती से निकाऽऽल।

अजई की सहायता के लिए लोरिक आमन्त्रित

अजई भागल गइल गउरा, आयकर चेला लोरिक के निकलले।

चेला कौनों हरजा जिन मनबे, बल में राजा ऊहाँ भिमली।
कल में देवी दुर्गा बाय तोरे पास, चलकर करऽ पयाम सुरावल का!

ओठे राम लगइहैं बेड़ा पाऽऽर, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
भजली नाम हो तोहार," ऊठल न अहीर कन्तित का।

एकदम रेङ्ल चौकी पर जाय, जायकर करत बाय कुल्ला न गलाली।
अब बीर चौकी पर करत बाऽ अस्नान, बदलत कपड़ा वही दम।

एकदम जात ठहरे पर बाय, सङ्हे गुरू अजई के बैठवले।
दूनों खात रसोईं जब बायँऽ, खायकर कुल्ला न करत बाय गलाली।

अब बीर दुई बीड़ा पान लगवले, एक बीड़ा अपने न खात बा।
एक बीड़ा गुरू अजई के बाय टेकाय, गुरू रेङ्ल अपने घरे बाय जात।

सङ्हे लोरिका दुवरा पर निकलल, अहीर हलल खोरी बाय गउरा का।
जायकर छाँटत घमंडुआ सरदार, दस न बीस बायँऽ जवान।

हिंगराय ले ले दुवारे पर जाय, लदत बरदी[3] अहीरे का।

बारात की तैयारी

दरब[4] निकलत बखरी से पुराऽन, एकदम कइले दुवरा पर तैयारी।

डहरत बरदी अहीरे का, चल जाय करन मेला बाजार।
जायकर छटकत[5] गँठिया जब बाय, तिल्ली न सरसों का गँठिया।

---

1. अस्त व्यस्त, चूर-चूर, 2. फावड़ा, 3. बैल, 4. द्रव्य, 5. उतरी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दरब देलेन बजारे में बेंच, खरीदत सामान ओठिन बाय।
जोरन जोरा बाय सुपारी, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
खरीदत चीनी बाय खाँड़, कुछ कपड़ा न अहीर बाय खरिदले।
कुछ गुड़ गठिया लद जाय; जोर कर सगरो सामान बाय किनले[1]।
फिर से अहीरे के बरदी लदलेस, एकदम डहरल गउरा बाय गाँव।
जायकर छटकत दुवारे बाय लोरिका के, जौन न गँठिया बाय सुपारी का।
लोरिका दू-दू जोरा में अधियाय, छव न गँठिया सुपारी।
तीन गँठिया देहलेस खोरी में घुमवाय, दस बारह ले ले जवान जानऽ न जोरा जोर।
ओही गयल खोरी छितराय, बारह न खोरी बायँऽ गउरा।
तेरहे में अहीर बसल कचऽक,[2] जतिया लेकर परजात।
सबके बँटत नेवता जब बाय, दस बजे न मिले सुपारी।
चार बजे से जुटे के मुकाम बाय, गड्या के बोहा में दवड़वले।
सौंरू लेलेस भाई बलवाय, दुवरां का होत बाय इन्तजाम।
गिरत न जाजिम बाय अहिरे का, जहाँ खम्हाँ न बाँस गाड़ जाय।
कोना न कोना पर इन्तजाम, जोरकर देहलेस अमल[3] कुल निकाऽऽल।
जितना जुटल जात से परजात, सब कोई पानी न पत्तर बाय पीयत।
लोग बैठत जजमें पर बाय, सवसे पलगी न होत बा असीस।
पीछे कुसल न होत बाय भलाई, अब भइ गयल मोकाम अहिरे का।
पूड़ी छनत बखरी में बाय, रतिया न खान होत बाय खियान।
रेंगल न अहीर बाय लोरिका, देस में गयल अहीर छितराय।
जौन न चाल के पावे बाजा, सगरों नेवतल[4] ले ले बाय लिववले।
जितना देस में पावे बाजा, सगरों लेकर दुवारे पर जूटल।
रतिया में खान न होत बाय खियान, पूड़ी न खात बाय जतिया से परजात।
रात में खान न खियान, भोरे चार बजे के वह बऽखत।

बारात का प्रस्थान

धरमी के सजत बरात जब बाय, सवा न लाख बाय बरात।
अहिरे के सजत दुवारे पर बाय, बिना ठेहू न ठिकाना[5]।
अनहद रेऽल बरात जब बाय, मारे न बाजा के मारन।
देस गयल संसार औंजाय, नीचे धरती न माई लगलीं डोले।

---

1. खरीदा, 2. घनी आबादी में, 3. व्यसन, 4. आमन्त्रित, 5. रहने का स्थान, पड़ाव।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर डोल गयल कैलास, रिसी-मुनी के डोलल मस्तक।
इन्दरलोक गयल औंजाय, नाही न ताड़ी ऊहाँ थमाइल।
केहो मृतुलोक में भयल बली, अनहद देहलेस बाजा बजवाय।
ओहर दूत गिरल बने में बाय, एक ठोंगा देहलेस धरती में खँपकाय।
एक ठोंग देहलेस सरगे फैलाय, जैसे परबत न भयल बा बन।
भगवन देलेस माया फैलाय, पहर गउरा कोस भर गयल बरात।
दानी छूटल बरोही के बाय, वह दिन बोलल पूत बाय कठइत का।
जेकर दूलर न लोरिका बाय नाम, "गुरू न सुनबा अजई।
कहना मनबा एठिन हमार, छूटल न पानी बाय बरोही का।
रस्ता देखल सुरावल के तोहार, बरात लियवले चलबा तूं।"
लोरिका लौटल गउरा बाय गाँव, सवा न लाख बाय बरात।

बारात दानव के पेट में

उवमत रेंङल धुँआँधार जात, जायकर दनवाँ[1] के पेटे बाय ओलियाइल[2]।
सवा न लाख बाय बरात, दनवाँ के गइल पेटे में समाऽऽय।
कल्ला न ठोंग बाय खपकौले, झरिया लेहलेस पहरी बाय दबाय।
कल्ला न गयल पहाड़े में फेंटियाय, जहाँ ठंडा न लागत बाय हे बाय।
ईहाँ लेकर पानी बरोही का, पूत लौटल कठइत का जाय।
झंखत न अहीर जाय लोरिका, आपन ठोंकत ताला बाय तकदीर।
कहलेन "हो हो न दई तूं नरायन, का ब्रह्मा लिखला माथे तूं लिलार।
मारे न बाजा के मारन, कहीं देसे में नाहीं बाय अमाऽऽल।
तौन कहीं न पाता लागल बाय ठेकान," झंखत न पूत बाय कठइत का।
जेकर लोरिका परल बाय नाऽऽम, धीरे-धीरे सोंचत रस्ता पच्छिम का।
अहीर जातय दुराने के देस, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
भजली नाम हो तोहार, देबिया न सुमिरली भगवती।
दुर्गा जाना सक्ती तोहार, जितना कीर्तन गयल सतजुगी।
जोर कर देबा कड़ी बैठाय, जहाँ भरे[3] सवा न लाख गयल बारात।
तहाँ भरे परल न संडक देखा बाय, राम न नाम गुव गावै के ठाकुर।
ओही से आगे दौहन बाय, वही बखत हहरल पूत कठइत का।
जेकर दुलर लोरिका बाय नाम, सुमिरत न देबी बाय दुर्गा।
जेन फेर आदि दिन का पुजमान, एठे जानऽ सक्ती तोहार।

---

1. दानव, दैत्य 2. घुस गई, 3. तक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"तोहरे जोरे बाई भरोसे, देवी चढ़ली दारू देस बाई खडार।
जौने बखत देवी लौटल तोहरे धामें, खास्सी न भेंड़ा के कौनों गनती।

बारात का पता लगाने में क्रमशः चन्द्रमा, शुक्र, गोबरसैंती, नाग देवता आदि सहायक

सौ साठ देबै भैंसा बोंगवाय," वह दिन छमकल मइया देबी दुर्गा।
जेन फेर धइलेन चिल्होरी के रूप, लोरिका न सङ्हें बा लपेटले।
एकदम ले ले इन्द्रासन बाईं जात, इन्दर न लोक बाइन जूटल।
ऊगल न चन्द्रमा ऊहाँ बाइन, जाय कर लोरिका मुसुक[1] बाइ फेरत।
आपन पूछत बराती का बाय हाल, वह दिन बोलल देव बाय चन्द्रमा।
"मरद न सुनबा तूँ लोरिक, कहना मानऽ एठिन हमार।
हमरे के पहरा का नाहीं बात, पाछे न आवत सुक्कर बाय महराज।"
जायकर छेंकत पहरा बाय सुक्कर का, ओनकर देहलेस मुसुक बाय फेर।
पाछे न बोलल सुक्कर बाय महराज, "लोरिका माना कहल हमार।
जायकर खोजऽ गोबरसैंती," ऊहाँ से लेकर दुर्गा बायीं रेंगल।
जायकर खोजत तरई गोबरसैंती, ओनकर देहलेस मुसुक बाय फेर।
वह दिन बोलल तरई गोबरसैंती, "तनी ढीले बन्हना तूँ करबा।
हम देहित सरेख लगाय," वह दिन ढीलय मुसुक ओकर कइले।
तरई देले बताय, जौन बरात बाय साजत।
टाइम चारी बजे काऽ बाइ, वह दिन मारे बाजा के मारन।
तीनों लोक गयल औंजाय, इन्दर न डोलल इन्द्रासन।
अब डोल गयल रिसी-मुनी के मस्तक, वह दूत देलेन भिरतुक में उतार।
ऊहै न लिलले[2] दूत होई, आगे के मालूम नाहीं रास्ता बाय।
"तूँ चल जाबय पतालपुर, जहाँ नाग बानऽ बनवास।
नागिन होहिहैं चँवर बाय डोलावत, जेकरे पर थम्हल पृथ्वी बाईं।
ऊहें आगे का रास्ता बतइहैं, साँच देहली सरेखे लगाय।"
लेकर देबी दुर्गा बाय चूअल, एकदम जाय कर धरती से करत बिनती।
"मइया हमें जगह तूँ देती, गाढ़ परल पताले के बायँऽ।"
फाटल धरती बाईं माता', अहीर चम्फा पताले में समाऽऽय।
दहिने भुजा दुर्गा बाय असवार, जहाँ सूतल नाग बाय बनबीसु।
जिनके फने में पृथ्वी बाय, नागिन चाँवर बाईं डोलावत।

---

1. बाँह, 2. निगला होगा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जायकर बोलत अहीर कन्तित का, दरियाँ करत बेड़े बाय जवाब।
"नागिन सुनबा एठिन हमार, कहना माना दरें हमार।
तनिक सूतल नाग तूँ जगैबा, सवा लाख गयल बरात बाय हमार।"
वह दिन बोलल नागिन लरमें का, "भइया मानऽ कहल हमार।
कहीं सूतल[1] नाग जगाइब, पताल में जिन्दगी नाहीं बची तोहाऽऽर।
अहीर हट्ठू ओठे बाय परल, कैसों देबा नागे के जगाय।
आसन पर नागे के बाय खोदले, खुलल न पलक नागे का।
पृथ्वी हिलत न डोलत ओठिन बाय, समने परल नजर लोरिका का।
अहीरे के कोयला न कर दे खऽगार, वह दिन देबी न दुर्गा बाय लपटाइल।
रोसनी पर नाचत अहीरे के बाय, वह दिन तड़पत पूत कठइत का।
जेकर दुलर न लोरिका बाय नाम, "सुनबा न नाग बनवासु।
कहना मानऽ एठिन हमार, ऊहैं न अहीर जीन जानऽ।
नेउरीपुर देहली लड़िकन से दुधुर भरवाय, ठंडा दिमाक करबा।
जलदी देबा रास्ता हमार बताय, सवा न लाख बाय बरात।
मृत्युलोक गयल पैंड़े से[2] बाय, नाहीं भई खींचब खाँड़ गोदाहै।
अब दूभाग देवै भगियाय, सवा न लाख मृत्युलोक बाय गायब।
हम लेकर गायब पताले में जाबय," अब दिन सानति[3] नाग बनवासु।
लरमी देला कड़ी बैठाय, सजल बरात धरमी का।
बाजा न तीनों लोक औंजाय, रिसी न मुनि के छूटल सक्ती।
इन्हें देलेन मृत्युलोक उतार, लील कर गायब बरात बाय कइले।
पहर भर में बाय फेटियाय, जहाँ ठंडा न लागत बाय हेबार।
कहीं बारह न दिन बजी, तौ संसार दूते के लागी।
दूत पीही[4] पानी झरिया[5] का, सवा लाख मट्टी बरात हो जाई।
वह दिन चंफा न लोरिक बाय डाकल, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।

धरती माता सहायक : बारात का उद्धार

एकदम आयल पृथ्वी पर बाय, धरती से बिनती बाय कऽरत।
"भइया अपनो तूँ आसन पर होबा, हमार पूरा न काम हो गऽयल।"
धरती जैसे के तैसे हो गयल, अहीर रेऽल झरिया पर जाय।
जहाँ गिरल पानी पथरवा से, जायकर देखय घाट झरियन का।
आपन ठोंकत ताला बाय तकदीर, "हो हो न दयी तूँ नरायन।

---

1. सोया हुआ, 2. रास्ते से, 3. शान्त, 4. पियेगा, मिट्टी हो जायगी, 5. झरना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का ब्रह्मा लिखला माझे तूँ लिलार, सवा न लाख का जोर।
एकय अकिल गवाही नाहीं दे, सुई नीयर बाय खाँड़।
एकर कौनों भरोसा नाहीं बाय, एमे अगवय[1] घाट बाय देखात।
का जनी कौने घाटे दूत ओल्हिहैं[2], एको अकिल गवाही नाहीं देत।"
सुमिरत न मइया देबी दुर्गा, जेन फेर आदिदिन का पुजमान।
एठे जानऽ सक्ती तोहार, एतना न बात-चीत बाय कऽरत।
तब तक दूत गयल हड़बड़ाय, बड़का न बड़का बाय ढोका।
पत्थर अब बहुत पहरी में ढँङलाय, सूनत न अकिल बाय घबड़ाइल।
कैसन डोलत पहाड़ एठिन बाय, एकदम सम्मयँ पर्वत बाय ओल्हल।
झरिया पर मारत कुण्डली, जहाँ बादुर[3] जल बाय गुलियायल।
वह दिन काँपत न जाँघ बाय लोरिके का, दस हाँथ गयल पीछे पछील[4]।
वह दिन पहिल न ठोंगा[5] बाय बोरले, अदमी के जाँघ भर पनियाँ हो जाय।

दूसरे दिन बाय खींचत,

बरात के छाती भर पानी हो जाय, तीसरी बार बोरले ठोंगा झरिया।
मइया तड़पत देबी बाय दुर्गा, बरुवा न सुनबे फुलझरुआ।
कहना मानऽ एठिन हमार, तनिक खींचत खाँड़ दोगाहै।
धार गिरत गरदने पर जाय, चारी न अंङुल भयल बाहर।
जेकर तड़प अकासे बाय जात, नीचे मरले बाय दवनहरा।
लवर बानी पोरसन गुँगुवात, खाँड़ गिरत गरदने पर बाय।
दुई न भाग भगियवलेस,[6] बरात गयिल झरिया में ढोंसाय।
पौंरत न चढ़त बाय करार,[7] आगे टप्पा न परल बाय मैदान।
जायकर गिनती बरात का बाय लेत, न त लौकत पलकी बाय धरमी का।
न तऽ बायँऽ सोरहों कंहार, न तऽ गुरु अजई बायँऽ।
न तऽ कका कठइता ओमें नाहीं बाय, न त गडिया हजामत देखा नाहीं बाय।
वह दिन तड़पत अहीर बाय लौटल, कुछ दूर चढ़त पहरी बाय जात।
जाय कर एक बोंगा और बीच में बोंगलेस,[8] नीचे के ऊपर गयल रङाय।
निकलल पलकी धरमी का, टेकले जाब सोरहों कंहार।
ओकरे पीछे गुरु बा अजई, अब फेर कका कठइत सरदार।
ओकरे पीछे गंडिया बाय हजामत, सगरों जूटल बराती में बाँय।

---

1. केवल प्रवेश करेंगे, 2. घबड़ गया, 3. एकत्र, 4. पिछड़ा गया, 5. दोना, 6. विभाजित किया, 7. तीर, 8. काटा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सही न गनती बाय लगवलेस, सवा न लाख टोटल बरात आ जाय।
राम न राम गुन गावै के ठाकुर भजली नाम हो तोहार।
देबिया न सुमिरली भगवती, दुर्गा जानऽ सक्ति तोहार।
जितना कीर्तन भयल सतजुगी, जोर करदेबा कड़ी बैठाय।

सारांश (55) डाइन का वध—बारात कुछ और आगे बढ़ती है तो मार्ग में उसे डाइन (पक्षी विशेष) मिलती है। वह आग जला कर बैठी हुई है। अजई आग लेने जाता है। उसे यह ज्ञात नहीं है कि वह डाइन का स्थान है। डाइन अजई को निगल जाती है। अजई के आने में विलम्ब होने पर लोरिक गड्डिया से उसका पता लगाने का आग्रह करता है। गड्डिया पता लगाने जाता है तो डाइन उसे भी निगल जाती है। अब लोरिक स्वयं तैयार होकर आता और डाइन को मारकर दोनों को बचा लाता है।

(56) बरईपुर के रानी से युद्ध—बारात आगे पहुँचती और बरईपुर पहुँच कर विश्राम करती है। बाराती बगीचे में पहुँचकर आम खाते और आग भी लगा देते हैं। बगीचे का रक्षक एक खलिक उन्हें मना करता है और न मानने पर राजकुमारी से जाकर शिकायत करता है। वह वहाँ पहुँचती हैं और क्रुद्ध होता है। लोरिक भी क्रोधित होता है। फलतः दोनों में कहा-सुनी के साथ युद्ध प्रारम्भ हो जाता है। भयंकर युद्ध के पश्चात् लोरिक की जीत होती है। लोरिक की वीरता देखकर बरई की लड़की उस पर मोहित हो जाती है और विवाह का प्रस्ताव करती है। लोरिक स्वीकार तो कर लेता है, किन्तु उसके हठ करने पर लोरिक उसे आश्वासन देते हुए कहता है—'मैं लौट कर तुम्हारा डोला फनवाऊँगा, अभी प्रतीक्षा करो। अभी तो मैं भाई धरमी का विवाह करने जा रहा हूँ।' तब भी वह विवाह का लिए हठ करती है लेकिन लोरिक उसे समझा बुझाकर आगे बढ़ जाता है।

(57) बारात सुरावल में—बारात आगे चल कर सुरावल पहुँच जाती है। तब तक बारात की खाद्य सामग्री भी समाप्त हो जाती है और साहू महीचन के यहाँ से सामग्री उधार ली जाती है। पहले तो महीचन राजा भिमली से डरता है और खाद्य-सामग्री देने में असमर्थता व्यक्त करता है, किन्तु अजई समझा कर उसे अपने अनुकूल कर लेता है। महीचन सगरे के भीटे पर स्थित बारात में लोरिक के पास जाता है। वहाँ बाजार के रूप में काफी दूर तक स्थित बारातियों को देख कर महीचन घबड़ा जाता है। वह गाँव में जाकर कहता और गाँव की स्त्रियाँ वहाँ बाजार करने पहुँचती हैं। राजा से लोहा लेने के लिए बाराती उनके साथ छेड़खानी करते हैं।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डाइन का छल : अजई उसके मुख में

बिचे न जंगल बाय मँझार, सवा लाख काँपत बरात जब बाय।
आगे डाइन आगी बरले, झीलंडी खटिया[1] पर बाय सूतल।
ओढ़ कर लेवा[2] बाय सूतल, दुरिहाँ से नजर परल लोरिका का।
"गुरू न सुनबा अजई, कहना मानऽ एठिन हमार।
ऊहै न आगी बरत बाय देखा, अजई देखल रास्ता तोहार।
जायकर ले आवऽ आगी उठाय," रेंङल न धोबी बाय अजई।
जायकर पहुँचल बंगला परे बाय, धुक-धुक बरल आगी बंगला में।
पहुँचल न गुरू बाय अजई, डाइन कहँरत[3] बाय खटिया पर।
जायकर मारत खखार दुवरा से, "केकर घर हवँऽ मकान।
आगी के परल जरुरत हमें पऽरल:," कँहर कर बोलल डाइन खटिया से।
"ददा तोहार घर बा दुवार, हमके ऐसन रोग बाय पकड़ले।
खटिया से ऊठे खातिन तागत नाहीं बाय," इतना न सूनत बाय अजई।
एक गोड़ डालत घरे में बाय, लपस कर[4] तजबीजत लुवाठी जब बाय।
मुंह खोल कर कूदल बाय डाइन, सगरों लीलत गुरू के बाय।
लीलकर गिरल खटिया पर फुन बाय, ओही रूप में कँहरत फुन बाय।
घण्टा न बीतल छमीछा, झंखत फुन कठमित का पूत।

गङिया भी उसके गाल में समाहित

कहलेग गड़िया न सुनबे हजामत, कहना मनबे एठिन हमार।
जायकर बैठल गुरू के पाये, द्व-चार झापड़ मारे बनाय।
रेंङल न गङिया बाय हजामत, जाय कर जूटत मकाने डयनी का।
आगी न बँगला में बरत, डाइइ न कँहरत खटिया पर बाय।
ऊहाँ गुरु न अजई बाय लौकल, नाऊ छरकल[5] दस हाँथ बाय जाय।
जायकर मारत खखारी दुवरां से, "केकर घर है दुवार।
आगी के परल जरूरत हमें बाय," "भइया तोहार न घर बाय दुवार।
हमके ऐसी दुख बाय पकड़ले, खटिया से ऊठे खातिन सम्बत[2] नाहीं बाय।"
उतना न बात बाय सूनत, एक गोड़ डालय देत बाय।
मुँह फाड़ ऊठल जकलाय,[7] सम्मइ[8] नाउ बाय लीलत।
लील कर खटिया पर बाय, घण्टा न बीतल बाय छमीछा।

---

1. टूटी हुई चारपाई, 2. गुदड़ी, 3. बीमारी की आवाज 4. झुककर
5. छनककर, 6. शक्ति, 7. घबड़ाकर, 8. सम्पूर्ण रूप में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहीरे ठोंकत ताला बाय तकदीर, हो हो न दयी बाय नरायन।
का ब्रह्मा लिखला माझे तूं लिलार, धोखा पैड़े में बाय होत।
गड्या हुकमी न नौकर बाय हमार, वह दिन सम्हरल अहीर बाय लोरिका।
अब बीर दबले अन्य पहिरत बाय अनरखी, गोड़वां गुल न बदन बाय तमान।
बान्हत न पेटी बाय अजगर का, जेमें गोली न ठहक खा जाय।
कसत जिरही बाय लोहा का, जेमें नौ मन लोहा अमाय।
साठी गजे का दुपट्टा, जैसे बान्हें राजा बाय बघेल।
तरकुस न गूजै का बाय पनहीं, एंड़ा चांपत अहीर बाय चढ़ाय।
धइले पाग लरमें का, जेमें मेघ डमरु घहराय।
मुँह में कूँचत पान बीर बाय, मरगस न मरगस रेंगल अहीर।
जैसे रेंङल पुलिस बरियार, जायकर जुटल मकान डयनी का।
ऊहाँ न तऽ गड्या नाऊ नाहीं लौकल, न तऽ गुरु अजइया बाय लौकल।
लोरिका मारत खखारी गहिरे से, पूछत घर बाय दुवार।

लोरिक को भी निगलनेका प्रयास, किन्तु लोरिक डाइन को मार कर अजई-गड्या के उद्धार में सफल

"हमके ऐसी रोग बाय पकड़ले, खटिया से ऊठे क सम्बत नाहीं बाय।"
इतना न सुनत अहीर कन्तित का, एक गोड़ डालत डेंहुड़ी पर बाय।
जायकर खींचत लुवाठी[1] बाय, मुँह फार कूदत डाइन जकलाय।
लोरिका के लिलले मूड़ौ जब बाय, दहिने भुजा देबी बाय दुर्गा।
मइया तड़पत देबी बाय दुर्गा, कहलेन "सूबा न सुनबे फूल झरुवा।
कहना मानऽ एठिन हमार, तनिक ठाढ़ खाँड़ तूँ करता।"
सूनत अहीर कन्तित का, जौन दिन ठाढ़े खाँड़ बाय कइले।
अब दूदाल देलेस दलियाय,[2] एक लंगे गुरू अजई।
गड्या एक के निकलला, लोरिका तीनों मिला सरदार।
आगी न काठी बाय उठवले, एक दम गयल बराते में बाय।
जाय कर दस बीस दहाना[3] बाय बरले, बमकल आगी बाय।

बारात बरईपुर की ओर

राम न राम गुन गाबे के ठाकुर, भजली नाम हो तोहार, कंकड़ न पीयत बाय तमाखू।
सवा लाख गयील बरात गरमाय, बाजा न सेंकत बाय बजगीर।
जाजिम सेंकके बाँध गऽयल, सवा लाख कूँचत बीरा बाय पान।
वह दिन बोलत पूत कठइत का, जेकर दूलर न लोरिका बाय नाम।

---

1. अग्निशिखा, 2. दो भागों में विभाजित कर दिया, 3. स्थानों पर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"जतिया न सुनबा परजाति, सवा लाख सुनवा गउरा के सब लोग।
डटकर चलय बरात रस्तें में, हमहूँ सामिल वराते में बाई।
लोगवा कौनो हरजा जीन मनबा, बाजा पीटत चलबा अनहऽद।"
सवा लाख न बाय बरात, अहीर के उदमत रेङल बाय जात।
रात रेंङल दिन दौड़ल, चढ़ै सिवान[1] बरईपुर का।
टप्पा परल बाय मैदान, अच्छा बगीचा बाय बरईपुर का।
जेमें दू-चार इनारा[2] देखाय, फरल न आम बाय पेंड़े में।
खटिक टिकल डेरा बाय डाल, वह दिन बोलल बीर बाय लोरिका।
दरियाँ कहै लरमें का बोल, "सुनबा सवा लाख बरियात।
कहना माना एठिन हमार डलबा डेरा बरईपुर में।
जहाँ जलसा[3] बगीचा में बाय, ओही गीरत जाजिम अहीरे का।
सवा लाख टीकत बरात जब बाय, तेल न खुलल बाय साबुन।
डट कर करत अस्नान जब बाय, खूलत न बोरा बाय रासन का।
सबके बँटत सिधवा बाय समान, अपने न अपने के रसोंई।

सवा लाख बारातियों द्वारा बरईपुर का बगीचा नष्ट

सब कोई कइले बाय बगीचा में तैयार, सब कोई खात न पीयत बाय।
कुल्ला कइले गलाली बाय, बँटत न बीरा बाय पान।
सवा लाख कूँचत बरात जब बाय, नगर बरईपुर पाल।
सवा लाख बैठल बाय बरात, मौज करत जजमें पर बाय।
जितना टपकत[4] अम्मा पेड़े से, बीन-बीन चूहत[5] बरतिया के बाय सब लोग।
एक पेंड़ नामी परल आम बाय, ओकर न बड़ न बड़ा बाय फऽल।
एकठे मालदह अम्मा बाय गीरल, बीनत बराते बाय लोग।
लेंगड़ा खटिक देखात जब बाय, लेकर गोजी न उठल जब बाय।
बोलत खटिक ओही दम, "देखा भाई देदा अम्मा हमार।
तब खरीयत बगीचा में बाय," सुनत पूत कठइत का।
बोलत पूत कठइत का, जेकर दूलर न लोरिका बाय नाम।
"जतिया न सुनबा परजात, सगरों सुनबा बराते में के सब लोग।
पेंड़े में पत्ता न छितरैबा, अम्मा देबा पेंड़े से गिराय।
कुछ डारी पेंड़ बटोरबा, आगी देबा बगीचा में लगाय।"

---

1. मैदान, 2. कूप, 3. आनन्द, उत्सव, 4. अपने आप गिरता है, 5. चूसता है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जीदल पूत कठइत का, लँगड़ा खटिकमारत बहियाय।
रोवत न खटिक फुन बाय, भागल खटिक चल जाय।

राजा के पास शिकायत

रेंङल जात बरई के दरबार, जायकर कहत लड़की बरई से।
"सुवा तूहैं बली देस में रहला, तोहरे से दुराने कौन टीक गयल।
बगीचा में देहलेस आगी लगाय, हमार आल जिन्दगी लेंहलेस।
आग लागो तोहरों खटिकई, अब नाहीं करब नौकरी तोहार।
बल्के खण्डा न टुक्काखाब पैंड़े का," "ऐसन तूं न करबा खऽटिक।"
सुनत न लड़की करई का, उल्टा देहलेस डण्का पिटवाय।
हो हो न दयी नरायन, का ब्रह्मा लिखला माझे लिलार।

बरईपुर के राजा की लड़की से लड़ाई

"कहाँ क चढ़ल दुस्मन बरियार, ओकरे जामल तरुवा में दाँत।
केकरे पुछले बाय न जनले, डेरा डलले बगीचा में बाय।"
चटपट होती तैयारी बाय, अनब न कसत अनरखी।
गोड़वा गुलबदन तमान, बान्हल पेटी लरमें का।
जेमें तेगा मुरचा खा जाय, साठी न गजे का दुपट्टा।
तिरिया बान्हत सिर घुमाय, जैसे बान्ह पुत्री बघेल।
डिल्ली न साही के बाय जूता, एँड़ा लेलेस बाय चढ़ाय।
हाथे में लेले बाय तेगा, जेमें बान ठहाका खा जाय।
लेकर तेगा बायँऽ रेंङल, जैसे जात गउरा का जमीदार।
जूटल बगीचा के लगभग, जायकर बोलत रोह बाय तुकार।
"कहवाँ क चोरवा बाय बदमास, ओकरे जामल तरुआ में दाँऽत।
बिना न पुछले न जनले बाय, डेरा देलेस बगीचा में डाल।
सवा न लाख बाय बरात, हमार बगीचा लेलेस उजरवाय।"
सुनत पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाय नाम।
बत्तीसों समान बीर बाय कसले, हाथ में ले ले बिजुल बाय खाँड़।
चम्फा न अहीर बाय डाँकल, एकदम डाँकल 42 हाँथ जाय।
"सरऊ न सरऊ जिन करवा, नात पहुँचत सारे के हमार।
अपने जाँघी के बलसाई, टिकली नगर बरईपुर गाँव।
कौनों हरजा जीन माना, दू हाँथ लेबा यही फरियाय।"
बात न चीत भइनी सरवर, बात देहलेन राड़ मचाय।
दूनों चलत पैंतरा पर बाय, बोलत न लड़की बरई का।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"मरबे न मरबे सूबा, जौने तोहरे अवार का घाव।"
वह दिन बोलल पूत कठइत का, जेकर दुलर लोरिका बाय नाम।
कहले"आगे न घाव छोड़वा, न त पीछे रक्खब छिपाय।
जौन आगे का अबार होइहैं, खानदान बाय किरिया अट्ठान।"
इतना न सुनत लड़की बरई का, एकदम चलत पैंतरा पर बाय।
जायकर मारत पेटी लोरिका का, परगट नाचत दुर्गा बाऽय।
अहीरे के बायें-दहिने करदे, गिरल तेगा फेर से चलत पैंतरा पर बाय।
गिरल तेगा धरती में, धार रत्ती न रत्ती बाय झऽरत।
फेर से चलत पैंतरा पर बाय, मारत टीका[1] अहीरे का।
दुर्गा बड़ न छोट कर दे, गिरल तेगा धरती में।
धार रत्ती-रत्ती जाय झऽरल, फेर से चलल पैंतरा पर बाय।
हहरत लड़की बरई का, आपन ठोंकत ताला बाय तकदीर।
धन-धन न पानी कन्तित का, जहाँ मरद फूटल बलिवान।
तीसरा मारत तेगा बाय बनाय, अहीरे के मारत पोंगी[2] जब बाय।
अब बीर चंफा मरद डाँक जाय, गिरल तेगा धरती में।
धार रत्ती-रत्ती गयल छितराय, पलटल ओसर[3] अहीरे का।
अब बीर ओसर न ओसर नरियाय, पक्का न लोहा बाय अँगेजले।
अब कचलोइया थमला हमार, अनव न कसत बाय अनरखी।
गोड़वा गुलबदन तमान, कसत पेटी अजगर का।
जेमें गोली ठहक खा जाय, कसत जीरही लोहे का।
जेमें नौ मन लोहा अमाय, साठी गजे का दुपट्टा।
अहीर सिर बान्हल बाय घुमाय जैसे बन्हलेस पुत्री बघेल।
तरकुस न गूंजें का पनहीं, एँड़ा देहलेस अहीर चढ़ाय।
धइलेस पागी लरमें का, जेमें मेघ डमरू घहराय।
बाएँ में मियान बाय दबले, दहिने चमकल बिजुल बाय खाँड़।
चार न अंगुल बाहर भइली, जेकर तड़प अकासे में जाय।
नीचे न मरले बाय दवनहरा, पोरसन जानी लवर गुँगुवाल।
खींचल न खाँड़ बाय दोगाहें, कूदल लड़की बरई के बाय।
वोह बखत धन-धन न देबी माई दुर्गा, धरत रूप चिल्होरी का।
सीना क चीरत कपड़ा ओकर बाईं, परल नजर लोरिका का।

---

1. सिर पर, 2. पाँव में, 3. अवसर।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लड़की पराजित किन्तु लोरिक के प्रति आसक्त :

हाँथ जोरत पाछे पछिलल जब बाय, धन-धन न देबी माई दुर्गा।
एठिन जानऽ सक्ती तोहार, लिरिया न लोहा में जूझत।
बूड़ जात नाम हमार, एकदम रेङल जजमें में गयल जौन लड़की बरई का।
जनानी लेलेस भेष बदऽल, जायकर कहत जजमें पर बाय।
"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, कहना माना एठिन हमार।
इहै परन[1] हम रखली, जेनसे लोहा में हम नीचा खा जाइब।
ऊहै पुरुष होइहैं हम नार[2], सइयाँ कौनों हरजा नाहीं मनबा।
डाँड़ी लेबा बरइपुर फनबाय, लौट चलबा गउरा तूँ गाँव।"
वह दिन बोलल पूत कठइत का, "तीबई मनबे कहल हमार।
अभी करय सादी जात बाई धरमी का, भइया नगर सुरावल बाइ पाल।
लेकर डाँड़ी भौजी सतिया के लेकर लौटब, तोहरों लेब डाँड़ी फनबाय।"

विवाह का हठ

वह दिन बोलल लड़की बरई का, "सइयाँ माना कहल हमार।
लखल न लोहा बाय सुरावल का, हमरों लेबा डाँड़ी फनबाय।
चलबै सम्भू सगरे का भीटा, एकौ थाम्हत अवार बनाय।"
वह दिन तड़पत पूत कठइत का, "लिरिया बाउर मति तूँ बउखले।
तोहरो अकिल हरले बाय भगवान, लखल राजा सुरावल का।
बजर मारी मेहना[3] बरियार, कैसन गाँड़ू सुबा बाय गउरा का।
सङ्घें आइल लिरिया देखा बाय, लकड़ी के गुमती तयँ बनवैबे।
गोमती पर धरकर बेंचऽ पान, ताकत रास्ता रहा सुरावल का।
यही पर लौटी बरात हमार, तोरहों डहरे में[4] डोला देवै फनबाय।"
इतना न बात बाय समझौले, लड़को लौटल बरई के जाय।
जायकर गोमती पैंड़े में धइलेस, चढ़कर गोमती में पान।
एहर बोलल पूत कठइत का, जेकर दूलर न लोरिका बाय नाम।
"जतिया न सुनबा परजात, सगरों सुनबा बराती के सब लोग।
झारकर बान्हऽ जाजिम बगीचा से, सवा लाख हो जयबा तैयार।
बाजा न सेंकबा बजगीर, उदमत देबा लकड़ी बजाय।
बरईपुर जात गाँव औंजाय," सवा लाख डहरल बरात अहिरे का।
उदमत बाजा न बाजे अनहऽद, धइले न राह पच्चिम का।
उदमत जाती बरात जब बाय, जौने-जौने रस्ते बरात जब बाय।

---

1. प्रण; 2. स्त्री (विवाहिता पत्नी) 3. ताना, 4. मार्ग में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सगरों जाला गाँव औंजाय, राती रेंगल दिन दौड़ल।
पैंड़े में कौनों मोकाम नाहीं देखाय, एकदम डहरल बरात अहिरे का।
धीरे-धीरे जाती सुरावल के गाँव, जूटल गायें सुरावल का।
जौन न राजा बाय भिमली, ओके लागत छमाहीं बाय नींद।
जूटल बरात फुन जाय, बोलत पूत कठइत का।
जेकर दूलर लोरिकवा बाय नाम, राम न नाम गुन गावै के ठाकुर।

बारात सगरे के भीटे पर

"गुरू न सुनबे मोर अजई, कहना मलबे एठिन हमार।
जितना रसद गउरा का, पैंड़े गयल खरचा ओराय।
जायकर साहु महाजन कौनों खोजा, ये बखत थाम्हत ताड़ी हमार।
लौटब गाँव जब गउरा, रोकड़ बैलगाड़ी से देबे भेजवाय।
रेंङल न बुढ़वा बाय कठइत, आगे-आगे गुरू न अजई बाय सरदार।
एकदम रेंङल सुरावल जाय गाँव, बाकी डहरल बरात जब बाय।
जात बाय सम्भू सगरे के न भींटे, जायकर गिरत जाजिम अहिरे का।
सवा लाख टिकल बरात जब बाय, जाजिम न गिरल अहिरे का।
कोने दर-दर खम्भा बाय गड़त, कौन-कौन झंडू न गेंस बाय लटकवले।
सवा लाख टिकल बरात जब बाय, रेंङल न गुरू बाय अजई।
पीछे बूढ़ न कठइत सब बाय, राम न राम गुन गावै के ठाकुर भजली नाम हो तोहार।
देविया न सुमिरली भगवती, दुर्गा न जानऽ सक्ति तोहार।
जितना न कीर्तन भजल सतजुगी, जोरकर देबा कड़ी बैठाय,
जूटल न गुरू बाय अजई, पीछे बाय कठइत सरदार।
हाँथे में लेलेन छेंकना बुढ़वा, जूटल साहू महीचन के दरबार।
जेन भाई बाय बजारे का मलिकार, होती न बानी जयरम्मी।
काली न बिछल कुरसी जब बाय, दूनों न बैठत बाय सरदार।
कुसल न होत बाय भलाई, पानी पत्तर होत बाय इन्तजाम।
वह दिन बोलल साहू बाय महीचन, "धोबी न सुनबा अजई।
कहाँ टिकल मझारे बाय गाँव" वह दिन बोलल गुरू बाय अजई।
"सहुआ न सुनबा महाजन, कहना मनबा एठिन हमार।
जायकर चेला निकलली गउरा में, अहीर करे न आयल सादी ले बियाह।

वहाँ के महाजन द्वारा बारात का स्वागत

सवा साख टिकल बरात सगरे पर, अहिरे का खरचा पैंड़ें में गयल ओराय।
ए बखत थम्हवा ताड़ी अहिरे का, वह बीर लौटी गउरा गाँव।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जोरकर बैलगाड़ी से तोहार रोकड़, गाँव दीहै सुरावल भेजवाय।"

वह दिन सुनत साहु बाय महाजन, धन-धन ठोंकत ताला बाय तकदीर।
"बल्ली न राजा बाय भिमली, जेकरे जोड़ी में मृतुर लोक में कोई नाहीं बाय।

इतना न राजा बाय बलवान, पृथबी का डगमग आसन हो जाय।
इतना न सुनी राजा भिमली, धड़ से करदेही कैदी[1] में बन्द।"

वह दिन बोलल धोबी बाय अजई, "सहुआ न सुनबा महाजन।
कहना न माना एठिन हमार; बल में राजा बाय भिमली।

कल में लोरिका न बाय सरदार, जेकर परगट भवानी अहिरे का बाय।
जेन देबी नाचत न दहिने बाय बायें," वह दिन तड़पत बाय बूढ़ कठइत।

"साहू बाउर न मति तोहार बउखले, तोहर अकिल हरले बाय भगवान।
ऊहै न अहीर जिन जाना, जे फेर माँगी बियारी में खाँड़।

धन-धन न पानी गउरा का, साहू कम सादी करे अइली।
ढेर तनिक राजा के देखब मंसार," इतना न बात तिनों कइले।

तब फेर बोलत गुरू बाय अजई, "सहुवा न सुनबा महाजन।
एकदम रेंगल सगरे पर चलवा, चलकर देख आवऽ पूत कठइत का।

जेन बीर भयल लोहा में तैयार, बराते के पूरा न 'जकसन'[2] देखऐबा।
जैसन तोहरे मन में बुझाई, एठिन न इज्जत दीहै तोहार।"

वह बखत तीन न बीरा बाय पान, एक बीरा कूंचत साहू बाय महीचन।
एक बीरा बूढ़ कठइता सरदार, एक बीरा के गुरु अजई बाय खइले।

तीनों न रेंङल ओठियन से बाय, चल जा नऽ सम्भू न सगरे के भीट।
जहाँ टिकल बरात फुन बाय, जाय कर घूमत तीनों मीला लऽखय।

लोरिका टहरत सगरे का भीट, बतीसों कसले समान लोहा का।
दहिने चमकल बिजुल बाय खाँङ, वह बीर जुटल अहीर कन्तित का।

जायकर करत जयरम्मी जब बाय, साहू से भयल जयरम्मी।
वह दिन बोलल पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाय नाम।

"सहुआ न सुनबा महीचन, कहना मानऽ एठिन हमार।
इहै न ओतन हमार गोतन, इहैं न प्रान भयल लोहा में अधार।

जौन सवा न लाख बरात जूझी, पीछे जाई जिन्दगी तोहार।"
इतना न हिम्मत साहू बाय सोचत, एकदम लौटल बजारे में जाय।

जेनकर चलत बजारे में हुकूमत, एकदम टेंट बाय निकलले।
जवन गड़त सगरे बाय भींट, पक्की न टूटत बाय बुनियादी।

---

१. जेल, २. जंक्शन, भीड़भाड़ युक्त, गुलजार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"बजार टिकत सगरे का बाय भींट, उदूं न बसल बाय बजार।
सौदा अनेक प्रकार का देखाय, जेकर जौन न आत्मा बाय मांगत।
ऊहै न कीमत बजारे में बाय," इतना न बात जब भयनी।
जितना न लिरिया सुरहुल में रहलिन, ओकरे पानी न रहल गगरी में।
गगरी लेलिन पानी खन्हियाय,[1] धोती न बसाता बाइं धऽरत।
तिरिया चलल लइन बानी जोर, कम करे नहान सगरे में।
ढेर जानऽ धूम बजार अनेत, बगल में बरात टिकल अहिरे का।
जात लखय लेकर परजात, सगरो लखय गउरा का सब लोग।
दू-दिन न अहीर बाय देखात, तिसरे दिन ऊहै न गति देखाय।
वह दिन झंखत न पूत कठइत का, कैसे मचिहैं रोहवा ले तुकार।
बहुत टाइम बीतत सगरे पर बाय, राम न नाम गुन गावे के ठाकुर।

समीक्षात्मक टिप्पणी—सँवरू के विवाह तथा उसमें पड़ी विघ्न-बाधाओं, उनके निराकरण से सम्बद्ध कथानक का उल्लेख भी प्रामाणिक रूप में प्रायः लिखित पाठों में नहीं मिलता। चनवाँ से लोरिक की होली, चनवाँ की माँ का सुरावल में सँवरू का विवाह करने का ताना और फिर विवाह की तैयारी बारात का डाइन द्वारा निगल लिया जाना, उद्धार, सुगनापुर के पड़ाव आदि का उल्लेख रहस्यात्मक होते हुए कौतूहलवर्द्धक भी है। इससे लोरिक का व्यक्तित्व क्रमशः निखरता ही गया है। ऐसे प्रसंग प्राप्त अन्य संस्करणों में या तो आये ही नहीं हैं, या आये भी हैं तो चलता रूप में ही। प्रस्तुत संस्करण में यह कथा समग्र और मूल कथा के रूप में ग्रहण की गयी है।

सारांश (58) राजा भिमली से विरोध—गाँव की स्त्रियाँ बाजार देखने आती हैं तो बाराती उन्हें अपमानित करते हैं। वे स्त्रियाँ गाँव में जाकर स्वामी से कहती हैं। इसी समय एक गड़ेरी भेड़ को लेकर सगरे के भीटे पर आता है। लोरिक के आदेश से बाराती भेड़ों को मार कर खाने लगते हैं। चारों ओर कुहराम छा जाता है। बाराती गड़ेरी को मारते भी हैं। वह जाकर राजा से सारा समाचार बताता है, किन्तु राजा तो छह महीने की नींद सो रहा होता है। गाँव की प्रजा इस विपत्ति-काल में उसे बुरा-भला कहती है। तब वह जागता है। राजा भिमली व्यग्र और क्रुद्ध होकर उठता है।

वह अपनी 'हजरिया साँह' लेकर सगरे पर फेंकता है। वहाँ आग लग जाती है। दुर्गा व्याकुल होकर इन्द्रासन जाती हैं और ब्रह्मा से पूरी घटना बताती हैं। ब्रह्मा दुर्गा से कहते हैं कि दो बूंद रक्त चुवा दो सब ठीक हो जायेगा।

---

१. खाली कर लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(59) युद्ध तथा लोरिक की विजय—इधर राजा भिमली युद्ध के लिए तैयार होता है। उधर लोरिक भी तैयार बैठा है। कठयित डण्डा लेकर अलग पैंतरा भाँज रहा है। सँवरु लोरिक से कहता है—'तुम युद्ध के लिए तैयार हो जाओ, पिता कठयित को बैठे रहने दो। ऐसा ही होता है। भिमली और लोरिक दोनों लड़ने लगते हैं। पहले तो लोरिक ही गिरता है परन्तु सम्हल जाता है। दुर्गा लोरिक की सहायता करती हैं और भिमली लोरिक के प्रहार से गिर जाता है। इस प्रकार दोनों में बड़ी देर तक लड़ाई होती है। भिमली का बार-बार सिर कटता है और कभी गंगा में, कभी समुद्र में, कभी प्रयाग, कभी ठाकुरद्वारा, फिर काशी तथा छठयें में इन्द्रासन जाता है। इस प्रकार बार-बार उसका सिर कटता और जुड़ता जाता है। जब सातवीं बार कटता है तो दुर्गा उसे लेकर लोरिक को दे देती हैं। तब तक लाश भी जमीन पर गिर जाती है। उसका सिर किले पर जा गिरता है। किले का राजा तथा उसके समस्त परिवार के लोग विलाप करने लगते हैं।

(60) सतिया का छल—लड़की सतिया सोलह सौ नागों की झाँपी (सींके का बना बक्स) खोलती है। नाग जाकर सभी बारातियों को डँसते हैं। केवल लोरिक दुर्गा की संरक्षता तथा चौकसी के कारण बच जाता है। नाग लौट कर पुनः सतिया के पास चले आते हैं। इधर छोहरी (छलना) का रूप धारण करके विष वापस खींचने के लिए दुर्गा सतिया के पास जाती हैं। सतिया नागों को खोलती है और नाग वापस जाकर अपना-अपना विष खींच लेते हैं। सभी बाराती पुनः जीवित हो उठते हैं। दुर्गा वापस आ जाती हैं।

गाँव की स्त्रियों के साथ बारातियों का दुर्व्यवहार

सुनबा न लोग गउरा का, एक एक बायँऽ घमंडुवा ले जवान।
एक-एक न तिरियन के पीछे, दू-दू न अहीर गयल लपटाय।
उन लोगन के लूटत इज्जत जब बाय, ऐसे न तैसे दिन बीतल।
लिरिया लौटत घरे बाय जात, अब चूक गयिल न लिरिया सुरहुल का।
ऊह ऽभाई सम्भू न सगरे के भींट, अहीर जोहत राह दु-चार दिना।
कौनों खबर न लागत बाय ठेकान, वह दिन जूटल न लेंहड़ भेंड़िन का।
जहाँ भेंड़ी न छेंड़ी का लेंहड़, पानी न पीयत सगरे में बाय।
पीकर ओल्हे भीटा सगरे का, जायकर लेंहड़ गयल डऽहऽर।
वह बखत कौनों न ओढ़र नाहीं लौकल, वह दिन बोलत पूत कठइत का।
"कहना मान ऽ एठिन हमार, जतिया न सुनबा परजाति।
सगरों न सुनबा गउरा का सब लोग, जहिया से छोड़ला गाँव बाय गउरा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तहिया से खस्सी न गोस[1] बाय छूटल, जितना न खत्सी पैबा सिंहारा।
छाँट कर लेबा लेंहड़े से हिंगराय, बाकी छेंड़ी न भेंड़ी जब बचिहैं।

काट-काट देबा तीरे पर पवार,[2]" अहीरे का कहत न देरी ओठिन लागल।
बराती के पहुँच गयलेन सब लोग, जेकर रहल छेंड़ी लेहले भेंड़ी।

वह फेर गारी न देत बाय गुफारी, अहिरे का कुरुख नजर हो जाय।
एकदम ऊठल अहीर जिदियायल, एकदम रेंगल मुटुका जाय बान्हत।

जायकर तान-तान मुटुका जब मार, केनहूँ का हाँथ न गोड़ बाय टूटल।
केनहू का झरत बत्तीसों बाय दाँत, वह दिन रोवत न ओठिन गँड़ेरी।

आपन न ठोंकत ताला बाय तकदीर, रोवत न रेंड्ल बाय गँड़ेरी।
चढ़ जान ऽ बमरी के दरबार, छली का लागल कचहरी जब बाय।

जायकर जूटल बाय ओठिन गँड़ेरी, रो-रो करत राजा के प्रनाम।
राजा न आसीरबाद बाय देत, "काहे न ब्याकुल बाय रोवत।

कौन गयल बीपत झहराय," वह दिन बोलत बाय गँड़ेरी।

राजा से शिकायत

"राजा न सुनवा महराजा, कहना माना एठिन हमार।

एक त तूँही राज में रहला बली, तोहरे से कहाँ का दुरानी[3] टीक जाय।
टीक जाय न सम्भू न सगरे के भींट, जितना लाइन न जोर कर रहल बजार।

उजार कर देहलेस सगरे पर टिकाय, जितना न तिरिया गाँव का।
जायकर करत सगरे पर बाईं नहान, कम करे नहान सगरे पर।

ढेर सा घूमे बजार छिनार,[4] सवा लाख गउरा का लोग।
धूम-धूम लेत इज्जत बाय सब जाय, राजा न दीपक जलत रहल सुरावल।

दीपक गयल राजा का बुताय, इतना न बतिझर रहला इज्जतदार।
घर भर का गयल इज्जत तोहार, राजा छेंड़ी न भेंड़ी हमहन का रहनी।

सारे देहलेस सगरे पर कबार, एको पूँछि धरे के न छुटनी।
टूट गयलिन जिन्दगी का रोजगार, कैसे न बालो न बच्चा हम्मन का जियहैं।

कैसे देबय रोल तोहार चुकाय, कह-कह रोवत गउवाँ जब बाय।

राजा भिमली के सरीर पर हाँथी की दँवरी जगाने के लिए

हहरलन राजा बाय बमरी, सोझय न कूँचत तख्ता पर माँथ।

"हो हो न दयी नरायन, का ब्रह्मा लिखला माँझे लिलार।
आज मोर गाँड़ू बेटवा ले जनमल, सारे सूतल नींद बाय दबाँय।

ओनके धरले नींद बाय छमाहीं," राजा सूनत भिमली ले बाय।

---

1. खसी का गोश्त, 2. फेंक देना 3. दूसरा, 4. दुष्टा, भ्रष्ट स्त्रियाँ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह दिन मन न ठठले बाय मन्त्री, चुगुला बोलल दरियाँ बाय सोनार।
"राजा न सुनबा महराजा; कहना मानऽ एठिन हमार।
जलदी हुकुम तूँ लगैबा, हाँथी देता दौरी नधवाय।
सात न हथिया का दौंरी, राजा भिमली के देहें के देतऽ घुमवाय।
जौन बखत करवट राजा जब लीहैं, तूँ फेर देहा सरेख लगाय।
जात न अहीर गाड़ देही, सगरे पर पता न लागी ठेकान।"
वह दिन घूमल दौंरी हाँथिन का, एकदम ऊँच न नीचे जब होय।
करवट न बीर बाय लेत, पड़पड़ टूटल नस भुजा का।
वह बखत कहत न राजा बाय बमरी, "गाँडू न बेटवा जनमल।
तूँ फेर सुतला नींद बाय दबाय, कहवाँ का बली टिकल दुरानी।[1]
टीक गयल सम्भू न सगरे के भीठ, जितना लाइन से पुराना बाजार बाय बसावल।
ले गयल सम्भू न सगरे का भीठ, घर घर इज्जत बाय लूटल।
बेटवा जलत दीपक बाय सुरावल, दीपक गयल सुरावल का बुताय,
इतना न सुनत राजा बाय भिमली, ऊठल न मरद बाय महियाय।[2]

राजा भिमली से लड़ाई

तड़-तड़ फूट बदन छत्री का, एकदम दाँत न अंङुरी बाय चबाय।
जायकर मारत धक्का ओटा[3] में, जैसे भादों दयी घहराय।
रेंङल न राजा न बाय रेंङावल, जायकर पहुँचल कोठी में बाय।
जहाँ गाड़ल साँह बाय हजरिया, जेकर पृथवी से साँह बाय कबरले।
वह दिन पृथवी आसन बाय डगमगाय, घर-घर गयनी टाटी[4] दियाय।
मारे न गुस्सा के मारन, राजा फेंकत साँह बाय उठाय।
जायकर गिरत साँह सगरे के मैदान, चौंदह न कोस के चौगिरदा।
तिनगी के कल्ले लपट जब बाय, देबी न दुर्गा बाय अनुहाइल।[5]
एकदम भगल इन्द्रासन बाय जात, जहाँ ब्रह्मा का लागल बाय दरबार।
तब ब्रह्मा न बोलत बाय इन्दर लोकी, "कहाँ बहिन भागल दुर्गा तयँ जात।
वह दिन बोलत न देबी बाय दुर्गा, अकुलायल न राजा बाय भिमली।
चौदह कोस में चौगिरदा नाहीं बाय रहतब,"[6] वह दिन तड़पत ब्रह्मवाँ बाह बिष्णू।
"देबी न सुनबा तूँ दुर्गा, जाय कर दू-टोप खून तूँ चुयैबा।
एकदम टेढ़ा साँह हो जाय," राजा बहुत न बात बाय बतियावत।
एको न कनून बाय लागत, वह दिन पलटल न राजा बाय भिमली।

---

1. गाँव के द्वार पर, 2. देंह तोड़ते हुए, 3. दलान, बैठका, 4. टट्टर, 5. कुछ भी रेख न पाने की स्थिति, 6. रहने का ठेकान।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जायकर भयल गँजड़े में तैयार, वह अनव न कसत बाय अनरखी।
गोड़वा बीर न पहिनत बाय तमान, बान्हत पेटी अजगर का।
जेमे साँह बड़े हो जाय, साठी गजे का दुपट्टा।
छत्री बान्हत सिर बाय घुमाय, जैसे बान्ह राजा बघेल।
डिल्ली न साही बाय जूता, छली देलेस एँड़ा चढ़ाय।
मरगस न मरगस बाय चञ्ढ़ल, जैसे दमोचत पहाड़ चल जाय।
परल नजर लोरिका का, हदहद[1] काँपत बदन ओकर बाय।
धन-धन न पानी सुरहुल का, जहाँ मरद फूटल बलिवान।
वह दिन लखत बूढ़ बाय कठइत, लेकर गयल छेंकना जकलाय।[2]
"बेटा अबर न मरले तैं दूबर, दूबर मरले अगोरी किसान।
हाँथी न मरला तूं अजरही[3], बाँह देला गउरा में पुजाय।
परल काम जोड़ी से, बेटवा फाटत गाँड़ तोहार।
तनिक घण्टा न छमीछा जाय बैठऽ, तनिक देखऽ बूढ़ का मंसार।"
लेकर डाँकल छेंकना बाय बुढ़वा, वह बूढ़ डाँकल 42 जाय हाँथ।
वह दिन बोलल धरमी बाय साँवर, "लोरिका मनबे कहल हमार।
बूढ़ न ददा लोहा लीहै, कहीं खाल न ऊँचे गोड़ पऽरी।
अब जूझ जाई ककवा ले हमार, के फेर जलत बाय दीपक गउरा का।
लोरिका दीहै दीपक बुझाय," वह दिन ऊठल बीर बाय लोरिका।
जायकर पकड़त चेंचुरा कठइत का, ओनके देहलेन जाजिम पर बैठाय।
"ददा जजिमें पर बैठ तूं जयबा, एठें राम लगइहैं बेड़ा पाऽऽर।"
उठल न अहीर कन्तित का, राजा जूटल भिमली बाय पास।
बात न चीत भयनी कोर,[4] हाँथ-बाँहीं'[5] देहलेन मचाऽय।
दूनों न बीर बाय बाजल, दोनों गिरल करवटे जब बाय।
भर देले लङ्ड़ी राजा भिमली, लोरिका के टूटत पँजरी के हाड़।
वह दिन ऊठल माल बाय धरमी, जायकर देलेस झगड़ा बरकाय।
ऐसे झगड़ा नाहीं ओरियैहैं, दू हाँथ कस लेबा तलवार।
द्वनों न चलल बाय, आपन न आपन ले ले बाय हरवा हँथियार।
वह दिन देखल हाल राजा भिमली का, बोलत न लरमें बा बोल।
"मरबे न मरबे तयँ अहीर, जौन तोर अवार के होई घाव।"
वह दिन बोलल पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिकी बाय नाम।
"राजा आगे न घाव चलाइब, न फेर पीछे रखब छिपाय।

1. तेजी से, 2. उतावला होकर 3. बीमार, 4. दुश्मनो, 5. हत्याबाहीं।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह दिन मन न ठठले बाय मन्त्री, चुगुला बोलल दरियाँ बाय सोनार।
"राजा न सुनबा महराजा; कहना मानऽ एठिन हमार।
जलदी हुकुम तूँ लगैबा, हाँथी देता दौरी नधवाय।
सात न हथिया का दौंरी, राजा भिमली के देहें के देतऽ घुमवाय।
जौन बखत करवट राजा जब लीहैं, तूँ फेर देहा सरेख लगाय।
जात न अहीर गाड़ देही, सगरे पर पता न लागी ठेकान।"
वह दिन घूमल दौंरी हाँथिन का, एकदम ऊँच न नीचे जब होय।
करवट न बीर बाय लेत, पड़पड़ टूटल नस भुजा का।
वह बखत कहत न राजा बाय बमरी, "गाँडू न बेटवा जनमल।
तूँ फेर सुतला नींद बाय दबाय, कहवाँ का बली टिकल दुरानी।[1]
टीक गयल सम्भू न सगरे के भीठ, जितना लाइन से पुराना बाजार बाय बसावल।
ले गयल सम्भू न सगरे का भीठ, घर घर इज्जत बाय लूटल।
बेटवा जलत दीपक बाय सुरावल, दीपक गयल सुरावल का बुताय,
इतना न सुनत राजा बाय भिमली, ऊठल न मरद बाय महियाय।[2]

राजा भिमली से लड़ाई

तड़-तड़ फूट बदन छत्री का, एकदम दाँत न अंङुरी बाय चबाय।
जायकर मारत धक्का ओटा[3] में, जैसे भादों दयी घहराय।
रेंङल न राजा न बाय रेंङावल, जायकर पहुँचल कोठी में बाय।
जहाँ गाड़ल साँह बाय हजरिया, जेकर पृथवी से साँह बाय कबरले।
वह दिन पृथवी आसन बाय डगमगाय, घर-घर गयनी टाटी[4] दियाय।
मारे न गुस्सा के मारन, राजा फेंकत साँह बाय उठाय।
जायकर गिरत साँह सगरे के मैदान, चौंदह न कोस के चौगिरदा।
तिनगी के कल्ले लपट जब बाय, देवी न दुर्गा बाय अनुहाइल।[5]
एकदम भगल इन्द्रासन बाय जात, जहाँ ब्रह्मा का लागल बाय दरबार।
तब ब्रह्मा न बोलत बाय इन्दर लोकी, "कहाँ बहिन भागल दुर्गा तयँ जात।
वह दिन बोलत न देवी बाय दुर्गा, अकुलायल न राजा बाय भिमली।
चौदह कोस में चौगिरदा नाहीं बाय रहतब,"[6] वह दिन तड़पत ब्रह्मवाँ बाह बिष्णू।
"देवी न सुनबा तूँ दुर्गा, जाय कर दू-टोप खून तूँ चुयैबा।
एकदम टेढ़ा साँह हो जाय," राजा बहुत न बात बाय बतियावत।
एको न कनून बाय लागत, वह दिन पलटल न राजा बाय भिमली।

---

1. गाँव के द्वार पर, 2. देंह तोड़ते हुए, 3. दलान, बैठका, 4. टट्टर, 5. कुछ भी रेख न पाने की स्थिति, 6. रहने का ठेकान।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जायकर भयल गँजड़े में तैयार, वह अनव न कसत बाय अनरखी।
गोड़वा बीर न पहिनत बाय तमान, बान्हत पेटी अजगर का।
जेमे साँह बड़े हो जाय, साठी गजे का दुपट्टा।
छत्री बान्हत सिर बाय घुमाय, जैसे बान्ह राजा बघेल।
डिल्ली न साही बाय जूता, छली देलेस एँड़ा चढ़ाय।
मरगस न मरगस बाय चऽढ़ल, जैसे दमोचत पहाड़ चल जाय।
परल नजर लोरिका का, हदहद[1] काँपत बदन ओकर बाय।
धन-धन न पानी सुरहुल का, जहाँ मरद फूटल बलिवान।
वह दिन लखत बूढ़ बाय कठइत, लेकर गयल छेंकना जकलाय।[2]
"बेटा अबर न मरले तैं दूबर, दूबर मरले अगोरी किसान।
हाँथी न मरला तूं अजरही[3], बाँह देला गउरा में पुजाय।
परल काम जोड़ी से, बेटवा फाटत गाँड़ तोहार।
तनिक घण्टा न छमीछा जाय बैठऽ, तनिक देखऽ बूढ़ का मंसार।"
लेकर डाँकल छेंकना बाय बुढ़वा, वह बूढ़ डाँकल 42 जाय हाँथ।
वह दिन बोलल धरमी बाय साँवर, "लोरिका मनबे कहल हमार।
बूढ़ न ददा लोहा लीहै, कहीं खाल न ऊँचे गोड़ पऽरी।
अब जूझ जाई ककवा ले हमार, के फेर जलत बाय दीपक गउरा का।
लोरिका दीहै दीपक बुझाय," वह दिन ऊठल बीर बाय लोरिका।
जायकर पकड़त चेंचुरा कठइत का, ओनके देहलेन जाजिम पर बैठाय।
"ददा जजिमें पर बैठ तूं जयबा, एठें राम लगइहैं बेड़ा पाऽऽर।"
उठल न अहीर कन्तित का, राजा जूटल भिमली बाय पास।
बात न चीत भयनी कोर,[4] हाँथ-बाँहीं[5] देहलेन मचाऽय।
दूनों न बीर बाय बाजल, दोनों गिरल करवटे जब बाय।
भर देले लङड़ी राजा भिमली, लोरिका के टूटत पँजरी के हाड़।
वह दिन ऊठल माल बाय धरमी, जायकर देलेस झगड़ा बरकाय।
ऐसे झगड़ा नाहीं ओरियैहैं, दू हाँथ कस लेबा तलवार।
दूनों न चलल बाय, आपन न आपन ले ले बाय हरवा हँथियार।
वह दिन देखल हाल राजा भिमली का, बोलत न लरमें बा बोल।
"मरबे न मरबे तयँ अहीर, जौन तोर अवार के होई घाव।"
वह दिन बोलल पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिकाँ बाय नाम।
"राजा आगे न घाव चलाइब, न फेर पीछे रखब छिपाय।

1. तेजी से, 2. उतावला होकर 3. बीमार, 4. दुश्मनो, 5. हत्याबाहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आगे घाव जौन हवंऽ खानदान क्रिया बाय अठ्ठान।"
इतना न सुनत बाय छली राजा भिमली, एकदम घूमल बाय लेकर साँह।
जौन दिन मारे पेटी अहिरे का, परगट न नाचत देखय देबी पुजमान।
अहिरे के बायें न दहिने कर दें, साँह गिरल धरती में बाय।
धार रति न रति बाय झऽरत, वह दिन बोलल आँख बाय बिलगाय।
छली चलल पैंतरा पर बाय, मार न टीका अहीरे का।
सनमुख नाचत न दुर्गा बाय माय, अहिरे के छोट न बड़ कर देलेन।
साँह गिरल धरती में बाय, धार रति-रति बाय झऽरत।
वह दिन हहरल न राजा बाय भिमली, आपन ठोंकत ताला बाय तकदीर।
हो-हो न दयी नरायन, का ब्रह्मा लिखला माझे तूँ लिलार।
दू-दू अवार चूक गयिल, मृत्युक गयौल हमार नगिचाय।
तिसरा न मारत साँह बाय घुमाय; अहीरे के मारत पोंगी।
जब खेलल न मरद बाय बीर लोरिका,जेन बीर चंफा न मरद डाँक जाय।
गिरल न साँह बाय धरती में, एकदम गयिल धरती में समाय।
अहीर ओसर न ओसर बाय नरियाय[1], ओसरी पर कुइयाँ मरत पनिहारी।
पक्का न लोहा तूँ अँगेजला,[2] अब कचुलइया[3] न थमवा तनी हमाऽर।
वह दिन सुरावल फेंकले बिजुल खाँड़, तनिक जेनकर चारी न अङगुर बाहर भयनी।
लपट तड़प गयल अकासे में बाय, नीचे न मरले बाय दवनहरा।
पोरसन लवर बानी गुँगुवात, फिरल न पलक छली का।
खाँड़ गिरल गरदने पर बाय, उड़ल न सिर भिमली का।
लास नाचत न पैंतरा पर बाय, जायकर गंगा जी में गीरल।
गोता न मारत देवतन के धाम, आयकर बैठत खाँपयर[4] बाय।
फेर से घूमल पलक छली का, खाँड़ गिरल गरदने पर बाय।
उड़ल न सिर भिमली का, जायकर गिरत समुंद्र में बाय।
गोता न मारत बाय सिर वहाँ, दर्सन करत देवतन का सब बाय।
जायकर बैठत लासी[5] पर बाय, तीसर न घूमल पलक छली का।
खाँड़ गिरत गरदने पर बाय, ऊड़त न सिर भिमली का।
एकदम भागल प्रयाग में जाय, जायकर गोता बाय ऊहाँ मारत।
सगरों करत देवतन का धाम, आयकर बैठत खापा पर बाय।
चौथी न घूमल पलक छली का, खाँड़ गिरल गरदने पर बाय।
उड़ल न सिर भिमली का, चल जात ठाकुर के दुवार।

---

1. चिल्लाया, 2. चलाये, 3. कच्चा, हलका, 4. सिर पर, जोड़पर 5. लाश।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जायकर गोता न ऊहाँ बाय मारत, सगरों करत देवतन का धाम।
आयकर बैठत खापा पर बाय, पंचयें न पलक बाय फीरल।
खाँड़ गिरल गरदने पर बाय, एकदम ऊड़ल सिर भिमली का।
चौनीस घूमल मुलुक[1] बाय ओर, आयकर बैठत लासी पर बाय।
छठयें न मारत सिर छली का, अब सिर भगल इन्द्रासन बाय जात।
जहाँ ब्रह्मा का लागल दरबार, "इहै न गति तोहें करे के रऽहल।
बली करके काहे भेजला मृत्युलोक," वह दिन बोलल ब्रह्मा बाय बिस्नू।
"राजा न सुनबा भिमली, जैसे एक बेरी भेंट करला।
लौट कर एक बेरी हमरे पास आवऽ, अमर न राजा तोहें बनाइब।
खोजले तीनों मुलुक बीत जाय, राजा खोजलें मिरतुक मिली तोहरा।"
वह दिन लौटल सिर छली का, जायकर बैठत खापा पर बाय
सतएँ न घूमल पलक छली का, खाँड़ गिरल गरदने पर बाय।
भागल सिर जाय भिमली का, मइया पकड़त दुर्गा बाय जात।
लोरिका के सिर धरवउले, ओठिन घंटा छमीछा बीत जाय।
लास बानी डगमगातय, गिरल लास बाय छली का।
बिगहन गयनी जमीन तोपाय, फेंकत न सिर छली का।
बमरी के गिरल किला पर बाय, लखै न सिर बेटवा का।
राजा कूँचत तख्ता पर माँथ, "हो हो न दयी नरायन।
का ब्रह्मा लिखला माँझे तूँ लिलार, धन-धन न पानी गउरा का।
देबी दुर्गा लखले बाय बेड़ा पार, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।

सतिया के छल से सवा लाख बाराती सर्प-दंश से मत्यु के गाल में

भजली नाम हो तोहार, देबिया न सुमिरली भगवती।
दुर्गा जानऽ सवती तोहार, जितना किर्तन गयल सतजुगी।
जोड़ कर देबा कड़ी बैठाय रोवत न राजा बाय छली।
सोझय कूँचत तख्था पर माथ, राजा न किला के रोवे।
सगरों रोवत किला के परिवार, कैसों न दिन बाय बीतल।
रात गयल बखत नगिचाय, जौन न लड़की बाय सतिया।
आधी न रात का समय, सवा लाख बरात सूतल जब बाय।
सतिया सत्त का झाँपी ले ले बाय निकाल, जेमें सोरह स बाँयऽ नाग।
लेकर झाँपी से बाय खोलल, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
नाग भेजत सगरे पर बाय, सूतल बरात अहीरे का।

---

1. मुल्क।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"सगरो जाइ के नाग तूं लोग डँसबा, सवा लाख मुरदा बरात कर देबा।"

सोरह सैं डहरल नाग सतिया का, जूटल न जजमें पर बाय।
घूम-घूम काटत बराती के बाय, अकसर बचल बीर बाय लोरिका।

चौनिस छेंकले नाग ओके जाय, ओपर देबी न दुर्गा का बाय पहरा।
चौनिस नाग फन लेकर ऊठ, लवर देत दुर्गा देहैं से बाय।

नाग चल जात पछोल,[1] दू-चार पहरा बाय देखत।
नाग गयन खिसियाय, एकदम लौटल सतिया के दरबार।

सतिया सोरह सै नाग बाय गऽनत, गनकर देलेस झाँपी में बन्द।
बेंवड़ा न फाटक बाय देत, एकदम सूतल दीपक बुताय।

लोरिक के प्रयास और दुर्गा की कृपा से बारात पुनः जीविन

वह दिन सूनऽ न हाल सगरे का, परगट न चमकल देबी बाय दुर्गा।

माई धरत छोहरी के रूप, "बरुवा न सुनबे फुलझरुवा।
दरवाँ मनबे कहल हमार, सवा न लाख बाय बरात।

सतिया देलेस मुर्दा बनाय, तनिक पहरा करबा चौचस[2]।
मट्टी में कौनों सनसा नाहीं बाय, कुक्कुर न देखा बिलार[3]।

जादा देखा बँड़वा न सियार," इतना न बात कहत देबी दुर्गा।
माई पहिनत चीर दखिन का, जेमे अंगुर न अंगुर बाय तार।
इतना कहत बात जब बाय, देबी उड़ल बब बाव बतास।

जाय कर चूवल सतिया के, फाटक देलेस बेंवड़ा बाय पीट।
वह दिन कबरल नींन सतिया का, सतिया भूत कहे बैताल।

के फेर चोर न कहत बदमास, वह दिन बोलल देबी बाय दुर्गा।
"सतई के मनबे कहल हमार, न तऽ एठे भूत न आल बैताल।

न तऽ भाई चोर आल बदमास, हम फेर हई माई देबी दुर्गा।
तोसे करे अयली मुलाकात, खोलत न फाटक बाय सतिया।

दीपक देलेस कोठी का जलाय, दू-दू न काली कुरसी बाय लगवले।
एक पर बैठत देबी बाय दुर्गा, एक नार[4] बैठत सतिया जब बाय।

वह दिन बोलत देबी माई दुर्गा, "कहना मानऽ एठिन हमार।
बड़ा न भारी धोखा तूं करला, बूड़ गयल नाम हमाऽर।

पूड़ा न जोगिता मिलावल, बरात आयल सुरावल पास।
जलदी न लहर तूं बटोरबा, लवा लाख देबा बरात जियाय।"

तब फेर बोलत सतिया वही दम, "मइया लौटे अपने धामें।

---

1. पिछड गया, 2. कायदे से, 3. बिल्ली, 4. स्त्री, नारी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमार जूझल पीठ का भार, हम नाहीं मानब कहना तोहार।"

बहुत न देवी बाय समझावत, सतिया मानत कहल जब बाय।
"मइया न सेन्हुर पैवा सोहगयली,[1] कैसे करबा सादी तूँ बियाह?"
वह दिन बोलल देबी बाय दुर्गा, "सतिया बाऊर न मति तोयँ बउखले।

अकिल हरले श्री बाय भगवान, तीनों न लोक में होई समान।
ढूंढ़ कर लेबा समान निकाल, आगी न पानी के नाहीं बाय डऽर।

सतिया न मनबे कहल हमार, जलदी न नाग तूँ खोलबा।
गन कर देबा सगरे पर डहराय, जब जिन्दा बरात करके लौटिहैं।

तब छोड़ब दुवार तोहार," वह दिन सोलह न सै बाय नाग खोलल।
जायकर देलेस सगरे पर डहराय, जैसे-जैसे नाग न बीख[2] बाय कटले।

वैसे-वैसे बीख बाय सुरुख,[3] सवा लाख बारात जिन्दा करके।
एकदम नाग लौटल सब बायऽ।

सतिया सोरह सै नाग बाय गऽनत, गन कर बन्द न करत भाँपी में करत।
वह दिन देबी न दुर्गा बाय ऊठल, एकदम बब न भयल बाय बतास।[4]
राम न राम गुन गावें के ठाकुर, भजली नाम हो तोहार, देबिया न सुमिरनी भगवती।
दुर्गा जानऽ सक्ती तोहार, जितना कीर्तन गयल सतजुगी।

जोड़कर देबा कड़ी बैठाय, होत न भोर बाय सबेर।
पुरुष कौवा मचवले बाय रोर, सुरुज न रोसनी में अयनऽ।

सवा लाख ऊठल बारात जकलाय, सगरे पर गयल तीरे पर छितराय।[5]
सब कोई दिसा न होत बाय मैदान, कुल्ला करत गलाली सब बाय।

सवा लाख कूँचत मघइया बाय पान, वह दिन बोलल पूत कठइत का।

सारांश (61) **हंस के जोड़े द्वारा लोरिक की सहायता**—भोर होने पर सभी दैनिक क्रिया में लग जाते हैं। लोरिक अपनी तमान पहनकर गंगा जी के तट पर निकल जाता है। वहाँ एक हंस-दम्पति रहता है जो अंडा देता है किन्तु एक साँप, जो पेड़ में रहता है, रोज उसे खा जाता है। लोरिक उस साँप को मार डालता है। इस पर हंसिनी प्रसन्न होकर लोरिक को मिठाई खिलाने को कहती है। लोरिक सात समुद्र पार करने में उसकी सहायता चाहता है। हंस दम्पति उसे अपने पंख पर बिठाकर सात समुद्र पार करते हैं। दुर्गा भी साथ ही रहती हैं।

(62) **अगिया-कोयलिया**—लोरिक पातालपुरी पहुँचता है वहाँ अगिया कोयलिया दोनों बहिने उसे मिलती हैं। दुर्गा वहाँ उनसे ननद का नोता जोड़ती हैं

---

1. विवाह के समय का सिन्दूर-पात्र, 2. विष, 3. खींच लिया, 4. वायु-वेग में, 5. तितर-बितर हो गये।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और लोरिक को शिशु रूप में अपनी गोद में ले लेती हैं। अगिया-कोयलिया लोरिक (शिशु) के विषय में जानना चाहती हैं। वह बहुत रोता और छरिया जाता है। तब वे उसके रोने का भी कारण पूछती हैं। दुर्गा बताती हैं कि एक डिबिया थी जो खो गई, उसी के लिए इतना रो रहा है। अगिया-कोयलिया डिबिया खोजकर ले आती हैं जिसे प्राप्त कर लोरिक प्रसन्न होता है। उस डिबिया में सोहगैली या सिन्दूर है। अगिया-कोयलिया दुर्गा को पहरा पर बिठाकर स्नान करने चली जाती हैं। दुर्गा को समय मिल जाता है। वह लोरिक को लेकर नदी के भीटे पर आती हैं। हंस का जोड़ा उन्हें अपने पंख पर बिठाता है। सब-के-सब अपने स्थान पर लौट आते हैं। छः पाटों (भीटों) को पार कर जब चिड़ियों का जोड़ा सातवें पाट पर पहुँचना ही चाहता है, तभी दुर्गा से तेरह में से एक दोना सामान माँगता है। लोरिक ऐसा करने से मना करता है। चिड़िया कहती हैं—'हम लोग गिरकर मर जायेंगे तब तुम अपने स्थान पर नहीं जा सकोगे।' इस पर लोरिक अपनी जाँघ का माँस काट कर हंस-हंसिनी का दे देता है। दुर्गा लोरिक के शरीर में उस कटे हुए भाग को चाट कर ठीक कर देती हैं। हंस-हंसिनी दोनों अपने स्थान पर वापस आ जाते हैं। लोरिक और दुर्गा भी शभू के सगरे के भीटा पर पहुँच जाते हैं।

वह दिन बोलल पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाय नाम।
"ददा न सुनवा तूँ कठइत, गुरु सुनवा मोर अजई।
सवा लाख टीकल बरात सगरे पर, सगरे का करा पहरा बरियार।
अनब न कसत बाय अनरखी, गोड़वा गुलबदन बाय तमान।
अहीर बीर कसत पेटी अजगर का, जेमे गोली ठहक खा जाय।
पहिरत जिरही लोहे का, जेमे नौ मन लोहा अमाय।
"साठी न गजे का दुपटटा, अब बीर बान्हत सिर बाय घुमाय।
जैसे बान्ह राजा बघेल, तरकुस न गूंजे का पनहीं।
अहीर चाँपत एँड़ा चढ़ाय, धरत पागी लरमें का।
जेमें मेघ न डमरु घहराय, बाएँ न ओड़न बायँ धयले।
दहिने चमकल बीजुल बाय तलवार, मूँहें में बीरा बाय दबवले।
जैसे बरत सुरुज का जोति, मरगस न मरगस बीर चऽऽलल।
जैसे दोमत हाँथी चल जाय, रेंङल न अहीर बाय रेंङावल।
जाय कर जूटल गंगा जी का बाय तीर, जहाँ पेंड़ बरगद का बाय।

लोरिक द्वारा हंस-हंसिन की सहायता

जेन पर हंस-हंसिन का बाय खोता,[1] नेम से रोज बच्चा लोग पाऽर।
लौट कर लखत पुत्तर का नाहीं मूँहं, लहटल[2] साँप फनिग।

1. घोंसला, 2. परचा हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बीन-बीन रोज बच्चा खइले जाय, वह बखत जूटल अहीर बाय लोरिका।
चलल न साँप हहरत जात बाय, पैड़े पर बच्चा न खाये के बेंवत।[1]
घूमाय कर मारत डंडा बाय, मार कर तोपत साँप के बाय।
तब तक हंस न हंसिन बाय लौकल, हंसिन लखत बच्चा खोता में बाय।
टप से बीन कर गोदे में बाय उठावत, बच्चन के ले ले दूध बाय पियाय।
बच्चा पीयत न खात बाय छोड़ले, "सुनबा न हंस-हंसिन।
लौट कर देखत पुत्तर[2] का मुँह, पहले पैड़े के नीचे जौन मुसाफिर बाय।
पहले ओकर आत्मा जाय कर भरबा, पीछे करबा सेवा ले हमार।"
वह दिन हंसिन ऊहाँ से बाय ऊड़ल, जाय कर बजारे में बाय घूमल।
जहाँ रखल मिठाई बाय पँचमेल, जायकर अँगुरी से परात में उठवले।
लेकर चुवल गंडाजी के बाय तीर, जायकर लोरिका के आगे बाय रखत।
लोरिका मारत आसन वही बाय, भर कर पेट मिठाई खात वही बाय।
पानी पीयत गंगाजी का बाय, वह दिन हंसिन न बच्चा बाय पियावत।
तब फेर बोलत हंस बाय हंसिन से, बहुत न सेवा बाय बजवले।

हंस हंसिन को पीठ पर सवार होकर लोरिक द्वारा सात समुद्र पार की यात्रा

"जवन माँगन[3] तू मँगबा, पूरा देबे मँगनी पुजाय।"
वह दिन बोलत पूत कठइत का, जेकर दुलर लोरिका बाय नाम।
"हमें भारी जरूरत बायीं, सात समुंदर सोलह घाट।
बीचे देबा टापे पहुँचाय, जायकर हमहूँ के पहुँचौले बाय।
सेन्हुर लेबे जाइब," वह दिन हस न हंसिन बाय बोलत।
"गोटी लेबा गुलैला[4] लहाय, जायकर तितिल न लावा ले मरबा।
चौदह दूना कैलेबा लहाय, तब फेर आवऽ हमहन के पास।"
अहीर गोटी न गुलैला बाय लहवले, नदी के तीरे गयल छितराय।
बहरे मारत न पीटत बाय लहावत, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
देबिया न सुमिरली भगवती, दुर्गा जानऽ सक्ती तोहार।
जितना कीर्तन गयल सतजुगी, जोर कर देबा कड़ी बैठाय।
तेरह न दूना बाय गोस[5], अहीर लेले तीरे पर लहाय।
मारत न पीटत बाय जिदियायल, लेकर लौटल हंस-हंसिन के पास।
हंसिन न बाल-बच्चा बाय पियावत, पियायकर देले खेते में कऽर।

---

1. उपाय, 2. पुत्र, 3. वर, 4. जिससे चिड़ियों का शिकार किया जाता है, 5. गोश्त।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकडेना हंस एक डेना[1] हंसिन देलेन जोर, एक-एकडेना चलल दोनवन के बाय ।
जायकर बैठत पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाय नाम ।
बीच न डेना पर बाय बैठल, भुजा पर देवी न दुर्गा वाय असवार ।
जेनकर सात समुंद्र सोरह घाट, जाती के[2] सात पाट बाय पाल ।
गयल एक-एक दोना फाड़ पर देत, सात न पाट जब डाके बीचे परलचान ।
लेकर हंस न हंसिन बाय बैठल, लोरिका उत्तर टप्पा पर भयल ठाढ़ ।
जायकर देता न सेनी बाय करत बिनती, "तनिक आसन हमके तूँ देवा ।

दुर्गा का स्त्री रूप धारण करके अगिया-कोयलिया[3] से सतिया का सोहगयली प्राप्त करना

हम चल जावे पताले न पाल, तनिक परल जरूरत बरियार ।"
वह दिन देवी न दुरुगा बाय सम्भरल, मइया गैनी रेता बिलगाय ।
सोझय न अहीर बाय समायल, कुछ दूर जात न पैड़े में बाय ।
देवी न दुर्गा जौन बाड़य, मइया धरत जनानी के रूप ।
लोरिका के लड़िका बाय बनवले, माई लेलेस गोदे में उठाय ।
जायकर जूटत पताले बाय धाम, जहाँ सेन्हुर न सतिया सोहगैली ।
वहाँ दून्नों अगिया-कोइलिया बहिन, जेन कर परल पहरा दूनों का बाय ।
आयकर देवी न दुर्गा जौन बाइन, ऊ फेर बनत ननद ओनहन का ।
दुर्गा भौजी न भौजी का नताई, अगिया-कोइलिया दूनों बहिन कहके ।
तब तक रोवत लड़िका बाय लोरिका, लड़िका गयल बहुत छरियाय ।
अगिया न कोइलिया दूनों बहिन, पूछत न बानी लड़िका का दस्तान ।
"कैसन रोवत गदेला[4] बाय तोहार," वह दिन बोलल देवी बाय दुरगा ।
"भौजी मनबा कहना हमार, एक ठे अम्मा न डिबिया रऽहल ।
ऊहै न गयोल पैड़े में भुलाय, वही से लड़का करत बाय हैरान ।"
दुन्नों न हलल कोठी में अमाइल, जायकर सेन्हुर रहल सोहगैली ।
लमकी[5] देती लाल के बाइन, तब फेर पवलेस लड़का बाय लोरिका ।

मृत्यु लोक को पुनः वापस

ऐसे तैसे कुछ न बखत बाय बीतत, तब बारह दिन वाय बजत ।
दूनों बहिन करै न गैनी नहान, दुर्गा के देले पहरा पर बैठाय ।
तब फेर दुर्गा मोहलत[6] पवले, लेकर समान निकलल मृतु बाय लोक ।
आयकर रेता ऊपर बाय लौकल[7], धरती जस न तस हो जाय ।

---

1. पंख, 2. जाते समय, 3. अगिया-कोयलिया का नाम असम्भव को सम्भव करने के लिए लोक-विश्रुत है, 4. शिशु, 5. लम्बी, 1. अवकाश, 2. दिखलाई पड़ीं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूरगा बब भयल बतास, लोरिका हो गयल सरदार।
लेकर सेन्हुर धइले बाय सोहगैली, लेकर बैठत डेना पर बाय।
दोनों न लेकर चिड़िया बाईं ऊड़ल, पाट छव न डाँक ऐनी।
अन्तिम पाट बच गयल एकठे, दोना तेरह रहल समान।
एक दोना माङत जब चिड़िया बाईं, लोरिका कइ गयल इनकार।
वह दिन बोलत हंस बाय हंसिन, "लोरिका भारी न गलती तूं कइले।
कुछ कहल सरीरे से नाहीं जाय, एठे हमहन धारा में गिरकर मऽरब।
बाल बच्चा जोहत हमार मर जइहैं, तूं बीर गिर दहे मर जयबा।"
सवा लाख जोहत बरात सगरे पर, लोरिका चाकू कठारी बाय काढ़त[1]।

लोरिक द्वारा अपनी जाँघ का मांस काट कर चिड़ियों की भूख शान्त करना

थोड़ा मांस काटत दहिने जाँघ का बाय, देत न चिड़ियन के दूनों बाय।
धन-धन न देबी दुर्गा बाय लऽखत, दहिने चाँपत जाँघ जब बाय।
जैसन लौक बदन अहिरे का, दुर्गा जस न तस कर दे।
लेकर आइल हंस बाय हंसिन, गंङा एही न पार के उतार।
हंस-हंसिन आपन बाल बच्चा देखे, लोरिका कुल्ला न करत बाय गलाली।
पानी पीयत गंङा जी में बाय, एकदम धइलेस राह वही दम।
हाँथे में सेन्हुर ले ले बाय सोहगयली, अहिर रेंङल सुबा बाय रेंङावल।
चल जाय सम्भू न सगरे के भीट, जेन कर सवा न लाख बाय बरात।
धरमी के टीकल सगरे पर बाय, जायकर जुटत अहीर कन्तित का।
जायकर भयल बराते में ठाढ़, कपड़ा न देहें के उतारत।
पेटी देलेस लोहा बाय खोल, जायकर करत नहान लरमें का।
कपड़ा बदलत वही दम बाय, जायकर बनल रसोई सगरे पर।
अहीर बैठत न करत बाय नहान, खाई न पी के भयल समतल।
कुल्ला करत गलाली जब बाय, हाथ न मूंह अहीर धोयले।
हाँथ पोछत ठहरे[2] से उठ जाय, जायकर लागत बीरा पाने का।
अहीर कूंचत मघइया बाय पान, अनव न दाबत बाय अनरखी[3]।
अब बीर गुल न बदन बाय तमान, जे फेर बान्ह पेटी अजगर का।
जेमे गोली ठहक खा जाय, साठे न गजे का दुपट्टा[4]।
अहीर बान्हत सिर बाय घुमाय, जैसे राजा न बान्ह बघेल।
कसत न जिरही बाय लोहे का, जेमे नौ मन लोहा बाऽ अमाय।
अब बीर धरत पागी लरमें का, जेमे मेघ डमरु घहराय।

---

1. निकालता है, 2. भोजनालय, 3. कुर्ता, 4. चादर।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समीक्षात्मक टिप्पणी—राजा भिमली से विराध, युद्ध, सतिया का छल, हंस की पीठ पर बैठकर सात समुद्र पार की यात्रा, अगिया-कोयलिया से सोहगैली प्राप्त करना, नाग लोक की यात्रा करना आदि ऐसे प्रसंग हैं जो अन्य पाठों में नहीं मिलते। इन घटनाओं के समावेश से कथा को गति मिली है तथा नायक को पराक्रम दिखाने का भी अवसर मिला है। इस प्रसंग से दुर्गा का चरित्र भी निखर कर सामने आया है। वह नायक की सर्वत्र सहायता करती हैं। इस दृष्टि से भी प्रस्तुत पाठ की कथा अधिक प्रामाणिक तथा महत्त्वपूर्ण हो गयी है। भोजपुरी पाठों में इस घटना का उल्लेख हुआ तो है किन्तु प्रस्तुत पाठ में इसे रुचिकर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सारांश (63) **बारात की विदाई**—लोरिक कपड़ा बदल कर बमरी के किले पर पहुँचता तथा सतिया को भौजी कहकर प्रणाम करता है। वह यह कह कर कि शादी की शीघ्र व्यवस्था होनी चाहिए, बारात सगरे के भीटा पर आकर टिकी है, वापस चला जाता है। राजा बमरी बारात की तैयारी करने लगता है।

बारात दरवाजे पर आ जाती है। विवाह सम्पन्न होता है। राजा बमरी रोकर लड़की की विदाई करता है। दहेज का काफी सामान भी देता है।

अब सँवरू की बारात लौटकर बरईपुर आती है। वहाँ बरई की लड़की मिलती है। वह लोरिक के साथ चलने को हठ करती है। लोरिक उसे अनेक प्रकार से समझाने का प्रयास करता है। अन्त में वह उसे वहीं पर छोड़कर गउरा को प्रस्थान कर जाता है। बरई की लड़की बहुत दुःखी होती है। बारात नौ दिनों में घर लौटती है। नव-वधू का गृह-प्रवेश होता है। सँवरू सब को प्रणाम करता है और सबसे आशीर्वाद प्राप्त करता है। दो-चार दिन तक गउरा रहने के उपरान्त सँवरू अपनी पत्नी को लेकर बोहा चला जाता है और आराम से रहने लगता है।

(64) **देवी की स्थापना**—देवी लोरिक से पूजा माँगती हैं और आदेश देती हैं—'अपने द्वार पर अपनी कुल-देवी के रूप में मेरी स्थापना करो।' लोरिक देवी की इच्छा का पालन करता है।

(65) **प्राण इन्द्रलोक में**—इधर ब्रह्मा अपना दूत भेजते हैं, जो पिंजड़ा का जीव लेकर इन्द्रलोक जाता है। जीव दूत से निवेदन करता है कि वह उसे छोड़ दे ताकि वह मिट्टी में जाकर समा जाये। ऐसा ही होता है। जीवात्मा मिट्टी में समा जाती है तथा सबको समझाती हुई कहती है—'घबड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है। जितने दिन तक मैं मृत्यु-लोक में थी, तुम सब की सहायता करती रही, अब तो इन्द्र-लोक में ही रहना लिखा है। तब भी, तुम जब स्मरण करोगे, मैं तुम्हारी सहायता के लिए आ जाऊँगी।' इतना कहकर प्राणवायु इन्द्रलोक गमन कर जाती है। सब लोग अपने-अपने काम में लग जाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिक का बमरी के राजा से भेंट : विवाह का प्रस्ताव

मरगस न मरगस बीर बाय रेंङल; जैसे रेंङल पुलिस बरियार ।

जायकर हल गयल किला बमरी के, सतिया मिलल डेंहुड़ी[1] में बाय ।
लोरिका करत पलगी भौजी कह के, सतिया लाल कुरुख हो जाय ।

"बाबू कहाँ न ओतन तोहार गोतन, उलटा देहला गारी तूँ चढ़ाय ।"
वह दिन बोलल बीर बाय लोरिका, दिहलेन पूरा न जोगिता ले मिलाय ।

"भौजी आयल बरात सुरावल बाय, कहाँ न ससुर बाय मोर बमरी ।
के फेर करिहैं सादी मोर बियाह; बहुत दिन बीतल सगरे पर ।

चयन लागत नाहीं सगरे के बाय भींट," सतिया से मूँह न ठुठिया[2] बाय होत ।
लोरिका चढ़ जाय किला बमरी का, जहाँ छली का बनल बाय दरबार ।

एकदम तख्ता बनल बाय दरबार, राजा बैठल बमरी जब बाय ।
सहारो बैठल कचहरी के सबलोग, वह दिन राजा न रोवत बाय बमरी ।

ढहर-ढहर बहल नैना से बाय नीर, समने[3] लखत सिर भिमली का ।
भारी रोवत किरोधे में बाय, वह दिन बखत जूट गयल पूत कठइत का ।

जेकर दूलर लोरिका बाय नाम, जायकर करत बात राजा से ।
"ससुर न सुनबातूँ बमरी, राजा मानऽ कहल हमार ।

बहुत न देरी बाय होत, सादी कर दा सुरावल में हमार ।
अगर राय से सादी कर देबा, नताई बनल रही हमार ।

राजा द्वारा विवाह की अस्वीकृति

कहाँ जबरी न सादी होई बियाह, ओमें भारी कोर[4] हो जाई ।"
अहीर बहुत तरह से बाय बतियायल, राजा एको न देत बाय जबाब ।

छली रोवत आँख बिलगाय, माँथ कूँचत तख्ता पर बाय ।
तड़पल दस-बीस गोली, राजा कहकर किला से बाय जात ।

"सगरों जलदी इन्तजाम कराकर, खबर देबा सगरे पर पठवाय ।
सवा लाख उठी बरात ऊहाँ से, आयकर सादी ले करब बियाह ।"

उतरल न सीढ़ी बाय बीर लोरिक; सतिया बैठल चननी पर बाय ।
लोरिका मारत मुसकी बाय जात, "भौजी कौनो हरजा जीन तूँ मनबा ।

सादी के गइल जोगिता नगिचाय[5]," रेंङल न अहीर बाय रेंङावल ।
एकदम गयल बराती में बाय, जहाँ सवा लाख बाय बरात ।

धरमी के करत मौज बाय, राम न राम के गुन गावै के ठाकुर···· ।

---

1. भीतरी कक्ष, 2. कहा-सुनी, 3. सामने, 4. दुश्मनी, 5. समीप आ गयी है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देबिया न सुमिरनी भगवती, दुर्गाऽ जान सक्ती तोहार ।
जितना कीर्तन गयल सतजुगी, जोर कर देबा कड़ी वैठाय ।
बेगर पूछले न जँचले, सवा लाख ऊठल बरात जब बाय ।

संघर्ष की स्थिति उत्पन्न :—

जायकर छेंकत किला छली का, उदमत[1] देलेस दुवारे मचाय ।
रोवत न राजा बाय बमरी, आपन ठोंकत ताला बाय तकदीर ।
कितनो न राजा दई के बाय जोर, "एक त लड़िका कटल जुझार ।
एक त ओकर बिपत भइले, दूसरे लड़की के सादी बाय देखात ।
दुसरे अहीर बाय ललकारत, राजा कर दा सादी तूँ हमार ।
तब खरीयत किला पर बाय," वह दिन आडर राजा बाय लगवले ।

विवाह सम्पन्न : बारात की विदाई

जेन कर माड़ो न थुन्ही होत बाय तैयार, एक बद जाला मोकाम सतिया का ।
जहाँ पण्डित न नाऊ बाय बटोरत, चौक चन्नन देलेबाय पुरवाय[2] ।
धीरे-धीरे गइल साइत नगिचाय,[3] छली एक छीन धोती बाय पहिनत ।
गोड़े सोन न खड़ाऊँ बाय देखात, उतरल न सीढ़ी किला का ।
आयकर टिकत मड़ये में बाय, अहीर का लागल बरात दुवराँ से ।
बगल में पड़ गयल जनवास, बाजा न बाजत बाय अनेत ।
सतिया क सादी गयिल बाय नगिचाय, वह दिन आजी न भाजी के बाय बेंवत ।
बरछा[4] का करत बाई इन्तजाम, अहिरे के तीलक बरछा ले चढ़ावत ।
ढहर-ढहर बहे नीर छली का, रो-रो पूजत बाँव धरमी का ।
डँट कर सादी बैठल बाय बियाह, होत न सादी बाय सतिया का ।
जौन दिन सादी न हो गयल बियाह, रात टिकल बाड़े बरियात ।
वह दिन होत न भोर बाय सबेर, सवा लाख ऊठल बरात खड्गार ।
जायकर दिसा न मैदान होत बाय, कुलवा होत गलाली में जाय ।
बमरी न राजा के दरबार, जायकर कहत आँख बिलगाय ।
"ससुर न सुनबा बमरी, राजा कहना माना हमार ।
बहुत बीतल सगरे पर दिन, अब नीक नाहो लागत सुराबल बाय पाल ।
जलदी कर दा बिदाई राजा हमार, तब खारीयत[5] दुवारे पर बाय ।"
रोवँ न राजा बाय बमरी, छली ठोंकत ताला बाय तकदीर ।

---

1. हलचल, 2. चौका पुरवाया गया, 3. नजदीक आ गई, 4. वरच्छा, 5. अच्छा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भगवन भारी बिपत तूँ डलला, सुरहुल किला हमरे भण्डार।
रोय-रोय करय बिदाई लड़की का, दइजा कढ़त दहेंड़।
जायकर जूटल जजमें पर बाय, दइजा न सपूरत[1] बाय देलेन।
रोय-रोय जीये के हँटावत बाय जंजाल, रोवत न लड़की छली का।
सतिया रोय जौन बाय बेजान, अटई रोवै बन बटई।
कुइयाँ झुरुक रोवै पनिहारी, एक न सतिया के रोवै।
सगरो रोवत सुरावल के बायऽ लोग, जितना देत-लेत बाय राजा सें।
सतिया के देत न दइजा में बाय, सत्त के निकलल झांपी सतिया का।
जायकर रखत पलकी में बाय, जौने बखत सतिया डाड़े बाय निकलले।
मेहरारु[2] देलेन पलकी के बैठाय, जहाँ लगल सोरहों बाय कहाँर।
बलवावति देखत हाल दुवरा का, अब उठ जाति डाड़ी दुवरा से।
सवा लाख डहरल बरात फुन बाय-वह बखत रोवत-पीटत[3] पटाइल[4]।
हुकुम लागल पलगी के बाय, लोरिका न सौंरु बाय हलल।
हल जानऽ छली के दरबार, जहाँ अम्मां न सास बाइँ बैठल।
पानी रक्खल बतासा ले बाय, दूनों पानी पत्तर बाय पीयत।
माथे देलेन चन्दन लगाय, सोने न धारी[5] के किनारा।
एक-एक धोती देलेन धराय, सोने न करधन[6] बाइँ देत।
दूनों नेहुर करत बाय प्रनाम, आसीरबाद बाय देले।
बाबू आँखो अमर हो जाय, जैसे बाढ़ै पानी गँगले का।
वैसे बाढ़े आयी तोहार, ऊहाँ से दूनों न बीर बाय चलल।
चढ़ जात बमरी के दरबार, जहाँ बैठल महाजन छली का।
अहीर जूटल दुनों जब बाय, जायकर पलगी न करे प्रनाम।
राजा रो-रो देत न आसीरबाद, जौन ऊहै देत-लेत बाय बकसीस।
दूनों पौले दरब बाय उठाय, दूनों उतरल किला से बाय।

गउरा के लिए प्रस्थान

राह लेलेन गउरा का तड़ियाय, सवा न लाख बाय बरियात।
उदमत लौटल गउरा गुजरात, रस्ते में राती रेंगल दिन दौड़ल।
पैंड़े में कहीं मोकाम नाहीं देखाय, आयकर चढ़ल सिवान बरईपुर का।

---

1. सौंपना, 2. स्त्री, 3. रोना-बिलपना, 4. शान्त हो गया। 5. धार, रेखा, सोने के रंगवाली किनारोदार धोती, 6. कमर में पहनने वाला धागा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बरईपुर की लड़की : लोरिक पर मोहित

आयकर चढ़ल सिवान बरईपुर का, लड़की बेंचत बरई के बाय पाऽन।
जितना जूटल बरात अहिरे का, सगरों रोकत गोमटी पर बाय।
वह दिन जूटल अहोर कन्तिल का, लड़की बोलत बरई के बाय।
सइयां न सुनब सुखनन्दन, राम के नाम गुन गावै के ठाकुर।

विवाह के लिए हठ : लोरिक द्वारा विवाह की अस्वीकृति

सेन्हुर माना कहल हमार, तोर न आसा ले लगाय कर।
बेंचत बाई गोमटी पर पान, पैंड़े में हमरो न डाड़ी ले फनवैबा।
ले चलबा गउरा गुजरात," वह दिन बोलल पूत कठइत का।
जेकर दूलर लोरिका बाय नाम, बड़ा सच्चा धइले गोमटी पर रोजगार।
समय ऐसे तैसे बीत जाई, मौज करबा बरईपुर पाल।
हमरे न फेर में तूँ परबा,[1] ले चलित देबय गउरा बैठाय।
बड़ा भारी होई जतना[2] तोहार, हमरे पर परी बहुत अपराध।
आज भोर ऊठन लोहा बैठन, लोहा परल परान अधार।[3]
आज कौनों न उपाय तजबीजत, बिपत जाई गउरा में भहराय।
नाहीं भाई मनबे कहल हमार, बैठकर बेंचऽ गोमती पर पान।"
तिरिया के बहुत न बात बाय समझावत, सवा लाख देलेस बरात डहराय।
उदमत रेंगल बरात अहिरे का, गाँव लेलेस गउरा तड़ियाय।
राती रेंगल दिन दौड़ल, पैड़े में कहीं मोकाम नाहीं देखाय।
राती न दिन से रेंगैबे, दिन नौवें के गउरा जूट जाय।
जायकर बाजत बाजा बाय अनेत, सेल्हिया लखत रानी फुन बाय।
आपन ठोंकत ताला बाय तकदीर, धन-धन न पूत कठइत का।
रयनी जीतल सुरावल के बाय, डाड़ी देलेल गउरा अरराय।

बारात गउरा वापस

रेंगत बरात रेंगावल, चल जात देवी न दुर्गा के दरबार।
जायकर छिपत डाड़ी धरमी का, देबी दुर्गा बद देत मोकाम।
वही दिन कठइत मारत बाय गोता, आगी देलेस कुंडली में जलाय।
कढ़त न घीव बखरी से, कठइत मारति हुमाद में बाय।
लोरिका न पूजा बाय कऽरत, खस्सी न भेंड़ा के कौनो लेंहड़।

---

1. हमारे चक्कर में, 2. कष्ट, 3. रात-दिन युद्ध करते बीतता है, 4. पहुँचा दिया।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सौ साठ भैंसा न देले बाय कटवाय, डट कर पूजा दुर्गा का बाय कैले।
माई खुसी सिवल्ला में हो जाय, जायकर डाड़ी न कठइत बाय टीकल।

एकदम ऊठल दुवारे पर जाय, जायकर धरमी न पलकी में बाय बैठत।
दूनों के गयल खूट बाय जोराय, जायकर परछन दुवरा पर होत।

बाजा बाजत दुवरा पर अनहद, वह दिन छिपल पलकी धरमी का।
आगे न आगे धरमी रेंगल, पाछे सतिया लेलें जानऽ लियवले।

जायकर हलत डेंहुड़ी में लियवले, जेकर पद छेंकत दुवारे बाय।
ऊ फेर छेंकत दुवार जब बानऽ, उनकर देन-लेन पद कइले।

ऊ फेर छेड़ देलेन दुवारे पर जात, दूनों न रेंङल जात लिअवले।
जायकर जूटत कोहवरे में बाय, दूनों न बैठत ओठे बानऽ।

ऊहाँ हूम न होत बाय सकला, माथे चाउर न चन्दन बाय चिटकववले।
अब खूंट छूटल धरमी के बाय, निकलल न साँवर बाय धरमी।

माई बैठल खुइलन जब बानी, जितना दरब पलगी में बाय पउले।
देकर माता के बाय प्रनाम, ऊफेर आसीरबाद बाय देत।

"बटवा आँखों अमर हो जाया जैसे बाढ़े पानी गङले का।
बैसे बाढ़े आयी तोहार," ऊहाँ से रेंगल माल बाय धरमी।

कका बैठल कठइता पुन बाय, जायकर करत बाय प्रनाम।
कठइत देत आसीरबाद बाय, "बेटवा आँखों अमर हो जाता।

तूं जियऽ लखवा ले बरीस, जैसे बाढ़े खम्हाँ कदली का।
वैसे बाढ़ै जाँघ तोहार, जैसे चढ़ै कमानी सरंगी का।

वैसे वढ़ै भुजा तोहार," तब तक लोरिक बीर बाय जूटत।
धरमी के करत निहुर प्रनाम, धरमी आसीरबाद बाय देले।

लोरिका आँखों अमर हो जाया, निकलल दुवारे पर जानऽ।
जितना न जतिया बाय परजात, सबके करत पलगी प्रनाम।

जब गिर गयल जाजिम दुवराँ पर, सबके होत दुवारे पर इन्तजाम।
पानी न पत्तर बाय होत, कंकड़ न होत बाय तमाखू।

दुवरा पर खान-खियान बाय होत, सबके रोकड़ मजूरी बाय चुकावे।
खियाय पियाय कर सब के देलेन घरे डहराय, राम नाम गुन गावै के ठाकुर।

धरमी बोहा में

उठियन दू-चार दिन बाय बीतत, कहाँर खोजत वही दम बाय।
पलकी कैले बाय कहाँर, एकदम डाड़ी लेलेस फनवाय।

एकदम कैले पयाम बोहा में, लें चल जात बोहा बाय मझार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जहाँ गइया भैंसिया धरमी का, जेकर तीन सौ साठ बाय चरवाह।
जायकर बल्ली न बाँस बाय कटवउले, कोठा देलेस बोहा में पटवाय।
अब टिक गऽयल धरमी बोहा में, जहाँ बैनन के पड़ल बाय दरबार।
पड़ गयल डेरा धरमी का, मौज करत बोहा में बाय।
वह दिन राम न राम गुन गावै के, ठाकुर भजली नाम हो तोहार।
देबिया न सुमिरों भगवती, दुर्गा जानऽ सक्ती तोहार।
जितना रहल कीर्तन धरमी का, सगरों देली बताय।

समीक्षात्मक टिप्पणी—सतिया की विदाई के साथ सँवरू के विवाह की कथा समाप्त हो जाती है। प्रकाशित रूपों में श्यामरूप सँवरू का उल्लेख एक वीर के रूप में हुआ है, किन्तु सँवरू को पराक्रम या वीरता दिखाने का अवसर कहीं नहीं आया है। उसका चरित्र सबसे अधिक प्रस्तुत पाठ में ही लोरिक के विवाह के समय विदाई के अवसर पर तब उमड़कर आया है जब वह कोलिया प्यार से तीर छोड़ता है और जो अगोरी में आकर अनुज वधू मँजरी के सामने आकर सर्प बन जाता है।

कला का यह अंश भोजपुरी पाठों में विशेष महत्त्व के साथ विस्तार से वर्णित है। दुर्गा हर समय लोरिक की सहायता करती हैं।

(दूसरा खाता खण्ड समाप्त)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(तीसरा खाता प्रारम्भ)

पाँचवाँ : लोरिक-चनवाँ उढार काण्ड

सुमिरनी : (मँगलाचरण)

जवन दिना कहत रहली रमायन, कैसे ठाकुर पर जियरा भोऽऽऽर।
एठिन सुमिरनी धरती माई, उपराँ सुमिरनी सिरी भगवान।
जौन दिना इहैं सुमिरनी डीह ठाकुर बाबा, के सुमिरनी मरी और मसाऽऽऽन।
के तऽ भाई सुमिरनी देवता गोरइया, जेन बीर सूअर लेले बायँऽ दँतार।
के भाई सुमिरनी देवता बरम बाबा, जेन बीर रहल बभनी का पूत।
एठिन सुमिरनी बाबा बघउत, जेन बीर टोनहिन के मलिकार।
टोनहिन का टोना बान्हे, टोनहिन के मारे टोना भवानी।
ओझवा के मारे भौवाँ लिलार,[1] अब मार देहलेन दमगर[2] डयनी का।
देसवाँ सोख भीलहुवाँ मर जाय, संझा न सुमिरनी सँझेखर।
अवधि रतिया अर्जुन फुन बाय, भोंरे सुमिरनी जयकऽरन।
इहैं तीनों धरम करम के हइँ जून, राम न सिरजत बायँऽ रमायन।
लछमन सिरजत कसिया-प्रयाग, सीता न सिरजत आपन नइहर।
जेनकर धधुष तोड़त बाय भगवान; सहदेव सिरजत आपन पोथी।
जेन फेर बाँचे बेद पुरान, कंठा न बैठी देवी कठेसर।
हृदय बैठी गउरी-गनेस, जीभ न दुनगा[3] देवी सारदा।
जौन भाई भुलिहैं कड़ी देबा जोड़, तिरिया न नोना बाइँ चमाइन।
धन में बा कपिला धनु गाय, कपड़ा न नोना बसय कम्बल।
जेन फेर कभी धोबी के घर न जाय, गउरा सुमिरनी गौंहेर।
बोहवा में कनिक सुमिरनी मुरार, जेन बीर सूअर लेलेन बरियार।
देबिया न सुमिरौं भगवती, दुर्गा जानऽ सक्ती तोहार।
जितना गइल कीर्तन बाई सतजुगी, देसवाँ में घूम गयील हाहाकार।
ऐसी कीर्तिया देवी जुटैबा, जोर कर कहत कलउवा के सब लोग।
सात न बहिन देवी दुर्गा, ऊ सब रहनी इन्द्र बाइँ लोक।

---

1. माथे में, 2. शक्तिशाली, 3. अग्रभाग।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मा जौन उन लोगन का भाई, मृत्युकलोक लिखत नीचे फुन बाय।
सातों न बहिन देबी दुर्गा, ब्रह्मा देहलेन मृत्युलोक में भेऽज।
छव न बहिन जौन जेठा[1], जगह-जगह लेत बाईं अस्थान।
केनहुँ[2] बिन्ध्याचल पावैं अस्थान, केनहूँ पावैं कूड़ारी[3] में बाय।
ऐसे-तैसे छव बहिन जौन रहलिन, मुलुक संसार में पाय गैनी अस्थान।
सतयें न देबी लहुरी जौन बाईं बहिन, अब देस-देस हलका बाईं घूमल।
जेकर सवा न सै बाईं छोहरी, सबके लेत घण्टेके जनमल।
आधी न रात बाय निचलोइया[4], देबी चूवल सोखा बोहा बाव मँझार।
वह दिन भजकल गइया घरमी का, एकदम साँसड़ बोहा मँझार।
उठ कर दूनों भाई बाय बोलल, संवरू दूनों लोरिका सरदार।
के फेर भूत न चऽढ़ गयल बैताल, के फेर चोर न हउवँऽ बदमास।
के फेर रतिया में कौन जनावर बाय चऽढ़ल, लेहुँड़ भजकल रतिया में बाय।''
तब फेर बोलन न देबी बाय दुर्गा, सेवई के मनवे कहल हमार।
हम फेर सात बहिन देबी दुर्गा, देसवा में खोजत ओतन आपन बाई।
तनिक पाँच न हरफ सुनैवा, तोहरे घण्टे में होजाइत असवार।
कुल न दुवरां लेहित पूजा, गाढ़े भुजा पर करित तोहार काम।''
तब फेर बोलल अहीर बीर लोरिका, ''भइया बारह बरिस का बाइन अमीर।

लोरिक को दुर्गा का अजेय होने का वरदान

सूर कोइल नीयर बाय पिहकल, के फेर सुनिहैं देवता फुन बोहे का।
जौन कनिक हउवँऽ मोरार, जेनफेर सूअर लेहले दतार।
के रोक दीहैं सुरिया हो हमार, के फेर सुनी डाइन बाय गउरा का।
जेकर पिपरे में बाय अस्थान, अब मार दीहैं सूरियाँ हो हमार।''
तब फेर बोलल देबी बाय दुर्गा, ''कहलेन बरुआ न सुनबे फुलझरुहा।
तोहरे पर गयलेन चेहरा फरियाय, कौनो हरजिया तूं जिन मानऽ।
कबके देखब ताकब हो दिमाक,'' वह दिन दूनों न भाई बाय बैठल।
राम राम कहत भजन जब बायँऽ, कहें जोग हो पुराना।
देबिया गयल कंठे लपटाय, घरे अहीरे के पुजइनी।

लोरिक के द्वार पर दुर्गा की स्थापना

दुवारे बन गयल देबी धाम, जेन कर अमर धजा फहराय।
लागल खाम्हियाँ सोने का, जेमें छायल सुगना सब बानऽ।

---

1. बड़ी, 2. कोई, 3. दक्षिणांचल में एक स्थान का नाम, देवी का नाम, 4. एकान्त।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छूटल न दूत बायँऽ ब्रह्मा का, अब ब्रह्मा देहलेन मृत्युलोक उतार।
कौनों पिंजड़ा का परान, दूत हिंचले इन्दर जानऽ लोक।
वह दिन बोलल परान लरमें का, "सुनबा न दूत ब्रह्मा का।
कहना मानऽ एठिन हमार, तनिक ढीले परान के छोड़बा।
जायकर मिट्टी में हो जाइत अवतार, सबके देहित ओठे समझाय।"
वह दिन ढीले परान बाय कइले, मिट्टी में बोलत परान जब बाय।
"बाबिल न सुनबा हमार, कहना मानऽ एठिन तूँ हमार।
मति रोवऽ न गावऽ मति कूँच, धरती में माँथ।
जब तक मृत्युलोक में रहली, तै दिन कैला असरा तूँ हमार।
तब फेर इन्दरलोक हमें लीखल, तोहार कबे ख्याल जब भूलिहैं।
बाबिल दूसरा गदेला हो जाय," वही तरह माता के देहले समझाय।
ऊहाँ से पलटन परान पुन बाड़े, जायकर बहिन के देहलेस समझाय।
"बहिन मति रोवऽ न गावऽ, मति कूँचऽ धरती में माँथ।
जै दिन रहली लोक मृत्युलोकी, तै दिन करला असरा हमार।
बहिन कबे ख्याल जब होइहैं, जब के दुवराँ भइया हो जाय।"
जायकर ब्यही देहलेस समझाय, "अब धन मत रोवऽ न गावऽ।
न मति तूँ कूँचऽ धरती में माँथ, जैदिन जिन्दा रहली मृत्युलोकी।
तैदिन करला आसरा तूँ हमार, अब हम्मे इन्दर न लोक बाय लीखल।
ब्यही कबे ख्याल जब तोहके भुलिहैं, जब दूसरे न करब धिङ्गार।"

दुर्गा का इन्द्रलोक प्रस्थान

वह दिन लागल दूत ब्रह्मा का, अब ले गऽयल परान इन्दरलोकी।
मिट्टी मृत्युलोक बऽचल, सबकोई करलेस रोदनियाँ बरियार।
कपड़ा न कप्फन बाय मँगवले, सौ पचास जात लोग लेकर बाय।
चिता तीर पर बनाय, मिट्टी देहलेन कैंदे से बैठाय।
आगी घूमघूम बाय लगवले, राम राम बोलत सब कोई बाय।
बमकल चिता तीरे पर, मिट्टी बरे सिवाने में।
ऊहाँ सब लोग लौटल, दिनवाँ नौ दस रोज बरकाये।
जात पूरा न पूछले बाय बिरादर, आकर बार मुलुक करावे।
जितना नेगा ईहाँ चार लागल, सगरों दे-ले करले बाय बराबर।
सबके खान खियान-ले खियावै सबके बाँटत दुखे के बाय।
सब लोग बाल न बच्चा में अपने गऽयल अब फट गयल खियाल मइया का।
आपन करत काम सब बराय, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समीक्षात्मक टिप्पणी—हर खण्ड के अन्त में इसी प्रकार मंगलाचरण के रूप में देवी-देवताओं का स्मरण किया गया है। इससे इसका प्रबन्धकत्व प्रमाणित हो जाता है। कहीं-कहीं दुर्गा का चरित्र इतना उभड़ा है कि इसे 'दुर्गायण' की संज्ञा दी जा सकती है। अन्य प्रकाशित रूपों से इसके प्रवन्धकत्व की पुष्टि नहीं होती। मंगला-चरण में जिन देवी-देवताओं का नामोल्लेख हुआ है, वे लोक-विश्रुत हैं।

सारांश (ङ) चनवाँ का सेवहर के साथ विवाह तथा बँठवा द्वारा उढ़ार का प्रयास

(66) **चनवाँ का सेवहर के साथ विवाह**—राजा सहदेव अपनी लड़की चनवाँ का विवाह विजली गाँव के एक वीर सेवहर से कर देता है। सेवहर साधारण परिवार का एक व्यक्ति है। अतः वह साधारण भोजन का ही अभ्यासी है। किन्तु चनवाँ जब आती है तो उसे राजसी भोजन बनाकर खाने के लिए देती है। वह भोजन करता और नित्य की प्रवृत्ति के अनुसार भैंसों की अड़ार (जहाँ भैंसे-गायें बाँधी जाती हैं) पर जाने के लिए तैयार हो जाता है। तदुपरान्त चनवाँ एक कमरे में पलंग बिछाती है। उसकी बाँह पकड़ कर घर में कर देती है और झट से दीपक बुझा कर स्वयं भी पलंग पर लेट जाती है, किन्तु तब तक सेवहर पलंग के नीचे छिप जाता है। चनवाँ बार-बार छेड़खानी करती है, किन्तु सेवहर पर उसका तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ता। इतने में भोर का समय हो जाता है।

(67) **नपुँसकत्व से चनवाँ दुखी**—इस घटना से चनवाँ दुःखी होती है। वह बहाना बनाकर सेवहर से मिलने अड़ार पर जाती है। वह अपनी सास जी से स्वप्न की बात बताती है, तब तक सेवहर भी वहाँ आ जाता है। चनवाँ की बात तो उसकी सास समझती ही है फिर भी सेवहर से उसका संकेत कर देती है। सेवहर और चनवाँ दोनों गउरा के लिए प्रस्थान करते हैं। आगे-आगे सेवहर तथा उसके पीछे चनवाँ चलती है।

(68) **चनवाँ द्वारा सेवहर का त्याग**—सेवहर और चनवाँ दोनों ब्योरा नदी के तीर पहुँचते हैं। चनवाँ के पास एक ही धोती है, पार कैसे उतरे, भींग जायेगी। अतः वह सेवहर से दूसरी ओर मुख करके खड़ा होने के लिए कहती है, तब तक चनवाँ धोती खोलकर सिर पर बाँध लेती है और पुनः नदी में कूदकर पार चली जाती है। पार जाकर वह कहती है—अब तुम वापस जाकर अपने लिए पत्नी खोज लो। मैं भी गउरा जाकर अपने लिये पति ढूंढ लूंगी।" सेवहर हैरान है, उसे तैरना नहीं आता, विवस होकर बिजरी लौट जाता है।

(69) **चनवाँ का बँठवा से भेंट तथा बंठवा द्वारा चनवाँ का पीछा करना**—उधर चनवाँ नदी पार जाकर कपड़ा पहनती है। और साज-शृंगार कर आगे बढ़ती है। बीच में बँठवा चमार मिल जाता है। वह उसके समक्ष विवाह का प्रस्ताव करता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। चनवाँ चालाकी से उससे छुटकारा पाने के लिए कहती है—"मुझे भूख लगी है, तेंतरी के पेड़ पर चढ़कर फल गिराओ, खा लूँ तो चलूँ।' बँठवा पेंड़ पर चढ़कर फल गिराता है। चनवाँ दुर्गा का स्मरण करती है और वह वहीं बँध जाता है। चनवाँ नौ-दो ग्यारह हो जाती है। बँठवा पीछे छूट जाता है। वह पेंड़ से उतर कर उसका पीछा करता है। जो भी मार्ग में मिलता, उससे चनवाँ को रोकने के लिए कहता है और यह भी कहता है कि वह उसकी व्याही है, जो भागी जा रही है। चनवाँ सबको सत्य से अवगत कराती हुई आगे बढ़ती जाती है। अन्त में वह अपने पिता सहदेव के किले में पहुँच जाती है। उधर बँठवा भी पहुँच कर धरना दे देता है और राजा से सशर्त कहता है कि चनवाँ को उसे सौंप दें या साठ पोर के बाँस के बराबर सोना दें या कुआँ भरकर दूध दें, तभी कुशल है अन्यथा नहीं। गाँव की सोरह सौ पनिहारिने पानी भरने कुएँ पर जाती हैं। ज्योंही वे पानी भरने चलती हैं, बँठवा गोटी-गुलेला से सबके घड़े फोड़ देता है। वे भाग जाती तथा रोती हुई घर को लौटती हैं। बँठवा गाँव के सभी कुओं में गोबर-माटी तथा हाड़-माँस डाल देता है। केवल एक कुआँ लोरिका का ठीक रह जाता है। गाँव की स्त्रियाँ कुएँ पर पानी नहीं भर पातीं और जब वे सगरे के भीटे पर जाती हैं तो वह वहाँ भी पहुँचकर छेड़खानी करने लगता है। पानी बिना चारों ओर हाहाकार मच जाता है। सब लोग राजा से शिकायत करते हैं, राजा रात भर धैर्य धारण करने के लिए कहता है।

चनवाँ के प्रति सेवहर की नपुँसकता

राम न राम गुन गावै के ठाकुर, भजली नाम हो तोहार।
देबिया न सुमिरनी भगवती, दुर्गा जानऽ सक्ती तोहार।
जितनी किर्तन गयल सतजुगी, जोर कर देबा कड़ी बैठाय।
जवन न राजा रहल सहदेव, जेकर लड़की रहल चनवाँ।
सादी कइले बिजरी बाय गाँव, जहाँ से बाहर बीर अहीर रऽहल।
जेकर औंजार फेंटा बान्हल, बासी न भात रहल खोराक।
तिन न दिना के रहल मंठा, नेम से ऊहइ रसोइँ ओकर रऽहल।
लड़की गयील सहदेव का बाय, कितनो राजा दयी के होय लड़की।
जायकर हलल कोठी रसोंई के, रुचके देलेस रसोंई बनाय,
बारह न रकम का तरकारी। सोरहों देलेस प्रकार बनाय।
वह दिन बोलल धीया सहदेव का, जेकर चन्ना न परल बाय नाम।
कहत न बोली लरमें का, "ससुवा न सुनबा मोर गौसाइँ।
कहना मानऽ एठिन हमार, रसोइँ भयल बाय तैयार।"

---

1. भोजन।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बुढ़िया देत हुकुम बेटवा के, "भइया बिजय[1] भयल बाय तैयार।"
ऊठल न मरद बाय सेवहर, लोटा में उभिलत[1] जल फुन बाय।
गोड़ न हाँथ लेकर धोवै, मूँहें करत कुल्ला बाय।
जायकर बैठत ठहरे पीढ़ा पर, रसोईं रखत थरिया[2] में बाय।
लखत न अहीर बाय सेवहर, जरमर, भयल सुबा खऽार।
कहलेन-"हो हो न दयी तूँ नरायन, का ब्रह्मा लिखला ताला बाय तकदीर।
ऐसन रसोईं का खवइहैं, कय दिन जियहैं प्राण मृत्युलोक।"
जवन सेवहर के बाय सोहात,[3] वह बीर खात ठहरे पर बाय।
खायकर कुला न करत बाय गलाली, धोयकर ऊठल हाँथ जब बाय।
सुरती न चूना बाय बनावत, खात न मूँहें में बाय।
वैर न बिसवत का बाय बऽखत,[4] कमरा[5] न धोती बाय देहें पर डालत।
अब चलल अड़ानी[6] भैंसिन के, वह दिन जौंन न लड़की बाय सहदेव राजा का।
कोठी में जलदी पलङ बाय लगवले, अहीर के ठेलत कोठी में बाय।
कहाँ माचा मचहरी में सूते के होई, अहीर घुसुरत[7] खटिया[8] तरे जाय।
हींचकर चेंचुरा पलङ पर बीगत, फाटक देलेस कोठी का चढ़ाय।
चटपट दीपक बानी बुतावत, सेवई सूतत बगल में बाय।
घण्टा न घड़ी बाय बीतल, लड़की कोथत[9] बदन में बाय।
जकलायल अहीर बाय सेवहर, "हो हो न दयी नरायन।
कोठी में बहुत न मच्छर बाय पँजायल, सारे काटत बदन में बानऽ।"
फेर भे घण्टा न घड़ी बाय बीतल, फेर में कोंथत लड़की सहदेव का।
वह दिन बोलल अहीर बाय सेवहर, "ये बखत दिन न छोट रात, बऽड़।
मच्छर बहुत कइलेन हलकान, भगवन कब न भोर होई बिहान।[10]
हम भाग जाइत बैना के दरबार," वह बखत सूतत लड़की सहदेव का।
तिरिया दाँत न अँगुरी सूतत दबाय, बखत भोर न होत बिहान।
पूरूब कोवा लगवले बाय रोर, वह बखत सूरज न जोस में बाय आवत।
जौन बखत खोलत बेंवड़ा कोठी का, सेवहर डालत धो-धो कमरा का।
दुहना[11] लेलेस पटवा[12] दूधे का उठाय, रेंगल भैंसिन के अड़ाने चल जाय।
जायकर बीर दूध न गान बाय दुहावत, राम नाम गुन गावै के ठाकुर।

1. उड़ेलता है, 2. थाली, 3. अच्छा लगता है, 4. सूर्यास्त का समय, 5. कम्बल, 6. जहाँ भैंसें बाँधी जाती हैं, 7. घुसता है, 8. चारपाई, 9. चिकोटी काटती है, 10. प्रातः, 11 दूध दुहने का पात्र, 12. जिस पर दूध या दूध का पात्र या अन्य कोई सामान लाया—ले जाया जाता है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चनवाँ का गउरा जाने का बहाना

एहर बोलत लड़की सहदेव का, "ससुवा न सुनबा मोर गोसाईं।
दरियाँ मानऽ कहल हमार, ये बख्त दिन न छोट रात बड़।
सपना देखाल रात में अजूगत,[1] जौन न बाबिल बाय हमार सहदेव।
बड़ी करकर[2] बायँऽ बीमार, तनिक गउरा का राह हमें डहरौती।
बाबिल के लेहित पता लगाय," वह दिन बोलत मतारी सेवहर का।
"धियवा न सुनबा मोर पतोहू, ऐठे मनबा कहल हमार।
जौन सपना देखाल अजूगत, तोहार जानत ताला बाय तकदीर।
तनिक गाँडू न बेटबा मोर जनमल, नाहीं का देखती सपना अजूगत।
वही बखत सेवहर दूध लेकर लौटल, आयकर भयल दुवारे पर ठाड़।
छरकल[3] लड़की सहदेव का, दूनों न थामत दुहना[4] के बाय।
जाय कर कछारी न दूधे के पवलेस, राम न नाम गुन गाये के ठाकुर।
दूध देलेस कछारी में पलऽट, वह दिन बोलल मतारी सेवहर का।
"बेटवा न सुनबा मोर सेवहर, जौन धियवा बानी पतोहू।
सपना देखले रात में अजगूत, जौन समधी बायँ सहदेव।
गउरा में बाऽ बहुत बीमार, ऊ फेर खटिया से भूई भयल बानऽ।
ओनके गउरा न राह तूं पहुँचैबा, ठीक से लीहैं पता लगाय।"

सेवहर-चनवाँ दोनों का प्रस्थान

इतना न सुनत मरद बाय सेवहर, दरियाँ करे लरमें का बोल।
"कैसों गउरा न राह एन्हें पहुँचाईं, हमार जीव हँट जाई जन्जाल।"
वह बखत आडर न तिरिया के बाय देलें, आगे-आगे रेंड़ल मरद बाय सेवहर
पीछें रेंड़ल लड़की सहदेव का, दूनों न मिला बाय रेंड़ल।
आगे परल नदी ब्योरा के, जेमें दह न जल परल बाय।
जायकर दूनों न दल बाय जूटल, वह दिन बोलत लड़की बाय सहदेव का।
"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, सेन्हुर मानऽ कहल हमार।

सेवहर ब्योरा नदी तक : चनवाँ गउरा को

कपड़ा न छूट गयल बिजरी, एक न कपड़ा बाई पहिनले।
रात कोठी बनवले बाई रसोईं, पसीना में गयल कपड़ा बायीं भींज।
देख भाई राती नतान हो तोहार, दिन के हवंऽ नतान बाय हमार।
तनिक पच्छिम पलक तूं फेरबा, ब्योरा में कइ लेहित अस्नान।
सेवहर पच्छिम मूंहें बाय ताकत, चनवाँ गेंड़ के पयरी बाय हींचत।

---

1. भयानक, 2. गम्भीर रूप से, 3. दौड़ी, 4. दूध का पात्र।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चोलिया के बटम देलेस खोल, गुहकर बान्हत कछाड़[1] बाय खूंटी।
सोझय न कूदल नदी ब्यौरा के, तीवई दस न हाँथ बाय पँवरल।
जायकर भयल नदी ब्यौरा के ओय पार, बोलत न लड़की सहदेव का।
"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, अब सुन लेबा मथवा का महुवार।
मूँहे न करिखा तूं लगैबा, लौट जाबा बिजरही के गाँव।
बिजरी में खोज लेबा मेहारु,[2] गउरा में खोज लेबय धिङार।[3]
झंख न मरद सेवहर, ओय पाट दाँत न अँगुरी चबाय।
भगवन सगरों में हमें गुन देला, चार हाँथ पौरें के सहूर नाहीं देला।
नाहीं गाले के गलदोन्ई[4] काहे करता, पहूँचित ले गलफर[5] बनाइत,।"
झंखत न अहीर बाय सेवहर, राम न नाम गुन गावै के ठाकुर।

सेवहर बिजरी वापस

धीरे-धीरे लौटल बिजरी बाय गाँव, चनवाँ आपन कपड़ा बाय झुरवावत।[6]
गोड़े में पैरी जब पहिरत बाय, कपड़ा सुखवले बाय पहिनले।
आपन लेलेस सूरत बाय बनाय, गाँव रेंड़ल गउरा के पाल।
रेंङल न लड़की सहदेव का, आगे परल जंगल मँझार।
बँठवा जौन बाय चमार, दू-चार कुकुर बाय लियवले।

बँठवा चमार की चनवाँ के साथ छेड़खानी

बन में खेलत बाय सिकार, परल नजर चनवाँ का।
फेंक-फेंक मारत कुकुरे के बहियाय, तब तक जूटल लड़की सहदेव का।
बँठवा परल, पछेड़ में बाय, राम न नाम गुन गावै के ठाकुर।

बँठवा को धोखा देकर चनवाँ का पलायन

बोलल न लड़की सहदेव का, "सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन।
कहना मानऽ एठिन हमार, बिजरी न देखली ऐसन जवान।
गउरा में मिल गयऽल जोड़ीदार, दिन न परल अतवार।
ब्रत भुखले हम नेम से बाई, आज मोर ब्रत होई नकसान।
आगे परल पेंड़ तेतरी का, तेतर फरल पेंड़े में बाय।"
जूठे चिरई काटकर गिरवलेन, बँठवा बिन-बिन बाय टेकावत।
कहलेन-"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, अब चढ़ जातऽ पेंड़े तेतरी के।
पेंड़े के फल तूं उतरता, ये फल जूठ न काठ भूइं के बाय।

---

1. फेंटा, 2. औरत, 3. पति, 4. किसी बात को हठ पूर्वक कहना 5. गाल फाड़ना, 6. सुखाती है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमार ब्रत होई नकसान," वह दिन चढ़ल चमार तेतरी पर।
चढ़ल न सरगे चल जाय, अब वह दिन लखत लड़की सहदेव का।
"गउरा न सुनबे गँवहेर, बोहे में सुनबे कनिक मोरार।
जेन बीर सूअर लेलेन दँतार, के फेर सुमिरत देवी बाय दुर्गा।
दे देली अहीरे कुले बाई पुजाय, एठे जानऽ सक्ती तोहार।"
छन में फूटल बँवर तेतरी से, बँठवा जातय चमार बन्हाय।
वह दिन छूटल बँवर तेतरी से, बँवर टूटल तेतरी से बाय।
अंग न अंग बाय बन्हात, बँठवा गयल तेतरी में बन्हाय।
वह दिन मारत कछारी वही दम, लड़की भागत सहदेव का जात।
कोस न फसिला भयील, उल्टा ताकत पेंड़ तेतरी का।
बँठवा सरगे बाय बन्हाल, वह दिन सोचल लड़की बाय सहदेव का।
"जेनफेर बँठवा तेतरी मे मर जाई, घरे जाई मरी पुजाय।
वह दिन सुमिरत माई बाय दुर्गा, मइया देखऽ सक्ती तोहार।
तनिक टूटल बँवर तेतरी का, चमार गिरत धरती में भहराय।

बँठवा द्वारा पीछा किया जाना

वह बखत टूटल न बँवर तेतरी से, बँठवा गिरल धरती में भहराय।
एमदम करत गोहार बँठवा चमार, "भइया न सुनबा भैंसवार।
तनिक छेंका रास्ता ब्यही का, काल्ही हमहूँ अनले।
आज मोर भागत ब्यही बाय जाय, तनिक छेंका राह आगे से।
परग जाईं जमीन नगिचाय," वह दिन बोलल लड़की सहदेव का।
जेकर चन्ना परल बाय नाम, "जतिया न सुनबा भाई बिरादर।
कहना मानऽ एठिन हमार, हम फेर सहदेव राजा के लड़की हई।
गउरा बँठवा हवंऽ ले चमार, हमरे लागल पँछेड़े में बाय।
फेर भे ईहो न बात तूँ मनबा, कितना मरद-मेहरारू हय झगड़ा।
हमने के पैंड़ी पर अयवा, तूँ फेर भारी न धने का चरवाह।
एको नार न ढोहे गिरिहैं, भारी होई धन नकसान।
चार-छव सै रुपया गल जाई, एमे कौन फैदा बाड़े तोहार।"
वह नाहीं छेंकत राह चनवां का, लड़की भागत सहदेव का चल जाय।
बँठवा करत गोहार चल जाला, आगे चरत छेंड़ी लाईं भेंड़ी।
वह दिन बोलत बँठवा बाय चमार, "सुनबा न ले भइया गँड़ेरी।
कहना मानऽ एठिन हमार, तनिक छेंकता राह ब्यही का।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परग जाईं हम नगिचाय, काल्ह न हमहूँ ले अनली।
आज मोर भागल ब्यही बाय जाय," वह दिन बोलत लड़की सहदेव का।
"भइया न सुनबा तूँ गँड़ेरी, कहना मानऽ एठिन हमार।
हम फेर सहदेव राजा के लड़की, उहैं बँठवा न हवँऽ चमार।
हमरे लागत पँछेड़े में बायँ, कहीं ईहो न बात नाहीं मनबा।
ये फेर हवँऽ मरद-मेहरारू का झगड़ा, हम्मन के पँड़ी पर जैबा।
ये फेर सिगटे-बिगे के हवँऽ खवइया, दस पाँच कहिहैं सीगट नकसान।
सौ-दू सौ होई रुपया नकसान,घरे बाल न बच्चा मर जइहैं।
एमें कौन फैदा बाय देखात," उहैं न छेंकत आगय चनवाँ का।
लड़की भागल गउरा चल जाय, आगे चलत हरवाह बाटुर।
बँठवा करत गोहार न बाय, "सुनबा न भइया हरवाह।
कहना मानऽ एठिन हमार, काल्ह न ब्यही लेय अनली।
आज मोर भागत ब्येही चल जाय, तनिक छेंका राह ब्येही का
परग जाई जमीन नगिचाय," वह दिन बोलत लड़की सहदेव का।
"सुनबा न भइया हरवाह, हम फेर सहदेव न राजा के लड़की।
ऊ फेर हवँऽ बँठवा ले चमार, हमारे लागल पँछेड़ी बायँऽ।
फेर भे इहों न बात नाहीं मनबा, ये फेर मरद-मेहरारू का झगड़ा।
तूँ हमहन के फेर में पर जैबा, बाटुर न हरै के बाय जोत।
कहाँ आई किसान खेते पर, खेत के देखी जोत जब कऽम।
दू-दू सेर बनी[1] घटाई, घरे", बालो न बच्चा मर जाई।
एमें कौनों फायदा बाय देखात, वह न छेंकत राह चनवाँ का।
चनबाँ भागल गउरा जाय गुजरात, बँठवा करत गोहार बाय जात।
वह भागल लड़की सहदेव का, सहदेव राजा के किला में गयिल औलियाय।
पाछे कूदत बंठवा बाय चमार, राम नाम गुन गावै के ठाकुर।

बँठवा का चनवाँ के साथ विवाह का हठ : राजा-प्रजा सब आतंकित

आयकर जूटल सहदेव के दरबार, दुवारे न हँड़ोंर[2] मचवले।
"राजा न सुनबा सहदेव, कहना माना एठिन हमार।
के तऽ भाई ब्यही घरे से निकाना, तबै खरीयत[3] दुवारे पर बाय।
के तऽ साठी न पोरे के गाड़ऽ बाँस, के तऽ यही बराबर देबा सोना।
के तऽ भर इनारा का दूध, तब छोड़बै दुवार तोहार।"
गोटी न ले ले बाय गुलेला, जगती पर डालत डेरा बरियार।

---

1. मजूरी, 2. कुराफात, 3. कुशल।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सोरह न सै क पनभरिन, राजा के खोरी जगती पर चलल बाईं।
पानी न नारा भर कर, दोहऽर के लेलेन सगरों उठाय।
लेकर घरे के मूहें चलल, बँठवा गोटी गुलेला बाय उठवले।
तान-तान मारत गगरी[1] लहाय, सगरे चूर-फूट भयल न जाई गगरी।
तिरिया भिजलीं कपड़ा ले पहिन कर, रोवत जाती घरे-घरे बायीं।
जायकर कइले सवाल राजा से, "राजा न सुनवा महराजा।
कहना मानऽ एठिन हमार, पानी बिना भारी दुख बाय देखात।
बँठवा भारी न करले बाय हलकानी[2]" राजा दूसर कोठी बाय खोलवले।
नाया जे देलेस गगरी बँटवाय, राड़ देहलेस सगरे के बताया।
छोड़ले न जगत इनारा का, रास्ता लेहलेन सगरे के तड़ियाय।
लखत न बँठवा बाय चमार, एठे हाड़ो-डोकर बाय बटोरत।
दस-बीस लेलेस भउका गोबर बटोर, नरवा में हाड़ो डोकर न बोझत[3]।
गोबर घोरत पानी में बाय, कुआँ के पानी करलेस नुकसान।
ओठे डेरा न डण्डा बाय उठवले, बँठवा रेंड़ल सगरे के जाय भीट।
जायकर बैठत आसन सगरे पर, तब तामाँ न लिरिया भरयं।
ले ले चढ़ें सगरें के भीट, सीसा न गोली बाय निकलले।
बँठवा का बजल निसाना वहाँ बाय, तान-तान मारत न गगरी तामों का।
चलनी भयिल गगरी जब जाय[4], राम नाम गुन गावै के ठाकुर।

राजा से शिकायत

जेमें बूने[5] भर पानी न ठहरय, वैसे न तिरियाँ बाय रोवत।
बेगर पानी का रोवत लौटल जाय, हलचल न बँठवा बाय मचवले।
जायकर सगरे भीठा के दरवार, पानी बिना रोबै टोला सहदेव का।
लोरिका टोला जौन बायँऽ, ऊ फेर करत आजादी फुन बाय।
बोलत परजा सहदेव टोला का, जायकर करत कचहरी में बाय बात
"राजा न सुनवा महराजा, कहना मानऽ एठिन हमार।
पानी बिना छत्तर[6] इहाँ बाय फाटत, न तऽ केहू घरे आगी न बरत बाय काठी[7]।
रात में कौनों न बेंवत[8] एकर बनैबा, नाहीं बिहाने उजरी[9] टोला तोहार।
जहाँ परजन पानी के सुविधा लौकी, ऊहाँ टिकी परजा गउरा का।
वह दिन बोलत सेल्हिया बाय रानी, "परजा न सुनबा हमार।

---

1. घड़ा, 2. परोशान, 3. गिरादिया, 4. अनेक छिद्र बनना, 5. बूंद, 6. सिर, 7. लकड़ी, 8. उपाय, 9. उजड़ेगा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहना मानऽ एठिन हमार, रात भर कैसों न बखत बितैबा।
बिहने देबय बेंवत[1] बान्ह, राम नाम गुन गावै के ठाकुर

समीक्षात्मक टिप्पणी—चंदा या चनवाँ का सेवहर के साथ विवाह, सेवहर के नपुंसकत्व के कारण चनवाँ का गंउरा जाना और बँठवा द्वारा चनवाँ के उढ़ार की कथा भी प्रकाशित रूपों में प्रायः नहीं आयी है। सेवहर के शिव-पार्वती के शाप के कारण नपुंसक हो-जाने का उल्लेख तो मिलता है, किन्तु बँठवा द्वारा उढ़ार का प्रसंग प्रायः मौखिक परंपरा से प्राप्त पाठों में ही आया है। प्रस्तुत पाठ में इस प्रसंग को बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। कहीं भी कथा में अवरोध उपस्थित होने नहीं पाया है। इस प्रसंग से ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय की स्त्रियाँ चरित्रवान थीं तथा विषम परिस्थितियों में अपनी बुद्धि-चातुर्य से सबको चमत्कृत कर लेती थीं।

सारांश—(च) लोरिका चनवाँ का प्रेम तथा लोरिक द्वारा चनवाँ का उढ़ार

(7) **लोरिक-बँठवा संघर्ष**—प्रातः काल होने पर रानी सिल्हिया स्थिति का पता कराने लोरिक के पास जाती है, किन्तु लोरिक को सोता देख कर वह मंजरी से उसे जगाने के लिए कहती है। उत्तर में वह उससे कहती है—"मुझसे नहीं जागेंगे, आप जा कर जगायें।' सेल्हिया जाकर लोरिक के बगल में लेट जाती है। जब लोरिक के शरीर से सेल्हिया के शरीर का स्पर्श होता है तो वह जगता है और सेल्हिया पर क्रुद्ध हो तलवार तक खींच लेता है। तब सेल्हिया सारा वृत्तान्त बता देती है। लोरिक सेल्हियाँ को वापस जाने के लिए कहता है और स्वयं ही घड़ा लेकर पानी भरने चल देता है। बँठवा उसके साथ भी वही व्यवहार करता है। इस पर लोरिक उससे लड़ जाता है। बँठवा दाँव मारता और लोरिक जमीन पकड़ लेता है। लोरिक उससे पूछता है कि वह किस गुरू का चेला है। बँठवा अपने को अजई का चेला बताता है। लोरिक इस पर दुःखी होता है, क्योंकि अजई ने तो कहा था कि लोरिक उसका अनन्य शिष्य है। लोरिक गुरु अजई के घर पहुँच जाता है। वहाँ अजई की स्त्री बिजवा मिलती है। लोरिक उससे सारा वृत्तान्त कह जाता है। बिजवा उससे कहती है—"मैं एक दाँव बताती हूँ, तुम इसी से बँठवा को मार सकते हो।"

(71) **बिजवा द्वारा लोरिक को दाँव बताना**:—बिजवा लोरिक को पान खिलाती है और स्वयं भी खा लेती है। दोनों पैंतरा भाजने लगते हैं। बिजवा उसकी जांघ पर पान का पीक मारती है। लोरिक उसे देखने लगता है, तब तक बिजवा दाँव मार कर गिरा देती है और कहती है,—"इसी दाँव से तुम बँठवा को नीचा दिखा सकते हो।" लोरिक एक स्त्री द्वारा इस तरह का दाँव मारे जाने पर दुःखी होता है और घर लौट जाता है।

---

1. उपाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(72) बँठवा की पराजय :—लोरिक ऐसा ही करता है। वह पान से मुँह भर लेता है, अजई से गदा भी माँग कर ले लेता है और बँठवा से लड़ने लगता है। तभी लोरिक गदा से प्रहार कर बैठता हैं। बँठवा क्षण भर में जमीन पकड़ लेता है।

बँठवा लोरिक से पानी माँगता है, चनवाँ को बँठवा पर दया आ जाती है वह उसकी टूटी बाँह को जोड़ देती है। लोरिक पानी ला कर उसे पीने के लिए देता है और चनवाँ की गतिविधि देख लेता है। बाँह के ठीक होते ही बँठवा भैंस की एक हड्डी से लोरिक को मार गिराता है, किन्तु दुर्गा का सहारा पा कर वह बच जाता है। पश्चात् बँठवा को उसके घर पहुँचा दिया जाता है। कुएँ का जल भी साफ करा दिया जाता है।

रानी सेल्हिया का लोरिक को वस्तुस्थिति से अवगत कराना

वह दिन होत भोर बाय बिहान, पूरब कौआ मचवले बाय रोर।
वह दिन कबरल नींद सेल्हिया का, रानी निकलल कोठी से बाय।
गोड़े पहिनल चप्पल सोने का, हाँथ सोबरन न छड़ी बाय धइले।
रेंङल न रानी बाय सेल्हिया, चल जाले लोरिका के दरबार।
बड़े सबेरे का बाघ बऽखत, एकदम हलल अङ्नईं में जाय।
जवन न धिया महरे का, राम न नाम गुन गावै के ठाकुर।
जेकर दावन मँजरी बाय नाम, ऊफेर आङ्न न रहल बटोरत।
परल न नजर सेन्हिया पर, हाँथ के बढ़नी अपने रक्खत।
जायकर धरत चरन रानी का, रानी देत आसीरबाद बाय।
"धियवा न सुनबा मोर पतोहू, कहाँ लोरिका न बेटवा बाय हमाऽऽर ?
हमके देबा सरेख लगाय," वह दिन बोलत लड़की महरे का।
जेकर दावन मँजरी बाय नाम, "ससुआ न सुनबा मोर गोसाईं।
कहना माना एठिन हमार, तीनिय दिना तेरह रोज।
सइयाँ लेले न लोहा बा दुराने," वह दिन बोलत रानी बाय सेल्हिया
"धियवा न सुनबा मोर पतोहू, जाय कर देबा बेटवा के जगाय,"
वह दिन बोलल लड़की महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नाम।
"सूतल न मरद के जगइहैं, के फेर छाती अंगेजिहैं बाँस[1]।
तोहके जादा न संकट होई गाऽऽड़, जायकर लेबा बेटवा आपन जगाय,"
हलल न रानी बाय सेल्हिया, सुतले लग्गे पर बाय,
बहुत न जाय कर दमेचे,[2] अहीर कैसों न बाय ऊठल।
फेर भे निकलल रानी बाय सेन्हिया आय कर भयल अङ्ने में ठाढ़।

---

1. दण्ड देंगें 2. धक्का देती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहलेस "धियवा न सुनबा मोर पतोहू, जायकर कैसों बेटवा तूँ जगैबा,"
तब फेर बोलत लड़की महरे का, जैनकर दावन न मँजरी बाय नाम, ।
"ससुआ न सुनबा मोर गोसाईं, कहना माना एठिन हमार।
ऐसे न सइयाँ नाहीं जगिहैं, देहें के देबा बसत्तर उतार।
बिना न कपड़ा के उधार, जायकर सूता बगल में मटियाय।[2]
वह दिन हलल न सेल्हिया बाय रानी, देहें के देलस कपड़ा आपन उतार।
जायकर सूतत बगल में बाय, चिटकल न बदन के।
अहिरे के कबरल पलक जब बाय, भयल ख्याल ब्यही का।
अहीर चिटकल देहियाँ में जाय, वह दिन बोलल न रानी बाय सेल्हिया।
"हो हो न दयी नरायन, का ब्रह्मा लिखला माझे लिलाऽऽर।
ठहरल न रानी बाय सेल्हिया, भगवन कौन बखत बाय घूमल।
भाई-बहिन न होत बाय पहिचान," इतना न सुनै पूत कठइते का।
जरमर भयल कोइला खङार, जायकर टाँगल खाँड़ खूंटी में।
अहीर खिचलेस बिजुल बाय कुसियारी, अहीर लाल पीयर बाय देखात।
"बुजरी जाति के बेस्सा ठहरल, बेस्या भयल सकल परिवार।
कौन न संकट तोके पऽरल, के फेर अयले सेजी ब्यही का
जलदी देबा सरेख लगाय, नाहीं काटब सिर जरियाय।"
वह दिन बोलल रानी बाय सेल्हिया, दरियाँ कहे आँख बिलगाय।
"बिटिया आवत बिजरी से, जबन बँठवा रहल बाय चमार।
उ फेर खेलत अहेर बने में, ई फेर लागत पँछेड़ बिटिया के।
बड़ा भारी फनले टोला में कुराफात, इनारा में हाड़ न डोकर गोबर घोर।
परजन के सगरे राह हम बताय, तामा न गगरी फनवैले।
फोड़ कूँच कइले बाय नकसान, पानी बिना उजरत टोला हमार।
इहै न भारी बिपत बाय लपटियाइल, जायकर मरता चमार सगरे पर।
बिटिया देबे सथवाँ में डहराय," इतना न सूनत अहीर बाय लोरिका।

लोरिक-बँठवा की लड़ाई

"रानी रेंगल घरे तयं जाबे, कुल्ला करब सगरे के जाय।
देखब तागत बँठवा का, एकदम जायकर सगरे के भींट।"
सेल्हिया अपने घरे बाय रेंङ्ल, लोरिका लेलेस ठिल्ली[4] हांथे में।
एकदम रेंगल सगरें पर जाय, जायकर ओल्हल भींटा सगरे के।

---

1. वस्त्र, 2. बहाना कर; 3. खुली, 4. घड़ा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहीर धरत ठिल्ली बाय किनारे, कुल्ला करत गलाली पथरापर।
वह दिन बोलल बँठवा बाय चमार, "कहाँ के आयल सरवा मदमास।[1]
सगरे के छेंकल जल बाय जुठरले," सुनत न पूत कठइत का।
जेकर दूलर लोरिका बाय नाम, बोलत न अहीर कन्तित का।
"सगरे के अगल न बगल जुहरन भइल, बहुत गैने सीगट पँजाय।
सरवा न हल्ला बाय मचवले," वह दिन कुल्ला करके बाय गलाली।
जायकर भरत न ठिल्ली सगरे में, लेकर रेंगल लोरिका पुन बाय।
लेकर चऽढ़ल भीटा सगरे का, बँठवा लखत चमार जब बाय।
लेकर मारत गोटी बाय गुलैला, मुँहकुड़[2] हाथ लोरिका के रह गऽयल।
पेनी गइल ठिल्ली का नोचाय, वह दिन तड़पल पूत कठइत का।
ओठिन गारी गुफारी बाय देत, अब राड़[3] देलेस सगरे पर मचाय।
वह दिन बोलल देबी बाय दुर्गा, "बरुवा न सुनबा फुलझरुआ।

दुर्गा सहायता करने में असमर्थ

कहना सुनबा एठिन हमार, देख भाई जाति चमार ई ठहरल।
हम न देव सङ्हं तोहार, हमार धरम हो जाई नकसान।
जस न तोरे होई बऽल, आपन लेबे जोगिता मिलाय।'
नाहीं मानत पूत कठइत का, दूनों बात न चीत कइलेन सरवर[4]।
अब बद देलेन अखाड़ा सगरे पर, बाजल[5] न पूत कठइत का।
के फेर बँठवा ले चमार, अधिक न दाँव बँठवा का।
उठाय-उठाय पटकत लोरिका के बाय, अहीर उठ-उठ जाला लपटियाय।
दस-बीस पटकना पवलेस, तब फेर बोलल न पूत कठइत का।
जेकर दूलर लोरिका बाय नाम, "कहाँ ओतन न तोहार गोतन।
कहाँ टूट गयल बुनियाद, कौने गुरू का हवऽ चेला।
हमके देबा सरेख लगाय," वह दिन बँठवा बाय चमार।
"सँही गउरा ओतन बाय गोतन, सगरे पर टूट गयल बुनियाद।

लोरिक-बँठवा दोनों अजई गुरू के शिष्य

गुरू न अजई के हई चेला, सांचय देली सरेख लगाऽय।"
तब फेर बोलल पूत कठइत का, ओठे न करत जैरम्मी[7]।
"एकय अखाड़ा के गुरू-भाई, का गति होत सगरे पर बाय।"
ऊहाँ से पलटत बीर बाय लोरिका, एकदम रेंगल गुरु अजई के जाय।

---

1. बदमास, मद में चूर, 2. घड़ा का मुंह, 3. झगड़ा, 4. कहासुनी 5. लड़पड़ा, 6. सचसच, 7. अभिवादन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिका लाल न पीयर बाय लौकल, देहें से बहत पसीना बाय।
'जियत न गुरू मिल जातँऽ पहुँचकर बोगित[1] सिर जरियाय।
बहुत दूध-मलाई खियावल, बँठवा से जाय मोहब्बत कइलेन।
अधिक देलेन गुन ओके सिखाय," लखत न गुरू बाय अजई।
घरे गयल कोठिला में लोकाय,[2] "बिजवा न सुनबे गुरुआइन।
कहना मनबे एठिन हमार, आवत न चेला बाय गरमायल।
लोरिका लाल न पीयर बाय देखात, कह देहे गयल बायँऽ सइयाँ पूरुब।
अभी लौटल जजमानी से नाहीं बायँऽ," वह दिन जौन बिजवा बाय गुरुआइन।
अङने में काली न कुरसी बाय लगावत, लेकर निकलल पंखा जब बाय।
"चेलवा कैसन देहँ गरमउले, बैठ कर लेबा पसीना जुड़वाय।"
वह दिन बोलल पूत कठइत का, "कहाँ गुरू अजई न बायँऽ हमार।
हमके देबा सरेख लगाय, बँठवा के अधिक गुन बायंऽ सिखवले।
हमें गुन देलेस अखाड़ा में छिपाय," "सइयाँ गयल पुरुबे देस में बायंऽ।

गुरुआइन बिजवा द्वारा लोरिक की सहायता

नाहीं लौटल घरे अभी बायँऽ, चेलवा देहें के पसीना जुड़वैबा।
एक दाँव हमहूँ देहीला बताय—, जाय कर मारऽ न चमार सगरे पर।
दिन-दिन के टूट जाई कलंकार," बैठत न पूत कठइत का।
गुरुआइन न देलेन बेना[3] से हँऊक,[4] भयल ठंडा सरीर अहिरे का।
देहें के गयील पसीना झुराय, हलल न बिजवा गुरुआइन।
दू बीरा लेलेस पान लगाय, एक बीरा लोरिक के बाड़य खियावत।
एक बीड़ा अपने लेकर बाय खाऽत, अब दे देलेन बेंवड़ा अङने का।
हाथ में लेलेस बढ़नी[5] उठाय, "चेला चलबे पैंतरा पर तोहूँ।
दाँव देहीं अङने में बताय," एक लङङे लोरिका पैंतरा पर चऽलत।
एक लङङें बिजवा गुरुवाइन बाय चऽलत, अच्छा पैंतरा घूमल।
बिजवा पूरा न पींच बाय बटोरले, मारत न पींच[6] मूँहें का।
अहीर का घोंच लाल हो जाय, लोरिका वैसे न पैंतरा पर बाय चऽलत।
तब फेर बोलत न बिजवा बाय गुरुआइन, "चेला बाउर न मति तूं बउखले।
तोहरो अकिल हरले बाय भगवान, फरके न फरके चलत पैंतरा।
कैसन रुधुर-पोंगी में बाय बऽहत,"[7] उलट न लखत बीर बाय लोरिका।
बिजवा दू-चार बढ़नी बाय जमावत, बाजल बढ़नी गुरुआइन का।

---

1. काट देता, 2. छिप गया, 3. पंखा, 4. हवा करती है, 5. बटोरनी, 6. पाँच 7. अलग।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहीर ठोंकत ताला बाय तकदीर, "मरलेस न तिरिया गउरा में।
बूड़ गयल कठइता का बंस," तब फेर बोलत बिजवा बाय गुरुआइन।
"चेला बाउर न मति तूँ बउखलऽ, अकिल हरले श्री बाय भगवान।
कौनों हरजा जीन माना, दाँव देली अङने में बताय।
यही न दाँव से बँटवा मरइहैं, साँच देली सरेख लगाय।"
ऊठल न पूत कठइत का, जेनकर दूलर लोरिका बाय नाम।
एकदम रेंगल घरे बाय जात, जायकर खोलल कोठी बोहा का।
जेमे परल लोहा का सब समान, अब बीर अनव न कसत बाय अनरखी।
गोड़वा गुल बदन बाय तमान, अब बीर कसत पेटी अजगर का।
जेमे गोली चिपटा खा जाय, अब बीर कसत जिरही लोहे का।
जेमें नौ मन लोहा अमाय, साठी न गजे का दुपट्टा।
अहीर बान्हत सिर बाय घुमाय, जैसे राजा बान्है बघेल।
तब बीर तरकुस न गूजे का पनहीं, अहीर चाँपत एँड़ा बाय चढ़ाय।
अब घर देलेस पागी लरमें का, जेमे मेघ डमरू घहराय।
जाय कर खोलत कोठी दुर्गा का, जहाँ रखल बिजुल बाय खाँड़।
वह दिन चमकल देबी बाय दुर्गा, माई धरत छोकड़ी का भेष।
पहिरय चीर दखिन का, जेमे अङ्डुरन अङ्डुर पर बाय तार।
"बरुआ न सुनबा फुल झरुवा, कहना माना एठिन हमार।
रहे देबे बिजुल मोर खाँड़, जाति ले बँठवा चमार।
हमार हो जाई खाँड़ नकसान, रेंगल न जावे गुरू अजई घरे।
अजई के लेबे गदा माँग, जायकर गदा से लड़ाई सगरे पर करबा।
जायकर मारऽ बँठवा ले चमार," अब बीर मरगस न मरगस बाय चऽलल।
जैसे पुलिस जाला बरियार, जायकर जूटल गुरू अजई के दुवारे।
गुरुआइन से माँगत गदा उनकर बाय, गदा न लोरिका बाय लेले।
पान कूँचत मूँहे में जाय, लखत न बँठवा बाय चमार।
लखकर हहरत सगरे पर बाय, "सरवा हरवा से आवत हथियार।
धोखा करी सगरे के भींटा," राम न नाम गुन गावै के ठाकुर।

बँठवा-लोरिक में लड़ाई

वह दिन जूटल पूत कठइत का, जेकर दुलर लोरिका बाय नाम।
"सुनबा न बँठवा ले गुरुभाई, कहना माना सगरे पर हमाऽर।
बहुत दिन छूटल पैंतरा जब बाय, दस हाँथ घूमऽ पैंतरा बनाय।"

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation,,Chandigarh

दूनों चलल पैंतरा पर बाय, दूनों न लुण्ड के झुण्ड[1] बाय कूदत।
अच्छा गयल पैंतरा गरमाय, लोरिका पाने का पींच बाय बटोरले।
मारत न पींच बरुआ के, गोड़े का घोंच[2] हो गयल लाल।
तब फेर बोलत बीर बाय लोरिका, "सुनबा सङ्घिया गुरुभाई।
फरके न फरके चलल पैंतरा, कैसन घोंच में रुधुर बाय बऽहत ?"
घूमल न पलक बँठवा का, एकदम देखत घोंच बाय उलऽट।

लोरिक की जीत

लेकर मारत गदा गुरू अजई का, दहिना गयल मुजा फेंकाय।
बँठवा गयल सगरें पर भहराय, गिर कर कंहरत बँठवा बाय चमार।
"सङ्ही धोखा में मार तूं करला, पानी बिना जात परान बाय हमार।
तनिक सगरे से पानी तूं लियइबा, हमरे देतऽ मूँहें में पियाय।"
लोरिक मारत बाय मुसकी, दरियाँ मानऽ कहल हमार।
"इहाँ लोटा न गगरा बाय बरतन, कैसे देहित पानी तोहें पियाय।"
तब फेर बोलल बँठवा बाय चमार, "सङ्हें लेला गमछा हमार।
बोथ कर ले आनऽ पानी सगरे से, वह दिन लोरिका गयल सगरे में।

समीक्षात्मक टिप्पणी—लोरिक बँठवा के संघर्ष की कथा भोजपुरी पाठों में आती है, किन्तु प्रकाशित पाठों में प्रायः नहीं आती या आती है तो संक्षेप में। लोरिक का अजई धोबी का शिष्य होना इस बात का प्रतीक है कि उस समय जाति-पाँति पर ध्यान कम दिया जाता था, समाज में गुणी व्यक्ति का सम्मान था। स्त्रियों का भी कम सम्मान नहीं था। बिजवा सम्मानित स्त्री तो थी ही, बुद्धिमती भी थी। उसने पान की पीच के एक साधारण गुर से इतना बड़ा कार्य साध लिया।

●

1. बिना सुध-बुध के, बेतहासा, 2. ठेहुन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा खण्ड

पाँचवाँ काण्ड

लोरिक द्वारा चनवाँ का उढ़ार

सारांश (73) **जात-पांत की बैठक**—जात-पाँत की बैठक बुलाई जाती है, क्योंकि बँठवा चमार ने बेधर्म कर दिया है। गउरा अहीर एकत्र होते हैं। राजा सब के लिए कोदई का भात बनवाता है। भात से इतना अधिक माँड़ निकलता है कि अहीर उसे पीकर मस्त हो जाते हैं। इसके बाद भी माँड़ बचता है, उसे बहवा दिया जाता है तो जैसे एक नदी ही वह निकलती है। इस नाम की नदी आज भी लोरिक डीह बरह्माइन देवी' बलिया से निकल कर बोहा होती हुई आगे चली गई है। गँगिया बोहा से सवरू को मड़हा बुला लाता है। पंचायत बैठती है। उसमें तय किया जाता है कि सहदेव कथा सुने और जाति-बिरादरी को भोज दें तो पवित्र हो जायेगा। ऐसा ही होता है। राजा पूरे गाँव को भोज देता है।

(74) **चनवाँ द्वारा लोरिक से छेड़खानी**—जब भोजन करने वालों की पंगति बैठती है तो चनवाँ झरोखे से लोरिक के पत्तल पर कंकड़ी फेंकती है। लोरिक ऊपर देखता है और चनवाँ को देख कर उसके सौंदर्य पर मोहित हो जाता है। थोड़ी देर बाद चनवाँ पुनः पान का बीड़ा भी फेंकती है। दोनों की आँखें चार होतीं हैं और वे एक-दूसरे से मिलने के लिए आतुर हो उठते हैं।

(74) **सेल्हिया द्वारा लोरिक को विष देने एवं लोरिक द्वारा चनवाँ से भेंट का प्रयास**—सब लोग खा-पीकर उठते हैं। पान का बीड़ा बाँटा जाता है। लोरिक ने व्यर्थ ही इतना खर्च बढ़ा दिया, ऐसा सोच कर रानी सिल्हियाँ उसे पान में विष देने का प्रयास करती है। चनवाँ समझ जाती और उस पान के बीड़े को बदल देती है सब लोग खा-पीकर अपने-अपने घर चले जाते हैं। पान के उस बीड़े को एक भेंड़ा खा लेता और तुरन्त उलट जाता है। चनवाँ लोरिक को पान का बीड़ा देती और पान के उस बीड़े की लाज रखने के लिए भी कहती है। यह सुनते ही लोरिक के सीने पर साँप लोटने लगता है, वह झट घर जाता और लड़कों को एकत्र करके कास (कुश) उखड़वाता है, फिर उससे एक मोटा रस्सा तैयार करता है, उसे रस्से को महीचन तेली के घर ले जाकर रखता है और उसे तेल में डुबो देने की आज्ञा देता है। रात में पानी बरसने के कारण रस्सा भींगने लगता है किन्तु वह महीचन से उठता ही नहीं ताकि उसे उठाकर घर के अन्दर रख दे। वह रोने लगता है, तब तक मँजरी पहुंचती और उसके रोने का कारण पूछती है। कारण जान कर मँजरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उस बरहे को अंदर रखा देती है। यद्यपि लोरिक को इसका पता नहीं चलता, किन्तु तब भी महीचन लोरिक के डर से सारी बातें बता देता है। लोरिक चिंतित होता किन्तु मँजरी से मिलने का यत्न करता है।

चनवाँ द्वारा बँठवा को सहायता का प्रयास

वह दिन लोरिका गयल सगरे में, तब फेर सहदेव न राजा का बाय लड़की।
एकदम कूदल चननी से बाय, हमरे न मोहब्बत के कारन।
बँठवा गयल चमार मराय", बंठवा न घिसले न घिसले बाय पोंगर,
भैंस के आन कर मँजरी बाय दबले, तब तक जूटल बेस्सा बाय चननी।
जायकर बँठवा का भुजा बाय जोरत, बायें न हाथ जौन बाय।
ऊ फेर घूमत सीना ओकर बाय, तब तक पलटल पूत कठइत का।
लखत न सगरे का दस्तान, "आवऽ बुजरी गाड़ देबय तोहूँ के ओही ठे।"
सुनकर भागल न लड़की राजा का, एकदम सहदेव न किला दरबार।
जायकर लोरिका मुँहें पानी बाय देत, वह दिन बँठवा जौन बाय चमार।
जौन बायऽ भुजा ओकर बऽचल, ओय हाँथे हींचत हाड़ भैंसी का।
लोरिका के मारत घोंचड़े बाय घुमाय, लोरिका गिरत बद से भहराय।
तब तक देवी न दुर्गा बाय चमकल, लोरिका पर देलेस सहारा फुन बाय।
चटपट ऊठल पूत कठइत का, कहै "बोंग देहीं सिर बँठवा का।
सरवा दिन-दिन टूट जात कलंकार," वह दिन तड़पल देवी बाय दुर्गा।
"बरुवा जाति चमार के हवँऽ, मरी, जाई घरे में पुजाय।
हमार हो जाई धरम नकसान", वह दिन दस बीस चमार बलबले।
लेकर पहुँचल इनारा सहदेव का, ओमें का हाड़ न ठोकर बाय कढ़वावत।
गोबर न माटी बाय कढ़ववले, कुछ पानी कूआँ का उघवावै।
ओमे तुलसी न सोना बाय छोड़वावत, परजन के देलेस आडर लगवाय।
"पंच न पीयऽ जल कुआँ का, एमे कौनों दोष नाहीं बाय।"
लेकर जूटल चमार सगरे पर, बँठवा के खटिया न मचिया बान्हत।
एकदम ले ले घरे बाय टेकले, घर दुवारे ले गऽयल।
बँठवा कँहरत उहाँ बाय चमार, रेंड़ल न बीर बाय लोरिका।
अपने घरे दुवारे जाय, जाय कर देत न गदा गुरू अजई का।
ऊहाँ से रेंड़ल बीर बाय लोरिका, अपने घरे जाय दुवारे बाय।
जायकर उतारत समान लोहा का, सगरों देलेस कोठी में सब बन्द।
जायकर करत नहान चौकी पर, लोरिका बदलत न कपड़ा जब बाय।
बनल रसोईं ठहरे पर, जाय-जाय खात बीर बाय लोरिका।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खायकर कुला गलाली बाय कऽरत, हाँथ मुह धोवत बीर ओठिन बाय।
जाय कर जोरल बीरा बाय पान, अहीर मूहें बीरा बाय दबावत।
कोठी में लागल पलँग ओकर बाय, जाय कर माचा पर बीर बाय ढरकल।
कोठी में करत अजादी जब बाय, राम नाम गुन गावै के ठाकुर।
देबिया न सुमिरनी भगवती, दुर्गा जानऽ सक्ति तोहार।
जितना न कीर्तन गयल सतजुगी, जोर कर देबा कड़ी बैठाय।

राजा सहदेव को भोज देने का दण्ड

आपन न टोला बाय बरकबले, हुक्का न चीलम देलेस बन्द करवाय।
राजा के मंसा[1] न पाप बाय लागल, एमें लागी डाड़ी न फाटक[2]।
धीरे-धीरे मालूम न सहदेव राजा के भयल, राजा एक छीन धोती बाय पहिरत।
गोड़े में सोने खड़ाऊँ बाय पहिरत, हाथें में सोबरन बाय लेहले।
एकदम जात चौधरी देवान के पास, "चौधरी न सुनबा देवान।
लोरिका देलेस लेकिन लगाय, एकर कौन सही बाय सबूत।
चौधरी देबा अर्थ तूँ बताय", चौधरी बोलल बाय देवान।
"राजा मनबा कहल हमार, राजा से राजा तूँहें नाहीं।
बियादर से राजा नाहीं होबा, एकर डाँड़ फटक दुवरां पर।
जितना बसती अहीर क बाय, सगरों लेला बियादर जुटवाय।
ऐमे जूटी कुल कठइत का, ओही का फसिला हव अभुराइल।
एकर दीहैं सरेखो लगाय, "तब फेर दिन न बदल बाय मोकाम।
अब सूक गयल दिन बऽद, बिहने घूम जाय नेवता[3] सहदेव का।
दुवारे गिरत जाजिम अहिरे का, बारह न खोरी बाय गउरा।

जात-बिरादरी का भोज

एकदम कसी बसल बाय अहिरे का, सगरों जूटल अहीर गउरा का।
राजा पाव का बान्ह याम, कोदई[4] देलेस पुरान धोवाय।
एक लंगे माड़े का नदी बाय बहवले, कितना बूड़त न बोथरत[5] बाय जात।
बहुत सनेसी बाय जात, एकदम लोरिका के रेंगल दरबार।
करे पुकार कठइत का, दादा परल बिरादरी जब बाय।
ओठिन चौधरी न बलावत बाय देवान, सगरों खोज बियादर बाय तोहार।
"कैसन सहदेव राजा के हवँऽ ममिला, चल कर देबा सही न सबूत।"
वह दिन झंखत कका बाय कठइता, लोरिका भूठ अभुरा बाय डलले।
एकर देखल न ताकल नाहीं बाय, का जनी उल्टा ममिला हमहन पर।

---

1. विचार, 2. जुर्माना, 3. निमन्त्रण, 4. कोदो, 5. डूब गया।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोहरा लागी खरचा ले डांड़," वह दिन गड्या नाऊ के बाय भेजत।
"गड्या चल जावे साँसड़ बोहा मंझार, जहाँ बेटवा बाय मोर धरमी।
ओनके लेई अइबा बलवाय, रेंगल न गड्या बाय हजामत।
जाय कर जूटत नदी ब्योरा के, नाई न डोंगा से बाय उतरल।
जाय कर जूटल अड़ाने धरमी के, जायकर निहुर न करत बाय पलगी।
धरमी देत आसीरबाद बाय, "गंगी कहबा कुसल गउरा का।
कैसन बायँऽ गउरा का सब लोग? कैसन दादा बायँऽ मोर कठइत?
कैसन भइया खुइलन बायीं हमार? कैसन बायंऽ घरे का परिवार?"
वह दिन बोलल गड्या बाय नाऊ, "गौहाँ मानऽ कहल हमार।
नगद न कुसल गउरा का, नगद बायँ गउरा का सबलोग।
ददा न कइले बायँऽ बलाव, जाये के बायँ सहदेव के दरबार।
राजा के घरे परल बियादरी बाईं, यहां से ददा कइले बायँऽ बलाव।"
धरमी घोरइन के बाय सरेखत, हमरा देख बतैया सब गाय।
हम जात बाई गउरा गाँव," नाऊ न धरमी बाय रेंगल।
जाय कर जूटल नदी ब्योरा के, धरमी नाई न डोंगा से बाय उतरल।
एकदम धइले राह गउरा का, जाय कर जूटल बखरी में बाय।
बैठल कका बाय कठइता, सनेसिया बहुत न बलावय बदे आयल बाय।
वह दिन जूटल बीर बाय साँवर, ददा के निहुर न करत बाय प्रनाम।
कठइत देत असीस बाय बाद, जाय कर खुइलन के पलगी बाय कऽरत।
माता बाईं असीस बाय बाद, उठ कर लोरिका करत बाय प्रनाम।
धरमी देत आसीरबाद बाय, -'ददा कौन गढ़ पर गयनऽ।
हमके लेला बोहे से बलवाय," "कहे-बेटा परल बियदरी सहदेव का।
ओही बदे कइलो न तोहरो बलाव, लोरिका आपन टोला बाय बरकवले।
राजा पर देलेन दोस बाय गिराय, एकर सही सबूत कौनों नहिनी।
का जनी उलटी ममिला गउरा से, दोस लागी हमहन पर जाय।"
वह दिन बोलल न माल बाय धरमी, "दादा बाउर मति तूं बउखला।
तोहरों अकिल हरले बाय भगवान, जाति न बैठवा बाय चमार।
बने से लागल पछेंड़ बाय, पाप लटकत राजा पर बाय।
तीनों न दल बाय सफरत, आगे-आगे रेंगल ददा बाय कठइत।
ओकरे पीछे धरमी सरदार, तौने के पीछे रेंगल बाय लोरिका।
वह दिन देखा हाल चननी का, राजा सहदेव किला दरबार।
मतारी बिटिया चनवाँ न सेन्हियाँ ऊहाँ रहनी, वह दिन बोल न लड़की उहाँ
बाय चनवाँ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"माई लोरिका में मरद कौन बखनले, जेनके सङ्हें हम बछरू चरात।
काट-काट देली मुँहे से गूड़," तब फेर बोलत बेस्सा बाय सेल्हिया।

लोरिक भी बिरादरी में सम्मिलित

"बिटिया उहै न लोरिका नाहीं बाय, जहाँ मरद फूटल बाय बलिवान।
उहै न आवत कुल कठइता का, आगे ददा कठइत बाय।
ओकरे पीछे सौंरु सरदार, तौने के पीछे लोरिका उहै बाय।

लोरिक की वीरता देखकर चनवाँ में प्रेम-भावना का उदय

माई अब देखा जाला करतूत, नदी बहत माँड़े के बाय।"
तब तीनों न दल बाय जुटल, जाय नदी के तीरे भयनऽ ठाढ़।
मतारी-बिटिया चननी से देखत बाईं, लोरिका न पेटी बाय बान्हत।
बायें धरमी न भाई के बाय दावत, दहिने ददा न दाबय कठइता।
ऊ बीर चम्फा न लोरिका डाक गऽयल, डाक कर भयल नदी वह पार।
बिटिया देखले लोरिका के करतूत, तीनों न रेंगल दल बाय जात।
जहाँ कस कर जूटल बाय अहिरवा, कितना माँड़ न बाय बोयरत।
सबके आडर लोरिका बाय लगवले, जाय-जाय करै जगती पर नहान।
नहान कर के जूटत जगती पर बाय, आय कर बैठल गोल जजमें पर।
सबसे होत बाय पलगी प्रनाम, एकरे बाद आसीर्बाद बाद सब देलेन।
कुसल न होत बाय भलाई, वह बखत कसी न बैठल बाय बियदरी।
चौधरी बैठल देवान जब बाय, सहदेव न किला से बाय निकलल।
एक छीन धोती बाय पहिनले, एकदम नंगे पैर से बाय आवत।
जाय कर कइलेन सवाल टाटे पर, "पंचय सुनवा तूं बियादर।
अब सुन लेबा चौधरी मोर देवान, लड़की के विषय में दोष लगवलेन।
एकर केहो देही सही-सबूत ?" तब फेर बोलत चौधरी बाय देवान।
"पंच मानऽ कहल हमार, कठइत न कुल हवँ फइलवले।
एकर सही उहैं दीहै सबूत," तब फेर बोलल माल बाय साँवर।
"सुनवा न पंचा मोर बियादर, सुन लेबा चौधरी के देवान।
जाति चमार के लागल पँछेड़, बने में कौनों सही बाय सबूत ?
लोग टाटे पर अरथ काहे घटवला, मंसा का दोष लटकत ओमें बाय।"
चाहे ऐसे चानी[1] तोहन बनावऽ, सबके मतलब इहो बाईं बात।
इतना सब कोई पंच सुना, एमें कई करले न बिचार।

---

1. शुद्ध, ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जौन बात धरमी रहल उहाँ कइले, सगरो कइलेन टाटे पर मंजूर।
राजा कथा न सुनबा दुरान, सब भाइन के देबा हाथ धोआय[1]।
टूट गयील ममिला सहदेव का, डट कर बैठत बियादरी अब बाय।
उठल न टाट अहिरन का, पंच बिजय भयल तैयार।
बैठत न पाती अँङनई में, जहाँ लोरिका बीर बाय बैठत।
चनवाँ ऊपर चननी पर बाय, छोट-छोट बहुत न सिटकी[2] बाय जुटवले।
सबके गयील रसोइँ परोस, सगरों समान गिर गइल।
चिकना[3] घूमल पाँती में बाय, हूमाँद देलेन ओठे चुवाय।
बोलत न बाय परसोइयाँ, "पंच बोला सीताराम।"[4]

चनवाँ की लोरिक के साथ छेड़खानी—

दू-चार कवर बाय उठवले, चनवाँ छोड़ल सिटकी चननी से।
लौरिका के गिरत पतरी पर बाय, टप्प से लोटा अहीर बाय हींचत।
ऊपर-मूड़ी बाय उठवले, नजर जाती चननी पर बाय।
चनवाँ धर-धर आँचर उधिरावत, धर-धर लोरिक काँड़त बाय करिहाँव।
फेर से लोटा धरती में धइले, दू चार कवर औरों अहीर बाय खात।
टप्प से गिरल पतरी पर बाय, टप्प से खींचत लोटा फुन बाय।
ऊपर न मूड़ी बाय उठवले, सीना लौकत चनवाँ का बाय।
जर-मर अहीर होत बाय खङार, तब फेर बोलल काका बाय कठइता।
"हमरे पूत का बान-कुबान, कम खाय कोदई अधिक पीयै पानी।"
जैसे-तैसे कौसों पाँती बाय खाइले, कूला होत गलासी जब बाय।

लोरिक को सेन्हिया द्वारा विषदेकर मार डालने का प्रयास

हाँथ न मुँह बाय धोवत, सगरों निकलल जजमें पर जाय।
ऊहाँ बँटत बीरा बाय पान, सब कोई थाम-थाम बीरा बाय खाय।
सगरों खात बियादर जब बाय, सेन्हिया लोरिका जिदिआइल।
भूठय हमार देलेस खरचा इतना लगवाय, ओनके सिंधिया न माहुर बाय पीसत।
पीसकर पाने बीरा में बाय लगावत, अन्तिम आवत बीरा किला से।
लोरिका के खाए बदे बलावत, चट पट लखै लड़की सहदेव का।

चनवाँ द्वारा बचाव

जेकर चन्ना परल बाय नाम, दूसर न बीरा बाय लगावत।
लेकर कूदल जजमें पर जाय, लोरिका के हाँथे बीरा बाय छीनत।

---

1. भोजन कराओ, 2. रोड़ा, 3. घी, 4. भोजना आरम्भ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आपन देलेस बीरा टेकाय, पंजरे रहल भेंड़ा बाय वान्हल।
अब बीग देलेन बीरा हाथें का, भेंड़ा खात मरे मर जाय।
सगरों लखत जात बाय बियादर, वह दिन खाय पी के होत बाय सन्तुल।
वह दिन सब कोई पलगी न करत बाय आसीस, चलऽ चलीं करत बायँऽ बेंवत।
धीरे-धीरे खसकत गउरा का लोग, अपने-अपने घरे जाय दुवार।
सगरों चली गयलन घरे-घरे, रेंगल न कका बाय कठइता।
पीछें रेंगल धरमी बाय सरदार, तौने के पीछे बीर बाय लोरिका।

दोनों का एक दूसरे के प्रति आकर्षण

रेंगल जात घरे के बाय, वह दिन लखै लड़की सहदेव का।
जेकर चन्ना परल बाय नाम, सइयां न सुनवा सुखनन्दन।
कहना माना एठिन हमार, करा न लाज बीरा का।"
राह लेबा पूरब तड़ियाय, राम न राम गुन गावै के ठाकुर...।
देबिया न सुमिरिनी भगवती, दुर्गा जानऽ शक्ति तोहार।
जितना न किर्तन गयल सतजुगी, जोर कर देबा कड़ी बैठाय।
सम्हरल न पूत कठइत का, नगर गँउरा बाय गाँव।
गुड़ न बहुरी बाय बान्हत, दस बीस लेलेस लड़िका लियाय।

लोरिक द्वारा गुप्त मिलन का प्रयास

एकदम कसिहरा में बाय, लड़िकन से कांस बाय नोचवावत।
लड़िकन के गुड़ न बहुरी[1] बाय बाँटत, अपने बरत बरहा जब बाय।
लड़िकन के नोचत न नोचत कास, हाँथ न बहत लोहू जब बाय।
रोवे न लड़िका गउरा का, अहीर कैसों छुट्टी नाहीं देता।
एक ठे जूटल चमार ओही दम, लाल न रूप लड़िकन का।
"गोंहा न सुनबा तूँ मालिक, कहना माना एठिन हमार।
छोड़ दा जीव लड़िकन का, हम फेर देबय बरहा बनवाय।"
वह बखत छोड़ल जिन्दगी लड़िकन का, चमार गयल बरहा में लपटियाय[2]।
कैंसो न जैसों बनै बरहा, भाँजकर करलेन लोरिका तैयार।
छोड़कर बरहा बाय सरियवले, अच्छा करलेस बण्डल तैयार।
थोड़ा न दिन बच गऽयल, लेकर पहुँचल गउरा बाय गाँव।
लेलेन बरहा बाय जात, टाइम बेरी न बिसवत[3] का जून।
एकदम रेंगल लोरिका बाय रेंगावल, चल गयल महीचन न तेली के दरबार।

---

1. भूंजा हुआ या-भिगोकर कूंचा हुआ जब 2. लग गया, 3. सूर्यास्त।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घर भर परानी सब बायँऽ सगरों खाए बैठल बायँऽ।
महीचन न महीचन बाय पुकारत, "तेली बोलत ठहरे से बाय।
गौंहा, सब कोई बैठल बाय खाये के, हुकुम लानऽ दुवारे का तोहार।"
"कहै बरहा अङने में बाई धऽरत, बरहा देहा तेले में बोर।
नाहीं सावन भादों का महीना, कहीं भींजी बरहा अङने में।
एठे खरीयत नाहीं बाय तोहार, विहने बालो न बच्चा झोंकवाइब।
तोहके देबय जाठी[1] में पेरवाय" कह के लोरिका घरे बाय लौटल।
खाय-पी के कुल परानी बाय निकलत, महीचन बालो न बच्चा सरदार।
वह दिन पूरब न घूमल पुरवइया, पच्छिम बादल घेरत घनघोर।
उत्तर मारत लौकनियाँ, टप-टिप परत बुन्दी[2] जब बाय।
महीचन बालों से बच्चा बाय लपटल, छन भर डोलत बरहा नाहीं बाय।
वह दिन आधी न रात बाय निचलोइया,[3] घर भर रोवत जवन बाय।
सुनत न धिया महरे का, जेकर दावन मंजरी बाय नाम।
ऊठल न धिया महरे का, गोड़ में पहिनत चप्पल जब बाय।
हाँथे सोवरन छड़ी बाय धइलें, एकदम महीचन तेली के दरबार।
जायकर महीचन न महीचन बाय पुकारत, "तोहके कौन संकट बाय पऽरल ?
रात रोवला निचलोइया के जून," वह दिन बोलत तेली बाय महीचन।
"गौंहिन तोहार गौहाँ का हव बरहा, जौन फेर भींगी बरहा अङने में।
विहने करी अहीर कुराफाऽत," वह दिन बोलत लड़की महरे का।
"महीचन हमहूँ बरहा बाई धऽरत, हमार नाम जीन[4] बताया।"
वह दिन दहिने न हांथे बरहा धइलेस, तेल वाला कोठिला में देलेस गिराय।
फेर भे बोलल घरे चलजाय, जाय कर कोठी में लड़की बाय सूतल।
तब तक भोर न होत बाय विहान, पूरब कौआ मचवले बाय रोर।
जब तक सूरज जोति में बाय आवत, ऊठत न पूत कठइत का।
जेकर दूलर लोरिका बाय नाम, कुछ न दिन चढ़ जाला।
रेंगल चल जाय महीचन के दरबार, महीचन न महीचन बाय पुकारत।
महीचन बोलल तेली जब बाय, नाहीं लौकत बरहा अँगने में।
"जैसे बरहा बाय बोरले, बरहा देबा डाँड़े हमार निकाल।"
सुनत तेली महीचन, जेनकर सून सरीर हो जाय।
"भगवन भूर न बरहा जौन रहल, ऊहै नाहीं डोलल फीरल अँगने में।

---

1. कोल्हू 2. बूंद, 3. शांत, एकान्त, 4. मत।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ये बखत खइलेस न तेल कोठिला[1] का, बरहा में डेढ़ा बजन होई चऽढ़ल।
हाँथ जोर करत बिनती लोरिका से, गौंहा, तोहार गौंहिन[2] आइल रहनी।
ऊहै देलेन बरहा गिराय, हमहन से नाहीं बरहा निकली।
साँच देली सरेखे लगाय," वह दिन लौटल पूत कठइत का।
जेकर दूलर लोरिका बाय नाम, जाय कर जूटल बखरी में बाय।
लोरिका अन्य न छोड़त बाय जलपान, जेन बीर सात घड़ी के खवइया।
दिन बारह बजल बाय जात, जायकर बोलल धिया महरे का।
"सइयाँ न सुनवा सुखनन्दन, सेन्हुर मनबा कहल हमार।
चल कर करा बिजय तैयार, जौने बदे अन्य न पानी बाय छोड़ले।
ऊ भर जानत ताला बाय तकदीर, जाय कर देबय बरहा तोर निकाल।"
वह दिन उठल पूत कठइत का, जाय कर करत बाय चौकी पर नहाऽन।
कपड़ा न अहीर बाय बदलत, मूहें कुल्ला गलाली बाय कऽरत।
जाय कर खाय रसोईं जब बाय, खाय-पीके पानी न पत्तर बाय पियले।
हाँथ मूँह धोवत अहीर फुन बाय, जोरल न बीरा बाय पान।
अहीर कूँचत मघइया बाय पान, मँजरी बरहा बाय सँकेलत[3]।
अपने में लेलेस काम सपराय, पहिरत न चप्पल गोड़े में।
हांथे सोबरन छड़ी बाय धइले, एकदम रेंगल महीचन के दरबार।
जाय कर मारत कछार[4] जब बाय, बत्तीस न गाँड़े का कोठिला।
लोहे का लागल सीढ़ी जब बाय, जाय कर दहिने न हाथें बरहा धइलेस।
कोठिला के लेले बरहा चल जाय, जाय कर अँगने में बरहा बाय बीगत।
थाम लेत बरहा फुन बाय, ऊठल न बीर बाय लोरिका।
घूमल न जात महीचन के दरबार, बरहा लौकल अँगने में बाय।
लख-लख घूम खोरी गउरा का, जहाँ न अहीर झंखत फुन बाय।
ये बखत दिन न भारी रात छोट, अब भाई संझा न जून रात होइहैं।
बरहा फेंकत किला सहदेव का, वह बखत संझा न रात भयील।
गाँव में सोय जब पर गयील, अब बीर हलल कोठी गँजड़े का।
अनव न कसत बाय अनरखी, गोड़वाँ गुलबदन बाय तमान।
अब फेर बन्हलेस पेटी अजगर का, जेमे गोली ठहक खाय जाय।
अब बीर कसे जीरही लोहे का, जेमें नौ मन लोहा अमाय।
अब बीर साठी न गजे का दुपट्टा, जेन बीर बान्हे सिर घुमाय।

---

1. मिट्टी का बना अन्न रखने के पात्र, 2. मलकिन, 3. लपेटती है, 4. फेंटा,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जैसे राजा बान्ह बघेल, तरकुस न गूजे का बाय पनहीं।
अहीरचाँपत एँड़ा चढ़ाय, अब घर लेला पागी लरमें का।
जेमें मेघ डमरू घहराय, पान न बीरा बाय लगावत।
लोरिका कूँचत मघइया बाय पान, सावन न भादों के महीना।
पूरब बहल बाय पुरवइया, पच्छिम बादल घेरत बाय घनघोर।
उत्तर न मरले बाय लौकनियां, दखिन कौंड़त मुसरन का धाऽर।

समीक्षात्मक टिप्पणी—लोरिक-चन्दा के मिलन का यह तरीका विचित्र है। विवाहिता मँजरी को जब इसकी खबर मिलती है तो आश्चर्य चकित रह जाती है, फिर भी कुछ कहती नहीं।

चंदा से मिलने के लिए बरहे का तैयार किया जाना, उसे महीचन तेली के घर रखना आदि प्रसंग भोजपुरी पाठों के मौखित परम्परा से प्राप्त संस्करणों में ही मिलते हैं, प्रकाशित पाठों में इसे चलता कर दिया गया है, जबकि प्रस्तुत पाठ इस प्रसंग के कारण बहुत स्वाभाविक तथा रोचक हो गया है। हाँ, इससे नायक लोरिक के चरित्र पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा है।

सारांश (76) दोनों का उपाय द्वारा गुप्त मिलन—अब लोरिक बरहा लेकर चनवाँ के महल के पास पहुँचता है। बरहा ऊपर फेंकता है। बरहे के ही सहारे वह चनवाँ से मिलता और उसके साथ बिहार करना चाहता है, किन्तु पहले तो चनवां बरहे को नहीं थामती, फिर बाद में थाम लेती है, लोरिक उसी के सहारे चढ़ जाता है। वह चनवाँ के साथ बिहार करता है फिर प्रातः काल होते उसी के सहारे उतर कर घर लौट आता है। चनवाँ के पास से लौटते हुए गुरु अजई लोरिक को देख लेता है। लोरिक लज्जा के मारे सिर नीचा कर लेता है[1]। अजई किसी से बताता नहीं, किन्तु मँजरी सारा रहस्य जान जाती है। लोरिक अखाड़े चला जाता है, चनवाँ लोरिक की गली में घूमने आती है, जहाँ उसकी मँजरी से भेंट हो जाती है। दोनों लड़ने लगती हैं, जिससे झगड़ू कोइरी का भाँटा बोया खेत नष्ट हो जाता है। झगड़ू लोरिक से जा कर कहता है, लोरिक आकर झगड़े का निपटारा करता है।

(77) चनवां का लोरिक द्वारा उढ़ार—लोरिक-चनवाँ दोनों गाँव के बाहर मिलने का निश्चय करते हैं। बात पूरे गाँव में फैल जाती है। रात में चनवाँ और लोरिक एकान्त स्थान में मिलते हैं। चनवाँ आँवला का एक पेड़ देख कर लोरिक से

---

1. यहाँ लोरिक चनवां के मिलन का विस्तार से वर्णन किया गया है। लोरिक जब चनवां से मिलकर बाहर आता है तो जल्दी में चनवां की ही साड़ी पहिन लेता है और इसी से उसके गुप्त-मिलन का सारा रहस्य खुल जाता है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसे दो भाग करने के लिए कहती है। क्योंकि पेड़ चनवाँ को इस कृत्य पर धिक्कारता है। इतना ही नहीं लोरिक का बछवा जो मंजरी के विवाह में दहेज के रूप में मिला था, चनवाँ को मारने दौड़ता है, मानों वह भी उनके इस कुकृत्य से असंतुष्ट है। लोरिक धरमी से चनवाँ को उड़ारने की बात बता देता है। धरमी उसे ऐसा न करने के लिये कहता है, किन्तु लोरिक एक नहीं मानता। वह चनवाँ को लेकर चल पड़ता है। वे बोहा नदी को लकड़ी के सहारे पार करते हैं। सेवहर को जब इसका पता चलता है तो वह चनवाँ को प्राप्त करने चल पड़ता है। नदी पार करते-करते वह उन्हें पकड़ भी लेता है। दोनों में लड़ाई होती है, अंत में विजय लोरिक की होती है। सेवहर लौट कर गढ़पिपरी आता और कोलों को लोरिक के विरुद्ध उकसाता है। उधर तब तक लोरिक चनवाँ दोनों हरदी पहुँच जाते हैं। हरदी पहुँच कर दोनों आराम से रहने लगते हैं। थकामाँदा लोरिक जमुनी कलवारिन की दुकान पर शराब पीने चला जाता है। चनवाँ उसके लिये भोजन बनाने लगती हैं।

लोरिक बरहा के सहारे चनवाँ से मिलने में सफल

मलका न रात बाय मरले, मेवा बहुत बाय आज बोलत।
अहिरे के लागत भयंकर जब बाय, जाय कर लेलेन बरहा महीचन घर।
रेंगल न जात सहदेव के दरबार, "कहलेस करिया न बादल मोर मम्मा।
घर बर बादल होबा सगभाय, धन-धन न चमक मइया तूं बिजली।
तनिक लौक किला राजा का," ऊपर से चमकत बिजली जब बाय।
सहदेव का चमकल किला जब बाय, लोरिका मूड़ी[1] उठाय के बाय ताकत।
पगड़ी गिरल धरती ओकर बाय, बहुत न ऊँचा बाय किला।
चनवाँ के छत ऊपर दरबार, लेकर बीगत बरहा चननी पर।
चनवाँ थाम्हत बरहा फुन बाय, थाम्हंकर धरती बरहा बाय बीगत[2]।
अहीर झंखत पूत कठइत का, "एदाँ डहरी[3] में बरहा ठहरी।
नाहीं टूक के टुक्का काटत बीगत चल देबय," जाय कर बीगत बरहा चननी पर।
चनवाँ बान्हत खम्भा घुमाय, लोरिका दू-चार जोर अजमावत।
"बरहा टूटे-काटे होबा, अबहियें टूट फाट जाया।
अधड़ में टूटी बरहा सरगे से, धरती गिरत परान[4] चल जाई।
धय कर चढ़ल बरहा बाय जाय, जाय कर चढ़ल छत चनवाँ का।
जेन कर लागल पलङ फुन बाय, लखत न लड़की सहदेव का।
अठान देलेस क्रिया धराय[5]—, छोड़ न भाई पलिवाँर।

---

1. सिर, 2. फेंकती है, 3. मार्ग में, 4. प्राण, 5. कसम।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छोड़ न देही जाङ् के, तब फेर धरे पेरुवा[1] पर लात ।
जौन-जौन बाईं क्रिया धरावत, अहीर खइले क्रिया सब जाय ।
जाय कर लपटत पेरुआ पर लात, अहीर के उहाँ लपटिएैवे, ।
चूरा-पाटी गयल फेंकाय, बोल न लड़की सहदेव का ।
"बाबिल न सुनिहैं सहदेव, भइया न सुनिहैं महदेव ।
बड़ा भारी करिहैं उदियान,[2]" वह दिन बोलल पूत कठइत का ।
जेकर दूलर लोरिका बाय नाम, "देखल न जोर सहदेव का, ।
तागत देखय महदेव का, रुखानी-बँसुला तूँ लहैबा ।
खाँय देहीं चूरा बैठाय, बड़-बड़ बढ़ई मर जइहैं ।
वैसन कौनो जोड़ नाहीं पड़िहैं," बँसुला न देले बाय रुखानी ।
खाँप[3] देलेस अहिर बैठाय, फेर से लपटत लिरिया पर बाय ।
अनुहाइल लड़की सहदेव का, "सइयाँ कितना अवार बाय बाकी ?"
"तीन सौ साठ अवार होला, साठ अवार बाकी अभी रह गयील ।"
कैसों-जैसों अहिर बाय निपटावत, बड़े सबेरे के बात ।
जौन न पगड़ी डंडा पावे, चटपट लेलेस सिरे लपेट ।
चप्पल न चनवाँ का बाय पावत, चटपट पहिनत गोड़े में बाय ।
धय कर झूलल बरहा जब बाय, दू-चार हाँथ बरहा बाय ।

अजई को लोरिक के चरित्र पर सन्देह

नोंचनाच के लेले टुकड़ा चल जाय, बड़े सबेरे के बात ।
लोरिका घरे जात जब बाय, गुरू अजई जात रहल मैदान ।
परल नजर गुरू अजई का, "चेला बाउर मति तूँ बउखले ।
कहाँ बीतत रात तोर बाय ?" वह दिन बोलल बीर बाय लोरिका ।
"गुरू मनबा कहल हमार, उदंतय नरिहा[4] बोहा में ।
बछवा लेलेन बोहा में उपाट; राति भर घर-घर छरिका[5] लगावत ।
केन्हहूँ का एहुनी केहुनी बाय फूटल, केन्हहूं का झरत ऊपर का दाँत ।
गुरू वहीं रात हमार बीतल, साँचे देली सरेख लगाय ।"
वह दिन बोलल गुरू बाय अजई, "जवन चेला बीतल रात बोहा में ।

लोरिक की सफाई

ऊ भर जानय ताला तकदीर, जौने नरिहा के पीछे परला ।
ऊहै घूमत चननी पर बाय," लोरिका मारत मुसुकी वहीं दम ,
"गुरू हमहीं न जनली के तोहूँ, दूसर कोई नाहीं जानल पावे ।"

---

1. पाया, 2. परेशानी, 3. चूर, 4. अनब्याही गाय, 5. कूदती है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रेंङल न बीर बाय लोरिका, आगे सहदेव राजा के मिलल बरदबार[1] ।
लोरिका के करत बाय पलगी, अहीर देत आसीरबाद बाय ।
बोलल चरवाह राजा का; "गौंहाँ कहाँ रात तोहार बीतल ।
हमके देबा सरेख लगाय," "उदंतय[2] नरिहा बोहा का ।
बछवा लेलेन बोहा में ऊपाट," "अब बम्माइल नरिहा बोहा से ।
रात भर मचल खोजवल हमार, छोंड़ न ब्येही जाँघे का ।
मलका न रात बाय मरले, मेघा बहुत बाय आज बोलत ।
तब फेर धरे पेरुवा पर लात," जौन-जौन बाइँ क्रिया धरावत ।
अहीर खइले क्रिया सब जाय, जाय कर लपटत पेरुवा पर लात ।
अहीर के ऊहाँ लपटियैबे, चूरा पाटी गयल फेंकाय ।
बोल न लड़की सहदेव का, "बाबिल न सुनिहैं सहदेव ।
भइया न सुनिहैं महदेव, बड़ा भारी करिहैं उदियान ।
वह दिन बोलत पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाय नाम ।
"देखल न जोर सहदेव का, तागत देखल महदेव का ।
रुखानी बंसुला तूं लहैबा," "सइयाँ सुनबा सुखनन्दन ।

मँजरी को भी संदेह : लोरिक द्वारा समझाने का प्रयास

अब सुन लेबा मथवा का महुवार, कहवाँ न रात तोहार बीतल ?
हमके देबा सरेखा लगाय," वह दिन बोलल पूत कठइत का ।
जेकर दूलर लोरिका बाय नाम, "ब्येही, का कहीं, का नाहीं ।
काल्ह भइया धरमी जौन बानऽ, बोहा से देलेन सनेस भेजवाय ।
उदंतय नरिहा बोहाका, बछवा लेलेन बोहा में उपाट ।
ब्यही न छरकी सब लगावत, हमके बीतल दिन ऊहाँ बाय ।
बोहा में बीतल रात जब बाय," वह दिन छनकल धिया महरे का ।
"सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, ईहौ न बात जाये तेबा ।
कहाँ पवला दुपट्टा चनवां का, हमके देबा सरेखे लगाय ।"
तब फेर बोलत पूत कठइत का, "ब्येही कपड़ा गयल रहल धोबियाने ।
रात के देलेस धोबी बदऽल," तब फेर बोलत लड़की महरे का ।
"सइयाँ ईहो न बात जाये देबा, कहाँ पवला चप्पल चनवाँ का ।"
तब फेर बोलत पूत कठइत का, "ब्येहो पनहीं देली चमराने ।
धड़पड़ राती गयल बदलाय," वह दिन झंखत लड़की महरे का ।

---

1. बैल चराने वाला, 2. बिना दांत की ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जेकर दावन मँजरी बाय नाम, "इहो न बात जाये देबा।
कैसन टिकुली चिटकल बाय पंजरे," तब फेर बोलल अहीर कन्तित का।
"ब्येही बहरी-बाहर अइली, अब हल गयली गुरू के दरवार।
गुरुवाइन का बिस्तरा रहल लागल, वहीं पर लोटी न पोट हम गयली।
वही गइल टिकुली चिटिक," वह दिन बोलल लड़की महरे का।
"सइयाँ ईहो बात जाये देहा ओहर, कैसन जाँघे में खून बाय लागल।"
तब फेर बोलल अहीर बाय कन्तित का, "ब्येही बछवा बोहे का गयल उखमऽज।
घर-घर छरकी लगावत, एहुनी-ठेहुनी बाय टूटत।
केनहूँ का चलल नाक से खून, उहैं निसान लागे जाँघ में।"
वह दिन हहरल न धिया महरे का, "सइया न सुनबा सुखनन्दन।
कहना माना एठिन हमार, जौन न बीतल रात बोहा में।

मँजरी की सास से शिकायत

ऊ भर जानत नसीब तकदीर," वह दिन रेंगल मँजरी बाय।
जाय कर बैठत सास बाईं अम्मा, "ससुवा न सुनबा मोर गोसाईं।
कहना माना एठिन हमार, बहुत न खरहा बाय लहटल[1]।
जायकर चरत हरिअरी बाय दूब, कौनों न जोगिता तूं बनैबा।
खरहा के देबा तूहों समझाय" बोलल सास बाई खुइलन।
"धियवा न सुनबा पतोहूँ कहना माना एठिन हमार।
तोर न खरहा तोर कबजा, कसकर देबे बन्हना[2] चढ़ाय।"
इतना न होत जबाब बाय सबाल, लोरिका जात अखाड़ा के ओर जाय।
तब तक सहदेव न राजा के लड़की, जाय कर घूमल खोरी लोरिका का।
मँजरी से पूछत राह बाय चाह, "कहाँ भइया बायँऽ आज गऽयल।
बखरी में पता नाहीं मिलत ठिकान," सून न लड़की महरे का।
जर-मर भयल कोयला खऽार, "दिने न भाई बहिन बने।
रात में जँवाई-मेहर हो जाय," सूनत न लड़की सहदेव का।
सुनकर गयल ओठे न सरमाय, जाय कर लौटल घरे जाय दुवार।
भौका न पाथी बाय खोजत, अनजा लेलेस कोरंजा निकाल।
बिड़ई[4] लेकर बाय बनवले, कपारे पर लेलेस भौका उठाय।
लेकर भौका रेंगल जब बाय, जाय कर जुटत झगड़ू कोइरी के कोड़ारे।

---

1. परचा हुआ, 2. बन्धन, 3. पति-पत्नी, 4. सिर पर बोझ रखते समय सिर पर रखने वाली वस्तु।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मँजरी-चनवाँ में झगड़ा

लेहले मँजरी भौकी में अंजा, ऊहो जूटल झगड़ू के पास।
जाय कर कोड़ारे में बाय हऽलल, पीछे चनवाँ मँजरी हल जाय।
बोलत न लड़की महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नाम।
"सुनवा न कोइरी भइया झगड़ू, जेकर सुन्दर सइयाँ देखऽ होइहैं।
ओके सुन्दर भंटा तूँहीं देहा, जेकर कान न कोंचर सइयाँ होइहें।
ओके कोढ़ें भंटा तूँ देवा," सुन्दर न सइयाँ बीर बाय लोरिका।
कोढ़ न मरद सेवहर बाय माल, चनवाँ के लागल गुस्सा वही दम।
बात न चीते कइलेन सरवर, दोनों हाँथे न बाहीं लेलेन।
एकदम झगड़ू कोइरी के कोड़ारे, दुनहूँ के बद जात मोकाम वही दम।
झगड़ू के कीमती न कीमती बाय कोड़ार, कौनो रुपया न सेर बाय बेंचाय।
कौनो रुपया न पौवा बाय बेंचाय, कोइरी के घण्टा छमीछा के ममिला।
कोड़ार देलन गरदा सब उड़ाय, जवन न लड़की बाय महरे का।
उठाय उठाय पटकत चनवाँ के बाय, एको अन न तन नाहीं ढाँपत।[1]
दूनों लड़त गरदा बाईं मिसान, रोवे न झगड़ू कोइरी।
रोवत चल जात कखाड़ा पर, जहाँ लोरिका बीर बाय टीकल।
जायकर कहत सनेस[2] लरमें का, "भइया बालो न बच्चा कैसे जीहें।
कैसे चली दुनियाँ का टकसार,[3] बीर लेला झगड़ा तूँ मचाय।
तिरिया देलेन सोर हमार कबार,[4] एक एक कीमती रहल कोड़ार।
कितना गरदा मिसान हो जाय," बोलत न पूत कठइत का
जेकर दूलर लोरिका बाय नाम, "गुरू न सुनवा तूँ अजई।
कहना माना एठिन हमार, जाय कर देवा झगड़ा बरकाय।'
वह दिन गुरू न अजई बाय बोलल, "चेला तोर झगड़ा ईहाँ अझुराइल।
जायकर देवे झयड़ा बरकाय," रेंडल न पूत कठइत का।
जेकर दुलर लोरिका बाय नाम, चलल न बीर अखाड़ा से।
जैसे भादों भैंसा बाय कनवछल,[5] वैसन रेंडल अहीर बाय जात।
जाय कर गयल कोड़ारे नगिचाय, लखत न हाल तिरिया का।
दूनों बाजत गरदा बाईं मिसान, मारत खखारी बीर बाय लोरिका।
सूनत न लड़की महरे का, कपड़ा लेकर भागल झगड़ू कोइरी के घरे।

---

1. ढँकती है, 2. सन्देश, 3. लेनदेन, 4. समूल नष्ट कर दिया, 5. मस्ती में आया।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आपन ढाँकत अन बाय तन, जौन बेस्सा बाय चननी।
ओनके अन न तन नाहीं ढाँपय, खोज-खोज खाति मुराई[1] जब बाय।
झंख न पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाय नाम।
"कितनो न हवँऽऽ ब्येही जांधे का, डर कर घरे दुवारे भाग जाय।
जाति न बेस्या बाय चननी, बेस्या भयल सकल परिवार।
एके लाजि सरम कौनों नाहीं बाय, खोज-खोज खाति मुराई जब बाय।"

चनवाँ को भगा कर ले जाने का कार्यक्रम तय

मारत न मुसकी बाय चनवाँ, "सइयाँ राती मोकाम डाल देबा।
गउवाँ गाँव के बाहर जौन पीपर बाय, जे भाई आगे निकल के ऊहाँ जाई।
जायके जोही पिपरे के पेंड़", रात तल[2] मोकाम बाय देले।
तल बदत उढ़ारे के बाय, वह दिन इतना न बात बाय भइल।
संझा न होत बाय जून, जाय कर सूतत लोरिका पलङ पर।
मँजरी सङहें बाय सूतल, बदन धरत करिहांव लोरिका का।
जौन दिना आधी रात बाय निचलोइया, मइया सुमिरत दुर्गा के बाय।
बड़ा भारी होई बतमरई,[3] वह दिन दुर्गा सक्ति बाय छोड़त।
मँजरी के छूटल हाँथ जब बाय, बहै न सेन्हुर माथे का[4]।

लोरिका का रात में निकल भागना

लोरिका ऊठल पलँगे से बाय, अनव न कसत बाय अनरखी।
गोड़वा गुलबदन बाय तमान, बान्हल पेटी अजगर का।
जेमें गोली ठहक खा जाय, कसत न जिरही लोहे का।
जेमें नौ मन लोहा बाय अमाय, तब बीर तरकुस न गूजे का पनहीं।
अहिर चाँपत एँड़ा बाय चढ़ाय, साठि न गजे का दुपट्टा।
अहीर बान्हत सिर बाय घुमाय, धरत न पागी लरमें का।
जेमें मेघ डमरू घहराय, बत्तीसों समान बीर बाय कसले।
एकदम रेंङल राह पूरब का, आइल न रात बाय निचलोइया।
गायें में परल सोय जब बाय, तब फेर तड़फत देबी बाय दुर्गा।
"बरुवा न सुनबा फुलझरुवा, कहना मनबे एठिन हमार।
चढ़ले दारू देस खङाऽर,[5] छोड़देला खाँड़ तूं बीजुल।

---

1. मूली, 2. निश्चित स्थल, 3. बतछोड़ई, 4. माथे का सिन्दूर बहना अशुभ सूचक है, 5. खङ्गार एक वीर जाति भी होती है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चल कर का करबा तूहों करतूत,[1] वह दिन लौट कर घरे तूँ जावे।
जवन सूतल ब्येही बाय तोर, मूड़े पर धइले विजुल बाय खाँड़।
जायकर ले आवऽ खाँड़ तूँ निकाल", जाय कर हलल बखारी अपने बाय।
जहाँ सूतल धिया महरे का, बहे नीर मँजरी का।
माथे का बहत सेन्हुर ओन्हें बाय, जायकर मूड़े तरे खाँड़ बाय खींचत।
लोरिका रेङल ऊहों से बाय, जायकर जूटल पिपरे तर गउरा।

चनवाँ के संग बोहा के लिए प्रस्थान

जहाँ बदल तल पिपरे के बाय पेंड़, चनवाँ आगे जाय के बाय लोकाइल[2]।
अहीर घुमघाम राह आंठे देख, कौनो पता लागत बाय ठेकान।
वह दिन लौटल घरे और बाय, चनवाँ न पीटत बाय थपोरी[3]।
"सइयाँ न सुनवा सुखनन्दन, कैसन बदला मोकाम पूरब के।
कैसन लौटल घरे बायऽ जात," वह बखत लोरिका न बीर लौटल।
दूनों न साज बाज बाय बान्हत, रात रेंङल राह पूरब का।
एक पेड़ अँवरा पैड़े में बाय पड़ल, एक फल गिरत पैंड़े[4] से बाय।
तब फेर बोलल लड़की सहदेव का, जेकर चन्ना परल बाय नाम।
"कहलेस सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन, सेन्हुर मानऽ कहल हमार।
हिंचता न खाँड़ पल्ले से, दू भाग देता पेंड़ भगियाय।"
बोलत न पेंड़ अँवरा का, "ऐसे न रहते सतबरता[5]।
ओनके लेले न जात बाये धिङार, इतना न सुन पूत कठइत का।
कहलेन हो हो दयी नरायन, का ब्रह्मा लिखला माझें तूँ लिलार।
पहिले न आगम बाय मीलल, पैड़ें में करत बाय पेंड़ जबाब।
दूनों न दल बाय जूटल, तब तक भोर न होत बाय बिहान।
पूरब कौआ मचउले बाय रोर, जवने दिन उतरल नदी ब्यौरा का।
लोरिका नाई न डोंगा से भयल पार, धइले न राह बोहा का।
पैड़े में गाय बानी पँजाइल, वह दिन बोलत लड़की सहदेव का।
"केकर[6] गइया तूँ हव, केकर बने बिहारे ले पँजानी।
केकर घरे दुवारे जाय पँजाय", तब तक बोलत गाय बाय बैना।
"धरमी न गाय जौन बानी, ऊ फेर जानी अड़ाने पर पँजाय[7]।
ई फेर लोरिका न पापी के हइं गाय, ई फेंर बन-बिहारे बाय पँजाय।
वह दिन लोरिका बछरू बाय उठउले, चनवाँ लेलेस गाय डहराय।

---

1. कर्तव्य, 2. छिप गई, 3. ताली, 4. मार्ग, 5. सत्यवती, 6. किसकी, 7. चल पड़ीं ब्यायी।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जायकर जूटल बोहा बाय अड़ाने, जौन बछवा रहल कलङ्गिया।
मँजरी आइल दइजा[1] में बाय, ऊ भाई चनवाँ के लेले बाय उपाट।
बोहा में भारी कइलेस उदियान, वह दिन धरमी बहुत बाय समझावत।
नाहीं समझत बछवा जब बाय, नान्हूँ न धोरई बाय पुकारत।
एकदम ठाढ़ बछवा हो जाय, जाय कर बान्हत बछवा बाय कलङ्गिया।
सब कोई जूटत अड़ाने पर बाय, लोरिका न करत बाय पलगी।
धरती देत आसीरवाद बाय, बोलल न बीर बाय लोरिका।
"धरमी न सुनबा भइया, एक काम कइली गलती हम बऽहुत।
कई लेली उढ़ार गउरा में", तब फेर बोलत माल धरमी।
"भइया कौनों हरजा नाहीं बाय, बोहा में देबय कोठा पटवाय।
दूनों भाई टीक बोहा मंझार, कौनों बखत बिपत पर जाई।
दूनों भाई करी जोड़ देखऽ काम", धरमी बहुत न बात बाय समझावत।
लोरिका कैसों बात नाहीं मानत, "कहलेस कइली पयाम पूरब का।

हरदी के लिए तैयारी

चल जाइब दुनी न हरदी बाय पाल", बहुत न धरमी बाय समझावत।
लोरिका मानत कहल नाहीं बाय, आडर न धरमी बाय लगावत।
गाय-भैंस देबा एठे लगाय, पी ला दूध आत्मा भर।
तब फेर गाई न भैंस बाय लगावत, सूबा दिन खड़ा अड़ाने पर होनी।
वह दिन छूटत बम्बकत[2] बोहा में चल जाय, एको न बैना ऊहाँ रूकय।
सगरों गयनी बोहा में छितरियाय,[3] थोड़कय[4] रहल दूध कछारी में।
धरमी देलेस आडर लगवाय, आनदा पीयले दूध कछारी का।
मुँहकुड़ न हाँथे में बाय थाम्हत, चिरुवा[5] ले ले अहीर बाय लगाय।
कल्ला न फाटल पेनी कछारी का, दूध गयल जमीने पर पँवऽट।[6]
एको बुन्द जात मूँहेमें नाहीं बाय, झँखत न साँवर बाय धरमी।
हानि न रस्ता बाय लौकत, आगम मिलत बोहा बाय मँझार।
लोरिका के बहुत न बात बाय समझावत, नाहीं मानत कहना फुन बाय।
आगे-आगे रेंगल लोरिका बाय सरदार, पीछे लेत चनवाँ पछियाय।
कुछु न दूर बाय गयल, आगे परल नदी ब्योरा का।
ऊहाँ गहीर दह जब बाय, लकड़ी न काठ बाय बटोरत।
चैली[7] बीन के बइले बाय तैयार, दूनों न चढ़ के बाय खेवत।

---

1. दहेज, 2. उछलती है, 3. छिटक गयीं, 4. थोड़ा, 5. चुल्लू, 6. फैलगया 7. लकड़ी का छिला हुआ टुकड़ा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक ठे बहल मूस रहल जात, ऊहो के देलेस चनवाँ चढ़ाय।
बीच न काटत चैली का भाँवर, दुई न फरकी[1] भयील बाय।
एक पर बहत बीर बाय लोरिक, एक पर बहत चनवाँ चल जाय।
कैसों दूनों भयनऽ नदी पार, ऊहो-ऊहो किर्तन छोड़ देबा।
जौन बाय बिजरी देखा गाँव, पता न पवले बाय मरद सेवहर।
360 तीर भाँथी में धइलेस, बगल में लेले न बाय लटकाय।
एक तीर हाँथे बान बाय लगवले, रस्ता भागल पूरब के जाय।
जाय कर उतरत नदी ब्योरा का, ऊहाँ नाई न डोंगा से उतरल।
जाय कर हलल कोले में बाय, जहाँ साँवर बाय सरदार।
जाय कर कहत आँख लरमें का, "धरमी न सुनबा वोहा का।
कहना माना एठिन हमार, तूँ फेर उढ़रय-उढ़रा एहर देखला।
हमके देवा सरेखे लगाय," जवन माल बाय धरमी।"
झूठ कबहूँ नाहीं बाय बोलल, कहै उढ़रय-उढ़रा सही देखल।
लेकिन यही चाल से न पकड़इहैं, ओनके नासा न पत्ती कुछ पियावै।
पनहीं के देलेन चिपटा कुँचवाय, उलटा न थुथुन बाय करवले।
भाँथी के उलटी मूँह बाय धोकवले, जाय कर जलदी उढ़रय-उढ़रा।
जाय कर पैंड़े लेबा परग पकऽड़, रेंगल न मरद बाय सेवहर।
लटपटात गोड़ जब जाय, तीन सौ साठ रहल तीर।
भाँथी के गयल बोहा में छितराय, धरमी के 360 बायँऽघोरई।
सगरों लेलेस तीर बिनवाय, बीन कर ढेर बोहा में गँजलेस।
आगी देलेस ओमें लगाय, तब फेर तड़कल बीर जाला सेवहर।
पल्ले के कौनों ख्याल नाहीं करै, आगे फरल नदी जब बाय।
बालू में दूनों ऊहों रेंगल, सेवहर दाँत अँगुली बाय चबाय।

लोरिक से लड़ाई : सेवहर पराजित

भितरां मूसर काँड़ करिहाँव, हाँथे का तानी तीर बाय चढ़ावत।
जौन दिन समने न पेंड़ सेमरे का, बाजल न तीर सेमरे से।
झखड़ा[2] गिरल पेंड़ अरराय, लोरिका चनवाँ के भयल मालूम।
दूनों न टीकल रेता में ओय पार, पहर जौन माल बाय सेवहर।
अब फेर डालत भाँथी[3] में हाँथ, भाँथी में एको तीर नाहीं देखाय।
वह दिन हहरल अहिर बाय सेवहर, कहलेन-हो हो दयी नारायन।
का ब्रह्मा लिखला माँझे लिलार, धरमी न दुश्मन मिल गऽयल।

---

1. भाग, 2. विशाल 3. तरकस।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाहीं बुजरी अँगुरी न साँह तूँ बुझवती, सङहैं जाँघ देखत ना बलसार।"

वह दिन बोलत लड़की सहदेव का, "सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन।
कहना मनबा एठे हमार, लड़की साँह न तूँ बटोरबा।
चैली बीती यह पार, अब बद जाई अखाड़ा नदी में।
दूनों न दल बाज जाबा, जेन बोर नीचा भुई खा जइहैं।[1]
ऊहैं मुँह लीहैं करिखा लगाय,[2] जेकर जीत कुस्ती में हो जाई।
ओकर देबय सङ्ग पिछियाय," वह दिन लड़की साँह न बाय बटोरत।
चैली बीती कइले तैयार, जाय कर उतरल नदी ओय पार।
वह दिन झँखन पूत कठइत का, आपन ठोंकत ताला तकदीर।
"वेस्सा न बाय घर छोड़ल, सगरों छूट गयनऽ पलिवार।
ई फेर डहरे अँभुरा[3] बाय लगवले, एमे गड़बड़ ममिला बाय देखात।"
वह दिन जूटल अहीर बाय सेवहर, दूनों तल मोकाम बद देलेन।
उनहूँ से हाथ-बाहीं होय गयील, कुस्ती बाजत रेता में बाय।
पटकत न मरद बाय सेवहर, लोरिका खात नीचा जब बाय।
वह दिन बोलल लड़की सहदेव का, "एदाँ नाहीं देखल कुस्ती तूँ लोग का।
फेर से बाजा कुस्ती तनी बनाय, ममिला जात रेता में फरियाय।"
उठ कर दूनों न बीर बाय बाजल, करवट न दूनों बाय गीरल।
लोरिका ओर चनवाँ कइले बाय सहारा, सेवहर नीचे ऊपर लोरिका।
बाजल थपोरी चनवाँ का, संइयाँ न सुनबा सुखनन्दन।

सेवहर द्वारा पिपरी के कोलों को भड़काया जाना :

मुँहें करिखा तूँ लगइबा, लवट जाबा बिजरी तूँ गाँव।
कइली पयाम पूरब के, चल जाबय नोनी हरदीपुर पाल।"
सेवहर अहीर बाय लौटल, चल जाय गाढ़े गजनवाँ गाढ़ पिपरी।
जहाँ बायँऽ कोल चिड़ार, जाय कर सजले कोले के बाय पिपरी।
"कोल देबा ठेंगचा[4] तोहन मचाय, लूट कर खाबा पूँजी अहिरे का।"
बहरे लोरिका चनवाँ बाय डहरल, एकदम राती रेंगल दिन बाय दौड़ल।
कहीं नाहीं कुरो बाय मोकामः, जाय कर नोनी न हरदी बाय पहुँचल।
हरदी के पोखरा से जौन बाय बाहर, ओठे न डेरा न डंडा बाय जमावत।

लोरिक जमुनी कलारिन की ओर आसक्त

चनवाँ सगरों समान खोल देलेस; आगी न काठी बाय लहावत।
रसोइं के करत बाइं इन्तजाम, जवन न पूत कठइता का।

---

1. नीचाखाना 2. कालिख लगाना, 3. झगड़ा 4. झगड़ा-लड़ाई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हरदी न होली पता बाय लगावत, होली चलत जमुनी कलारिन का।
एकल रहल घरे के मुसामात, जेकर जादव तोलय के तोला।
अहीर बत्तीसों समान बाय कसले, अब घुम गयल खोरी हरदी का।
जाय कर जमुनी कलारिन के दरवार, जाय कर हलल कोठी में बाय।

तुलनात्मक समीक्षा—लोरिक द्वारा चनवाँ के उढ़ार की कथा थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ प्रायः सभी कथा-रूपों में आयी है, किन्तु बंठवा द्वारा गउरा के लोगों को परेशान करने, धोबिन विजवा द्वारा लोरिक को दाँव बताने और उसके आधार पर बंठवा को पराजित करने की कथा अन्य कथा-रूपों में अत्यन्त संक्षेप में आयी है। राजा सहदेव को भोज देने का दण्ड, लोरिक का भोज में सम्मिलित होना और चनवाँ द्वारा छेड़खानी किये जाने पर गुस-मिलन का प्रयास आदि प्रसंग भी कथा की रोचकता में वृद्धि करते हैं। सभी छोटी-छोटी कथाएँ भी एक दूसरे से सम्बद्ध तथा गुँथी हुई हैं। लोरिक की हरदी-यात्रा का वर्णन कई अन्य कथानकों में भी आया है, किन्तु प्रस्तुत पाठ में इसका प्रस्तुतीकरण काफी अच्छा तथा क्रमबद्ध है। यत्र-तत्र शृंगार के पुट से कथा की रोचकता बढ़ गई है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठवाँ : हरदी-नेउरपुर काण्ड

लोरिक-जमुनी में प्रेम : लोरिक का हरेवा-परेवा राजा से संघर्ष तथा मँजरी से मिलन

सारांश (78) **लोरिक-जमुनी में प्रेम**—लोरिक-जमुनी को देखते ही उसके सौंदर्य पर मोहित हो जाता है और जमीन पर गिर जाता है। जमुनी उसे उठाती और अपने घर में पलँग पर सुला देती है। रात में लोरिक-जमुनी दोनों विहार करते हैं। जमुनी उसे भोजन बनाकर खिलाती है। सबेरे लोरिक तालाब पर पहुँचता है। यहाँ देखता है कि राजा महुअर का हाथी पानी में गिरा पड़ा है। दस-बारह पहलवान उसे निकालना चाहते हैं, तब भी निकाल नहीं पाते। लोरिक पहुँचता और अकेले ही निकाल बाहर करता है। इसे देखकर सब आश्चर्य चकित रह जाते हैं।

(79) **राजा महुअर से लोरिक की भेंट**—एक बुढ़िया इसे देखती रहती है और जाकर राजा से बता देती है। राजा लोरिक को बुलाता है। उस पर प्रसन्न होकर उसे अपनी गायों का चरवाहा बना कर रख लेता है, लोरिक वहीं रहकर आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगता है। एक दिन उसकी गायें एक आदमी के खेत में पड़ जाती हैं और काफी फसल नुकसान हो जाती है। गाँव के लोग लोरिक को मारने दौड़ते हैं, लोरिक अकेले ही सबको मारकर खदेड़ देता है। तब कुछ लोग राजा से शिकायत करते हैं। राजा लोरिक की शक्ति का लोहा मान लेता है।

(80) **राजा महुअर का हरेवा-परेवा के विरुद्ध लोरिक को उकसाना**—राजा अवसर से लाभ उठाना चाहता है। नेउरपुर का राजा हरेवा-परेवा एक शक्तिशाली राजा है जो राजा महुवर को तंग करता रहता है। राजा महुअर लोरिक को लड़ाई के लिये तैयार करता है और मँगरा नाम के घोड़ा को उसे सौंपते हुए कहता है—'राजा हरेवा-परेवा को मार डालो, इसके बदले में हरदीपुर का राज्य लिख दूँगा तथा तुम्हारी प्रजा बनकर रहूँगा।' लोरिक ऐसा करने के लिये तैयार हो जाता है।

(80) **लोरिक का नेउरपुर प्रस्थान**—मँगरा घोड़ा इतना उद्दण्ड और चंचल है कि कोई उसे छूने का साहस नहीं करता, किन्तु लोरिक उस पर चढ़ कर सवार हो जाता है। लोरिक को लेकर घोड़ा जमुनी के दरबार पहुँचता है। वह लोरिक से महुअर राजा के पास जाकर सारा साज-सामान लाने के लिये कहता है लोरिक राजा

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से माँगकर मंगरा का स्वर्ण-निर्मित चारजामा, लगाम आदि ले आता है और उसे घोड़े को पहनाता है, फिर पीठ थपथपा कर सवार हो जाता है। वह घोड़ा जब हिन-हिनाता है तो डर के मारे हर घर में ताले लग जाते हैं। लोरिक नेउरपुर पहुँचता है और द्वारपालों से आवश्यक जानकारी प्राप्त करता है, फिर नेउरपुर के वन में जाकर टिक जाता है। वन में हिंसक वन्य पशु हैं, किन्तु इष्ट देवी दुर्गा उनसे लोरिक की रक्षा करती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छटवाँ : हरदीकाण्ड

राम न राम गुन गावै के ठाकुर, भजली नाम हो तोहार।
देविया न सुमिरनी भगवती, दुर्गा जानऽ सक्ती तोहार।
बैठल न सुवा कुरसी पर, जवन दिना लखय सूरत जमुनी का।
सोरहों सिंगार बाय कइले, बत्तीसों कइदेले बाय अभरन।
गद्दी पर बैठ बेंचत बाय सराब, लखत न अहीर बाय लोरिका।
अहीर के लखत मुर्छा बाय मरले, बद्द से गिरल जमीने में बाय।
चनवाँ का लखी बदन बाय हहरल, "फेर कहाँ के अयले मुसाफिर।
कैसन हमरे दुकाने पर भयनऽ," माचा मचहरी बाय बिछावत।
अहीर के करत टेक बाय माचा पर, ओनकर सिर न आँख मुँह धोवत।
देलेस दारु जब गिलास, कहै-"दुकाने समान नाहीं चाही।
हमके सच्चा माल तूं देबा," अच्छा सराब बाय पियवले।
अहीर के चेत ख्याल नाहीं बाय, सूतल माचा पर निसभोर।[1]
दिन न अहीर के बाय बीतत, दिन न बखत बीत गयील।
जौन दिन कबरल नींद अहीरे का, एकदम भयल ख्याल ऊहाँ से।
तीवई बनाय रसोई जोहत, हरदी पोखरा भीटा के तीर।
वह दिन जौन जमुनी बाय कलारिन, अहीर मोहित लिरिया हो गयिल।
बोलत न जमुनी बाय कलारिन, "सइयाँ सुनबा सुखनन्दन।
कहाँ न लिरिया बायीं तोहार जनानी, डेरा न डंडा से मँगाइब।
ठहक टीकऽ हरदी तूं पाल, कौनों न हरजा इहाँ नाहीं।
होली चलत हरदी में बाय हमार", लोरिका के पलँङ न कुरसी से बाय उठवले।
भठ्ठीवाले देलेस गद्दी पर बैठाय, अपने दू एक नौकर साथ में बायँऽ लेत।
रेंगल जात पोखरा हरदी के, चनवाँ के हँकहड़ न छँकहड़ बाय उठावत।
चनवाँ के साथे बाय लियवले, यमुनी के घरे दुवारे ले गयील।

---

1. अचेत होकर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोठी न पोतवावत बाय लिपवावत, आपन रसद देत बाय समान।
चनवाँ न रसोई बाय बनावत, अहिरे के जमुनी बाय जगावत।
उठल न पूत कठइत का; जेकर दुलर लोरिका बाय नाम।
जाय कर बनल बाय रसोंइँ खायेके, सूतत न बैठत अहीर बाय।
ओकरे बाद मौज बाय करत, तब तक भयल भोर बाय बिहान।
पूरब कौआ मचवले बाय रोर; सूरज न रोसनी बाय आवत।
ऊठल न अहीर बीर लोरिक, जाय कर चौकी पर बाय नहात।
कपड़ा न अहीर बीर पहिरत, जाय के खात रसोइँ जब बाय।
कसत न पेटी लोहे का, अनब न कसत बाय अनरखी।
गोड़वा गुलबदन तमान, कसत न पेटी अजगर का।
जेमें गोली चिपटा खा जाय, कसत जीरही लोहे का।
जेमें नौ मन लोहा अमाय, साठी न गजे का दुपट्टा।
अहीर बान्हत सिर बाय घुमाय, जैसे बान्हे राजा बघेल।
तरकुस न गूजे का पनहीं, अहीर चाँपत एँड़ा चढ़ाय।
मूँहें जोरल बीरा बाय लगावल; अहीर कूँचत मघइया बाय पान।
अहीर रेंगल धीरे-धीरे, जेकर बिगहन पनहीं सुनाय।

लोरिक राजा महुअर के यहाँ नौकर नियुक्त

जाय कर जूटल पोखरा तीरे के, हरदी के जौन राजा बाय महुवर।
जाति के रहल तेली ऊहाँ बाय, तौन न राजा का हंथा।
हरदी के खचकन में बाय, डेंहुड़ी से दस न बारह पहलवान।
ऊ फेर भेजत हरदी से बाय, "जाय कर ले आया कबार।
कुछ भाई नौकरी तनखाह तूँ लोगन का बढ़ाइब, कुछ फेर देबय ईनाम बकसीस।"
बरहों पहलवान बायँऽ रेङल, जाय कर हरदी पोखरा पर जूटल।
एक भीटा पर अहीर लोरिका बाय टहरत, एक ठे बुड्ढा जनानी बाय नहात।
बरहों पहलवान राजा का जूटल, देहें के देलेन कपड़ा उतार।
जायकर हलल पोखरा में बाय, बरहों न लोग बाय लागल।
लोरिका देख तमासा भीटा से, एक लंगे बुढ़िया न लखत लिरिया।
दू-चार घण्टा किड़किड़ानऽ, पानी से हंथा हिलत न डोलत।
नाहीं भाई बरहों जवान खिसिययनऽ, निकल गयनऽ पोखरा के डाँड़े।
आपन आपन पहिरत कपड़ा बाय समान, वह दिन लखत पूत कठइत का।
जेकर दुलर लोरिका बाय नाम, आपन पहिनना सब उतारत।
एकदम हलल पोखरा में जाय, दहिना न हाँथ धरे पोंछ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिका देलेस हंथा कवार, रेंगल न हंथा राजा का।
जाय कर चढ़ गयल पोखरा के भीट, तब फेर पछेरे न बारह बाय जवान।
हंथा के पाछे न पाछे जानऽ पछियवले, बुढ़िया देखत तमासा फेर बाय।
नहाय के कपड़ा न धोती बाय गारत, एकदम धइले गोजी हाँथ में।
पीछे जादी राजा के दरबार, लोरिका आपन कसत सब समान।
घूम-धाम लौटल जमुनी के दरबार, एहर हंथा डेंहुडी पर बाय जूटल।
बारहों जूटि गयनऽ जवान, लख कर राजा खुसी बाय भऽयल।
बड़ा हुनती कइलेन बरहों पहलवान, तब तक जूटल बुढ़िया पीछे से बाय।
नीहुर न माँथ बाय नेववले, "राजा न सुनबा महराजा;
कहना माना एठिन हमार, एक भाई अचरज पोखरा में हम देखल।
हुकुम होई तब देहीं एठे सुनाय," राजा न हुकुम बाय देत।
एकदम कहत बुढ़िया ओही दम, "महराज, बरहों पहलवान तोहार गयनऽ।
घड़ी न घण्टा पोखरा में हलनऽ, छन भर जूमुस हंथा नाहीं खाय।
पहलवान निकल डाड़े तोहार भयनऽ, एक ठे मरद आयल बाय परदेशी।
जमुनी घरे परल डेरा ओनकर बाय, ऊ जवान दहिना न हाँथे धइलेन पोंछ।
हंथा देलेस पोखरा से उठाय, इहै डहरल हंथा तोहार आवै।
साँच देली सरेखे लगाय," सुनत न राजा बाय महुवर।
आपन ठोंकत ताला बाय तकदीर, वह दिन दू-चार सिपाही बाय छोड़त।
छूटल सिपाही राजा का, जाय कर छेंकत जमुनी के दरबार।
"कहाँ मरद आयल बानऽ परदेसी, राजा कइलेन देखय के बलाव।"
अहीर बत्तीसों समान बाय कसजे, मूंहे कूँचत मघइया बाय पान।
एकदम रेंगल किला महुवर का, पाछे चनवाँ सोरहों बाय सिङ्गार।
पीछे-पीछे जूटल जब बाय, राजा लख निगाह चननी से।
राजा के देख मुर्छा मांर दे, इतना न माल बाय हरदी।
ऐसन लिरिया देखल नाहीं जाय, रेंगल न अहीर रेंडावल।
जैसे पुलिस चल जाय बरियार, जाय कर खाली कुरसी एक ठे पवलेस।
एकदम अहीर बैठल बाय महिपाय, राजा के नात हित कितना जूटल।
उठ उठ जानऽ कचहरी में जकलाय, कहलेन—"हो हो न दयी हो नरायन।
का ब्रह्मा लिखला माझे लिलार, कहाँ के मरद ई अयलेन।
जहाँ होनी मरदन के खान," वह दिन राजा बोलत बाय महुवर।
"भइया कहाँ ओतन बाय गोतन, कहाँ टूट गयल बुनियाद।"
बोलल न पूत कठइत का, "दादा गउरा ओतन बाय गोतन।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हरदी में टूटी गयिल बाय बुनियाद, कहलेन कौन काम करबा धन्धा।
कौन करबा हरदी में नोकरी, हमके देबा सरेखे लगाय।"
तब फेर बोलत पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाय नाम।
"राजा न सुनबा तूँ महराजा, जाति अहीरे के हई हऽम।
दूसर न काम हमसे नाहीं सपरी, हमसे गाई न भैंस चर जइहैं।"
इतना न आडर देत बाय अहीर, राजा के होई गयल मंजूर।
"जितना न गाय हरदी का, इनके देहीं जीमा लगवाय।
डट कर करे चरवही हरदी में, चरवाह मिलि गयल बाय बरियार।"
ओनके दिन न सुक बाय बतावत, गउवाँ के पूरुब बले बाहर बैना।
ओही लेकर चली जाय गोजी बाय डंडा, नावा न सिलसिला के चरवाह।
कुछ चरवही तसील बाय कर देहलेस धरवाय, दिन न जोहत वाय मोकाम।
मौज करत हरदी में बाय, राम न राम गुन गावैं के ठाकुर।

लोरिका का प्रजा-वर्ग के साथ दुर्व्यवहार : मनमानी

'देबिया न सुमिरनी भगवती, दुर्गा जानऽ सक्ती तोहार।
जितना कीर्तन भयनऽ तोहार सतयुगी, जोर कर देबा कड़ी बैठाय।
परल न सुक बाय बिहान, अहीर दिसा न होत बाय मैदान।
एकदम कुल्ला गलाली बाय कऽरत, जाय कर करत नहान चौकी पर।
अहीर कपड़ा पुजीसन बाय पहिरत, जाय कर छानत अगारी बाय।
अहीर खात-पीयत बानऽ ऊहाँ, डंडा गोजी लेलेस उठाय।
गोड़े न जूता बाय कसत, गाएँ के पूरब बगल जहाँ बाईं गाय हरदी का।
माघ न फागुन का महीना, गोहूँ हाबुस[1] खड़ियान में भयल।
जितना न गाय हरदी का, सगरों लोरिका के जीमें दे दे।
दे कर नीमन सब बाय, परजा न घरे घरे चल जाय।
अहीर गाय बाय डहरवले,[2] एक ठे लंगड़ बछिया ऊहाँ रऽहल।
ओनके टाँगत कान्हें पर बाय, दरे-दर का घोरान[3] बाय दबावत।
गाय देलेस गेहुएँ में बहियाय, हल कर बछिया खेत में उतारत।
वहीं बैठ कर काटत बाल गेहूएँ का, अपने सूतल पेंड़े छेउली के।
जितना न गाय बानऽ बरधा,[4] खाय कर भयनऽ भराहू।
बाज न घंटिया गेहुँएँ में, जौन छाती भर लागल गेहूँ।
जेमे गर्दा उड़त बाय पिसान, लखै न परजा हरदी का।

---

1. बढ़ा हुआ, 2. चराने के लिए ले गया, 3. काँटा जिससे खेत गोंड़ा जाता है, 4. बैल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिका देलेस हंथा कवार, रेंगल न हंथा राजा का।
जाय कर चढ़ गयल पोखरा के भीट, तब फेर पछेरे न बारह बाय जवान।
हंथा के पाछे न पाछे जानऽ पछियवले, बुढ़िया देखत तमासा फेर बाय।
नहाय के कपड़ा न धोती बाय गारत, एकदम धइले गोजी हाँथ में।
पीछे जादी राजा के दरबार, लोरिका आपन कसत सब समान।
घूम-घाम लौटल जमुनी के दरबार, एहर हंथा डेंहुडी पर बाय जूटल।
बारहों जूटि गयनऽ जवान, लख कर राजा खुसी बाय भऽयल।
बड़ा हुनती कइलेन बरहों पहलवान, तब तक जूटल बुढ़िया पीछे से बाय।
नीहुर न माँथ बाय नेववले, "राजा न सुनबा महराजा;
कहना माना एठिन हमार, एक भाई अचरज पोखरा में हम देखल।
हुकुम होई तब देहीं एठे सुनाय," राजा न हुकुम बाय देत।
एकदम कहत बुढ़िया ओही दम, "महराज, बरहों पहलवान तोहार गयनऽ।
घड़ी न घण्टा पोखरा में हलनऽ, छन भर जूमुस हंथा नाहीं खाय।
पहलवान निकल डाड़े तोहार भयनऽ, एक ठे मरद आयल बाय परदेशी।
जमुनी घरे परल डेरा ओनकर बाय, ऊ जवान दहिना न हाँथे धइलेन पोंछ।
हंथा देलेस पोखरा से उठाय, इहै डहरल हंथा तोहार आवै।
साँच देली सरेखे लगाय," सुनत न राजा बाय महुवर।
आपन ठोंकत ताला बाय तकदीर, वह दिन दू-चार सिपाही बाय छोड़त।
छूटल सिपाही राजा का, जाय कर छेंकत जमुनी के दरबार।
"कहाँ मरद आयल बानऽ परदेसी, राजा कइलेन देखय के बलाव।"
अहीर बत्तीसों समान बाय कसजे, मूंहे कूंचत मघइया बाय पान।
एकदम रेंगल किला महुवर का, पाछे चनवाँ सोरहों बाय सिङ्गार।
पीछे-पीछे जूटल जब बाय, राजा लख निगाह चननी से।
राजा के देख मुर्छा मांर दे, इतना न माल बाय हरदी।
ऐसन लिरिया देखल नाहीं जाय, रेंगल न अहीर रेंङावल।
जैसे पुलिस चल जाय बरियार, जाय कर खाली कुरसी एक ठे पवलेस।
एकदम अहीर बैठल बाय महिपाय, राजा के नात हित कितना जूटल।
उठ उठ जानऽ कचहरी में जकलाय, कहलेन—"हो हो न दयी हो नरायन।
का ब्रह्मा लिखला माझे लिलार, कहाँ के मरद ई अयलेन।
जहाँ होनी मरदन के खान," वह दिन राजा बोलत बाय महुवर।
"भइया कहाँ ओतन बाय गोतन, कहाँ टूट गयल बुनियाद।"
बोलल न पूत कठइत का, "दादा गउरा ओतन बाय गोतन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हरदी में टूटी गयिल बाय बुनियाद, कहलेन कौन काम करबा धन्धा।
कौन करबा हरदी में नोकरी, हमके देबा सरेखे लगाय।"

तब फेर बोलत पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाय नाम।
"राजा न सुनबा तूँ महराजा, जाति अहीरे के हई हऽम।

दूसर न काम हमसे नाहीं सपरी, हमसे गाई न भैंस चर जइहैं।"
इतना न आडर देत बाय अहीर, राजा के होई गयल मंजूर।

"जितना न गाय हरदी का, इनके देहीं जीमा लगवाय।
डट कर करे चरवही हरदी में, चरवाह मिलि गयल बाय बरियार।"

ओनके दिन न सुक बाय बतावत, गउवाँ के पूरुब बले बाहर बैना।
ओही लेकर चली जाय गोजी बाय डंडा, नावा न सिलसिला के चरवाह।

कुछ चरवही तसील बाय कर देहलेस धरवाय, दिन न जोहत वाय मोकाम।
मौज करत हरदी में बाय, राम न राम गुन गावैं के ठाकुर।

लोरिका का प्रजा-वर्ग के साथ दुर्व्यवहार : मनमानी

'देबिया न सुमिरनी भगवती, दुर्गा जानऽ सक्ती तोहार।
जितना कीर्तन भयनऽ तोहार सतयुगी, जोर कर देबा कड़ी बैठाय।

परल न सुक बाय बिहान, अहीर दिसा न होत बाय मैदान।
एकदम कुल्ला गलाली बाय कऽरत, जाय कर करत नहान चौकी पर।

अहीर कपड़ा पुजीसन बाय पहिरत, जाय कर छानत अगारी बाय।
अहीर खात-पीयत बानऽ ऊहाँ, डंडा गोजी लेलेस उठाय।

गोड़े न जूता बाय कसत, गाएँ के पूरब बगल जहाँ बाईं गाय हरदी का।
माघ न फागुन का महीना, गोहूँ हाबुस[1] खड़ियान में भयल।

जितना न गाय हरदी का, सगरों लोरिका के जीमें दे दे।
दे कर नीमन सब बाय, परजा न घरे घरे चल जाय।

अहीर गाय बाय डहरवले,[2] एक ठे लंगड़ बछिया ऊहाँ रऽहल।
ओनके टाँगत कान्हें पर बाय, दरे-दर का घोरान[3] बाय दबावत।

गाय देलेस गेहुएँ में बहियाय, हल कर बछिया खेत में उतारत।
वहीं बैठ कर काटत बाल गेहुएँ का, अपने सूतल पेंड़े छेउली के।

जितना न गाय बानऽ बरधा,[4] खाय कर भयनऽ भराहू।
बाज न घंटिया गेहुँएँ में, जौन छाती भर लागल गेहूँ।

जेमे गर्दा उड़त बाय पिसान, लखै न परजा हरदी का।

---

1. बढ़ा हुआ, 2. चराने के लिए ले गया, 3. काँटा जिससे खेत गोंड़ा जाता है, 4. बैल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोजी[1] न लाठी लेकर दौड़े, जाय कर खोजत अहीरे के बाय।
गारी न देत जानऽ गुफारी, "कहवाँ का चढ़ल सरवा बदमास।
रकबा देलेस हरदी के उनखाय,[2] कैसे बालो न बच्चा हमहन का जीहैं।
कैसे राजा के देबय रोल चुकाय," वह दिन अहीर हलवा बाय सूनत।
अहीरे के काने सबद चल जाय, ऊठल न मरद जकलाय।
अहीर लाल न पीयर बाय देखात, बान्ह-बान्ह मारत मुटका परजन के।
केनहू के अनहर-चलहर बाय फेंकायल, केनहूँ का झरत बत्तीसों बाय दाँत।
हलवा न करत एकदम गोहार,[3] परजा फेंकत किला महुवर के।
"राजा न सुनबा महराजा, कहना माना एठिन हमार।

राजा से शिकायत

के त तूहैं देस में रहला बली, अपने से बली कर देला चरवाह।
आल न जिन्दगी बाय लेत, हरदी के देलेस रकबा सब उजरवाय।
परजा करत बाय गोहार, राजा महुवर किला क दरवार।
राजा बालो न बच्चा कैसे जिआईं, कैसे देबय रोल हो तोहार चुकाय।"
वह दिन सूनत राजा बाय महुवर, तुरन्त अहीरे के बायंऽ बलवले।
"भइया लागल गेहूँ तूं उजरला, कैसे जीयहैं परजा हरदी का।
कैसे दिहयँ रोल हमार चुकाय," तब फेर बोलल पूत कठइत का।
"राजा जाति अहीरे के हवँऽ हमार, कबो गाई-भैंस हम नाहीं चरवले।
हमार लोहा ऊठन लोहा जाठन, लोहा भयल प्रान बाय अधार।"
इतना न सुनत राजा बाय महुवर, मनय न ठठले बायँऽ मन्त्री।
चुगुला देलेन सरेखे लगाय, "राजा न सुनबा महराजा।
कहना माना एठिन हमार, जौन बान्हल घोड़ा बाय मँगरा।
जे फेर बायँऽ घोड़ा गड़बड़ा में, ऊहैं घोड़ा तूं बतैबा।
पहिले जातै जिन्दगी ले लेही, दिन-दिन के टूट जाई कलंकार।"

नेउरपुर के राजा हरेवा-परेवा राजा से बदला लेने के लिए लोरिक का उपयोग

बोलत न राजा बाय महुवर, "अब बीर मंगरा घोड़ा तूं लेबा।
चल जाबा राज नेवरीपुर, जहाँ राजा बाय हरेवा-परेवा।
जेन सुबा बायँऽ लोहा में बरियार, हमार कौड़ी रोकले बाय तसीले के।
जार्य कर मारि ऐबा राजा के, आपन लिखत हई हरदीपुर पाल।

---

1. लाठी, 2. उखाड़ दिया, 3. हल्ला, पुकार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गद्दी पूरा किला भण्डार, बल्के बना राजा हरदी में।
हरदी में बनब परजा तोहार," रेंगल पूत कठइत का।
जेकर दूलर लोरिका बाय नाम, जाय कर गड़वड़ा-हड़बड़ा ढूँढ़त।
मीलल न मतारी मंगरे का, जाय कर भेलाही परोसन बाय लगवले।
घोड़ी देलेस पीठ नेवाय, "भइया हमसे भार न सह जाई।
बेटवा जवन महरा बाय हमार, उहैं न बल तोहार थमिहैं।
सांचे देली सरेखे लगाय," राम न राम गुन गावैं के ठाकुर।
वह दिन रेंगल न अहीर फुन बाय, जाय कर दूसरे गड़वड़ा में जूटल।
देखल न सकल मंगरे का, जे फेर पीठी में मौर बाय जामल।
आँख पोंछत किंचरी जब बाय, मंगरे के सब रूप बाय बगदल[1]।
गड़वड़ा में बीतल बरहवाँ ओन्हें साल, जाय कर लोरिका गड़वड़ा में बाय उतरल।
जाय कर ठोंकत पीठ मंगरे का, एकदम ठनकल मँगरवा बाय घोड़ा।
कहलेन-हो हो न दयी हो नारायन, का ब्रह्मा लिखला माझे लिलार।
केहर सूरज उदय भयनऽ, आय गयनऽ असवारी हमार।"

लोरिक का नेउरपुर के लिए प्रस्थान

तब फेर बोलल बीर बाय लोरिका, "मङरवा न सुनबा तूं बंकहवा।
चले के बाय नेवरीपुर पाल," तब फेर बोलल मँगरा बाय घोड़ा।
"तूं बीर निकलऽ गड़बड़ा से डाड़े, आपन लेहीं जोर अजमाय।
तब तक करा पयाम नेवरीपुर का," वह दिन लोरिका भयल बाय डाँड़े।
एकदम ठनकल मंङरवा बाय घोड़ा, मारत न झटका गड़वड़ा से बाय।
अगाड़ी न टूटल बाय पछाड़ी, मङरा बहरे में करत बाय धाम।
आय कर चुवल धरती में बाय, लोरिका चुन्नी बाय पकड़ले।
फरसा ले ले बाय कुदार, एकदम रेंगल नदी पर बाय जात।
पीठी के मौर बाय छोलत, आँखि का देलेस कींचड़ सब छोड़ाय।
मलमल मंगरे के बाय नहवावत,[2] वह दिन ठनकत मंगरा बाय बोड़ा।
धक्का मारत बदरे में बाय, आय कर चूवल धरती में बाय।
लोरिका चुण्डल बाय पकड़ले, अब चल जाला जमुनी के दरबार।
लँवग न मरिच के बाय दूध, घोड़ा के देलेस नादे में लगाय।
चमकत मघइया बाय पान, तब फेर बोलत घोड़ा बाय मंगरा।
"सुनबा मरद बीर लोरिक, कहना मानऽ एठिन हमार।
रेंगल न जाबा किला महुवर के, जाय कर माँग ले आवा समान हमार।

---

1. बिगड़ा हुआ 2. स्नान कराता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तब फेर करब पयाम नेवरीपुर का, सोने न आँखर सोने पाँखर।
सोने के परल जीरही लगाम, सोने न गद्दी जौन बाय।
सोने के मंगवा घुघुर तूं हमार, जेकर सवद साठ कोस सुनाय।
माँग लेवा टिकुला सोने का, जैसे बरै सूरज का जोस।"
इतना न सुनत बीर बाय लोरिका, ओके काहे नींद आय परल।
एकदम रेंगल किला महुवर के, जाय कर अहीर करत बाय जवाब।
"राजा न सुनबा महराजा, दरियाँ माना कहल हमार।
सोने न आँखर देवा सोने पाँखर, सोने का देदा जिरही लगाम।
सोने न गद्दी दे देबा, जेन फेर बनिहैं पेटी समाय।
सोने न घुंघुंर दे देबा, जौन साठी कोस में सुनाय।
अब दे देबा टिकुला माथे का, जौन बरै सुरजवा का जोस"
इतना माँगत मंगरा घोड़ा, तब फेर जाबय नेवरीपुर पाल।
नाहीं कोरवा बाय जबाब, वह दिन राजा महुवर जौन बाय।
काढ़-काढ़[1] देत सोने का सामान, जितना बा ई सामान घोड़ा का।
सगरों देलेस निकाल अहीर का, जाय कर ले गयल जमुनी के दरबार।
धर कर करत बाय चौकी पर नहान, बनल रसोईं कोठी में।
एक दू गिलास नासा पत्तो बाय छानत, जाय कर अहीर ठहरे पर बैठल।
जाय कर खात रसोईं फुन बाय, खाय कर पानी न पत्तर बाय पीयत।
कुल्ला करत गलाली जब बाय, जोरत न बीरा का पान।
अहीर कूंचत मघइया बाय पान, जाय कर कसत घोड़ा बाय बंकहवा[2]।
जेनकर सोने न आँखर सोने पाँखर, सोने का जिरही लगवले बाय लगाम।
अब मोर देला गद्दी सोने का, घुंघुंर बान्हत गोड़े में लहाय।
जौन साठी कोस में सुनाय, माथे देलेस टिकुला चिटकाय।
घोड़ा बरत सूरज का बाय जोसे, ऊगत न सूरज देखा जाय।
मंगरे ओर कैसों देखल नाहीं जाय, जाय कर बीर कसत समान आपन बाय।
खोलत न पेटी न लोहन का, जेन फेर अनव न कसत बाय अनरखी।[3]
गोड़वाँ गुलबदन तमान, कसत पेटी अजगर का।
जेमे गोली चिपटा हो जाय, अब बीर कसले जिरही लोहे का।
जेमें नौ मन लोहा बाय अमाय, जे फेर साठी गजे का दुपट्टा।
अब बीर बान्हत सिर बाय घुमाय, जैसे राजा बान्ह बघेल।

---

1. निकालकर 2. लड़ाकू, 3, कुर्ता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तरकुस न गूंजे का पनहीं, अब चाँपत एँड़ा बाय चढ़ाय।
धरे न पागी लरमें, का जेमे मेघ डमरु घहराऽय।
बायें मियान बाय दबले, दहिने चमकल बिजुल बाय खाँड़।
जोरल न बीर बाय कूँचत, अब बीर कूँचत मघइया बाय पाऽन।
जाय कर खोले रकेबी मंगरे का, एकदम ठनकल मंऽरवा बाय घोड़।
हरदी गाँव हलचल मच गयल, सबके गयल टाटी ढँकाय।
कहलेन हो हो न दयो हो नारायन, का ब्रह्मा लिखना माझे तूँ लिलार।
बाजत न टाप मंजरे का, केकर मृत्युक गयनी नगिचाय।
डाक कर चढ़ल बीर पीठी पर, आसन त मंगरवा के लगवलेन।
एकदम ठनकल मगरवा बाय घोड़, नीचे न छोड़ले भुयिधरती।
ऊपर छोड़ देले बा आसमान, बादल न रेख भिनउवाँ।

छेवली के बन में

अहीरे के हवा घियावत चल जाय, घण्ठा न घड़ी के छमीछा।
मेड़ मारत नेवरीपुर पाल, जाय कर चूवल घोड़ा बने छेवली के।
जेमे राजा खेले अहेर, वही चूवल घोड़ा से बीर उतरल।
जंगल में मिलल पहरुवा बाय मीत, पलगी न होत बाय आसीरबाद।
दूनों से कुसल भलाई हो जाय, तब फेर बोलल मीत बाय पहरुवा।
"मीत कहाँ के चढ़ाई तूँ कइला, हमके देबा सरेखे लगाय।"
तब फेर बोलल पूत कठइत का, जेकर दूलर बाय नाम।
कहलेन-"मीत न सुनबा हमार, कहना माना एठे हमार।
जौन न राजा हरेवा-परेवा, इनके यहाँ कौन हरव बाय हथियार।
हमके देबा सरेखे लगाय," वह दिन सुनत मीत बाय पहरुवा।
"मीत मनवा कहल हमार, एक भाई ब्रह्मजाल इनके पास बाय।
यहाँ बीगऽनऽ छेवली के बने, दूसरे सुकली पिलई[1] एक ठे बाय।
मेड़र मरले बदरे के धाम," इतना कह के मीतवा बाय जात।
लोरिका टीकल न बने बाय, घोड़ा लेकर मंगरवा बाई हम।
रात छेवली बने में बीत जाय, अहीर न सुमिरत देबी दुर्गा।
"माई जाना सक्ती तोहार, तोरे जोरे बाई भरोसे।
चढ़ली दारू न देस बाई खऽार, जौन दिना लौटब देबी तोरे धामें।
डँटकर करब पूजा तोहार," मइया राती के सपना राजा के देती।

---

1. कुतिया, इसका नाम लोक-साहित्य में बहुत आया है। यह कथानक रूढ़ि है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा के चित्ते न चित्ते जाब बन्हाय, राजा जौन बने छेवली का ।
ओमें बहुत सौंजा बाय ओलियाइल, होत न भोर बाय सबेरे ।
हँकवा खेलबा छेवली के बन, जाय कर देवी न दुर्गा बाय मोहत ।
छली के चित्ते न चित्ते घूम जाय, राजा जौन न बन छेवली का ।
ओमें जनावर बायँड पँजाल, होत न भोर तूँ सबेरे ।
सूरज जोति वे आवे पहिले, चलकर खेलऽ हँकवा बने में ।
राजा चित्ते न चित्ते बाय झंखत, फब भाईं होई बिहना न सबेर ।
परजा देहित नेवरीपुर ललकार, हरबा लेहित हथियार'' ।
चलकर बीगत जाल छेवली के बने, जहाँ बहुत सौंजा बाय पँजाय ,
होत न भोर बाय सबेर, एकदम कौआ मचवले बाय रोर ।
वह बखत सूरज जोस में बाय आयल, किरन फूटत सूरज के बायँड ।
वह दिन राजा आडर बाय लगवले, नेवरीपुर देलेस डुगडुगिया पिटवाय ।

विशेष—नेउरपुर की लड़ाई का वर्णन ठाकुरप्रसाद बुकसेलर, कचौड़ीगली, वाराणसी से प्रकाशित 'लोरिकायन' नामक पुस्तक में किया गया है ।' भोजपुरी के अन्य कथानकों में भी इस प्रसंग को सम्मिलित किया गया है, किन्तु प्रस्तुत गाथा में इस प्रसंग को विशेष प्रभावकारी ढंग से ग्रहण किया गया है । इस कथा से लोरिक का चरित्र और अधिक निखर उठा है । मँगरा घोड़ा सुकली कुतिया के प्रासंगिक उल्लेख से कथा रोचक हो गई है ।

सारांश (82) हरेवा-परेवा की पराजय :—नेउरपुर के राजा को शंका होती है और प्रातःकाल होते वह छेवली के वन में ब्रह्मजाल (ब्रह्मपाश) फेंकता है । ब्रह्म-जाल में बहुत से जानवर फंसते, किन्तु लोरिक और उसका घोड़ा दोनों बच जाते हैं । राजा क्रुद्ध होकर पुनः जाल फेंकता है । इस बार दोनों फँसते हैं किन्तु लोरिक अपनी तलवार से उसे काट कर मुक्त हो जाता है । लोरिक सबको मारता-पीटता हुआ घोड़े पर सवार हो कर लौटना चाहता है, किन्तु राजा की सुकली कुतिया घोड़े का पोता (अंडकोष) पकड़कर झूल जाती है । लोरिक तुरन्त अपनी तलवार से उसे दो टूक कर देता है । नेउरपुर के अन्य लोगों को भी मारता-पीटता और हरेवा-परेवा रानी के पेट में बच्चा होने के कारण उसे उसके नैहर भगा देता है । राजा को परा-जित कर लोरिक लौटता है । महुअर का राजा अपनी बात रखता और हरदी का आधा राज्य लिख देता है । लोरिक हरदी में आनन्द-पूर्वक रहने लगता है ।

(83) सेवहर द्वारा कोलों को भड़काया जाना :—इधर सेवहर कोलों को लड़ाई लड़ने के लिए तैयार कर लेता है । वे ब्योरा नदी के पास पहुँचते हैं । इधर नान्हू घोरई जो मंजरी के साथ आया था, ब्योरा नदी पर जाकर उसे छेंक लेता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोलों की हिम्मत नहीं पड़ती कि नदी पार करें। तब धरमी नान्हूं से आग छोड़ कर हट जाने के लिए कहता है। नान्हूँ कहता है—"जब तक लोरिक नहीं आता, मार्ग नहीं छोड़ूँगा।" यह सुन कर मँजरी कोलों से लोहा लेने के लिए स्वयं तैयार हो जाती है। धरमी नान्हूँ को डाँटता है और वह रास्ता छोड़ कर हट जाता है। कोल धरमी पर आक्रमण कर बैठते हैं। धरमी सभी कोलों को मार गिराता है। वहाँ बिरम्हीं नामक एक कोलिन रहती है जिसकी कनिष्ठिका में अमृत है। वह कोलों को अँगुली से छू देती है और सभी कोल पुनः जीवित हो उठते हैं। वे सँवरू पर पुनः प्रहार करने लगते हैं। बिरम्हीं सतिया का रूप धारण कर सँवरू के पास जाती है और उसे अंधा बना देती है। सँवरू कहता है—'तुम लोग मुझे बेकार मारते हो, मैं तो सुबाचन के हाथ से मरूँगा।' कोल जाकर सुबाचन को बुला लाते हैं और तब धरमी सुबाचन द्वारा मारा जाता है, फिर धरमी के गायों को भी कोल अपने घर ले जाते हैं। गउरा की सारी संपत्ति भी कोलों की हो जाती है। मँजरी आदि सभी की दशा बिगड़ने लगती है। शोभा वहाँ का स्वामी बन जाता है। उसके सोलह सौ बैल लदने लगते हैं। इसी बीच उसकी दृष्टि मँजरी पर पड़ती है। उसकी दयनीय दशा देखकर वह दुःखी होता है और लोरिक को धिक्कारता है तथा एक पत्र लिखवा कर गँगिया के द्वारा लोरिक के पास भेजता है। पत्र में मँजरी की दशा का विस्तार से वर्णन भी कर देता है। संयोग से लोरिक कचहरी गया होता है और वह पत्र चनवाँ के हाथ लग जाता है। चनवाँ उसे पढ़ती और सौतियाडाह के चलते पत्र छिपा कर रख देती है। संध्या समय लोरिक के आने पर भी उसे नहीं देती, पत्र को फाड़ कर फेंक देती है। वह गँगिया को भी खिला-पिला कर तथा कुछ सामान देकर विदा कर देती है। लोरिक के लौटने पर भी गंगिया का तथा साधारणतया गउरा का समाचार बता देती है तथा पत्र की चर्चा तक नहीं करती। लोरिक ही उसे प्रेम पूर्वक विदा करता है।

नेउरपुर का राजा लोरिक को फंसाने के लिए छेवली के वन में जाल फिकवाता है। दुर्गा की सहायता से लोरिक बच जाता है।

एको न परजा रुक जइहैं, बाल न बच्चा भार झोकवाइब।
ओनके देबय जाठे में पेरवाय, राजा जोरबटोर बाय कऽरत।
जाल लेत ब्रह्मा के बाय, सगरों परजा नेवरीपुर लियवले,
एकदम गयल छेवली के बने, जायकर ब्रह्मा न जाल लाय पँवारत।
परगट देबी न दुर्गा बाय अवतार, लोरिका के छोट न बड़ कर दे।
छूछय जाल आवे खिचाइल, राजा फेर से जाल बाय उठावत।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकर फेंकत जंगल छेवली के, दुर्गा बड़ न छोट कर दे।
न त बाभ्रत अहीर कन्तित का, न त फँसत मड़रवा बाय घोड़।
दूसरे छूछय जाल बाय आइल, राजा हरेवा-परेवा बाय जीदल।
ऊ फेर दाँत अँगुली चबाय, "ऊ फेर ब्रह्मा न जाल तूँ ठहरलऽ।
एदाँ सौंजा नाहीं बझिहें, काट-कूट देबय दरे-दर पँवार।"
इतना न राजा बाय कहत हरेवा-परेवा, कितना न ब्रह्मा जाल जब रऽहल।
एदाँ फँसल घोड़ा बाय मड़रा, अब फँस गयल बीर बाय लोरिका।
तीनों न फँसल घोड़ा ले लोरिका, संहे देबी दुर्गा फुन बाय।
हींचत-हींचत करीबे जाल बाय आवत, तब फेर बोलल मीत बाय पहरुवा।
"राजा न सुनबा महराजा, कहना माना एठिन हमार।
देखय के अहीर बाय दमचोर, लोहा में बंका होइहें जुझार।
राजा जलदी न जलदी जाल हिंचैबा, नाहीं भाई कुछु न हाँथे में ले ले होई।
काटकूट जाई डाँड़े निकऽल," वह दिन भयल ख्याल अहीरे का।
खींचत न खाँड़े बाय ओड़नियाँ, एकदम ठाड़ खाँड़ बाय कइले।
जेकर चारी न अंगुर भयल बाहर, जेकर तड़प जाला अकास में।

भयंकर युद्ध : लोरिक की जीत

नीचे न मरले बाय दवनहरा, पोरसन लवर बानी गुगँवात।
कटल जाल ब्रह्मा का, लेकर घोड़ा अहीर भयल बाहर।
वह बखत ओसर न ओसर नरियायल," ओसर लौटल अहीरे के बाय।
"पक्का न लोहा ले अँगेजले, अब कचलोइया थामऽ हमार।"
वह दिन देबी तड़पल बाय दुर्गा, "बरुवा दूनों दल सम्हारीं के एकय।"
वह दिन झँखत पूत कठइत का, चाही हरेवा-परेवा बाय पूजले।
"देबी दूनों दल से कौन काम, एक दल लेबा हमरो तूँ सम्हार।"
वह दिन बत्तीसों समान बीर बाय कसले, रन पर लोहा न लोहा नरियाय।
पक्का न लोहा तोर अँगेजले, अब कचलोइया थमबे तोंय हमार।
वह दिन खीचत खाँड़ हाथे से, जेन कर चारी अँगुर भयल बाहर।
तड़प गयल अकासे में बाय, नीचे न मरले बाय दवनहरा।
पोरसन बानी लवर गुंगुवात, वह दिन दखिन खाँड़ बाय लटकवले।
दखिन के काटत पूरब घूम जाय, पूरब से उत्तर खाड़ बाय लटकवले
एक न फेड़रा बाय घुमवले, सगरों पलटल कर दे बेकार।
लासी पर लास गँजैनी, ओठे हेरले मरद नाहीं देखाय।
चटपट कसत घोड़ा बाय तेज, डाककर पीठी पर हो गयल असवार।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संहे में उड़त मँङरा बाय घोड़, तब फेर सङहें उड़ल सुकली पिलई। धय कर पोता बाय घोड़ा का भूलल, घोड़ा से ऊपर नाहीं जायल जाय।

लोरिका से कहत बाय घोड़, "कुछ तोरे पासे होई हथियार। पिलई के मरता धार गिर जात," वह बखत खींचं न कटारी बीर लोरिक।

जाय कर मारत गरदन पिलई के, मूड़ काट देलेस मूड़ी ओकर गिराय। जाय कर घण्टा न पहर के ममिला, अब चुइ गयल नेवरीपुर पाल।

ऊँहा जनानी बच्चा बाय बोंगल, चहाँ हेरले मनई नाहीं देखाय। सगरों काटी कइले बाय खैकार, ऊहाँ हरेवा-परेवा के बाय रानी।

ओनके पेटे गदेला जब बाय, "कहै पेट में भइया भैने बायँऽ तोहार। कैसे कटबा सिर भैने का," जैसे ब्राहमन मानकर।

लिरिया के अकसर छोड़ले ऊहाँ बायँऽ, सुगनापुर ओकर रऽहल। लिरिया भागल सुगनापुर चल जाय, लोरिका पीठी पर बाय बैठल।

लोरिक हरदी वापस

ऊहाँ ठनकत मङरवा बाय घोड़, नीचे न छोड़ले बाय भुइंधरती। ऊपर छोड़ि देले बाय कैलास, बादल न रेखे बाय भिनाऊँ।

अहीरे के हवा खियावत चल जाय, घण्टा छमीछा के जून। घुघुरे के हरदी में सबद चल जाय, झंखत न राजा बाय महुवर।

तेली ठोंकत ताला तकदीर, जीदल न अहीर बीर लोरिका। एकदम लौटल हरदी के बाय, बाल जबान सब रहलीन।

हरदी के छूट जाई गद्दी हमार, केकर घण्टा छमीछा का जून। अहीर के चूवल किला के लगभग, घोड़ा के बान्हत अगाड़ी से लेकर पछाड़ी।

महुअर राजा से लोरिक को आधा राज्य प्राप्त

अहीर गयल किला महुवर के, आधा न राज पवले हरदी। राजा के गद्दी से सगरों समान, अहीर बनल राजा हरदी में।

मस्ती काटत दूनों हरदी बाय पाल, एमें नोनी हरदीपुर पाल।

बोहा में सँवरू : कोलों से संघर्ष की स्थिति

छोड़ दा किर्तन हरदी का, राह लेबा बोहा के तजबीज। जहाँ सांवर सुभक सरदार, जेनकर 360 चरवाह।

बैना लेकर बोहा में बाय टीकल, जाय कर सेवहर कोले के बाय सजले। गाढ़ गजनवां गाढ़ पीपरी, पीपरी के बाँयऽ कोल हो त्रिड़ार।

बिहंटी[1] बदन में बाय पहिनले, हाँथ तीर धनुहीं बाय देखाय।

---

1. लँगोट।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकदम लोहान लोहा नरियाय, जाय कर जूटय नदी ब्योरा के।
अब फेर मरले मेड़र ऊहाँ बाय, तब तक नान्हू घोरई जौन रऽहल।
मँजरी के आइल बिदाई में जौन बाय, जाय कर छेंकत नदी ब्योरा का।
कोल खड़ा कल्ला[1] ओय पार हो जाय, कोले का एकहूँ हिम्मत नाहीं बाय।
की डाकजाईं नदी ब्योरा का, तब फेर बोलल माल बाय धरमी।
"नान्हूँ न सुनबे तोयं घोरई, सरवा छोड़बे आग[2] कोले का।
तनिक देखीं कोले का मंसार," तब फेर नान्हू न घोरई बाय बोलत।
"धरमी न सुनबा बहनोई, कहना माना एठिन हमार।
तब तक लोरिका बहनोईं जब तक नाहीं रहें, तब से छोड़ब न आग कोले।"
तब तक जूटल लड़की महरे का, जाय कर बोलल धिया जब बाय।
जेकर दावन मँजरी बाय नाम, "ददा जी कौनों हरजा नाहीं बाय।
एक ताड़ी देखब कोले का मंसार," वह दिन झंखत पूत कठइत का।
जेकर साँवर सुभक[3] सरदार, "के फेर लिरिया लोहा ले लेही।
बुड़ जाई कठइता का बंस," मना कर देलेन घरे लौटाय।
तब फेर देखय हाल बोहा का, बोलत न माल बाय धरमी।
"नान्हूँ न सुनबे तोंय घोरइया, कहना मनबे एठिन हमार।
सरऊ छोड़ दा आग कोले का, खरीयत एठे नाहीं बाय।
तानी के मुटुका मार देबय, तोर झर जाई बत्तीसों बाय दाँत।"
वह दिन छोड़ दे घाट ब्योरा का, कोल लोहा न लोहा नरियात।
चौनीस छेकले धरमी के जाय, चौनीस न तीर बाय चलावै।

कोल पराजितः कोलिन बिरम्हीं द्वारा छल

सौंह के बाजत बने में बाय, जैसे चिवंटी[4] लोक में बाईं काटत।
वैसे बदन मालूम होय, जौन दिना जीदय पूत कठइत का।
अब बीर हिंची बान जब उठावै, धरमी तानी बान मार दे।
सगरों कोल गायब हो जाय, 360 घोरई चरवाह।
ढोय-ढोय बीगय नदी ब्योरा में, जौन बिरम्हीं रऽहल कोलिन।
ओकरे कनगुरिया अमरित रऽहल, ब्योरा में खाले हँथवा बाय लगवले।
जितना बहल कोल एहर जाँय, धर-धर अँगुरी बाय आपन चटावत।
उठ-उठ लोहा न लोहा बाय नरियाय, जितना बोहा में कोल बाय हटावै।
उतना जमा कोल हो जानऽ, पहरा का ठेंङ बाय जूटत।
धरमी मरत-मारत खिसियायल, जितना न मार कर कोल हँटावत।

---

1. धीरे से, 2. सामना. 3. सुन्दर 4. चींटी।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उतना जमा बोहा में होय जाय, मरवा का साहस बाय टूटल।
बिरम्हीं भेष बाय बदलत, ऊ फेर धरत सत्तिया का बाय रूप।
बोहा जल लेकर पानी, जायकर जूटल धरमी के पास।
"सइयाँ पानी न पत्तर तूँ पी लेवा, तब लोहा लेबा बोहा मंझार।"
अहिरे के बिपत्ति बाय कइले, बिरम्हीं छनमें बैहर[1] हो जाय।
धरमी के आँखी बगल बाय निकलले, धरमी आँखी के अन्धा हो गऽयल।
कोल चौनिस तीर बाय चलावत, धरमी के बाजत बदन में बाय।
चिवटी नियर[2] मालूम बदन में बाय देत, जब आँखे के अन्धा धरमी भयल।
तब फेर बोलल ब्याकुल से बाय, "सुनबा न कोल पिपरी का।
ऊहाँ सात दिन सात रात, लोहा जमकल बोहा में बाय।"
तब फेर बोलल माल बाय धरमी, "सुनबा न कोल पीपरी का।
सरवाँ तोहन के मरबे न मरावे, चाहे बीत जइहैं पुहुत[3] चार।
जौन भइया बाय सुबाचन, नीमक खइले कोले के बाय।
ओनके हाँथे मृत्युक बाय हमार, साँचे देली बात बतियाय।"
वह दिन लौटल कोल पीपरी का, चल जानऽ गाढ़े पीयरियाँ पुर पाला।
जायकर सुबाचन के जबरी बाय, टाँऽत, जायकर उतरले बोहा में ओन्हें बाय।
तब फेर बोल भाई बाय सुबाचन, "धरमी मरबे सौंह तोर्ये हमार।
दूनों न भाई जुट गइली, हरजा कौनों बोहा में नाहीं बाय।
मारऽ न कोल पिपरी के, कोल भागें पिपरियाँ के कोल"।
तब फेर बोलल माल बाय धरमी, "भइया खइला नीमक कोले का।
तूँ फेर कोले बले लड़ जैबा," धरमी न तरही बाय कोंड़वावत।
छाती भर टंकी देलेस बनवाय, जायकर गड़बड़ा पच्छिम बले बाय ठाढ़।
छाती से ऊपर बदन बाय देखात, सुबाचन पूरब बले बाय ठाढ़।
एकदम पूरब मुँहे बाय ठाढ़, आँखी न पट्टी बाय बान्हत।

कोलों का राज्य वापस : धरमी हत

हाँथे में बीर बान बाय उठावत, पूरब न तीर बाय चलवलेस।
पूरब पुरवाई बाईं घूमल, जायकर पच्छिमी तीर बाय घूमल।
जायकर धरमी के गरदने बाय गीरल, अब कटि गयील लास धरमी का।
देखय सांखड़ बोहा मंझार, झंख न लोहा लागै लागत।
अब डोल गयील सक्ति बैनन का, गाय भैंस थाने से दूध चल दे।

---

1. हवा, 2. तरह, 3. पुश्त।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धार फूटल बोहा में बाय, दूध से टंकी बाय उतराइल।
धरमी के गयील लास उतराय, सगरों ओरई-घोरई भाग गऽयल।
राज गयल कोले का लौट, हाँकऽ गाय बोहा से।
एकदम गाढ़ पिपरिया गाँव, गाय एको अड़ाने से नाहीं छोड़े।
लौट-लौट देखय धरमी के बाईं, लास ऐसे-तैसे तीन दिन तीन रात।
कोल बहुत हरानी हो जाय, नाहीं भाई अन्य न पानी बिना लऽगल मरै।
छोट बड़ बछरु बठेल बाय बूझत, बूझ-बूझ करत नस्ता जब बाय।
नाहीं फेर तीन दिना तिन रात, चौथे बोलल सिर धरमी का।
मट्टी से बैनन का बिपति नाहीं देख गयिल, कोल न सुनबा पीपरी का।
जब तक हमार न सिर लेकर चलबा, तब से जइहैं गाय देखा हमार।"
कोल धरमी न सिर बाय बोंड़त,[1] गेंड़ा में बान्हकर आगेन आगे रेंगल।
गाय सगरों पाछे-पाछे डहराय, जाय कर गाढ़ पिपरी जूट जाय।

सारी सम्पत्ति कोलों के हाथ

अब बेंढ़[2] देलेन गाय धरमी का, धरमी के सिर जहाँ गाड़े।
जहाँ कोलिन जनानी के निकाल, अब बेंढ़ देलेन गाय धरमी का।
गाढ़ पीपरी कोल बाय चड़ार, चढ़ गयनऽ पूंजी गउरा का।
जितना न पूंजी अहिरे का, ढोयकर खात पिपरिया के बायंऽ कोल।
बिरम्हीं न कोलिन बाय पहुँचल, जायकर मंजरी के छाती एँड़ा बाय लगावत।
सगरो पूंजी अहिरे का ढोय कर, खयले न पिपरिया का कोल।

मंजरी की दुर्दशा

जौन लड़की महरे का, जेनफेर खटिया[3] भूइं ऊहाँ रहै।
ओनके भारी बिपत भहराइल, घरे में देख दाना नाहीं बाय।
बारह न खोरी बाय गउरा, घर-घर कुटना बाय कऽरय।
धुर न धुर के टुक्का, सीय कर पहिनले बदन में बाय।
ओनके भारी बिपत भहराय, सगरो न पूंजी अहिरे का।
ढोयकर खयलेन पिपरिया का कोल, मँजरी बानी देस में किनरत।

नायक शोभा का मँजरी की स्थिति से लोरिक को अवगत कराने का प्रयास

गउरा में भारी बिपत भहराय, लदत न बर्दी नयके का।
सोभा न नायक का बर्दी[4], जेन कर सोरह सै लऽदल बर्दी।
सोरह सै नोकर न चाकर सब बाय, ऊ फेर जात लदनियां रहल।

---

1. काटता है, 2. ले गया, 3. चारपाई 4. बैल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समने मँजरी के पर गयल निगाह, तव फेर बोलल सोभवा बाय नायक।
"मँजरी न सुनबे तोंय बऽहिन, सरवा लोरिका बहनोई कहाँ गऽयल।
तोर ऐसन स्वरूप बाय लौकल," वह दिन रोव लड़की महरे का।
जेनकर दावन मँजरी बाय नाम, "भइया सइयां उढ़ारे में गयनऽ।
हरदी में बीतल बरहवा बाय साल, भसुर जूझ गयनऽ बोहा में।
चढ़कर मरलेन पीपरिया का कोल, सगरो गाई भैंस बैना बाय बेढ़ले।
गउरा का सब लूटी पूँजी गयनऽ, भारी परल बिपत हमार।"
नायक दू थान कपड़ा बाय खरीदत, खरीद कर देत मँजरी के पठवाय[1]।
कहै "नोकर न चाकर भेज देबे, पत्ती देहीं हरदी दौड़ाय।
सरवा लोरिका कैसन[2] मूर्ख जाय कर भऽयल, दीपक देलेन गउरा का बुताय[3]"।
गडिया नाऊ के बाय भेजत, जौन न सोभा बाय नायक।
सोरह सै देलेस बर्दी रोकवाय, सोरह सै नौकर चाकर।
नयके के टीकल पैड़े मे बाय, गडिया जौन बाय हजामत।
सोभवा नायक लेले वाय बलवाय, लिखत न पत्ती हरदी का।

शोभा का लोरिक को पत्र

एकदम नोनी हरदीपुर पाल, जितना न बिपत्त मँजरी के बाय।
सगरों लिखत नायक जब बाय, लिखकर पत्ती बाय टेकावत।
गडिया के देलेस हरदी दौड़ाय, अपने लेक र मालकियत बाय टीकल।
एकदम ताकत हरदी के राह, रेंगल न गडिया बाय रेंगावल।
जाय कर पहुँचल हरदी के खोरी, घूमल न खोर जमुनी का।

पत्र चनवाँ के हाथ : चनवाँ का पत्र छिपाने का प्रयास

चनवाँ लऽखत ऊपर से बाय, लोरिका गयल बाय कचहरी में।
चनवाँ कइले बाय बोलाव, जूटल न गडिया बाय हजामत।
जायकर निहुर करत बा प्रनाम, चनवाँ देती आसीरबाद बाय।
सगरो न खाता बाय देखावत, चनवाँ लखत अचम्भो मान जाय।
"जैसे लगवा नाऊ लोरिके का, वैसे लगबा नाऊ हमार।
यह सब ममिला देबा दबाय," चिट्ठी माँगी चनवाँ बाय चीरत।
"इहो न खाता सइयां सुनिहैं, भागल जइहैं गउरा गाँव।
गांगी अब तयँ सइयां से करबा, के मान जइहैं कहना हमार।
कह देहा नगद कुसल गउरा का, नगद बानऽ गउरा का सब लोग

---

1. भेजा, 2. किस तरह, 3. दीपक बुझाना मुहावरा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धरमी गौंहा जौन बायँऽ, एकदम सांसड़ बोहा मँझार।
बैना न बहुत बाईं पँजाइल, बोहा में नाहीं बाय लेत अमाय।
दूसर न बोहा लिखैबा, धरमी भेजले गउरा से बायंऽ।
गडिया इहै बात बतियाया, कहबा न कुसल हमाऽर।
कैसन बाबिल बायँऽ सहदेव, कैसन मइया सेल्हिया बाईं हमार।
कैसन महदेव भइया बायंऽ हमार, सइयां से एक अचरज बतैबा।
गौहाँ जौन ब्येही जांघे का, गउरा में दूसर कइले बाय धिक्कार"।
लोरिका आवत कचहरी से बाय, गडिया के कहत चनवाँ जब बाय।
"जाये के बेरी खियाइब मछरी तोहै भात," फिर जूटल अहीर कन्तितका।
जाय कर गडिया माथ बाय नेवावत, लोरिका देत आसीरबाद बाद।
"गडिया आंखों अमर हो जैबै, जैसे बाढ़ै पानी गँगले का।
वैसे बाढ़ै आयी तोहार, कहबे न कुसल गउरा का।
कैसन बायंऽ गउरा का सब लोग ?" कहै-नगद लोग गउरा का।
गउरा का नगद कुसल बाय भलाई, जौन धरती बाय गौहां।
बोहा में गाय बैना नाहीं अमाय, दूसर देबा बोहा लिखाय।
एक अचरज और बाय, जौन ब्येही जाऽघे का।

गडिया का स्वागत : गडिया वापस

गउरा में दूसर कइले बाय धिक्कार," इतना न बात बाय बतियवले।
गडिया आगम सुगाह बाय होत, सङ्हें न सङ्हें बाय नहात।
पजरे लेलेस ठहरे पर बैठाय, गडिया नाऊ के खियावै।
अपने लोरिका बाय खात, पानी न पत्तर सब पीयें।
कूला करत गलाली जब बाय, हाँथ न मूँह बाय धोवले।
दूई न बीरा लगावै पान, खात न मूँहें में बाय।
एक बीरा गडिया नाऊ के बाय खियावत, गडिया हरदी में बनल बाय महिमान।
नायक जोहत पैंड़े में बाय, तीसरे न रोजें दिन बीतल।
गडिया का बिदाई डट कर चनवाँ बाय कऽरत, जोड़ा न धोती बाय कमीज।
गोड़े में जूता देले बाय खरीद, कुल भाई सोने न चाँदी लदवौबे।
चढ़े के देत बाय बकुलिया घोड़, गडिया आपन सोरहो सिङ्गार बाय बनावत।
एकदम फेरत कलङी जब बाय, मूँहें न पान बाय कूँचत।
गडिया चढ़ल घोड़ा पर असवार, जैसे नाऊ बाय जात।
जैसे जानऽ गउवाँ का जमीदार, धीरे-धीरे बाय नियरात।

समीक्षात्मक टिप्पणी—लोरिक के हरदी जाने, नेउरपुर के राजा से संघर्ष

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करने, आधा राज्य प्राप्त कर चनवाँ के साथ राजभोग करने और स्वविवाहिता पत्नी को बिल्कुल भूल जाने की कथा अत्यन्त मार्मिक है जो अन्य कथा-रूपों में प्रायः नहीं पाई जाती। यह कथा रामायण के कथानक से मेल खाती है। श्रीराम लक्ष्मण और जानकी के वनवास के फलस्वरूप, उनके घर-परिवार के सदस्यों, स्वजनों-सम्बन्धियों तथा प्रजावर्ग को महान् कष्ट उठाना पड़ा था, 'लोरिकायन' में लोरिक के विछोह का सर्वाधिक कष्ट मँजरी को हुआ, क्योंकि उसे जानकी की तरह लोरिक के साथ रहने के सुख से भी वंचित हो जाना पड़ा। रामायण में बारह वर्ष के वनवास से जहाँ राम के चरित्र में निखार आया है, वहीं लोरिक के विछोह से उसकी पत्नी मँजरी के चरित्र में निखार आया है। इस दृष्टि से मँजरी जानकी से भी अधिक; किसी मायने में, पतिपरायणा नारी सिद्ध होती है। रामायण में जानकी हठ पूर्वक राम के साथ चली जाती हैं, किन्तु मँजरी ऐसा कुछ नहीं करती।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सातवाँ : सती परीक्षा काण्ड

सारांश—(84) **लोरिक की शोभा से भेंट**—गंडिया को आते देख कर शोभा समझ जाता है कि दाल में कुछ काला अवश्य है। शोभा गंडिया को जोरे में बन्दकर जमीन पर गिरा देता है और स्वयं बैलों को लेकर लोरिक के पास पहुँच जाता है। गाँव के पास पहुँचने पर शोभा के बैल ऊधम मचाने लगते हैं। लोरिक क्रुद्ध होता है। शोभा लोरिक से सारा वृत्तान्त कह सुनाता है। लोरिक उसे सुनकर अत्यन्त दुःखी होता है। मँजरी की दशा सुनकर लोरिक की आँखों में आँसू आ जाते हैं। शोभा उसे साथ ले लेता है। लोरिक गंडिया को मार डालने के लिए तलवार खींच लेता है। गंडिया भी सारा दोष चनवाँ पर मढ़ देता है।

(85) **मंजरी से मिलने का प्रयास**—अब लोरिक का मस्तिष्क एकाएक परिवर्तित हो जाता है। वह मँगरा घोड़ा पर सवार होकर जमुनी के पास हरदीपुर पाल पहुँचता है। वहाँ भी उसका मन नहीं लगता और जमुनी को समझा-बुझाकर पुनः उससे छुट्टी लेकर गँउरा पहुँच जाता है। वह आकाश-मार्ग से ही चनवाँ की गोद में अपने पुत्र चनरइता को देखता है। चनवाँ को गालियाँ देता तथा मार डालने की इच्छा करता है, किन्तु चनरइता को गोद में देख कर छोड़ देता है। लोरिक इस सारे नाश का कारण चनवाँ को ही मानता है।

(86) **लोरिक धरमी की मृत्यु से दुःखी**—अन्त में वह बोहा पहुँचता है। धरमी की मृत्यु का समाचार सुनते ही वह पागल हो जाता है। लोरिक नान्हूँ आदि को धिक्कारता है कि उनके रहते उसका भाई मारा गया। नान्हू सारा वृत्तान्त सुना जाता है कि धरमी किस प्रकार छल करके कोलों द्वारा मारा गया। अब लोरिक अपनी गृहस्थी पुनः बसाना चाहता है। वह नान्हूँ से कोलो के यहाँ जाकर उनसे हेल-मेल करके अपनी गायों को लौटा लाने के लिए कहता है। नान्हूँ शीघ्र प्रस्थान करता तथा गायों का पता लगा लाता है। आकर वह लोरिक से बताता है कि अभी सभी गायें हैं, किन्तु थोड़े ही दिनों में जब कोल अपनी लड़कियों की शादी करेंगे तो उन्हें दहेज में दे देंगे।

गंडिया शोभा द्वारा दण्डित

राम न राम गुन गावै के ठाकुर, भजती नाम हो तोहार।
लखत न नायक बाय शोभा, जायकर भयल कोयला खडार।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गंडिया कौन हाल बतियायें, डटकर कइले एकर विदाई बाय।
धीरे-धीरे जूटल गडिया बाय नाऊ, गडिया के नायक बाय घोड़ा से उतारल।
वहाँ जोरा में बाय ओके कऽसत, कस कर बान्है मूँह जोरा का।
गडिया के देलेस वही ढेंगलाय, घोड़ा न बाय छनउले।
सोरह सै देलेस बरधा छोड़वाय, हरदी न राजा कुदवलेस।
हरदी में करत बरधा बाय उदियान, छतिया भर लागल गोहूँ।
सगरो काढ़त ओठिन बाय, गरदा करदे पिसान।
सगरों लखै परजा हरदी का, हलचल देलेस हरदी में मचाय।
"राजा एक राज में रहला बली, दूसरे लोरिका बली हो जाय।
तीसरे लोक में कौन जनमल बली, बरधा देलेस हरदी में कुदवाय।
गोहूँ न जौ के खड़िया, सगरों बरधा कर देलेन पिसान।"
वह दिन सुनत पूत कठइत का, लोरिका डेढ़वा गोजी[1] बाय उठावत।
एक लाल पीयर बाय होत, बरधा देलेस हरदी में उपाट।
एकदम लौटल बर्दी नयके का, लौटल जाती डेरा पर बाइ।
कुछ दूर के रह गयल फसिला, लखत न सोभा बाय नायक।

लोरिक वस्तुस्थिति से अवगत

दरियाँ कहें आँख बिलगाय, "धिरक[2] जिन्दगी लोरिका ठहरल।
नायक इहाँ लखावत बाय मूँह, भाई न धरमी तीर जूझल।
एकदम साँखड़ बोहा मँझार, जाय कर मरले गढ़पिपरी के कोल।
गाय बेढ़ले[3] पिपरी ले जाय के, पूँजी खइले सब गौंरा का।
जौन न लड़की महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नाम।
ओकर बड़-बड़ बिपत बाय होत, न तऽ खोजले कुटना बाय मिलत।[4]
के तऽ घुरघुरा[5] का टुक्का, सगरों बिन-बिन बाय पहिरत।
सरवा जौन तिरिया पाय के, लोहा लेहला देसवाँ मँझार।
तेकर ऐसन गति बाय होत," सूनत न बीर बाय लोरिका।
टप-टप चुवत नैना से नीर, वही न जोरा पर बैठवलेस।
जेमें गडिया बाय नाऊ, फेर पूछत सोभा बाय नायक।
"गडिया के लिख कर चिट्ठी हम भेजली, सरवा का-का पद बतियायल।
तीन दिना रखला ओके मेहमानी, लौटानी के बखत बाय समय।

---

1. डेढ़ हाथ का डंडा, 2. धिक्कारयुक्त, 3. पशुओं को एकत्र कर के ले जाना, 4. दूसरे का धान आदि कूटकर जीविका चलाती है, 5. चिथड़ा,।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गड्या के देला सुबा[1] बनाय, जोड़ा न धोती जोरा कमीज।
रुमाली न पनहीं सब समान, फेरे न केस उलटकर।
ऊपर से कूंचत मघइया बाय पान, चढ़ै के पवले बकुलिया बाय घोड़।
कुछ माल सोने न चांदी बाय लदले," इतना कहत बात जब बयान।
लोरिका जर मर भयल खड्यार, "कहै गड्या नाऊ कहाँ बाय।
भइया देता सरेखे लगाय, सरवा के देहित बत्तिसवा झार दाँत।"[2]
खोलत न जोरा बाय गड्या नाऊ का, निकलल गड्या बाय हजामत।
लोरिका लाल-पियर हो जाय, तनाकर मुटका बाय दौड़ल।
"सारे इतना मामिला सुनले, काहे देले हरदह में छिपाय।"
तब फेर बोलल गड्या बाय नाऊ, "गौहाँ लिखल खाता ले गयली।
गौंहिन चीर कर गायब कर देलेन, सगरों उलटा ममिला फेरववलेन।

लोरिक दुःखी होकर गउरा को वापस

उलटा देलेन पद बतियाय," रोवत न पूत कठइत का।
ठहर-ठहर बहत आँखी से नीर, रेंगल न बीर बाय लोरिका।
चल जात नोनी हरदीपुर पाल, पेट से ऊठत हव मुरमुरई।
घर-घर अहीरे के मुसरा कांड़े, करिहांव, अन्य न पानी नीक नाहीं लागत।
जाय कर पहिनत समान लोहा का, अब बीर अनव न कसत बाय अनरखी।
गोंड़वा गुलबदन तमान, अब बान्ह देलेनपेटी अजगर का।
जेमें गोली ठहक खा जाय, कसय जिरही लोहन का।
जेमें नौ मन लोहा अमाय, साठी गजे का दुपट्टा।
अहीर बान्हत सिर घुमाय, जैसे बान्है राजा बघेल।
तरकुस न गूंजे का पनहीं, अहीर चाँपत एँड़ा चढ़ाय।
अब घर देलेन पागी लरमें का, जेमें मेघ डमरू घहराय।
मरगस न मरगस अहीर चड्लल, जाय कर कसत मँड्रा बाय घोड़।
सोने आँखर सोने पाँखर, सोने का जिरही देत बाय लगाय।
अब घर लेला गद्दी सोने का, बान्धत न घूघुर गोड़े में।
जौ साठी कोस सुनाय, देत न टिकुला माथे में।
मँगरा बरत सुरजबा का जोस, उगत न सूरज नारायन देख जाला।
मँगरे ओर कैसों ताकल नाहीं जाय, चढ़ कर पीठी पर भयल असबार।
ठनकल न मँगरा बाय घोड़, हलचल मचल नोनी हरदी बाय पाल।

---

1. राजा, 2. बत्तीसों दांत झार देता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घर-घर टाटी ढँकैनी, आपन न आपन ठोंकत ताला बाय तकदीर ।
केकर न मृत्युक नगिचायल, बाजल न टाप मँड़रे का ।
नीचे न छोड़त बायँड भुंइधरती, ऊपर छोड़ले बाय असमान ।
बादल न रेखे बाय भिनौवाँ, घोड़ा मारत चक्कर जब बाय ।
दिन भर घोड़ा बाय कूदल, संझा गिरय जमुनी के दरबार ।
खिसियायल पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाय नाम ।
जाय कर करत भेंट जमुनी से, "धनवाँ न सुनबा हमरो ।
कहना माना एठिन हमार, तनिक छुट्टी हरदी से देबा ।
चल जाबय साँसड़ बोहा मँझार, कौनों हरजा जीन माने ।
आधा न राज बाय हरदी, राजा के गद्दी किला के समेत ।
तोहूँ करबे आजादी हरदी में, खुसी से छुट्टी हमके तूँ देबे ।
तोरे पर औखत बिपत कौनों परी, पत्ती देहे गउरा दौड़ाय ।
जौन कोई रही कुल हमहन के, आकर करी गाढ़ एठे तोहार ।"
जमुनी बहुत बिनती बाय कऽरत, "सइयाँ टाटक रसोई बनाईला ।
दू कौर आत्मा से भोजन करला," अहीर सुनबे बिपत गउरा का ।
ओनके अनय न सोहात बाय जलपान, जायकर जितना बाजार हरदी के पावे ।
सगरों हँकहँड़-छँकहँड़ लदवौले, बजार लेले बोहा में सब जाय ।
कुछ भाई हरदड़ इलाका बाय उजरले, आनकर देलेस बोहा में टिकाय ।
घोड़ा चूवल अड़ाने धरमी का, उपर न घोड़ा मऽरा रऽहल ।
तबतक चनवाँ बैठल बाय भेलाही पर, जौन मऽरे का मतारी देखऽ बाय ।
गोदे लेले बाय चनरइता[1] के, ऊपर न भेट लोरिका से कइलेस ।
दाँत अँगुरी अहीर चबाय, "बुजरी जाति बेस्सा के हवंऽ ।
बेस्सा हवंऽ सकल परिवार, केकर न साथ हम धइली ।
गउरा गयल हमरो सब बिलाय[2], पीठी[3] न भाई जूझ गयल ।
लूट कर खानऽ पिपरियाँ का कोल, तनिक गोदे लड़िका देखायल ।
नाहीं तोरय काटित सिर जरियाय," लेकर चूवत घोड़ा बोहा में ।
उझंखय लागल बोहा अहिरे का, जहाँ गाई भैंसी के रहल जगमग[4] ।
उहाँ दिन टहरत बायँड सियार,[5] अहीर जंगल न झाड़ी बाय चिकनवायत ।
तम्बू देलेस तमान गड़वाय, बसल न बजार हरदी का ।
अनेत प्रकार के सौदा देलेन धरवाय, कितना न दरबी रोजगार चलल ।

---

1. चनवां से पैदा हुआ लोरिक का पुत्र, 2. नष्ट हो गया, 3. सगा,
4. प्रकाश, अधिकता, 5. सियारों का दिन में टहलना, अशुभ सूचक है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जायकर साँसड़ बोहा मंझार, नान्हूँ न घोरई के बाय खोजत ।
ऊ फेर झंखत भुजा के मंसार, बाप भयल बाय लवार ।[1]
नन्हैं के बद गयल खँपच्चा,[2] सकल न घोरई के बाय बगदल ।
नाहीं होत बाय पहिचान, पता न ठहरुक बाय लगवले ।
नान्हूं घोरई के लेलेस बलवाय, नाऊ न हजामत बाय बनवले ।
ओकर बार मुखुत बाय करवले, कपड़ा ओढ़ना देलेस पहिराय ।
जायकर लोरिका के करत बाय पलगी, लोरिका देत आसीरबाद बाद ।
"नान्हूं न सुनबे तोयं घोरई, कहना मनबे एठिन हमार ।
सारे तोहन नीयर-नीयर[3] जवान, कैसे जूझ गइलेन भइया हमार धरमी ।"
तब फेर नान्हू न घोरई बाय बोलल, "लोरिका न सुनबा बहनोई ।
कहना माना एठिन हमार, जौन बखत चलल कोलय पिपरी का ।
हांथे में तीर धनुहीं ले देखाइ, जायकर छेंकल राह ब्योरा का ।
कल्ला खड़ा कोल हो जाय, धरमी न बहनोई बाय तड़पल ।
छोड़बे न आग कोले का, अब देख लेहित कोले का मँसार ।
तब फेर बोलली बात वही दम, धरमी न सुनबा बहनोई ।
बात मानऽ बोहा में हमार, जब तक लोरिक बहनोई नाहीं अइहैं ।
तबसे नाहीं छोड़ब आग कोले का, धरमी लाल-पीयर हो जाय ।
हमके बान्ह के मुटुका जब दौड़नऽ, छोड़ देली आग कोले का ।
सरवा कोल लोह न लोहा नरियाय, चौनिस छेकले कोल धरमी के ।
सात रात सात दिन, बोहा जमकल साँखड़ बोहा मँझार ।
धरमी ब्याकुल होय कर, एमें बिरम्हीं करले छलबाजी ।
धरमी के अन्धा बाय बनवले, एकदम आँखी के अन्धा कर दे ।
धरमी न ब्याकुल होय कर, आपन देलेन मिरतुक बताय ।"
तब फेर बोलल बीर बाय लोरिका, "नान्हूं न सुनबे तोंय घोरई ।
कहना मनबे एठिन हमार, जौन न बात होये क रहल ।
ऊ बात हो गयिल बोहा में, गाढ़ न गाजन गाड़ पिपरी ।
जहाँ बढ़ल गाय बाईं हमार, राम न नाम गुन गावै के ठाकुर ।
जायकर एकर पता तूं लगैबे, लेहड़े लेबा पता तूं लगाय ।
कोल कितना देन-लेन करले, कितना बचल लेंहड़ बाग हमार ।

---

1. बेसहारा, 2. लकड़ी जो पांव में गाड़ दी जाती है, 3. तरह ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिका लौटल बाय तोहार मवार,[1]" तब फेर बोलल नान्हूँ बाय घोरई।

"बहनोई धरमी के झटका में बच गयली, एदां बची जिन्दगी नाहीं हमार।"

तब फेर बोलल अहीर कन्तित का, घोरई बाउर मति तोर बउखले।

अब तोर अकिल हरले बायंऽ भगवान, जायकर कोल से करबे हेल तोंय मेल।[2]

सब दिन दूध-मलाई देखा खायल, हमरे कोई आगे न पीछे हमहूँ तोहन लोगन में रहब।

गइया भैंस तूँ लोगन का चराइब, ऐसे तैसे बीत जाई ऊमिर हमार।

इहै न बात बतियाय कर, बैनन के लेहे पता लगाय।

पता लेकर ठेकान, खबर देहे बोहा में सुनाय,।"

नान्हूँ न घोरई बाय रेंगल, चल जानऽ गाढ़ गजनवाँ गाढ़ पीपरी।

जहाँ बायँऽ पिपरिया का कोल, नान्हूँ घोरई जौन बाय।

जायकर भयल कोले में ठाढ़, कहत न बात लरमें का।

जितना न बायँऽ कोल पिपरी, "पंचय हमनों[3] के अपने में लेबा।

सब दिन दूध-मलाई हमहन खइली, हमहूँ न तूँ लोग में रहऽब।

गाय भैंस तूँ लोगन का चराइब, तूँ लोगन में हमरों निगरानी होई।"

कोल न कइले बाय मनसौदा,[4] मिल कर कइले बायँऽ बिचार।

तब फेर बोलल कोल पिपरी का, तब फेर बोलत बायँ नान्हूँ बाय घोरई।

"तूँ लोग बिरादर में बाई हऽलत, पहिले अपने हाँथे खियाइब-पियाइब।

पीछे से हमहूँ पीयबय खाइब, ढार-ढार गिलास में मऽद।

सगरो देलेह कोलन के पियाय, मातल न कोल पिपरी का।

मात-मात लोटत कोल सब बाय, सबहन का पनहीं पूरा बाय बटोरत।

झारपतेर[5] बाय जुटावत, घोरई देलेस आगी लगाय।

जऽर न कोल पिपरी का, घोरई भगल बैनन कहाँ जाय।

दौड़ल न गयल नान्हूँ घोरई, जहाँ बेल्हड़ लेंहड़ धरमी का।

जायकर लेहले लेंहड़ पता लगावत, "गाय लौटल बाय तोर मलिकार।

कितना कोल दइजा देहले बाय, कितना बचल बैना बाइं गाय।"

बोलत न गाय का मलिकार, "अभी पूरा मालकियत बऽचल बाई।

लेकिन दस पाँच रोज के बाद, लड़की करिहैं बिदाई कोल सगरों।

कुछ दीहै लेंहड़ हिंगराय," इतना न पता बाय लगावत।

नान्हूँ न घोरई बोहा में बाय लौटल, जायकर जूटल लोरिका के पास।

"लोरिका न सुना बहनोई, कहना माना एठिन हमार।

---

1. मालिक, स्वामी, 2. हेलमेल, मित्रता, 3. हम लोगों को भी, 4. विचार-विमर्श, 5. कूड़ा-करकट।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभी पूरा लेंहड़[1] बऽचत बायँ, बाकी दस पांच रोज के फसिला।[2]
कोल देदीहइं ओन्हे दइजा में।"

समीक्षात्मक टिप्पणी—मँजरी की दुर्दशा से अवगत होने के बाद लोरिक का उससे मिलने का यत्न, धरमी की मृत्यु का समाचार सुनकर दुखी होना और कोलों से अपनी जायदात पाने का यत्न करना आदि ऐसी घटनाएँ हैं जो नायक के व्यक्तित्व को निखारती हैं। उसके साथी-सहयोगी भी उसकी मदद करते हैं।

लोरिक-कथा का यह प्रसंग मौखिक परम्परा से प्राप्त भोजपुरी रूपों में ही मिलता है। एक दो प्रकाशित रूपों में भी इस घटना का नामोल्लेख किया गया है।

(87) मँजरी की सत्य-परीक्षा—इधर मँजरी दूध बेचने बोहा में जाया करती है। एक दिन सहदेव की लड़की दूध गिरा कर मटके में सोना-चाँदी भर देती है। स्त्रियाँ सोने-चाँदी को देख कर उसके चरित्र पर संदेह करती हैं। मँजरी की गोद में अभोरिका नाम का उसका पुत्र भी है। खुइलन मँजरी को मारने दौड़ती हैं। मँजरी कच्चा घड़ा और कच्चा सूत से कुआँ से पानी खींच कर अपने पातिव्रत्य की परीक्षा देती है।[3] ऐसा करने में सफल होने पर खुइलन मँजरी का आदर करने लगती है। मँजरी अभोरिका को ले कर अपने घर चली जाती है।

मँजरी दूसरे दिन भी नित्य की भाँति दूध बेचने जाती है, किन्तु अब लोरिक मल्लाह से कहता है कि वह मँजरी को नदी पार न करे। मँजरी दुर्गा आदि अपने इष्ट देवों का स्मरण करती है और क्षण भर में ही नदी सूख जाती है। मल्लाह यह समाचार कठयित से जा कर बता देता है। कठयित मँजरी के सतीत्व को जान लेता है और उसे उसके पाँव छूने को कहता है। मल्लाह जाकर उसके चरण छूता है। चनवाँ मँजरी से दूध का बेंच माँगने के लिए कहती है। वह वहीं पर टँगी लोरिक की तलवार माँगती है। उसे प्राप्त कर चिता तैयार कराती है और सती हो जाने का प्रयास करती है। चिता जलने लगती है। स्त्रियाँ उसे देखती और खुइलन से जाकर कहती हैं। खुइलन अजई से आकर कहती हैं। अजई पहले तो वहाँ जाने से डरता है, किन्तु फिर बिजवा द्वारा धिक्कारे जाने पर तथा स्वयं भी हाथ में गदा उठा लेने पर वहाँ जाता तो है किन्तु संकुचित हो कर बोहा को प्रस्थान कर जाता है।

(88) लोरिक और अजई की लड़ाई—अजई नदी के किनारे एक पेड़ के खोखले में जाकर बैठ जाता है और जो भी जानवर नदी पार करते उनके कान काट देता है। लोरिक को जब यह बात ज्ञात होती है तो वह तैयार होकर वहाँ

---

1. समूह, 2. बाद, 3. यह कथानक रूढ़ि है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
जाता है। नदी के किनारे पहुंचते ही दोनों में लड़ाई होने लगती है। अन्त में अजई लोरिक को मार गिराता है। जब अजई अपना परिचय देता है तो लोरिक अपने गुरु अजई को प्रणाम करता है और कुछ देकर वहाँ से विदा करता है।

(89) बिरम्हीं द्वारा लोरिक को मार गिराना—लोरिक पुनः वापस होता है। इधर खुइलन से सारा समाचार बता देता है। खुइलन अपने नाती अभोरिका को लेकर जाती हैं। उसका पिता लोरिक अपने माता को प्रणाम करता है। सब आनन्द पूर्वक रहने लगते हैं। लोरिक सभी प्राणियों को गँउरा भेज कर तथा स्वयं भी मँगरा घोड़ा पर बैठता और पिपरी चला जाता है। बिरम्हीं कोलिन उसे दूर से ही आकाश मार्ग से आते देखती है और शत्रु समझ कर जादू फेंकती है। फलतः लोरिक घोड़े-सहित नीचे गिरता है तथा मँगरा घोड़ा गिर कर पत्थर हो जाता है और मर जाता है। लोरिक उसे जिला देने के लिए बिरम्हीं से प्रार्थना करता है, तब वह जीवित भी कर देती है।

मँजरी की सत्य-परीक्षा :

कहत न बात अहिरे से, बस गयिल बजार लोरिका का।
जितना न बाईं तिरिया गउरा का, सगरो दूध-दही लेकर बेंच।
मँजरी दूसरे के समान, भारा पर लेकर बेंचय जाय।
एक रोज दिन हल गयील, जायकर नाई न डोंङा पर उतरल।
उतर कर बेंचय बोहा में चल जाय, लखै न लड़की सहदेव का।
मँजरी का लेलेस कछारी उतरवाय, कछारी दूध पलट कर।
नीचे सोने न चाँदी बाय भरत, ऊपर भरत चाउर लेकर बाय।
सगरों बेंच-बेंच दूध के दाम' लेकर डाँकल ब्योरा नदी का।
पेल-पेल[1] हाँथ कछारी में, लिरिया देखत दूधे के बाईं बेंच।
तूं भाई कैसन चाउर पवला, मँजरी के कछारी हाँथ पेलय।
सोने न चाँदी कबरल गुल्ली जब जाय, सगरों लिरिया अर्थ बाईं घटवले।
"इतना दिन मँजरी इज्जत बाय बचवले, इज्जत देले बोहा में गँवाय।
अब बोर देलेस कुल कठइत का," ऐसे-तैसे खुइलन सें जायकर बाईं कहले।
वह बखत अभोरिका लड़िका गोद में, खुइलन सोझय कोख से बाय हींचत।
मँजरी के मारत बहियाय,[2] रोव न लड़की महरे का।
जेकर दावन मँजरी बाय नाम, "ससुवा सुनबा मोर गोसाईं।
कहना माना एठिन हमार, इज्जत नाहीं बाईं गँवौले।
सास ओतन सक्ति बाय हमार, ऐसे न सत्त के जब तू पैबा।
कच्चा न घरिला कच्चा सूत,[3] आन दा हींच देही कूआँ से जऽल।"

---

1. डालकर, 2. दौड़ा कर, 3. सती परीक्षा की यह परिपाटी लोक विश्रुत है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खुइलन कच्चय सूत कच्चय घरिला, लड़िका देत महरे के बाय।
जाय कर दू चार घड़ा बाय जल, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
मँजरी देलेस कूआँ से तान, खुइलन के भर जाय आत्मा गउरा।
मारत पीटत कइले सब बन्द, मँजरी लेती लड़िका बाय अभोरिका।
अपने घरे दुवारे चल जाय, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
दुर्गा जानऽ सक्ति तोहार, देबिया सुमिरनी भगवती।
जितना किर्तन गयल सतजुगी, जोर कर देवा कड़ी बैठाय।
भोर न भयल बिहान, पुरब कौआ देले न बाय रोर।
सूरज रोसनी में बाय आवत, बिहने सपरत जनानी सब बाय।
मँजरी दूसरे के दूध दही लेकर, भारा पर बेचे के ऊहाँ पर जात रहलऽ।
परल नजर लोरिका का, जायकर कहत मल्लाहे से बाय।
"पिछली जनानी जौन आवे, ओके जीनी[1] नाई पर उतारे।
बाकी देहे जनानी डकाय", सबके नदी पर उतारत।
सगरों जनानी बाय उतरले, मँजरी के ढोंसकर[2] फरके कर दे।
झंखय न लड़की महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नाम।
गउरा सुन्य गंवहेर, बोहवा में कनिक सुमिरत हवँऽ मुरार।
जेन बीर लेलेन सुअर दँतार, सुमिरत न देबी दुर्गा।
जेन देबी आदि दिन का पुजमान, एठे जानऽ सक्ति तोहार।
ऐसन विपत परल बाड़े, छन भर में नदी जाती झुराय।
इतना न सुमिरत लड़की महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नाम।
जौन नऽ नदी ब्योरा का, लोटा भर पानी रह गऽयल।
नाई न टोंगा बाय टँगावल, मँजरी रेंगल बोहा में चल जाय।
ओकरे से पहिले कूदल जाय मल्लाह, "गौंहा लोटो भर पानीब्योरा में नहिनी।
टूट गयल जिन्दगी रोजगार", कहत न पूत कठइत का।
"जायकर वही के हाँथे-गोड़े गिरबे, वही देही रोजगार तोर पहुलाय[4]।"
जायकर सोझय मँजरी के चरन धरय, "गौंहिन गलती माफ करबा।
पहिले तोहैं पार करबे, इतना न बिनती ब्योरा पर हमार।"
जायकर चनवाँ कछारी बाय उतरवले, टंटू[5] में देलेस कछारी घरवाय।
पूछत न मँजरी से बाय, "का तू लेबा दूधे के बेंच?"
लौकल न खाँड़ बाय लोरिके का, मँजरी माँगत दूधे का बेंच।

---

1. मत, 2. धक्का देकर, 3. सूख गई, 4. लौटा देगा, 5. डेरा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जैसे न खाँड़ लौकत, जैसे रहल सइयाँ का खाँड़।
ऊहै न माङत दूधे का बेंच, लेकर खाँड़ लोरिका का।
चित्ता देले बोहा में बनवाय, घीव न लेकर बाय छोड़त।
नदी ब्योरा में करत बाय नहान, जायकर बैठत चित्ता पर बाय।
पोल्थी पर लोरिका का धरत बाय तलवार, बोलत लड़की महरे का।
जेकर दावन मँजरी बाय नाम, "एकय न बाप के हई बिटिया[1]।
जबय एकय पुरुष के होइब नार, ब्रह्मा छोड़ दा खङारो ऊपर से।
हम लेकर सत्ती हो जाईं," छूटत खङरे इन्द्रासन से।
धइले न आगी चित्ता में, दौड़ल अहीर टंटू से।
चेंचुरा धइले ले गयल टंटू में पकऽऽड़, बरत न चित्ता बोहा में।

लोरिक अजई में युद्ध

तब फेर सुना हाल गउरा का, जितना न लिरिया बाईं लौटल।
जायकर खुइलन से कहत हवँऽ सनेस,[2] काल्ही न बात बाती उनहूँ।
आन देलेन टंटू में बैठाय, सुनत न माता बाय खुइलन।
भागल जात अजई के दरबार, "भइया न सुनबा गुरू अजई।
कहना माना एठिन हमार, बारह न बरिस बाय बीतल।
बेटवा का नोनी हरदीपुर पाल, लौट कर गउरा नाहीं अइहैं।
कौन न मूँह देखाइब, मूँहे में देलेन करिखा[3] लगाय।"
सुनत न गुरू बाय अजई, "आग लागो बोहा मँझार
बोहा में होइहैं कोल पिपरी का, धरमी भे लगल रहल लड़ाई।
एकय तीरे के पवले झटका, तैसन छव बगई-गुड़[3] हम पियली।"
सुनत न बिजवा बाय गुरुवाइन, "सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन।
तूँ पहिर लेबा जनानी धोती, तुहों बैठा घरे में फेंटियार।
लौटिहैं देवर मोर लोरिका, कैसे हमहन देखाइब गउरा में मूँह?"
बसत्तर[5] पहिनना बाय मरदाना, हाँथे लेलेस गदा उठाय।
गायें के बहिरे जब बाय गयील, एक पेंड़ सेमर रहल बरियार।
जायकर काटत पैंतरा फुन बाय, घूमल न पलक सेमरे पर।
हींच कर मारत गदा बनाय, बाजल न गदा सेमरे में।
सेमरे के पेंड़ गिरत अरराय, सबद न धोबी के गयील।

---

1. बेटी, 2. सन्देश, 3. कालिख, 4. बगई गुड़ अधिक चोट लगने पर पिलाया जाता है, 5. वस्त्र।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अजई भगल कूदल चल जाय, "रितिया न लोहा ले लेही।
बुड़ जाय नाम हमार", जायकर माँड़त सब पहिनना बाय।
आपन लेलेस गदा उठाय, ओनके लेकर लौटवलेस।
गुरू भागल बोहा में चल जाय, ओय पार ब्यौरा नदी बाय उतरल।
एक पैड़ें ढोढर बाय पनघटे, वही में जायकर गुरू बाय ओलियात।
जितना ऊँट, हाथी अरबी घोड़ा, केनहूँ का पोंछी बोंड़त हवँड चल्हर।
बिना पोंछी[1] के जन्तू बाय कइले, बिना चल्हर के घोड़ा हो जाय।
बिना मूँहें के ऊँट हो जाय, लखय न लोग बोहा का।
जायकर कहत लोरिका से बाय, "कौन जनावर हल गयल।
जितना उजर जाई बोहा मँझार", लोरिका बत्तीसों समान बाय कऽसत।
हाँथे लेले बिजुल बाय खाँड़, अनब न पहिरले बाय अनरखी।
गोड़वाँ गुलबदन तमान, बान्ह देला पेटी अजगर का।
जेमें गोली चिपटा हो जाय, तरकुस न गूँजे का पनहीं।
अहीर कसत एंड़ा बाय चढ़ाय, साठी न गजे का दुपट्टा।
अहीर बान्हत सिर बाय घुमाय, जैसे बान्हय राजा बघेल।
कसय न जिरही लोहन का, जेमें नौ मन लोहा अमाय।
धरय न पाग लरमें का, जेमें मेघ डमरू घहराय।
बायें न खाँड़ बाय धइले, दहिने बिजुल घूम गयल कुसियार।
गउरा सुमिरत गँवहेर, बोहवा में कनिक सुमिरय मुरार।
जेन बीर सूअर लेलेन दँतार, के फेर भूत फैलल बैताल।
के फेर चोर हवँड बदमास, के फेर कौन जानवर बाय फैलल।
दूय हाँथ लेता मुर्चा पर फरियाय, निकलल न गुरू बाय अजई,।
लेकर जातय पैंतरा पर जाय, लोरिका पैंतरा पर चऽलल।
एहर से गुरू अजई बाय चऽलल, दूनों पैंतरा पर चललन।
तब फेर बोलत पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाय नाम।
"मरबे न मरबे सूबा तूहों, जौने तोरे अवार के होई घाव।
हम भाई आगे घाव नाहीं छोड़ब, न तऽ पीछे रक्खब छिपाय।
आगै अवार जौन हवँऽ, खानदान क्रिता अट्ठान।"
इतना सुनत गुरू बाय अजई, धूआँधारय[2] चलत तैंतरा पर बाय।
फिरत न पलक अहिरे का, अजई के बाजल गदा बाय घुमाय।
लोरिका बोहा में झोरियायल,[3] आपन ठोंकत ताला तकदीर।

---

1. पूँछ, चुन्डी, बाल, 2. लगातार, 3. बेहोस होकर गिर पड़ा।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"हो हो न दयी हो नारायन, का ब्रह्मा लिखला माथे लिलार ।[1]
चारी न खूँटे के बाय प्रिथवी, चौनिस न डेरा हम घूमल ।

लोरिक का अजई, खुइलन अभोरिका से मिलना : प्रसन्नता व्यक्त

कहीं अवार में नाहीं मुरझाइल, जैसे घाव बाय लागत ।
जेमें गुरू अजई के रहे हमरे घाव," तब फेर बोलत गुरू बाय अजई ।
"चेला हमहीं तयँ हई," गुरू न चेला बाय लपटियायल ।
दूनों न गर्दा-मिसाने बाय रोवत, रोय गाय के दूनों बाय चुपायल ।
लोरिका करत पलगी अजई के, गुरू देत आसीरबाद बाय ।
एकदम खातिर भाव ओकर करे, लोरिका कुछ देत बिदाई गुरू के ।
अजई उहाँ से बाय रेंगल, अब जूट जालय नदी ब्योरा के ।
ऊहाँ नाई न डोंगा से बाय उतरल, राह धइले गउरा का जाय ।
जाय कर कहत सनेस खुइलन से, "माता कौनों सुबा नाहीं टीकल ।
नाहीं लेलेस तोर पतोहूँ बैठाय, लौटल न बेटवा बाय तोर लोरिका ।
डेरा परल बोहा में बाय, वहीं न मँजरी तोर बाय ।
नाती अभोरिका के लेले चल जो, जाय कर भेंट न कर आवऽ मुलाकात ।"
लेले न नाती बाय अभोरिका, बुढ़िया रेंगल खुइलन फुन बाय ।
चल जानी साँसड़ बोहा मँझार, जाय कर उतरत नदी ब्योरा का ।
ऊँहा नाई न डोंगा से उतर जाय, जाय कर जूटल डेरा लोरिका के ।
खुइलन लखत नीर[3] बाय चुवावत, लोरिका उठ कर करत बाय प्रनाम ।
आसीरबाद ओन्हें देलेन, भइया जीयऽ लाख तूं बरीस ।
आँखों अमर हो जाबा, जैसे बाढ़ै पानी गङले का ।
वैसे बढ़े आयी तोहार, जैसे बाढ़ै खम्भा केदली का ।
वैसे बाढ़ै बेटवा जाँघ तोहार, जैसे चढ़ै कमानी सरंगी का ।
वैसे चढ़ै भुजा तोहार, कुसल न होत बाय भलाई ।
रसोई बनत बाय मण्डार, सगरों परानी बाय जातय ।
खाय पी के ऊहाँ मौज बाय उड़ावत, सगरों परानी बायँऽ डहरवले ।
एकदम नगर गउरा बाय गाँव, सगरों परानी भेजवाय कर ।
सब लोग घरे दुवारे चल जाय, मँगरा न घोड़ बाय बान्हल ।
ओन्हें दूध-मलाई बाय चभावत[4], अपने बत्तीसों समान बाय कसले ।
घोड़ा का कसत सारा सामान, जेकर सोने न आँखर सोने पाँखर ।

। तीसरा खाता (खण्ड) समाप्त ।

---

1. माथे पर, भाग्य में, 2. भूट-फूट कर, 3. आंसू; 4. खिलाता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समीक्षात्मक टिप्पणी—मँजरी की सती-परीक्षा, लोरिक की अजयी से युद्ध बिरम्हीं द्वारा लोरिक को मार गिराना, उसके घोड़े का पुनर्जीवित होना आदि कथाएँ भी मौखिक रूपों में ही अधिक अच्छे ढंग से प्रस्तुत की गयी हैं। मँजरी की यह परीक्षा सीता की अग्नि-परीक्षा जैसी है जिसमें मँजरी सफल होती है। इस परीक्षा में सफल होने पर लोरिक मँजरी की ओर उसी प्रकार आकृष्ट होता है जिस प्रकार राम सीता की ओर हुए थे। इस प्रसंग से मँजरी के चरित्र में निखार आया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा खण्ड : आठवां उद्धार काण्ड

(ज) लोरिक पुत्र अभोरिका का वीर चरित्र

(90) **लोरिक द्वारा बिरम्हीं की हत्या**—लोरिक घायल होने का अभिनय कर बिरम्हीं से पानी माँगता है। पहले तो बिरम्हीं कोलिन होने के कारण उसे पानी देना नहीं चाहती, किन्तु उसके हठ करने पर पानी खींचने कुआँ पर जाती है। ज्योंही पानी भरने के लिए नीचे झुकती है, लोरिक तलवार से मार कर उसकी गरदन अलग कर देता है। वह मर जाती और उसकी लाश वहीं जला दी जाती है। सारा का सारा गांव भी उसी आग में भस्म हो जाता है।

(91) **अभोरिका द्वारा देवसिया को मृत्यु**—बिरम्हीं का पुत्र देवसिया वीरता के लिए प्रसिद्ध है प्रतिक्रिया स्वरूप वह लोरिक की जांघ में ऐसा तीर मारता है कि वह जमीन पकड़ लेता है। ऐसी स्थिति में वह दुर्गा का स्मरण करता है, दुर्गा उसे गउरा पहुँचाती हैं। इसकी सूचना लोरिक-पुत्र अभोरिका को मिलती है। वह देवसिया को मारने का निश्चय करता है। लोरिक को पहले तो विश्वास ही नहीं होता, किन्तु वह देवसिया को मार ही डालता है। इस प्रकार उसका पुत्र पिता का बदला लेने में सफल हो जाता है। लोरिक अभोरिका पर गृहस्थी का भार सौंप कर स्वयं चिता में जल कर भस्म हो जाता है।

(92) **अभोरिका को भी दुर्गा ईष्ट**—पिता की तरह अभोरिका भी दुर्गा का इष्टत्व प्राप्त करना चाहता है। दुर्गा पूछती हैं— तुम मुझको किसकी पूजा दोगे।' इतना कहते अभोरिका खड्ग से अपना सिर उतार देता है। दुर्गा प्रसन्न होकर इन्द्रासन से अमृत लाकर उसे जीवित करती हैं तथा अपना ईष्टत्व प्रदान करती हैं।

(93) **बोलारख का क्रुद्ध होना**—इधर हरेवा-परेवा राजा को उसकी रानी के गर्भ से एक पुत्र पैदा होता है, उसका नाम बोलारख रखा जाता है। वह शिकार खेलने का शौकीन निकलता है। एक दिन वह छवेली के वन में शिकार खेलने के लिए जाने का हठ कर बैठता है। उसकी माँ उसे वहाँ जाने नहीं देती, किन्तु वह नहीं मानता और शिकार खेलने चला जाता हैं। वह वहाँ हड़ावर (हड्डियों की ढेर) देखता है और अपनी माँ से उसके विषय में जानकारी प्राप्त करता है। उसकी माँ बताती हैं कि गउरा का अहीर यहाँ आया था, उसने युद्ध में सबको मार गिराया था, ये हड्डियाँ गाँव के लोगों की ही हैं।

बोलारख इतना सुनते आग-बबूला हो जाता है। वह तैयार होकर जमुनी के पास पहुँचता है। जमुनी को तंग करने लगता है। जमुनी जादू के बल से पत्र लिखती है और अभोरिका के पास भेज देती है। पहले तो अभोरिका की माँ उसे पत्र नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देती, किन्तु अभोरिका हठ करके उसे माँग लेता है । उसे पढ़ता है और तैयार होकर 'गड़बड़ा' पहुँच जाता है ।

मँगरा घोड़ा अभोरिका की परीक्षा लेता है, अभोरिका वीरता में सफल होता है । वह देवी दुर्गा का स्मरण करता है । दुर्गा उसकी दाहिनी भुजा पर सवार हो जाती हैं, तब अभोरिका युद्ध के लिए तत्पर हो जाता है । मँजरी उसकी शैशवावस्था देख कर उस पर तरस खाती है, किन्तु मंगरा घोड़ा उसे निश्चित रहने का आश्वासन देता है । गँउरा में हलचल मच जाती है ।

(94) **अभोरिका द्वारा बोलारख का मारा जाना**—बोलारख द्वारा ठुंकी जमुनी के पैरों की खपाचियाँ अभोरिका निकालता है । जमुनी भी उसकी बचपना देख कर उस पर तरस खाती है और युद्ध न करने के लिए समझाती है । अभोरिका उसे आश्वासन देता है, तब जमुनी उसे आशीर्वाद देती है । जिसकी जानकारी बोलारख को हो जाती है । वह भी युद्ध के लिए तत्पर हो जाता है । इधर अभोरिका तो युद्ध के लिये तैयार ही है, दोनों पैंतरा भांजने लगते हैं और युद्ध प्रारम्भ हो जाता है । दुर्गा की कृपा से अभोरिका द्वारा बोलारख मारा जाता है । अभोरिका मँगरा घोड़ा और चौरी घोड़ी दोनों को लेकर पहले जमुनी से मिलने जाता है, फिर मँजरी से मिलकर आशीर्वाद प्राप्त करता है ।[1]

लोरिक बिरम्हीं कोलिन के जादू का शिकार : पुनर्जीवित होना

राम न नाम गुन गावै के ठाकुर, भजली नाम हो तोहार ।
देबिया न सुमिरनी भगवती, सक्ती जानऽ तोहार ।
जिरही न अकसर बाय लगवावत, मंगरा ऊ घोड़ा के देलेन चढ़ाय ।
धरय न गद्दी सोने का, पेटी बान्हत बाय समाय ।
चारी न गोड़े बाय घूघुर, जवन साठी कोसे सुनाय ।
देलेन न टिकुला माथे में, जैसे वरय सुरुजवा का जोति ।
बोलत न अहीर बाय लोरिका, "मंगरा न सुनबा घोड़ा ।
चलय के गाड़य पिपरिया बाय गाँव," डाँककर पीठी पर भयल असवार ।
आसन न मंगरा पर लगउले, एकदम ठनकल मंगरा बाय घोड़ा ।
नीचे न छोड़ले बाय भुईंधरती, ऊपर छोड़ देले बाय आसमान ।
बादल न रेख बाय भिनउवाँ, अहीर के हवा खियावत चल जाय ।
घण्टा न दिन के समय जायकर, घूमत पीपरी बाय गाँव ।
लखत न कोल बाय पिपरियाँ का, अंगने से गयनऽ निगाह सरगे बाय ।
"ब्येही सुनेबे तोंय हमार, दुस्मन टहरत सरगे पर बाय ।"

---

1. कथा का एक अंश और यहीं समाप्त हो जाता है । अभोरिका लोरिक का पुत्र है । चनरइता चनवां का पुत्र है, वह भी वीर है क्योंकि उसमें भी लोरिक का ही रक्त है । उसके बाद की कथा में पुनः एक मोड़ आता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लखत न बिरम्ही बाइ कोलिन, मारत न जादो[1] से बाय।
घोड़ा अँगने में बाय गीरल, गिरतय पत्थर घोड़ा हो जाय।
झंखन पूत कठइत का, जेकर दूलर लोरिका बाय नाम।
नीहुर न करत बाय पलगी, बिरम्हीं देती आसीरबाद बाद।
"भौजी तूँ लोगन में हमहूँ देखा अइली, तूँ का कइला हमरे साऽथ।"
मारय न मुसकी[2] बिरम्हीं कोलिन, मंजरी के पहिरले बाय गले का हार।
लोरिका न करत बाय बिनती, "भौजी घोड़ा जल्दी जियैबा।
हमके लागल बहुत जोर पियास, हमके पानी न पत्तर तूँ पियैबा।
हमहूँ तूँहैं लोग में रहबय, हमरे कोई कुल में नाहीं रह गयल अवलाद,।"
बिरम्हीं न घोड़ा बाय जियवले, जैसे के तैसे घोड़ा हो जाय,
"वैसे ठनकत[3] मँगरा बाय गोड़ा, बिरम्हीं लेजुर[4] ले गगरा[5]।

बिरम्हीं की हत्या : पिपरी गाँव स्वाहा

लोटा मीठा कटोरो में लेले, कहै "भइया खइला नीमक अहिरे का।
कैसे पियबा कोले हाँथे का पानी, बोलत न पूत कठइत का, ?"
जेकर दूलर लोरिका बाय नाम, "अब तूँहैं लोग में गुजर होई,"।
जाय कर कुआँ में गगरा बाय फानन, नीहुर[6] न गगरा बाय बुड़ावत,
अहीर खींचत दोगाहै बाय खाँड़, जेकर चारी अंगुल भयिलबाहर।
तड़प गयल अकासे में, पोरसन लवर बानी गुँगुवात।
जायकर गिरल खाँड़ गरदने पर, बिरम्हीं के गइल गरदन उतऽर।
चटपट हींच कर हार बाय धऽरत, लास फेंकत जगती के नीचे।
सिर गिरल कुआँ में बाय, झार पत्तर बाय बोझत।
ढूंढ़ कर मट्टी के तेल बाय छिरकले, आगी देलेस कुआँ में लगाय।
जाय कर बेढ़त गाय बाय खोलले, गाय भैंस भागल बोहा में चल जाय।
मट्टी के तेल बाय खोजले, पिपरी गायें देलेस दींकाय[7]।
आगी न ऊहाँ बाय लगवले, सगरों जरतय पिपरिया बाय गाँव।
जायकर डाककर घोड़ा पर चऽढ़ल, घोड़ा आसन बाय लगवले।
एकदम ठनकल[8] मंगुरवा बाय घोड़ा, एकदम नीचे छोड़ले भुइंधरती।
ऊपर छोड़ देलेन आसमान, बादल न रेख बाय भिनउवाँ।
अहिरे के हवा खियावत चल जाय, जौन न कोल बाय देवसिया।
बिरम्हीं के रहल लड़िका ऊहो बाय, ऊ बीर नेम से अहेर बाय जाय के खेलले।
बारह न मने के भारै बनइला, एकदम कँखियवले[9] लेकर चल जाय।
ऊ फेर अहेर खेलय गयल रहै, ताकय न गाँव पिपरी ओर।

---

1. जादू 2. मुस्कुराती है 3. हिनहिनाता है 4. रस्सी 5. तांबेया लोहे का घड़ा, 6. झुककर, 7. जला दिया, 8. बोला, हिनहिनाया, 9. काँख में दबाए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोरिक देवसिया के तीर का शिकार

आगी लागल पिपरियाँ बाय गाँव, ऊपर न सुबा बाय ताकत।
लेकर उड़ल मंगरवा बाय घोड़, देवसिया दांत अंगुरी बाय चबावत।
दुस्मन भागल सरगे[1] बाय जात, बने में देवसिया बाय सूतत।
सुते-सुते छतियाय के तीर बाय मारत, सरगे धँसल जाँघ लोरिका के।
दहिने न जाँघ में तीर धँऽसल, एकदम लटपट अहीर बाय जात।

दुर्गा की कृपा से लोरिक पुनः जीवित : गउरा वापस

ओमें धन-धन देवी बाय दुर्गा, जायकर तानय तीर देहियाँ से।
मइया चाटत दुर्गा पुजमान, एकदम लेकर घोड़ा बाय भागल।
घण्टा छमीछा के जून, जायकर चूवल गउरा बाय गाँव।
लोरिका के करक[2] बाय सकायले, सगरों देलेस समान उतार।
गिरल न माचा-मचहरी पर, अहीर कँहरत बखरी में बाय।
कहै-"सारे मरलेस कोल बाय देवसिया, गाय नान्हूँ धोरई बाय देखत।"
सुनत न लड़िका बाय अभोरिका, जे फेर छव महीना के बाय गीदड़।

अभोरिका-देवसिया युद्ध में अभोरिका की जीत

जेकर साँह बान बाय लोढ़त, कहै-"बाबिल देबा समान तनी आपन।
हम फेर देखीं कोले के मंसार," वह दिन झंखय बीर बाय लोरिका।
"बेटवा उहै हमें बाय मरले, तोहसे का कोल मराई।
न तऽ तोहसे एको उठी समान" जिदियायल गीदड़[3] बाय अभोरिका।
एकदम भागल बोहा के चल जाय, जाय कर गउरा सुमिरत बाय गँवहेर।
बोहवा में कनिक सुमिरै मुरार, जेन बाबा सूअर ले ले दँतार।
सुमिरत न सत्त धरमी का, जौन फेर धरमी दद्दा का बान।
"तीर-बान नती बोहा में कबरय, सारे-देखीं देवसिया के मंसार।"
धरमी के बान-तीर बाय पवले, राह धइले बोहा के जाय।
कुछ न दूर बाय देवसिया कोल, गाइन के हाँकय बदे बाय आयल।
बोलल न लड़िका बाय अभोरिका, सङ्हीं एकय बाप के मार कनी।
हउनाते देला पिपरी में बढ़ाऽय, अभी तीनी जवान बाई तैयार।
सरऊ देखब पीपरी में तोहार मंसार," इतना न सुनत देवसिया कोल।
आगे खयरे के पेंड़े तर गयल लोकाय,[5] "सरवा छव महीना का बाय गीदड़।
सारे टपर-टपर बतियाय, सरऊ परग तनी नगिचातयं।
छट्ठी के देहित दूध[6] भटकाय," जब लोकायल देखै लड़िका अभोरिका।

---

1. स्वर्ग, आकाश में, 2. दर्द, 3. बच्चा, 4. झगड़ा, 5. छिप गया, 6. छठी का दूध याद कराया मुहावरा है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुरिहैं से साजत धनुष बाय बान, "असली धरमी ददा के होबे बान।
ईहै मारत दुस्मनै पर बाई, दुरिहैं से बान बाय चलवले।
देवसिया गयल खयरे में नथऽर[1], जायकर देखय लड़िका बाय अभोरिका।
नथर कर ओठङ्घल खयरे में बाय, जायकर कहत बात गउरा में बाय।
"बाबिल मरली कोल हम देवसिया, मरले पर लेला सारे का बयर तूहों।"
लोरिका पलकी कइले बाय कहांर, पलकी से जात लोरिका जब बाय।
आगे-आगे रेंगय अभोरिका, पाछे लोरिका पलकी पर बाय जाऽत।
लोरिका देखय देवसिया कोले खयरे में ओठङ्घल, कहै-"बेटवा नाहीं हमार दुस्मन।"
कोल दवकल पैंड़े पर बाय, एदां कैसों जीव नाहीं बची।"
तब फेर बोलल लड़िका बाय अभोरिका, "बाबिल बाउर मति तूं बउखला।
तोहार अकिल हरले बायँऽ भगवान, अबऽ जाई जिन्दगी आगे हमार।
पीछे जाई जान तोहार," जायकर खींचत बान खयरे से।
देवसिया का लास गिरल भहराय, जायकर लोरिका सिर बाय तरासल।
आपन ठोंकत ताला तकदीर, "बाँसय के जड़ी बाँस उपजल।[2]
बेठवा करी-कर्तब दुनिया संसार," बापो न पूत बाय लौटल।

लोरिक द्वारा मृत्यु को आमंत्रण

चल जानऽ नगर गउरा फुन गाँव, जायकर खान न पीयन सब होवे।
मौज होतय गउरा बाय गाँव, राम न राम गुन गावै के ठाकुर...
दुर्गा जानऽ स सकती तोहार, देबिया न सुमिरनी भगवती।
जितना किर्तन गयल सतजुगी, जोरकर देबा कड़ी बैठाय।
दू-चार दिन गउरा बितवलेस, लोरिका दूनों हाँथे लेकर दूध।
भींटा डाकल गउरा का इनारा, अब बीर चंफा अहीर बाय डाँकल।
एक-एक बूंद जाला दूध छलऽक, अहीर के जोर भयल मालूम।
आपन ताला ठोंकले तकदीर, अब जियले परल बाय धिक्कार।
घीव समान बाय जूटावत, कुण्डली देलेस चित्ता बनयाय।
बहुत दूर तक नेवता[3] हँकारी बाय बँटववलेसे, जेनके जौन सक्ति बाय भगती।
घीव देलेन जमा करयाय, जायकर चिता घीये में बोझले।
मइया लेत दुर्गा का बाय नाम, "माई बहुत दिना संङ्ह हमार धइला।
चिता में देबा आगी धराय," यह दिन फूंकत देबी बाय दुर्गा।
अहिरे के बरल चिता फुन बाय, अहीर राम न राम करत बाय रऽटन।

---

1. बंध गया 2. बाँस के जड़ी बाँस उपजना, मुहावरेदार प्रयोग है; 3. निमंत्रण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जूग सतजुगी कीर्तन बाय कऽरत, राम-राम कहत सती हो जाय।
एकदम लोरिका सती हो गयले, दुनिर्थां सलतम-पलतम[1] हो जाय।
सब लोग घरे दुआरे हो जाय, जितना न फिकिर सब रहल।
सगरों गयील अभोरिका पर भहराय, अभोरिका न लड़िका बाय रेंगल।
जायकर खेलत सिवला दुर्गा का, जेपर अमर धजा फहराय।
अभोरिका सकला हुमाद बाय कयले, धन-धन न देबी माई दुर्गा।
कहीं बाघय भेष बाईं बदलत, कहीं तेनुआँ-कोइया[2] हो जाय।
अभोरिका अपने ध्यान में पऽरल, छमकल मइया देबी दुर्गा।
जेकर बाँस जड़ी बाँस होइहै, इहो हवंऽ लोरिकवा का वंस।

अभोरिका को देवी की कृपा प्राप्त

तब फेर बोलत देबी बाय दुर्गा, "बरुवा न सुनबे फूलझरुवा।
जौन तोर लोरिका बाय रऽहल, ऊ पूजा देतय जांघे क रऽहल।
तूँ फेर कथू[3] के पूजा हमें देबा ?" तब फेर खींचत खाँड़ बाय अभोरिका।
दुर्गा के समने सिर आपन उतरले, अकुलाइल मइया देबी दुर्गा।
एकदम भागल इन्द्रासन चल जाय, जाय कर ऊहाँ से अमरित बाय आनत।[4]
"बरबस लड़िका से हम कहली, बड़ा भारी पर गयल अपराध।"
जाय कर अमरित चारी ओर बाय सींचत, अभोरिका के देलेस सिर बैठाय।
जेपर खाँड़ी जाला मुरझाय, वह दिन देबी न दुर्गा भयील परगट।

समीक्षात्मक टिप्पणी—लोरिक का हर कार्य सम्पादित कर मृत्यु का वरण करना 'महाभारत' के भीष्मपितामह के चरित्र के अनुकूल है। इस घटना से लोरिक का अजेयत्व सिद्ध हो जाता है। प्रकाशित रूपों में इस घटना का उल्लेख प्रायः नहीं हुआ है। मौखिक परम्परा से प्राप्त संस्करणों में भी पूरे केवट के पाठ में ही इसे प्रमुखता मिली है और उसके कारण गाथा के कथ्य में अपने आप चमत्कार आ गया है।

जमुनी के गर्भ से बोलारख का जन्म

बोलत न पूत लोरिका का, जेकर दुलर अभोरिका बाय नाम।
मइया न सुनबा देबी दुर्गा, एठिन जानऽ सक्ती तोहार।
छव महीना का गीदड़, अँगने में करत बकोइयाँ[5] बाय।
मंजरी मचिया पर बैठल, हरदी में जौन जमुनी बाय कलारिन।
नेवरीपुर जौन रानी हरेवा-परेवा का, पेटे में ब्राह्मन जान कर छोड़ले।

---

1. सामान्य, शान्त, 2. तेनुवां कोइया जानवरों के नाम 3. किसकी, 4. ले आता है, 5. हाथ के बल चलना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाय कर रऽहल नइहर सुगनापुर बाय, एक ठे जन्मल छली सुगनापुर में।
राजा न जनमल बाय बोलारख, लेकर नेवरीपुर गऽयल।
जूटल अपने राजगद्दी, नेम से राजा अहेर[1] बाय खेलत।
बोलत न बोली लरमें का, ओकर कहत मतारी जब बाय।
"चारी ओर अहेर बेटा खेला, उत्तरय बन जौन छेवली का।
ओमें कभी भइया जीन जाया," ऊ फेर कइलेस पयाम उत्तर का।
जौन रऽहल छेवली का बन, देखय हड़ावर[2] छेवली के बने।
छत्री लौटल बोलारख जब बाऽय, आय कर कहत मतारी से बाऽय पूछत।
"जौन न बन छेवली का, माई कैसन हड़ावर बाय गँजाइल।"
रानी साफय साफ बाय बतावत, "हरदी जौने जमुनी बाय कलारिन।
जेकर चलत होली देखा बाय, जौन न अहीर बाय गउरा का।
ऊ फेर जमुनी घरे डेरा देले, जमुनी के जड़िया से बाय चऽलल।
आयकर देलेस राज उजार," लखय न राजा बाय बोलारख।
छत्री दाँत अँगुरी बाय चबाऽय, उलटा न डंका बाय पिटवले।
रन पर बजल लकड़ी जुझार, छत्री अनव कसत बाय अनरखी।
गोड़वाँ बीर कसत बाय तमान, छली बान्हय पेटी लरमें का।
जेमें तेगा मुर्चा खा जाय, साठी न गजे का दुपट्टा।
छली बान्हत सिर बाय घुमाय, जैसे राजा बान्ह बघेल।
कसत बछेड़ी चौरी, रन पर भयल छत्री तैयार।
हाँथे ले ले तेगा, जेमें बाय झण्डा फहराय।
लखत मतारी बाय ओकर, लखकर ठोंकत ताला बाय तकदीर।
"हो हो न दयी हो नरायन, का ब्रह्मा लिखला माझे लिलार।[3]
सोचली एकय सइयाँ जूझ गऽयल बेटवा जोड़ीदार भयल तैयार।
अबो दुख पाछ करिहैं, ई भाई बाँसय जड़ी बाँस उपजल।
बिपत ओतनय सरीरे पर देखाय," डाक कर छली भयल असवार,।
आसन न घोड़ी पर लगवले, एकदम ठनकल चोनैरी फुनबाय।
नीचे न छोड़ले बाय भुइंधरती, ऊपर छोड़ देले बाय कैलास।
बादल न रेख बाय भिनऊवाँ, छत्री के हवा खियावत चल जाय।
घण्टा छमीछा के जून, चुई जाय नोना हरदीपुर पाल,।
जायमर जयुनी के पता बाय लगावत, एकदम धइले चेंचुरा[4] जमुनी का,।

---

1. शिकार, 2. हड्डियों का ढेर, 3. भाग्य में, 4. बाँह।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकदम गायें के बहरे[1] ले जाय, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
ऊहाँ दस बीस नौकर बाय बटोरले, जितना मजूरी बाय माँङत।
उतना दे-लेके करत बाय तैयार, खत्ता न गड़हा[2] बाय कोड़ात।
दस न हाँथे दस गोड़े, सगरों देलेस खँपचाल[3] ठोंकवाय।
जमुनी के गड़बड़ा में हलवले, काहे के नीचे मट्टी बाय अदरवले।
कपारे पर बोरसी[4] धरवावत, ओमें बरत आगी फुन बाय।
सबकर रोकड़ मंजरी बाय चुकावत, धीरे से कैदी सिपाही दे बैठाय।
देखा आगी बोरसी का धीम नऽ हो, राती न दिने का पहरा।
कैदी देलेस सिपाही बैठाय, डाक कर चढ़ल सुबा चौरी पर।
आसन चौरी के लगावत, नीचे छोड़े भुइँधरती।
ऊपर छोड़ देले बाय कैलास, एकदम बादल रेख बाय भिनउवाँ।
छली के हवा खियावत चल जाय, घण्टा छमोछा के जूनं।
जायकर चूवल नेवरीपुर पाल, हरदी में जमुनी बिपत भारी पऽरल।
ढहर-ढहर बहत नैना से नीर, सुमिरत न आपन बाय जादो।
जादो से पत्ती बाय लिखात, लोरिका के अङने में गिरत बाय।
अभोरिका खोलत बाय बकोइयाँ, मँजरी बैठल मचिया पर बया।
टप से बिनत कागद अँगने का, लिरिया बांचे आँख बिलगाय।
कल्ला न पत्ती बाय दबवले, अभोरिका लख के गयल छरियाय[5]।
"भइया कैसन कागद लुकववला, हमके देबा सरेखे लगाय।
नाहीं तोर दूध-गान बाय हराम, अब तेज देबय जान गउरा में।
अभोरिका ओठे बाय जिदियायल, जेकर सोहै बाल बाय लोढ़रत।
माँङकर पत्ती जमुनी का, लड़िका बाँचय आँख बिलगाय।
मतारी बिपत में बाय पऽरल, "माई देले पत्ती तोंय छिपाय।
कहाँ न कका बायँऽ मोर मङरा, जलदी देबा सरेखे लगाय।"
वह दिन बोलल धिया महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नाम।
"भइया जायकर पुछवे चनवां से, ऊहै देही घोड़ा बताय।"
जायकर चनवाँ मतारी से पूछत, कहै-"घोड़ा बान्हल गड़बड़ा में बाय।
पता लगावत अभोरिका बाय, आय कर पहुँचत गड़बड़ा पर बाय।
सोझय गड़बड़ा में बाय हाँकल, जहाँ बान्हल मङरा बाय घोड़ा।
जौन न मङरा बाय घोड़ा, अभोरिका के काटत-पावत बाय।

---

1. बाहर, 2. गड्ढा, 3. खमाची, 4. अंगीठी, 5. लेने के लिए जिद पर आ गया।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लड़िका खपकल[1] देहें में बाय, वह दिन झँखत घोड़ा बाय मङरा।
घन-घन पानी गउरा का, बाँस के जड़ी बाँस बाय फूटल।

तब फेर बोलल लड़िका बाय अभोरिका, कहत न बोली लरमें का।
"कका न सुनबा तूं मङरा, एके कौनों हरजी जीन मनबा।

बाबिल चढ़ न चढ़ैं लोहा लेत होइहैं, तोहें बान्हब लवङ के डार।
चलकर देखा तमासा हरदी में," तब फेर बोलल मङरा बाय घोड़।

"बेटा मनबा कहल हमार, तनिक गड़बड़ा से ऊँचे होबा।
आपन लेहीं जोर अजमाय, तब फेर थाम्हब बल हरदी का।

नाहीं कोरन देबय जवाब," मारत न झटका बाय मङरा घोड़।
अगाड़ी न टूटल पछाड़ी, घोड़ा मारत बदरे में बाय रेख।

टप से चूवल मङरा बाय घोड़, घोड़ा का पकड़त चुण्डल अभोरिका बाय।
अब ले गयल नदी पर बाय, मल-मल कका के बाय नहवावत।

नहवाय कर ले जात दुवारे पर बाय, लवङ न मरीच बाय दूध।
एकदम चमकत मङरा बाय घोड़, जायकर खोलत सिवल्ला दुर्गा का।

जे पर अमर धजा फहराय, सुमिरत न देबी बाय दुर्गा।
जे फेर आदि दिन का पुजमान, "देबी तोरें तागत भरोसे।

चढ़त हई नगर हरदी बाय गाँव," वह दिन छमकल देबी बाय दुर्गा।
माई धरय छोकड़ी के रूप, पहिरय न चीर दखिनयँ का।

जेमें अंगुल न अंगुल बाय तार, दहिने भुजा पर देबी भयिल।
अभोरिका रेंगल घरे में जाय, जाय कर खींचत पेटी गँजड़े का।

जेन बीर अनव कसत बाय अनरखी, गोड़बा गुलबदन तमान।
बान्हल न पेटी अजगर का, जेमें गोली चिपटा हो जाय।

कसय न जीरही लोहन का, जेमें नौ मन लोहा अमाय॥
साठी न गजे का दुपट्टा, अभोरिका बान्हत सिर बाय घुमाय।

जैसे राजा पूर्वी बान्हय बघेल, तरकुश न गूजे का पनहीं।
अभोरिका चाँपत एँड़ा चढ़ाय, धरय न पागी लरमें का।

जेमें मेघ डमरू घहराय, काढ़त समान कका का,।
जहाँ ठनकल बलहवा[2] बाय घोड़ा, सोने न आँखर सोने पाँखर।

सोने का जिरही न बकसर लगाम[3], अब लाद देला गद्दी सोने का।
घोड़ा का बान्हय पेटी बनाय, चारी न गोड़े बान्हय घूघुर।

---

1. चिपकाया 2- बलशाली, 3. बकसर की लगाम प्रसिद्ध है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जौन साठी कोस सुनाय, माथे न टिकुला बाय चिटकावल।
जेमें बरै सुरजवा का जोति, लखत मतारी अभोरिका का।
मँजरी ठोंकत ताला तकदीर, ठहरल लड़की महरे का।
जेकर दावन मँजरी बाय नाम, बाँसय जड़ी बाँस उपजल।
ई फेर जनमल गउरा में बीर, बोलत न लड़की मँजरी।
"देवर न सुनवा मोर मङरा, तोहरे भरोसे लड़िका जात बाऽय।"
तब फेर बोलत मङरा बाय घोड़, "भौजी कौनों हरजा जीन माना।
जैसे जाना लड़िका गोदे में, वैसे रहिहैं लड़िका तोहाऽर।
एनके कल्ला[1] न ऊहाँ बैठाइब, लोहा देखब हरदी का हऽम।"
बह दिन तड़पल लड़िका बाय अभोरिका, "काका बाउर मति तूं बउखला।
तोहार अकिल हरले बाय सिरी भगवान, तोहें बान्हब डारी लवङे का।
हरदी का देखा हमार करतूत," निकलल न पूत लोरिका का।
जेकर दूलर अभोरिका बाय नाम, डाँक कर बलहा पर चऽढ़े।
मङरा घोड़ा आसन लगवले, एकदम ठनकल मङरवा बाय घोड़।
बाजल न टाप मङरे का, हलचल गयील गउरा में मऽच।
घर.घर टाटी[2] बाय ढँकाय, आपन-आपन ठोंकत ताला तकदीर।
केकर मृत्युक बायल नगचाइल, देखा ठनकल मङरा बाय घोड़ा।
नीचे न छोड़य भुइंधरती, ऊपर छोड़ देले न बाय असमान।
बादल न रेख बाय भिनउवाँ, लड़िका के हवा खियावत चल जाय।
घण्टा छमीछा के जून, जाय कर चूवत हरदीपुर पाल।
जौन न जगह घोड़ा चूवल, जहाँ जमुनी के बिपत होत बाय।
जायकर उतरल रकैबी से बाय, मारय न ठोकर जूता का,
बोरसी बिगहन जाय पँबराय, तान-तान मारय मुटका सिपाहिन के।
उन लोगन का झरत बत्तीसों बाय दाँन, रोवत न गावत बाय सिपाही।
भागल जात सिपाही नेवरीपुर पाल, एहर फरसा कुदारी बाय जुटवले।
कोड़-खन जमुनी के बाय निकलवउले, घर-घर तानत गोड़े का खँपचाल[3]।
घर-घर तानत अभोरिका जब बाय, बीसों खँपचाल बास निकलवउले।
जमुनी के मरले गस्ती जब बाय, अभोरिका बलटी गगरा से पानी।
आन कर मल-मल बाय नहवावत, जब ठंडा सरीर ओकर[4] भऽयल।
उठ कर जमुनी आय उहाँ बैठल, अभोरिका निहुर[5] करत बाय प्रनाम।
जमुनी आसीरबाद नाहीं देत, "सइयाँ न सुनबा सुखनन्दन!

---

1. धीरे से 2. द्वार, दरवाजा 3. खमाची, 4. उसका, 5, झुककर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहना माना एठिर हमार, कहाँ भूल तूँ अयलऽ।
बिपत होत हरदी में बाय हमार," तब फेर बोलल लड़िका बाय अभोरिका
"माता बाउर मति तोर वउखले, अकिल हरले बाय सिरी भगवान।"
तबो जमुनी नाहीं पतियाय,[1] फेर भाई करत पुकार सइयाँ का।
लड़िका सगरो समान बाय फेंकत, अभोरिका करत बाय बकोइयाँ।
लखत न जमुनी बाय कलारिन, कले गयील हरदी मे मुरझाय।
अभोरिका कइले बाय पलगी, जमुनी देती आसीरवाद।
"बेटवा आँखों अमर हो जैवा, जैसे बाढ़े पानी गँगले का।
वैसे बाढ़े आयी तोहार, घोड़ा बँछेड़ा बाय लेले।
जमुनी मतारी बाय लियवले, अब चल जाले जमुनी के दरबार।

सिपाहियों का अभोरिका के विरुद्ध बोलारख को उकसाना

उहाँ दूध-गान बाय पियावत, घोड़ा बान्हत तबेले में बाय।
मौज न उहाँ बाय कऽरत, तब कैदी सिपाही जौन रहनऽ।
जाय कर जुटल नेवरीपुर पाल, जहाँ छली बाय बोलारख।
जाय कर सिपाही कैदी बाय बोलत, "आग लागो नोकरी ऐसन तोहार।
सरवा आल जिंदगी हमहन के लेलेस, भार देलेस तरुवा[2] का दाँत।
गउरा से अहीर बाय आयल, जमुनी के कवार काढ़ ले गयल।"
सुनय न छत्री बाय बोलारख, जे फेर दाँत अँगुरी चबाय।
जाय कर अनव कसत बाय अनरखी, गोड़े बीर कमय तमान।
छली बान्हत पेटी लरमें का, जेमें तेगा मुर्चा खा जाय[3]।
साठी न गजे का दुपट्टा, छली बान्हय सिर घुमाय।
जैसे बान्ह राजा बघेल, डिल्ली न साही के जूता।
छली चाँपत एँड़ा चढ़ाय, कसत बँछेड़ी चौरी।
रन पर भयल खुसी तैयार, हाँथे तेगा बाय उठावत।
डाक कर घोड़ी पर भयल असवार आसन चौरी पर लगवले।
गीचे छोड़ले भुइंधरती, ऊपर छोड़ देले बाय असमान।
बादल रेख बाय भिनउवाँ, छली के हवा खियावत चल जाय।
घण्टा छमीछा के जून, जाय कर चूवल हरदी बाय पाल।

संघर्षः अभोरिका की जीत

गारी-गुफारी राजा देला, हरदी में बहुत कइले बाय उदियान[4]।

---

1. विश्वास माना, 2 तालू, 3. प्रभाव हीन हो जाता है, 4. आफत।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुनत न पूत लोरिका का, जेकर दूलर अभोरिका बाय नाम।
"सरऊ न सरउ न जीन करबा बातमाना ऐठे हमार।"
सुनत न राजा बाय बोलारख, एकदम दाँत अँगुरी चबाय[1]।
"सरवा कैसे पुछले बाय जनले, हमार देला कैदी निकाल।
ओकरे जामल तरुआ में दाँत," अभोरिका अनव न कसलेबाय अनरखी।
गोड़वा गुलबदन बाय तमान, बान्ह पेटी अजगर का।
जेमें गोली चिपटा खा जाय, कसय न जीरही लोहन का।
जेमें नौ मन लोहा अमाय, साठी न गजे का दुपट्टा।
अभोरिका बान्हत सिर बाय घुमाय, तरकुस न गूंजे का पनहीं।
अहीर चाँपत एंडा चढ़ाय, धरय न पागी लरमें का।
जेमें मेघय डमरू घहराय, बायें ओढ़ान बाय दबले।
दहिने बिजुल बाय तलवार, एकदम निकलल जाले मैदाने।
हरदी गावें फरके हो जाय, दूनों बातय-चीतय कइलेन सरवर[2]।
बात देलेन राड़[3] मचाय, दूनों चलत पैंतरा पर बाय।
तबफेर बोलत छली बोलारख, "मरबे न मरबे तोंय अहीर।
जौने तोरे अवार[4] के होई घाव," बोलल न पूत लोरिका का।
जेकर दूलर अभोरिका बाय नाम, "देखा भाई आगे घाय नाहीं छोड़व।
न त पीछे रखब छिपाय, आगे अवार जौन हवंऽ।
खानदान क्रिया बाय अट्ठान," तब फेर घूमल छली बाय बोलारख।
रन पर चमकल तेगा ओकार बाय, घूमाय कर मारत पेटी अहिरे का।
परगट देवी दुर्गा बाय असवार,[5] अभोरिका के बाएँ न दहिने करदे।
गिरल न तेगा धरती में, धार रति न रति झर जाय।
फेर से चलल पैंतरा पर बाय, मारय न टीका अहिरे का।
परगट नाचत देवी बाय पुजमान, अभोरिका के बड़े न छोट कर दें।
गयिल न तेगा धरती में, धार रति न रति झर जाय।
हहरल न छली बाय बोलारख, आपन ठोंकत ताला तकदीर।
मिरतुक गयिल हरदी में नगिचाय, फेर से चलल पैंतरा पर बाय।
मारय न पोंगी अहिरे का, खेलल न लड़िका बाय अभोरिका।
सोझय चंफा मरद डाक जाय, गिरल न तेगा छली का।
तीसरो जाला, धरती में समाय, वह दिन जौन पूत लोरिका का।

---

1. क्रुद्ध होना 2. कहासुनी, 3. झगड़ा, 4. अवार, घाव 5. सवार।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जेकर दूलर अभोरिका वाय नाम, ओसर न ओसर बाय नरियायल।
ओसरी पर कुइयाँ भरत पनिहारी, "संही पक्का लोहा तोर अँगेजल।
अब कचलोइया थमबा हमार," तड़पत न पूत लोरिका का।
हाँथे में चमकल बिजुल बाय खाँड़, चमकल न मइया देबी दुर्गा।
जेफेर आदि दिन का पुजमान, "बरुवा न सुनबा फुलझरुवा।
कहना मनबे एठिन हमार, जैसे काटे पूत कोयरी का।
जैसे काटे कोयरी बगवान, वैसे कटबे पूत लोरिका का।
खींचत खाँड़ बाय दोगाहै, जेकर चारी अंगुर भयल बाहर।
जेकर तड़प अकासे में चल जाय, नीचे न मरले बाय दवनहरा।
पोरसन जानी लवर गुंगुवात, फिरल न पलक छली का।
खाँड़ गिरत गरदने पर बाय, बिगहन सिर बाय पंवरायल।
लास डगमग पृथ्वी पर खा जाय, गिरल न लास छली का।
दसय पाँच बिस्सा जमीन तोपाय, जूझ गयल राजा बाय बोलारख।
अभोरिका का डिग्री हो गयल बहाल, चौरी बछेंड़ी लेले बाय।

जमुनी का आशीर्वाद प्राप्त कर अभोरिका का गउरा वायस लौटना

अब चल गयल जमुनी के दरबार, जायकर दूनों घोड़ा बाय बान्हत।
अपने दूधय गान बाय पीयत, घोड़ा के देलेस नाद लगाय।
रात भर कैसों बितवलेस, बिहने मतारी से छुट्टी बाय लेत।
"माई न जौन बाय मँजरी, गउरा में होई ऊहाँ अकुलायल।
मइया छुट्टी हमे तूँ देबा," कसत न कका बाय मंगरा।
कसकर घोड़ा कइले बाय तैयार, आपन बत्तीसों समान बाय कसले।
जमुनी देलेस दूध बाय पियाय, पाने के बीरा बाय धरवले।
अभोरिका कूँचत मघइया बाय पान, निहूर न माथ बाय नेवावत।
ओन्हों तेदतय आसीरवाद, "बेटवा आँखों अमर हो जाया।
जैसे बाढ़े पानी गँगले का, वैसे बाढ़े आयी तोहार।
जैसे चढ़े कमानी सरंगी का, वैसे चढ़े भुजा तोहार।
बेटवा मरते जियते का पता, हरदी में लेहा हमरो लगवाय।"
डाककर चढ़ल घोड़ा ककवा पर, आसन मँगरा के लगवले।
एकदम ठनकल मँगरा बाय गोड़, घर-घर टाटी हरदी बाई ढँकाइल।
केकर गयिल मृत्युक नगिचाय, ये बखत आसन घोड़ा के लगवले।
नीचे छोड़ले भुइंधरती, ऊपर छोड़ देलेन असमान।
बादल रेख बाय भिनउवाँ, अभोरिका के हवा खियावत चल जाय।
घण्टा न घड़ी बाय छमीछा, जायकर चूवत लोरिका के दरबार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धड़पड़ लड़िका रकेबी से उतरल, सगरों घोड़ा का देलेन समान उतार।
काका के तबेले में बन्धले बाय, जायकर माता के करत बाय पलगी।
मँजरी देती आसीरबाद बाद, "बेटवा आँखों अमर हो जाया।
जैसे बाढ़े पानी गंगले का, वैसे बाढ़े आयी तोहार।"
जायकर खोलत पेटी गंजड़े का, सगरो देलेस समान उतार।
अभोरिका घरे दुवारे बाय घूमत, गाँव नगर गउरा बाय गाँव।

समीक्षात्मक टिप्पणी—लोरिक पुत्र अभोरिका और चनरइता के चरित्र की कथाएँ प्रकाशित संस्करणों में नहीं आयी हैं, मौखिक रूपों में भी प्रस्तुत पाठ में ही इतने निस्तार से आयी हैं। लोकगाथाओं की यह विशेषता होती है कि नायक के बाद उसके पुत्रों की कथा आरम्भ हो जाती है। इस विशेषता का निर्वाह इस गाथा में किया गया है। अभोरिका, चनरइता के वीर-चरित्र कथा की अखण्डता तथा प्रामाणिकता का संकेत देते हैं। बाँस की जड़ में बाँस पैदा होने की कहावत तब चरितार्थ हो जाती है जब अभोरिका द्वारा बोलारख पराजित होता है। बोलारख को पराजित कर अभोरिका जमुनी का उद्धार करने में सफल हो जाता है।

(95) **अभोरिका का चनवाँ से भेंट**—अब अभोरिका को चनवाँ की चिन्ता होती है। वह उसका पता लगाने के लिए सहदेव के दरबार में पहुँचता है। मँजरी बता देती है कि सहदेव का लड़का महादेव चनवाँ से गोबर पथवाता है। यह सुन कर अभोरिका सीधे सहदेव के किले में पहुँचता है। रानी सेल्हिया अभोरिका को विष देकर मार डालने का प्रयास करती है, रिन्तु दुर्गा सहायक होती हैं और बिल्ली का रूप धारण कर विष चूस जाती हैं। जब सिल्हियाँ की यह योजना सफल नहीं होती तो वह भोजन (खिचड़ी) में विष देकर उसे मार डालने की दूसरी योजना बनाती है। दुर्गा बिल्ली का रूप धारण कर इस बार भी विष चूस जाती हैं।

(96) **चनवाँ को लेकर गउरा वापस**—खिचड़ी खाकर अभोरिका सीढ़ी से नीचे उतर आता है। वह चनवाँ को गोबर पाथता हुआ देखता है। उसे बिगड़ता है और उसके दोनों पुत्रों का पता पूछता है। चनवाँ बताती है कि उन्हें सात कोठरी के अन्दर बन्द कर रखा गया है। अभोरिया उसका रास्ता पूछता है। रास्ते का पता चलने पर अभोरिका सभी कोठियों के दरवाजे तोड़ता अन्दर जाता है और उन्हें बाहर निकाल लेता है। बाहर लाकर चनवाँ को भी साथ ले लेता है और तीनों को लेकर गउरा पहुँच जाता है। गउरा में आकर अभोरिका देखता है कि पंचायत बैठी हुई है। वह मँजरी से पंचायत बुलाने का कारण पूछता है, किन्तु मँजरी कुछ बता नहीं पाती, तब वह चौधरी से पूँछता है। पहले चौधरी उससे उसका परिचय पूछता है। वह अपना परिचय बता देता है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(97) **अभोरिका द्वारा पूर्वजों का पिण्डदान**—परिचय जान कर चौधरी उसे अपने पूर्वजों का पिण्डदान करने के लिए कहता है। अभोरिका तुरन्त घोड़े पर सवार होता है और आकाश मार्ग से काशी जाकर मणिकर्णिका घाट पर पिण्डदान करता है। वह अनेक राजाओं से लोहा लेकर वापस होता है[1]।

देवाइच और चनरइता को सहदेव द्वारा यातना

राम न राम गुन गावै के ठाकुर, देविया न सुमिरनी भगवती।
दुर्गा जानऽ सक्ति तोहार, जितना किर्तन गयल सतजुगी।
जोर कर देवा कड़ी बैठाय, लौटल न लड़िका बाय अभोरिका।
पूछत मतारी चनवाँ के, बोलत मतारी बाय मँजरी।

अभोरिका का मुक्ति दिलाने का प्रयास

"दूनों न लड़िका बाय लियाय कर, चनवाँ गयील बाय नइहर।
जौन न राजा बाय सहदेव, ओकर लड़िका बाय महदेव।
दूनों न मनई ओन्हन के, बन्द कइले सात कोठी के अन्दर।
नीचे बाय भुईंनास, ऊपर न पटरा बाय बिछवले।
बाहर से सातों कोठिया बाय बन्द करवले, चनवाँ से बहरे गोबर बाय पथवावत।"
रेंगल न लड़िका बाय अभोरिका, ओन्हन के पता लेवे जाय ठेकान।
एक-एक चढ़ जाय किला सहदेव का, बैठल न राजा बाय सहदेव।
जाय कर अभोरिका करत बाय प्रनाम, सहदेव देतय आसीरबाद बाद।
"कहाँ भाई गयल बाँयऽ चनरइता, कहाँ भाई गयल बाँयऽ देवाइत।
कहाँ भाई चनवाँ बाय न मतवा बाड़े, एकर देहा सरेखे लगाय।"
तब फेर बोलल राजा बाय सहदेव, नाती गाई भैंस के अड़ाने।
दूनों भाई ऊहाँ गयिल बाय, नाती दू-तीन घण्टा जोह लेबा।
अबहीं दूनों नाती आजइहैं, लियवले चल जाया घरे तूं दुवार।
अभोरिका बैठल कुरसी पर दरमेस,[2] झंखत न रानी बाय सेल्हिया।
जेकर खानदान का मार के करी कुकुर-बिलार, केकरे सङ्घे आयल बाय सरदार।

सेल्हिया का विष देकर अभोरिका को मार डालने का प्रयास

सेल्हिया माहुर बाय पीसत, दूधे में सरबत कइलेस तैयार।
आडर लागत अभोरिका के बाय, "नाती पीला सरबत तूं गिलास।
महियात न पूत लोरिका का, जेकर दूलर अभोरिका बाय नाम।

---

1. मणिकर्णिका घाट पर अभी भी एक पत्थर पड़ा हुआ बताया जाता है जिस पर अभोरिका के घोड़े के पांव के निशान बने हुए हैं, 2. धक्का देकर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गा सहायक

ऊठल न लड़िका कुरसी से, माई लखत दुर्गा पुजमान।
धरय रूप बिलारी[1] का, आगय छंउकत[2] गिलासी ओर बाय।
जितना सिन्हिया माहुर का बाय जड़िया, सुरुख[3] पीयत देबी बाय दुर्गा।
ओकर पीछे जूटल बाय लड़िका अभोरिका, चाह भर पीयत सरबत बनाय।
ऐसे-तैसे बैठल कुरसी पर महियाय, दूनों झंखत परानी राजा-रानी।
नाहीं सेन्हिया रसोईं बाय बनवले, सेर भर जौन चाउर[4] बाय।
घीये में चुरैला खिचड़ी बनाय, आधा न माहुर सेल्हिया लेकर।
पीस कर डालत खिचड़ी बनाय, होत बाय और मेल के रसोईं।
बनाय के कइले बाय तैयार, तब फेर जूटल लड़िका बाय महदेव।
अभोरिका उठ के करत बाय प्रनाम, देत बाय मम्मा आसीरबाद।
तब तक तीनों मिला बाय ऊठत, लोटा से धोवत गोड़ कुल्ला बाय गलीला।
जायकर तीनों ठहरे पर बाय बैठत, अभोरिका के खाली महुरे[5] खिचड़ी बाय परोसत।
बापय पूत के चून कर बरहो बाय रसोईं, ऊ लोग के आवत ठहरे पर बाय।
तब फेर बोलत पूत लोरिका का, जेकर दूलर अभोरिका बाय नाम।
"नंना न सुनबा सहदेव, कहना माना एठिन हमार।
एकय न ठहरे पर रसोईं, कैसन दुई किसिम का बाय आनत[6] ?"
तब फेर बोलत नंना बाय सहदेव, "नाती तोहरे नानी का हव खेल।
कबों नाती दुवारे पर आवै, आज बहुत दिना पर बाय आयल।
खाली घीये में खिचड़ी चूरल,[7]" तब फेर बोलत लड़िका बाय अभोरिका।
"नंना न सुनबा सहदेव, कहना माना एठिन हमार।
तूं लोग के टाठे में बैठय माछी, नंना उछऽल माछी बाय जात।
हमरे टाठे के बैठल माछी, कैसन बैठल माछी रह जाय ?"
तब फेर बोलत राजा बाय सहदेव, "जितना बैठत माछी नाती बाईं।
रस लेती घीये के बाईं," वह दिन झंखय पूत लोरिका का।
जेकर दूलर अभोरिका बाय नाम, तब तक धन-धन देबी बाय दुर्गा।
माई धरय रूप बिलारी का, एक फेवरा टाठी के खिचड़ी बाय ओइंछत।[8]
जितना माहुर का जड़िया देबी पवलेस, सुरुख कर ले गयल दुर्गा पुजमान।
बल भर खातय बीर बाय, बापो न पूत घीरे में खानयँ।

---

1. बिल्ली, 2. दौड़ती है, 3. खींचकर, 4. चावल, 5. विष, 6. ले आते हैं, 7. पकी, 8. ओइंछत, हाथ फेरती हैं, घूम जाती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सरवा खातय ठहरे पर मर जाय, धीरे न धीरे बाय खाय।
अभोरिका करके कुला बाय, जोहले' नाहीं उठल पूत लोरिका का।
ओन्हन[1] के बैठल ठहरे पर छोड़ले, जायकर हाँथय न मुँह बाय धोवत।
पोंछत उतरल सीढ़ी सहदेव का, पिछवारय[2] से राह बाय घूमल।

अभोरिका का चनवाँ से भेंट उसकी दयनीय स्थिति पर अभोरिका दुखी

चनवाँ पाथतय गोवर जब बाय, जाय कर जिदल पूत लोरिका का।
"तनी मतारी[3] तयँ ठहरले, नाहीं काटित सिर जरियाय[4]।
कहाँ दूनों भाई के बिलववले,[5] हमके देले सरेख लगाय।"
तब फेर बोलल लड़की सहदेव का, "बेटवा सात कोठी ओन्हिन के अन्दर।
नीचे कोड़वले बाय भुँईनास, बाबू न भइया मिलकर।
ओन्हन के भुँईनास में बैटवले,', वह दिन जाय कर रास्ता ब्योरा बाय पूछत।

चनवाँ का उद्धार

अभोरिका जाय कर तान-तान एँड़ा बाय मारत, फाटक जानयं सगरो नोचायल।
सातों फाटक तोड़कर हऽलल, पटरा भुंईनास का बाय उलटवले।
सोझय गयल गड़बड़ा में बाय, बायें न दहिने दोनों के दबले।
चाँप कर डाँकत चम्फा जब बाय, लेकर ऊपर कोठी में बाय आयल।
तीनों न मीला डाँड़े बाय निकलल, चनवाँ मतारी के बाय लियवले।
लौटल नगर गउरा बाय गाँव, इरखा न देत बाय अभोरिका।
"राजा दूसर झंझट बाय देखात, नाहीं देखात गउरा में का तागत तोहार।"
लेकर ले ले लिववले बाय लौटत, लोरिका घरे दुवारे जुट जाय।

बिरादरी की बैठक

परल बिरादरी बाय अहिरे का, बोलत न लड़िका बाय अभोरिका।
"मइया न सुनबे तोंय मँजरी, कैसन बिरदरी बाय पऽरल?
हमहन के नेउता आवत बाय हँकारी" तब फेर बोलत मतारी बाय मँजरी
"भइया जाय कर टाटे पर पूछबा, चौधरी दीहैं दीवान सब बताय।"
रेंगल न लड़िका बाय अभोरिका, जाय कर पहुँचत टाटे पर बाय।
सबके आगे सिर नवावे, सब कोई देत आसीरबाद बाय।
तब फेर बोलत पूत लोरिका का, जेकर दूलर अभोरिका बाय नाम।
"पंच न सुनबा मोर बिरादर, चौधरी न सुनबा दीवान।

1. उनको, 2. खिड़की, पीछे से, 3. माता, 4. जड़ से, 5. बिलवा दिया, बर्बाद कर दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कैसन ममिला हमहन का छूटल, एकर देबा मतलब बताय।"
तब फेर बोलत चौधरी बाय दीवान, "केकर कुले के हवऽ नन्दन।
केकर हव दुलरवा का लाल ?" तब फेर बोलत लड़िका बाय अभोरिका।
"चौधरी सुनवा तूं दीवान, कठइत कुले का हई नन्दन।
एक हम लोरिका दुलरवा के लाल,' तब फेर बोलल चौधरी बाय दीवान।
"जितना बापय ददा सयनका बाय मऽरल, केनहूँ पिण्डा रुकल वाय परात।
केनहूँ का रुकल सोरहो बाय धाम, जाय कर कासी मनिकाके घाटे जाबा।
सगरों लेबा एकर बेंवत बैठाय, तब फेर सगरों बिरादर ले लीहैं।"

अभोरिका द्वारा काशीजाकर पिण्डदान : पूर्वजों का उद्धार

सुन कर लड़िका बाय अभोरिका, अपने लौटल घरे बाय जाय।
करत सपरनी फुन बाय, जोर कर बान्हत खरचा सब बाय।
कसत न घोड़ा बाय मँगरा, सोन आँखर सोने पाँखर।
सोने की जिरही कसत बाय लगाम, सोने न गद्दी धइलेस।
घोड़ा का बान्हत पेटी बनाय, चारी न गोड़े बान्हे घूघुर।
जौन साठी कोस में सुनाय, देत न टिकुला माथे पर।
जैसे बरै सुरुजवा का जोति, अपने न अभोरिका बाय हऽलल।
खोलत न कोठी गँजड़े का, जेन फेर अनव न कसत बाय अनरखी।
गोड़वाँ गुलबदन तमान, बान्हे न पेटी अजगर का।
जेमें गोली चिपटा हो जाय, कसय न जीरही लोहे का।
जेमें नौ मन लोहा अमाय, साठी न गजे का दुपट्टा।
बान्हय न सिर घुमाय, जैसे राजा बान्हय बघेल।
तरकुस न गुजे का पनहीं, अभोरिका चांपत ऐंड़ा चढ़ाय।
धरय न पागी लरमें का, जेमें मेघ डमरू घहराय।
मरगस न मरगस रेंगल अभोरिका, कसल न घोड़ा बाय मँगरा।
रन पर ठनकल मँगरा बाय घोड़, गउरा हलचल मचल गाँव।
घर-घर टाटी गयल ढँकाय, केकर मिरतुक गयील नगिचाय।
रेंगल न अभोरिका रेंगावल, जाय कर खोलत सिवल्ला दुर्गा का।
जे फेर अमर धजा फहराय, जाय कर काढ़त खाँड़ बाय बिजुलिया।
निकलल अभोरिका जब बाय, डाक कर पीठी पर भयल असवार।
नीचे न छोड़ले भुइँधरती, ऊपर छोड़ देले कैलास।
बादल न रेख बाय भिनउबाँ, अभोरिका के हवा खियावत चल जाय।
घण्टा छमीछा के जून, चूवल कासी मनिका के घाटे।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहीरे के सोयस[1] पाय के, चौनीस जुटल राजा छली बाय।
कासी मनिका घाटे, जेकरे खानदान के।
मारे के चाही कुकुर बिलार, ओके सड़्घे आल बाय सरदार।
एक-एक राजा उहाँ बाय जूटल, एक-एक छली के दयी बायँऽ लाल।
मारे न एक-एक राजा के पलटन, मारे गोरा-तिरंगा बाय तऽनल।
मारे न टन्ट के मारन, ऊजर कासी मनिका के भयल घाट।
अनेक-अनेक प्रकार के बायँ पण्डा, अभोरिका चौक चन्दन बाय बनावत।
बापे के धरत बरहो बाय पिण्डा, एक ठे लेकर पिण्डा जाय बोरय।
एहर मँऽरा घोड़ करत बाय उदियान,[2] अगारी पछाड़ी बाय तोड़त।
घूम-घूम काटत तम्बू के डोरी, ऊपर न ऊपर घोड़ा घूमल।
छली दाँते अँगुरी चबाय, "जौन न सारे का घोड़ा।
ओके गाड़ दा कासी मनिका घाट," दौड़त न लड़िका अभोरिका।
पकड़ल चुण्डल[3] कका का, अगाड़ी पछाड़ी बाय छानत।[4]
"कक्का इहे काम करे देबा, तब फेर देखय कासी मनिका घाटे के हाल।
कहै-"जाय बेटा एदाँ[5] पिण्डा तूं बोरा, अब नाहीं जानय हमहूँ।"
ओहर दू-चार पिण्डा बाय बोरत, फेर से अगारी-पछारी बाय छोड़ले।
मँगरा मारत बदरे में रेख, कुछ डोरी बन्हना बाय काटत।
गोड़े से मारै तम्बू जाय चिराय, हलचल छली बाय मचवले।
रन पर तेगा चलत हव तलवार, धड़फड़ पिण्डा-परात करवले।
धरमी के कइले सोरहों बाय धाम, देन-लेन बाय करले।
दान-पुन्न करके चौके से हँऽटय, जायकर कसय समान लोहा का।
अनव न कसले बाय अनरखी, गोड़वाँ गुलबदन तमान।
बान्हल न पेटी अजगर का, जेमें गोली चिपटा हो जाय।
कसय न जिरही लोहे का, जेमें नौ मन लोहा अमाय।
साठी न गजे का दुपट्टा, अभोरिका बान्हल सिर घुमाय।
जैसे राजा न बान्हें बँघेल, तरकुस न गूंजे का पनहीं।
अभोरिका एँड़ा चाँपत चढ़ाय, मूँहे न बीरा बाय दबावत पान।
जायकर पकड़त चुण्डल मँगरे का, एकदम पीठी पर भयल असवार।
जितना न छली बाय जूटल, ओतना[6] ठनकत गोली ऊहाँ बाय।

---

1. आने का समाचार, 2. परीशान, 3. चुन्नी, 4. बाँधकर छोड़ना, 5. इस बार, 6. उतना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओतना तेगा चलत बाय तलवार, ओतना चलत बीर ऊहाँ बाय।
छत्तीसों मेल का हथियार, चलत बाय कासीमनिका[1] के घाटे।

सारांश (98) अभोरिका के साथ छल—काशी में मणिकर्णिका घाट पर भी उसे लोहा लेना पड़ता है। दुर्गा की कृपा से अभोरिका क्षत्रियों का संहार करता है। किन्तु सुगनापुर की रानी जादू के छल से मंगरा घोड़ा को पत्थर तथा आभोरिका को शुक बना देती है। बहुत दिनों तक अभोरिका का पता न चलने पर चनरइता व देवाइच दोनों को शंका होती है और उसे खोजने निकल पड़तें हैं। मार्ग में अनेक ऋषियों-मुनियों से उनकी भेंट होती है। पूछने पर उन्हें वे सारा वृत्तान्त सुना जाते हैं अभोरिका के विषय में बताते हैं कि उसे पिंजड़ा में बन्द करके रखा गया है। तुम लोग पिंजड़े को उठा कर लेजाओ, किन्तु शर्त यह है कि कहीं रुकना मत। वे सब पिंजड़ा लेकर चलते हैं। तब तक रानी को पता चल जाता है। वह जादू का प्रयोग करती है। मार्ग में ही उन दोनों को पेशाब लग जाती है। वे पिंजड़ा रखकर पेसाब करने लगते हैं। तब तक वह पिंजड़ा लेकर भाग जाती है। वे गउरा वापस चले आते हैं। सतिया यह सारा वृत्तान्त अपने सत्य से जान जाती है। वह पत्र लिख कर जमुनी के पास भेजती है। अमुनी अभोरिका के घर आती है।

(99) अभोरिका का विवाह—जादू की कला में सतिया व जमुनी दोनों दक्ष हैं। वे जादू का एकरथ तैयार करती हैं। उस पर बैठ कर सुगनापुर जाती हैं। दोनों पक्षों से एक-दूसरे पर जादू की मार होने लगती है। अन्त में सुगनापुर की लड़की हार जाती है। और अभोरिका से अपनी शादी का प्रस्ताव कर देती है। वह अपनी स्वीकृति देता है। अभोरिका तथा उसका घोड़ा दोनों जैसे के तैसे हो जाते हैं। अभोरिका अपनी नव-बधू को लेकर घर जाता है और आराम से रहने लगता है।

(100) धरमी का उद्धार—कुछ दिनों के पश्चात् दुर्गा अभोरिका को लेकर इन्द्रलोक प्रस्थान करती हैं। अभोरिका जाते समय मार्ग में धरमी का सिर विहीन लाश देखता है। लाश अभोरिका का परिचय पूछती है। वह अपने को लोरिक का पुत्र बताता है। लाश कहती है—'ऐसे नहीं, तुम मेरा सिर खोज कर ला दो तब जानूंगा कि लोरिक के पुत्र हो। अभोरिका सिर का पता लगाकर खोज लाता है। उसके सिर को पिपरी के कोलों ने जमीन के अन्दर छिपा कर रख दिया था किन्तु दुर्गा की कृपा से अभोरिका उसे प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। वह सिर लेकर समुद्र में धोता तथा तीर्थ कराता है। उसके बाद उसे लाकर लाश में जोड़ता है। धरमी पुनः जीवित हो जाता है तथा अभोरिका को आशीर्वाद देता है।

---

1. मणिकर्णिका, गाथा के अनुसार मणिकर्णिका घाट पर आज भी घोड़े के पाँवों के निशान विद्यमान हैं।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(101) लोरिक का उद्धार—अब अभोरिका पिता लोरिक का पता लगाने ब्रह्मा की कचहरी में पहुँचता है। वह ब्रह्मा से लोरिक को बाहर करने का हठ कर बैठता है। ब्रह्मा को विवश होकर लोरिक को प्रकट करना पड़ता है। अभोरिका उसे प्रणाम करता और वह भी उसे आशीर्वाद देता है। इस प्रकार अभोरिका अपने पूर्वजों का उद्धार करने में सफल हो जाता है।

अभोरिका मारत मेड़र मड़रा पर, धन-धन देवी बाय दुर्गा।
जे फेर आदि दिन का पुजमान, जितना झहकत लोहा तीरे पर।
मइया थामत दुर्गा पुजमान, नाहीं सक्ती दुर्गा बाय बढ़वले।
सगरों टूटल हरवा हथियार, सगरों लोहा ठप पर गयल।
तब फेर तड़पत देवी बाय दुर्गा, "बरुवा न सुनबे फुलझरुवा।
कहना माना एठिन हमार, ओसर न पलटल बाय तोर।
वह दिन ओसर न ओसर बाय नरियायल, ओसरी पर कुइयाँ भरय पनिहारी।
पक्का न लोहा तोर अँगेजल, अब कचलोइया थमबा हमार।"
तब फेर तड़पत देबी बाय दुर्गा, जैसे काटै पूत कोइरी का।
जैसे कोइरी काटै बगवान, वैसे कटबे पूत लोरिका का।
सूरुख न खाँड़ बाय फेंकले, जेकर चारीं अंगुल भयल बाहर।
जेकर तड़प गयल अकासे में, नीचे न मरले बाय भुँइ दवनहरा।
दू-चार पोरसा लवर जानी गुँगवात, गिरल न पलक छली का।
खाँड़ घूमल गरदने पर बाय, दखिन से काटत घूम गयल पूरब।
पूरबय से उत्तर बले बाय घूमल, घण्टा छमीछा के जून देखय कासी मनिका।
सबका मुखत देलेस बनाय, दिना सारे सियार बाय गड्यल।
बड़ा भारी कइले हुड़दंग, वह दिन देखऽ हाल सुगनापुरका।

बरईपुर की लड़की का छल : अभोरिका तोता रूप में

लड़की का सादी रखल बदय बियाह, दिनयँ बीस-पच्चीस रोज का बाय।
ओकर बाबिल जायकर जूझ गड्यल, लड़की के पता लाग गयल ठेकान।
बहुत न रहल जादोगीर, जादी से रथ बाय बनवले।
जायकर चूवल कासी मनिका घाट, जौनयँ मँगरा घोड़ ओकर रऽहल।
घोड़ा के पत्थर बाय बनवले, अभोरिका के सूगा बाय बनावत।
एकदम देलेस पिंजरा में लटकवले, हरकर ले गयल सुगनापुर पाल।
घरे का जोहत परानी सब बाय, ऐसे-तैसे छव महीना का दीन।
बित जानयँ कासी मनिका के घाटे, नाहीं जौन भाई बाय चनरइता।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चनरइता-देवाइच द्वारा अभोरिका का उद्धार

धरमी के जौन लड़का का बाय देवाइच, पल्ले बान्हत खर्ची दूनों बाय ।
अभोरिका के खोज के कइले बाय पयाम, रेंगल न मुलुक बाय संसार।
वहाँ बने बाय जूटल, जहाँ रिसी-मुनी बाय साधू ।
जे फेर छव महीना सूतय, छव महीना ऊहो ऊहाँ जागल ।
छव महीना का नींद ओनके लागल बने में बाय, दूनों न भाई डेरा डलले ।
दूनों करत सेवा सतकार, ओनके न मालिस करबे ।
ऊहाँ बीतल महीना बाय छव, जब फेर कवरल नींद बाबा का ।
तब फेर बोलत बाबा रिसी-मुनी, "बच्चा बहुत सेवा हमार बितवला जा ।
जौनयँ मांग तू लोग मांगऽ बरदानी देबय हमहूँ," कहले—"बाबा न सुनवा महाराज ।
जंगल के हवँऽ रिसी-मुनी तूँहों, हमार जेठा भाई बाय अभोरिका ।
घोड़ा लेकर बाय मँगरा, गयल रहै कासी मनिकापुर घाटे ।
धीरे-धीरे साल भरे के दिन बीतल, कहीं न ओनकर पता मिलऽता ठेकान ।
बाबा इहै उपाय तूं बतवता, बिनती बाइ कुटी पर हमार ।"
तब फेर बोलत रिसी-मुनी, "बच्चा सुगनापुर का बाय रानी ।
घोड़ा-ओड़ा देलेस पत्थर सब बनाय, ओन्हैं सुगना बनाय के बाय हरले ।
आनकर टऽले पिंजड़ा लोहे का, तूं लोग रेंगल सुगनापुर जाबा ।
सुगनापुर राजा का खोज लेहा दरबार, बारह न बजे दिन जाया ।
वह बखत करय जालय अलान, लेकर पिंजड़ा तूं लोग भागा ।
तब तक बैठा-उठा जीन कहीं," जाय कर बारह बजे दिन जूट गयनऽ ।
ऊ फेर खाय नयल बाय नहाए, बकर पिंजड़ा ऊहाँ से चऽलल ।
लड़की के मालूम हो जाय, जायकर मारत जादो पैंड़े से ।
ओन्हन करत बाय पेसाब, तब तक पहुँचय लड़की राजा का ।
छीनकर भागल ड़ेंहुड़ी पर जाय, दूनों न लड़िका बाय रेंगल ।
राह धइले गउरा चल जाय, सतवाँ महीना का दिन बीतल ।
आय गयनऽ नगर गउरा बाय गाँव, जायकर घरे भेंट करय मुलाकात ।

सतिया का छल

जब फेर सुनत मतारी बाय सतिया, जल्दी सत्त से चिट्ठी बाय लीखत ।
चिट्ठी दे देलेस हाँथे में उधराय, जायकर उड़ल चिट्ठी सतिया का ।
गिरल हरदी जमुनी के दरबार, जमुनी खाता बाय बांचत ।
चटपट टाटी न बेंवड़ा बाय ढाँकत, आपन जादो बाय सुमिरत ।
जलदी कइलेस रथ बाय तैयार, रथय जमुनी बैठल ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकदम हवा खातय चल आवै, घण्टा छमीछा के जून।
आयकर चूवत गाँव गउरा, अभोरिका का बखरी बाय पूछत।
जायकर सबसे भेंट करत बाय मुलाकात, जमुनी न सत्तिया बाइँ सपरत।

जमुनी से सामना

दूनों कइले रथ तैयार, दूनों न रथ बाइँ साजत।
एकदम भागल सुगनापुर जाय, जायकर लड़की चुवै दरबार।
जायकर गारी फूहर बाय देले, काहे लेले लड़िका तोंय बेल्हमाय।
ऊहौ न बहुत रहल जादोगीर, एकठे ऊहो न रथ बाय साजत।
तीनी न तोला बाय जादो, तीनों करत लड़ाई जब बाय।

जमुनी की जीत, सुगनापुर की लड़की अभोरिका पर मोहित

हारल न लड़की सुगनापुर का, बिनती करत लरमें का बाय।
"ससुवा न सुनबा मोर गोसाइँ, कहना मनबा एठिन हमार।
हमरो न डाड़ी फनवैबा जाय, हमहूँ तूँ लोग का पतोहू बन कर चऽलब।"
छव-सात महीना का दिन, अभोरिका से लड़की मोहित भयील।
भेजत न ओके जब बाइँ, अभोरिका जलदी बाय बनवले।
जायकर कासी मनिका घाटे, ओकर औजार बाय बनवले।

विवाह सम्पन्न

अभोरिका ओही रूप में कसे कसाए, डाक कर पीठी पर भयल असवार।
ओन्हन पलकी कहाँर बाय सजवले, अभोरिका का रेंगल डाड़ी बाय जात।
ठनकल मँगरा बाय घोड़, नीचे न छोड़व मुइँधरती।
ऊपर छोड़ देले बाय असमान, बादल रेख बाय झिनउवाँ।
अभोरिका के हवा खियावत चल जाय, घण्टा छमीछा के जून।
जायकर चुवै गउरा बाय गाँव, घोड़ा का समान सब उतारत।
आपन देलेस समान सब उतार, करत न नहान दुवरां पर।
जायकर देवी दुर्गा के दरवार, जायकर मारत हुमाद बाय अभोरिका।
माई खुसी देवी बाय दुर्गा, डाड़ी न ओकर भितरल[1]।
अभोरिका पलगी करत बाय परनाम सब कोई आसीरबाद बाइँ देले।
दूनों न भाई बाँयऽ पलगी कऽरत, अभोरिका देतय आसीरबाद बाय।
बनत रसोई बखरी में, सबके खान खियान बाय होत।
जमुनी आपन रथ बाय साजत, चल जातय नोनीहरदी भाय पाल।
सब कोई घरे दुवारे हो गऽयल, मौज करत घरे-घरे बाय।

---

1. अंदर गयी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"मइया न सुनबा देबी दुर्गा, एठिन जानऽ सक्ति तोहार।
तनिक इन्दर न लोक पहुँचैवा, राम नाम गुन गावै के ठाकुर।

अभोरिका द्वारा धरमी का उद्धार

सगरों देख आइत खेल इन्द्रासन का," मइया धरत रूप चिल्होरी[1] का।
लड़िका लेले अभोरिका के चल जाय, जाय कर देखय खाता इन्द्रासन का।
जौन धरमी ओकर ददा रहनऽ, विना सिर का ऊपर बाय घूमत।
जायकर अभोरिका करत बाय पलगी,[2] धरमी के लास नाहीं देत आसीरबाद।
"तूँ फेर केकरे कुल के हवऽ नन्दन, कौने दुलरुवा के हवऽ लाल॥"
तब फेर बोलल लड़िका बाय अभोरिका, "ददा कठइत कुले के हई नन्दन।
बाबू लोरिका दुलरुवा के हई लाल," बोलत न लास धरमी का।
"ऐसे बात नाहीं पतियैबे, जायकर ले आवऽ सिर तूँ हमाऽर।
गाढ़ गाजन गाढ़ै पिपरी, गाढ़ै गड़ले पिपरिया के बाय कोल।
जौन जगह पर बाय गड़ले, जहाँ कोलिन के निकास सब बाय।"
लेकर देबी न दुर्गा बाय चूवल, जाय कर ऊहाँ सिर बाय कोंड़त।
कोंड़तय-कोंड़त मार मउवत हो जाय, बड़ा करकर[3] बाय गन्दगी ऊहाँ।
जाय कर सिर ऊहाँ से लेले बाय, मइया लेकर दुर्गा बाय ऊड़ल।
जायकर गिरल गँगाजी में बाय, मल-मल सिर बाय नहववले।
सगरों[4] देवतन मूर्ती बाय करवले, जाय कर समुन्द्र में गोता[5] बाय मरले।
ऊहाँ कइले देवतन का धाम, जायकर प्रयागराज में बाय गीरल।
ऊहों न सिर बाय नहववले, सगरों करत देवतन का धाम।
जायकर ठाकुरद्वारा बाय जूटल, ओठे मल-मल सिर नहवावै।
अपने अभोरिका का बाय नहात, तब फेर घूम-घूम दर्सन बाय करावत।
लेकर सिर बाय ऊड़ल, जाय कर गयल इन्द्रासन फुन बाय।
धरमी के सिर बाय बैठवले, मूर्ती लखाय सौंरू का बाय।
अभोरिका निहुर के पगली करय, धरमी देतय आसीरबाद बाद।
"बेटवा आँखों अमर हो जाया, तूँ फेर जियऽ लखवा बरीस।
जैसे बाढ़ै पानी गँङले का, वैसे बाढ़ै आयी तोहार।
जैसे-जैसे चढ़ै कमानी सरंगी का, वैसे चढ़ै भुजा तोहार।
जैसे बाढ़ै खम्भा केदली का, वैसे बाढ़ै जाँघ तोहार।"
धरमी के भेंट मुलाकात कइले, जाय कर देखत लोरिका अपने बापे का।
लोरिका काटी गाढ़ में बाय बोझल, अभोरिका से देखत परल बाय अपराध।

---

1. पक्षी विशेष, 2. प्रणाम, 3. बहुत अधिक, 4. सम्पूर्ण, 5. डुबकी।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जायकर ब्रह्मा कचहरी रऽहल लागल, जायकर बोलल लड़िका बाय अभोरिका ।

"ब्रह्मा लोरिका बाबू के कढ़बा, लखकर हम से रहल नाहीं जाय ।"

अभोरिका द्वारा लोरिक का उद्धार

ब्रह्मा न बोलल बाय भगवान, "बेटवा जौन करतब जे बाय कइले ।

ऊ फेर इहाँ भोगे के परी, हम तूँ देख के का करल जाई ।

बहुत न पाप बाय कइले, वही के सगरों बीतल बाय अपराध ।"

देखकर लड़िका लोटल बाय लोटल, "ब्रह्मा दे देबय जिन्दगी आपन ।

जबसे बाबिल के न डाँड़े निकलबा, आपन जिन्दगी दे देबय हमहूँ यहीं ।"

बहुत न नकल बाय फैलवले, सगरों रिसी-मुनी जूट जाय ।

जबइ लोरिका के गड़बड़ा से बाय निकलवले, तवसे अभोरिका धइले बाय धीर ।

माचा न मिलत हवंऽ गलइचा, लोरिका के सङ्हें दूय-चार मिला नौकर ।

इन्द्रासन बैठक बाय दियवले, बैठत न लोरिका बाय पवले ।

जाय कर करत बाय पलगी परनाम, राम नाम गुन गावै के ठाकुर ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवां : शान्तिकाण्ड

चनरइता-देवाइच-विवाह

सारांश–(102) अभोरिका का लक्ष्यपूर्ण–उसी समय सतिया भीप्रकट होती है। अभोरिका अपनी माता का दूध पीता गउरा में आराम से रहने लगता है। चनरइता और देवाइच दोनों घोड़ा कसकर तैयार होते हैं। वे काशीमणिकर्णिका घाट पर पहुँचते और पिण्डदान आदि कृत्य करते हैं तथा दान-पुण्य कर सुरावल के लिये प्रस्थान कर जाते हैं। वे शंभू सगरे के भीटे पर जाकर उतरते हैं। वहां हलचल मच जाती है। वहां के राजा का लड़का उनका सही पता लगाने के लिये भीटे पर आता है। सामान्य प्रजा का वेश धारण कर उनके पास जाता और प्रश्नोत्तर करता है। वे उसको अपना परिचय देते तथा वह भी उससे प्रभावित होकर प्रसन्न होता है और उन्हें अपने घर ले जाता है। वे बमरी राजा के किले पर पहुँचते है।

राजा के पास गंजेड़ीपुर का तिलक आता है जिसे राजा अस्वीकार कर देता है। तब से विवाह की शर्त रखते हैं– 'सारी सड़क आदि का निर्माण कराना पड़ेगा।' जदुनन्दन को वह शर्त स्वीकार हो जाती है। सड़क आदि पर काम भी लग जाता है और विवाह की तैयारी भी होने लगती है। वे तिलक चढ़ाने आते हैं। तिलक वालों का हार्दिक स्वागत सत्कार किया जाता है।

राजा अपने बेटे भंगोली को मंजरी के पास उसे बुलाने के लिये भेजता है। भंगोली घोड़े पर सवार होकर गउरा जाता है। वहां मंजरी अकेले मिलती है। भंगोली मंजरी से सारा वृत्तान्त बताकर उससे चलने के लिये आग्रह करता है। मँजरी भोजन बनाकर उसे खिलाती है। परिचय पूछने पर मँजरी अभोरिका को भंगूली का परिचय देती है। अभोरिका उसे आशीर्वाद देता है। अभोरिका और मँजरी दोनों को साथ लेकर वह गंजेड़ीपुर जाता है। बमरी उनका स्नेह पूर्वक सत्कार करता और कुशल समाचार पूछता है।

राम न नाम गुन गावै के ठाकुर, भजली नाम हो तोहार।
देविया न सुमिरनी भगवती, दुर्गा जानऽ सक्ती तोहार।
लोरिका देत बाय आसीर्वाद "बँठवा आँखों अमर हो जैबा।
जैसे बाढ़ै पानी गँगले का, वैसे बाढ़ै आयी तोहार।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कैसे न कैसे करला ख्याल, इन्दरलोके में हो गयल मुलाकात, ।"

जायकर सत्तिया माई के बाय भेंटत, ओनहूं के करत पगली प्रनाम।
आसीरबाद उन्हीं देलिन, "बँठवा आँखो अमर हो जैबा।

जैसे बाढ़ै पानी गँगले का, वैसे बाढ़ै आयी तोहरो।
बँठवा जीयऽ लाख बरिस", सबसे करत भेंट मुलाकात।

लेकर देबी न दुर्गा बाय ठमकल,[1] जायकर चूवल गउरा बाय गाँव।
अभोरिका घरे अपने ले गऽयल, दुर्गा देबी सिवल्ला में पयलिन धाम।

अभोरिका दूध गान माता के पीय, मौज करत गउरा बाय गाँव।
राम न राम गुन गावै के ठाकुर, देबिया न सुगिरनी भगवती।

दुर्गा जानऽ सक्ति तोहार, जितना किर्तन गयल सतजुगी।
जोर कर देबा कड़ी बैठाय, सत्तिया मरल मतारी[2] ओकर।

जौन न लड़िका बाय देवाइच, राम नाम गुन गावै के ठाकुर।
जोर कर बान्हत खर्चा सब बाय, ओकरे सङ्हें सपरत[3] बाय चनरइता।

चौरी कसत बछेड़ी बाय देवाइच, मङरा घोड़ा कसत बाय चनरइता।
सोने न आँखर सोने पाँखर, सोने बकसर देले बाय लगाम।

कसत गद्दी सोने का, घोड़ा का बान्हत पेटी लहाय[4]।
चारी गोड़े घूघुर बांन्हय, जौन न साठी कोस में सुनाय।

बान्हय न टिकुला माथे पर, जैसे बरै सुरुजवा का जोति।
चौरी के ठाट से बाय कसले, देवाइच अपने पुजीसन में भऽयल।

जोर कर लेलेस खरची बान्ह, चनरइता गँजड़े में बाय हऽलल।
जाय कर अनव पहिरत बाय अनरखी, गोड़वा गुलबदन तमान।

बान्ह न पेटी अजगर का, जेमें गोली ठहक खा जाय।
कसय न जिरही लोहन का, जेमें नौ मन लोहा अमाय।

साठी गजे का दुपट्टा, अहीर बान्हत सिर घुमाय।
जैसे राजा बान्हे बघेल, तरकुस न गुजे का बाय पनहीं

चनरइता चाँपत एँड़ा बाय चढ़ाय, बायें न खाँड़ बाय धइले।
दहिने झुकल बिजुल बाय खाँड़, दूनों कूँचत बीरा बाय पान।

डाक-डाक पीठी पर होत बाय असवार, दुनों न घोड़ा बाय ऊड़ल।
नीचे न छोड़ले भुइँधरती, ऊपर छोड़ देले बाय असमान।

बादल रेख बाय बिनउवाँ, दूनों के हवा खियावल चल जाय।
घण्टा छमीछा के जून, चूवै काशी मनिका घाट।

1, रुकी, 2. माँ, 3. तैयार होता है, 4. संभालकर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाय जाय उतरत रकैबी से बाय, ओठे दू चार पण्डा बाय जूटल।
आपुस में देलेन झगड़ा मचाय "ई हमार पहले क हवँऽ जजमान।
इनके हमहीं काम करऽब, तब फेर बोलत सुबा बाय चनरइता।
सानत न होबा तूं लोग पण्डा, हमहन सबहीं के हई जजमान।
सब कोई मिलकर काम करबा, दान पुन न देबय सब के चुकाय।"
चनरइता दूनों घोड़ा बाय देखत, देवाइच चौंक चन्नन बाय पुरावत।
सगरों लेलेस समान जुटवाय, मतारी का पिण्डा करत बाय परात।
सगरो करलेस सोरहो धाम, तब फेर दान-पुन्न बाय कऽरत
पानी न पत्तर दूनों पीय, मुंहें में कूंचत मघइया बाय पान।
अपने-अपने घोड़न का रकैबी थाम-थाम भयनऽ बाग तैयार।
तब फेर बोलत भाई देवाइच, "भइया न सुनवे चनरइता।
कहना मनबे एठे हमार, का जनी कैसे-कैसे घरे से छुट्टी बाई पवले

दोनों का सुरावल के लिए प्रस्थान

एहर एक गाँव परल सुरावल बाय पाल, अभी बऽचल खर्चा पल्ले में बाय।
चल कर देखा बमरी नंना का दरबार, डाक-डाक दूनों पीठी पर भयल असवार।
आपन न घोड़ा के लगवले, आगे ठनकल मऽरा बाय घोड़।
पीछे से चौरी बछेड़ी बाय ठनकत, नीचे न छोड़ले बाय भुँइंधरती।
ऊपर छोड़ देले बाय असमान, बादल रेख बाय भिनउवां।
दूनों के हवा खियावल चल जाय, घन्टा छमीछा के ममिला।
जायकर सम्भू सगरे के भीट, दूनों न घोड़ा बाय चूवल।
जैसे बरत सुरुजवा का जोति, लखय न परजा सुरहुल का।
हलचल देलेन गायें में मचाय, जायकर बमरी राजा के दरबार।

राज बमरी आतंकित

"राजा तूहें बली एक रहता, सगरे पर दूइ मुसाफिर टिक गयनऽ।
घोड़ा बरत लिलार में बाय, उगतय सुरूज ताक जाला[1]।
घोड़ा ओरी कैसों ताकल नाहीं जाय," तकलेस झंवत राजा बाय बमरी।
आपन ठोंकत ताला तकदीर, "कहाँ का सुबा इहाँ अयनऽ।
बेटबा नंगे पैर से जाय कर परजा के लेबा भेष बदऽल, कहाँ का मुसाफिर अयनऽ।
एकर लेबा पता लगाय," छोटा न लड़का बमरी का।
एक छीन धोती बाय पहिरत, एकदम नाँघ पैर से बाय चऽलल।
जाय कर पहुँचल सगरे पर बाय, जायकर लखय घोड़ा ओन्हन का।

---

1. देख जाता है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सगरों सोना का बाईं सरजाम,[1] कहैं "कहाँ ओतन बाय गोतन।
कहाँ टूट गयल बाय बुनियाद, कहाँ चढ़ाई तूं लोग करला।
सांच देबा सरेखे लगाय," तब फेर बोलत लड़िका बाय चनरइता।

किन्तु बाद में आतिथ्य

"हमहन का गउरा ओतन हवँ गोतन, कठइत कुले के हई नन्दन।
ई फेर धरमी ददा के हवँऽ लड़िका, हम फेर लोरिका दुलरुवा के हई लड़िका।"
तब फेर बोलत राजा का लड़िका, "भैने तोहन ईहाँ काहे टिकला।
एकदम चल अवता किला दरबारे," दूनों न लड़िका बाय ऊठल।
मम्मा के करत बाय प्रनाम, ऊहो आसीरवाद बाय देले।
लियवले जावय किला भण्डार, जायकर बमरी राजा से कहलेन।
बाबिल कहीं का सुवा नाहीं हवंऽ, एक भे धरमी न बहनोई के हवंऽ लड़िका।
एक भे लोरिक बहनोई के हवंऽ लड़िका, दूनों आयल बायँऽ देखय के दरबार।"
जाय कर तबेले घोड़ा बाय बान्हत, दूनों चढ़ जात छत बमरी का।
राजा बैठल गद्दी पर बाय, जाय-जाय नेहुर माँथ बाय नेवावत।
राजा आसीरवाद बाय देत, कुसल न होत बाय भलाई।
पानी पत्तर का होत बाय इन्तजाम, खाना रसोईं बाय होत।
सब कोई खातन पीयत बाय, पानी न पत्तर बाय पियात।
मौज होतय किला भण्डार, तीनी न दिना ऊहाँ बीतल।
चौथे आवत तिलक गँजेड़ीपुर का, राजा जदुनन्दन के घरे से।
राजा बमरी के लड़िका का आवैं, मिलल न खाता बमरी का।
छली बाँचत आँख बिलगाय, ओमें बारह बेरी का काटल बाय सीर।
तेरहें आयल तिलक फुन बाय, बाँचय न आँख बिलगाय।

गँजेड़ीपुर के राजा की लड़की से शादी का प्रस्ताव

बोलल न राजा बाय बमरी, "आगलागो गँजेड़ीपुर पाल।
हम नाहीं सादी करब बेटवा का, एकय बचल बंस बाय हमाऽर।
"तेरहें लिखाल मिरतुक बाय" "राजा न छली बाय जिदियायल।
अब फेरि देलेन मति गँजेड़ी पुर का, तब फेर दूनों लड़िका नाती रऽहल।
दरियाँ कहैं आँख बिलगाय, "नन्ना न सुनबा मोर बमरी।
कहना माना एठिन हमार, मम्मा का तिलक तूं चढ़ैबा।
काजनी केहर सूरुज उदय भयनऽ, आय गयली सुरावल पाल।
नन्ना कोनों हरजा जीन माना, लोहा देखब गँजेड़ीपर पाल।"

---

1. सामान।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकिन, नाहीं छोड़ हाँ नाहीं कऽरय, दूनों लड़िका हठ पर गयनऽ।
बोलत न राजा बाय बमरी, "जादा सउख तोहन के होय।
आपन लेबा तिलक चढ़वाय, जैसे गँउरा घर तूँ लोग जानऽ।
वैसे घर सुरावल में बाय," दूनों न भाई कचहरी से उतरय।
आपुस में करत मनसौदा, जाय कर कहत बाय लरमें का।
"पण्डित न सुनबा तूं नाऊ, लेकर लौटल तिलक गँजेड़ीपुर जावा।
जायकर कहबा राजा जदुनन्दन से, दुई न लड़िका बाय टीकल।
गाँव नगर गउरा ऊ लोग का हवंऽ, ऐसे न ऊ लोग सादी करिहैं।
सुरहुल गाँव लेकर गँजेड़ीपुर दीहैं सड़क बनवाय, पैंड़े में जयठे मोकाम ऊहाँ परी।
दिन-दिन भरे का रस्ता, कह देहा रसद गिरवइहैं समान।
तब फेर तूं लोग तिलक लेकर आया, सादी बाय हमहन के मंजूर।
इतना न कहल नाहीं करिहैं, हमहन के तरफे से बाय जबाब।"
लेकर तीनों मनई बाय लौटल, एक जातय गँजेड़ी पुर पाल।
जाय कर सुबा बैठल बाय जदुनन्दन, सगरों देलेन बात बतियाय।
राजा बाय जौन बमरी, जिदियाय कर पत्ती न फेंक देलेन।
"हम नाहीं करब सादी गँजेड़ीपुर," राजा से फौरन मिल गयल जबाब।
दूई न नाती ओकर आयल, गाँव नगर गउरा बाय गाँव।
ओनहन कहले सनेस एक बाय, "राजा के करे के होई सादी हिम्मत।
एकदम गँजेड़ी से लेकर सुरहुर तक, सँड़क न दीहैं राजा बनवाय।
पैंड़े में दिन-दिन भरे का जई मोकाम परी, सगरो खर्चा दीहैं समान गिरवाय।
तब फेर हमहनों सादी करे चऽलब, इतना न काम नाहीं करवैबा।
ओन्हन का सादी बाय इनकार," इतना न बात बाय कइले।
जदुनन्दन के गयल मने बईठ, चटपट राजा आडर बाय लगवले।
रोकड़ लागत मंजूरा जब बाय, कटत सड़क फुन बाय।
जंगल न झाड़ी बाय कटावत, खालय[1] ऊँचे देलेन समतल करवाय।
पैंड़े में तीनी मोकाम बाय देखावल, तीनी दर टंटू[2] गड़त हवँऽ तमान।
तब फेर तिलक राजा बाय भेजवले, एकदम बमरी किला दरबार।
फेर से तिलक आयल फुन बाय, एकदम राजा बमरी के दरबार।
राजा सड़क बाय बनवले, तूं लोग का बात देलेस पुराय[3]।
अब तिलक बरछा ले चढ़ावऽ, दिन देवा मोकाम तूं डाल।
लेकर तिलकहरु जब बायँऽ, राजा का बरै होत बजार।

---

1. नीचे, 2. टेंट, 3. पूरा कर दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवता छली बाय घूमत, नगर सुरावल बाय पाल।
जाति लेकर परजात, सबके घूमत सोपाड़ी जब बाय।
दिन मोकाम बद गऽयल, तिलके के समय गयल नचिकाय।
जाजिम बिछावल बाय निकलत, जाति जूटत परजात ऊहाँ।
जोरकर बरहो अमल बाय निकालत, पानी पत्तर ऊ लोग पीय।
जेकर जौन अत्मा बाय माँगत, जोर कर खात अमल सब बायँऽ।
बाजा न जूट गयनऽ बजगीर,[1] किला में चढ़ल करहिया[2] फुन बाय।

तिलक तथा खान-पान

पूड़ी ओहर बाय छनायल, एहर नाउ बाभन बाय जूटत।
चौक चन्नन बाय बनावे, तिलके के गयील बेला नगिचाय।
जूटल न मान मेहमान, पण्डित जुटल बाय नाऊ।
चौक देलेन सब कराय, सगरो जुटल समान तिलके का।
जौन न लड़िका बाय देवाइच, चढ़त तिलक बरछा।
तिलक काढ़ गयल बरछा, डटकर खान-खियान बाय होत।
दिना न बार बाय पूछत, तब फेर बोलत राजा बाय बमरी।
"नाती सगरों काम हमसे सपरी, घर के देव न नाहीं पुजइहैं।"
ओतनय दिन बरकाय करके, दस-बारह रोजय का दिन बाय धऽरत।
तीनों ओर आदमी जात, जाति न सुना परजात।
खाय-खाय जातय घरे-घरे चल जाय, दूसर बिहान बाय भऽयल।
तब फेर बोलल राजा बाय बमरी, "बेटवा न सुनबा मोर झंगुली।
कहना माना एठिन हमार, करबे नहान चौकी पर।
रसोई लेबा तूंहों बनवाय, खाय-पी के करदा तैयारी गउरा के।
मँजरी ले आया बिटिया के बलवाय,[3] आपन देव-मुन आय कर पूजिहैं।"
उठल न लड़िका बाय झँगूली, जायकर करत चौकी पर नहाऽन।
कपड़ा न बदलत बाय छत्री, जाय कर खातय रसोई जब बाय।
हाथी न हौंदा बाय कऽसत, दुवरां पर बाय तैयार।
अनब कसत बाय अनरखी, गोड़वा बीर कसले बाय तमान।
बान्हय न पेटी अजगर का, जेमें नौ मन लोहा अमाय।
साठी न गजे का दुपट्टा, छली बान्हत सिर घुमाय।
जैसे राजा बान्हय बघेल, डिल्ली न साही का बाय जूता।
छत्री चाँपत एँड़ा चढ़ाय, धरत पागी लरमें का।

1. बाजा बजाने वाले, 2. कड़ाही, 3. बुलाकर।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शादी में मँजरी भो सम्मिलित

मूहैं कूंचत मघइया बाय पान, जाय कर सुवा वाय बैठल।
राह लेलेस गउरा का तड़ियाय, राती रेंगय दिन दौड़य।
पैंड़े में मोकाम नाहीं देखाय, बारह न बजे रात।
हाथी जूटल गउरा बाय गाँव, बाजत न घण्टा दुवराँ पर।
पूछत बाय लोरिका का दरबार, अकेलय मँजरी देखा रऽहल।
लड़की गयील ऊहाँ खिसियाय, आधी रात बाय निचलोइया।
बोलत न लड़की महरे का, "कहाँ ओतन बाय गोतन।
गउरा में टूट गयल बाय बुनियाद, "बमरी न राजा का हइँ लड़िका।
मँजरी आनय बहिन के बाई" वह दिन खोलत बेंवड़ा दुवरा का।
दुवरा पर देलेस हाथी बन्हाय, दलाने माचा बाय बिछवले।

(103) **देवाइच की बारात व विवाह**—देवाइच की बारात की पूरी तैयारी कर ली जाती है। बारात प्रस्थान करती है। तीन पड़ाव के पश्चात् वहाँ पहुँचती है। जब बारात गंजेड़ीपुर पहुँचती है तो जदुनन्दन का लड़का जयसिंह उन्हें दुश्मन समझ कर युद्ध के लिए ललकारता है। अन्ततः चनरैता और जयसिंह में लड़ाई होने लगती है। भयानक युद्ध के परिणाम स्वरूप चनरैता जयसिंह का सिर काटकर राजा के महल में फेंक देता है, जिसे देखकर राजा अत्यन्त दुःखी होता है बारात किले पर पहुँचती है। शोक-विह्वल राजा किसी प्रकार लड़की का विवाह भर कर देता है। चनरैता लड़की की विदाई कराता है। गाँव के सब लोग रोने-पीटने लगते हैं। सभी रो-रो कर लड़की की विदाई करते हैं। बारात कुशल-पूर्वक वापस लौट आती है। हूम (हवन) आदि से देवी की विधिवत पूजा की जाती है। हवन की सुगन्ध इन्द्रासन तक जाती है। इन्द्रदेव तथा अन्य देवी-देवता प्रसन्न हो उठते हैं। सब प्रसन्नता पूर्वक रहने लगते हैं। यहीं पूरी गाथा समाप्त हो जाती है।

घड़ से देलन दीपक जलाय, पानी न पत्तर बाय आवत।
जाबकर निहुर करत बाय प्रनाम, मँजरी देतय आसीरबाद बाय।
"भइया आँखों अमर हो जाया, जैसे बाढ़ै पानी गँगले का।
वैसे बाढ़ें आयी तोहार, कहबा न कुसल गउरा का।
कैसन कुसल बाइ सब भलाई," अच्छा न बाय बतावतय।
"भैंने गयल दुनों बायँऽ सुरावल, देवाइच भैंने का सादी।
लागल बाइ गँजेड़ीपुर पाल, यही बदे बाबिल कररे बायँऽ बलाव।"
हूम के सगरों काम सपराइब, घरे के देव-मुन नाहीं पुजइहैं।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चटपट रसोईं बनावें, एकदम ताव से खियवले ।
जायकर सूतत दलाय में बाय, तब तक भोर होत बाय सबेर ।
कौआ पुरबय मचवले बायँऽ रोर, तब तक सुरुज जोति में बायँऽ आयल ।
तब तक लड़िका आय गयल अभोरिका, दुवरां पर बान्हल हाँथी बाय डेखात ।
दलाने में सुबा के सूतल बाय देखल, एकदम भागल मँजरी के पास जाऽय ।
"भइया न सुनबा तूँ हमार, कहना माना एठिन हमार ।
कहाँ कौने सुबा के बाय हाथी, के बीर सूतल दलाने में बाय ।"
तब फेर बोलत लड़की महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नाम ।
"भइया हवँऽ लड़िका बमरी का, ओहन दूनों वहीं बाय गऽयल ।
देवाइच के लागल सादी फुन बाय, वही बदे आनय के आल बायँऽ ऊहों ।
सगरो काम सपरइहैं, घरे के देव-मुन नाहीं पुजिहैं ।"
वह दिन रेंगल लड़िका बाय अभोरिका, तब से ऊठल छली फुन बाय ।
जाय कर अभोरिका माथ बाय नेववले, राजा झँगूली देत बाय आसीरबाद ।
"भैने आँखों अमर हो जैबा, जैसे बाढ़ै पानी गँगले का ।
वैसे बाढ़ै आयी तोहार', जैसे चढ़ै कमानी सरंगी का ।
वैसे चढ़ै भुजा तोहार," दिन भरय मेहमानी बाय होऽत ।
मँजरी जाय घरे में बाय बनवले, सब कोई खातय पीयत बाय ।
ओकरे से भोर भयल सबेरे, पूरुब कौआ देले बाय रोऽर ।
सुरुज रोसनी में बान आयल, मँजरी धन्धा बाय सपरावत ।
जायकर जगती पर करत हवंऽ नहान, कपड़ा धोती बाय बदलवले ।
जलय अच्छत देले चढ़ाय, जाय कर टाटक खिचड़ी बनावत ।
सब कोई खात पीयत बाय, तैयारी सुरावल के बाऽय ।
जोर कर खर्चा बाय बान्हत, अभोरिका के ताली-चाभी बाय देत ।
सगरों घरे-दुवार बाय सरेखत, अपने होती तैयारी तब बाऽय ।
रेंगल न लड़िका बाय अभोरिका, जूटल देबी दुर्गा के धाम ।
जाय कर खोलत सिवल्ला दुर्गा का, जायकर सुमिरत देबी बाय दुर्गा ।
जेकरे आदि दिन का पुजमान, एठे जानऽ सक्ती तोहार ।
तनी देखीं जोर गँजेड़ीपुर का, भइया जानऽ सक्ती तोहार ।
अभोरिका घरे दुवार बाय देखात, भाई बहिन बैठत हाँथी पर बाय ।
राह ले ले पच्छिम तड़ियाय, राती रेंगल दिनै दोड़य ।
पैंड़े में कहीं मोकाम बाय देखात, तीनी न चार रोज रेऽले ।
अब जूट गयल किला बमरी का, उतर मँजरी जब गयिल ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जायकर हलल किला बमरी के, सबसे मेंट करत बाय अँकवार।
जाय कर धरय चरन बमरी का, छत्री देतय आसीरबाद बाय।
"बिटिया आँखों अमर हो जाय, नाती का देली सादी अझुराय[1]।
बड़ा बढ़ियाँ जोग से आय गयलू, मिलजुल कर लेबा सादी अपन कऽर।"
कुसल न होत बाय भलाई, पानी पत्तर का होत बाय इन्तजाम।
रसोईं किला में बऽनत, सगरों खातय परानी बाय।
मौज करत सुरावल बाय गाँव, राम न राम गुन गावै के ठाकुर।
देबिया न सुमिरनी भगवती, दुर्गा जानऽ सक्ती तोहार।
जितना किर्तन गयल सतजुगी, जोर कर देबा कड़ी बैठाय।
पहुँचल धिया महरे का, जेकर दावन मँजरी बाय नाम।
ऊहाँ कुरय बद गयल मोकाम, दिन गयल बखत नगिचाय।
घूमत न नेवता छली का, राज नगर सुरावल बाय पाल।
घूमल न नेवता छत्री का, जाति लेकर सगरों परजात।
अब बद देले मोकाम[2] बाय, जाजिम गिरत दुवराँ पर बाय।
जौन त पूत लोरिका का, जेकर दूलर चनरइता बाय नाम।

बारात का गँजेरीपुर के लिए प्रस्थान

घूमल न देस में बाय, राजा नगर सुरावल बाय पाऽल।
जौन तरह के पावैं बाजा, सगरों नेवतत बाजा जब बाय।
पूड़ी न छनत हवँ पकवान, किला पर जमा बरात होती बाय।
रात में खानय-खियान बाय होत, भोरे होतय लोग तैयार बाय।
पलकी जूठल बाय कँहार, बाजा का कौनों टोटल[3] नाहीं बाय देखात।
सजल बरात देवाइच का, राजा बमरी किला दरबार।
एकदम कइले पयाम ऊहाँ से बाय, अहिरे का डहरत बतात फुन बाय।
एकदम रेंगल गँगेड़ीपुर जाय, पैंड़े में तीनों मोकाम बाय देखात।
दिन भर डहरत अहिरे का, संझा जूटल पड़ाव पर बाय।
झार कर जाजिम बिछावत, सगरों बात समाम ओठे बाय।
रसद बँटत समान फुन बाय, सगरों खानय-पीयन बाय कऽरत।
रात सूतल बरात पड़ाये पर बाय, फेर से होतय भोर बाय सबेर।
पूरुब कोआँ मचवले बाय रोर, तब फेर उठल बरात अहिरे का।
सब लोग दिसा बाय मैदान, कुल्ला गलाली बाय कऽरत।

---

1. फँस गया, उलझ गया, 2. पड़ाव, 3. योग (अंग्रेजी)।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नस्ता बनकर होतय बाय तैयार, सगरें नस्ता बरात बाय कऽरत।
सबलोग कूँचत मघइमा बाय पान, फेर से डहरल बरात अहिरे का।
बाजा बाजत जाला उदमत, दिन भर फेर बरात बाय रेंगल।
संझा दूसरे पड़ाए पर जूट जाय, ऊहाँ रसद मिलत बाय समान।
झार कर देलेन समान बिछवाय, टीकल बरात अहिरे का।
ओठे खानय-खियाद बाय होत, रात भर बरात मौज बाय कऽरत।
फेर से भयल भोर बाय सबेर, पूरुब काँआ मचवले बाय रोर।
होतय न परख बाय ओंजरार,[1] अहिरे का भागल बरात फुन बाय।
दिसा न होत बाय मैदान, कला करत गलाली बाय।
फेरसे नस्ता भयल बाय तैयार, अहिरे के करत बरात नस्ता पानी[2]।
पानप न बीरा बाय कूँचत, फेर में साजत समान बाय सपरत।
एकदम डहरल[3] बरात फुन बाय, उदमत बाजत बाजा बाय अनहद।
जायकर तीसरे पड़ाये पर जूटल, जायकर जाजिम बाय बीछत।
सबके बँऽटत रसद समान बाय, खात-पियत सब बाय।
मौज करत पैंड़े में बाय, तब तक भोर होत बाय बिहान।
पूरुब काँआ मचवले बाय रोर, सूरज जोसी में बाय आवत।
अहिरे का ऊठत बरात जब बाय, दिसा होत बाय मैदान।
कूला करत बाय गलाली, नस्ता होत बाय तैयारी।
नस्ता पानी सब करय, सगरों कूँचत मघइमा बाय पान।
फेर से डहरत बरात जब बाय, तब फेर देखय हाल सुरहुल का।
जौन न सुबा बाय चनरइता, मम्मा बमरी के लड़िका जौन बाय।
दूनों न होत बाय तैयार, अनव कसत बाय अनरखी।
बान्हत न पेटी अजगर का, जेमें साही बेड़ हो जाय।
साठी न गजे का दुपट्टा, छली बान्हत सिर बाय घुमाय।
जैसे राजा बान्हें बघेल, डिल्ली न साही का जूता।
राजा चाँपत एँड़ा चढ़ाय, चौरी कसत बछेंरी जब बाय।
चनरइता कसत हवंऽ समान, खोलत पेटी गँजड़े का।
के फेर अनव पहिरत बाय अनरखी, गोड़वा गुलबदन तमान।
बान्ह न पेटी अजगर का, जेमें गोली ठहक खा जाय।
कसय न जिरही लोहन का, जेमें नौ मन लोहा अमाय।
साठी न गजे का दुपट्टा, अहीर बान्हत सिर घुमाय।

1. प्रातः, 2. नास्तापानी, 3. चलती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जैसे राजा बान्हे बघेल, तरकुस न गूंजे का पनहीं।
अब बीर चाँपत एँड़ा चढ़ाय, धरय पाँगी लरमें का।
जेमे मेघय डमरू घहराय, कसत कका बाय मङरा।
जेकर सोने आँखर सोने पाँखर, सोने का बकसर जिरही बाय लगाम।
भीरत न गद्दी सोने का, घोड़ा का कसत पेटी समान।
बान्हत न घूघुर सोने का, जौन साठी कोस में सुनाय।
देत न टिकुला माथे पर, घोड़ा बरत सुरुजवा का जोति।
बाएँ मियान बाय दबले, दहिने बिजुल गयिल तलवार।
दहिने बिजुल घूम गयिल तलवार, डाक-डाक दोनों होत बाय असवार।
आसन घोड़ा पर लगवले, ठनकत मङरा बाय घोड़।
पीछे ठनकत बछेरी बाय चौरी, दोनों न बीर बाय पानयँ कूँचत।
नीचे न छोड़े भुइंधरती, ऊपर छोड़ देले बाय असमान।
बादल रेख बाय भिनउवाँ, दूनों के हवा खियावत चल जाय।
घण्टा छमीछा के जून, जाय कर चूवत सरहद गँजेड़ीपुर।
दूनों न घोड़ा बाय चूवल, तब तक जौन न राजा जदुनन्दन का लड़िका।
जयसिंह रहल छली ऊ बाय, बत्तीतों समान बीर बाय कसले।

जयसिंह से चनरइता की लड़ाई : आकाश-मार्ग में

ऊपर तरकत घोड़ी पर बाय, पलक ऊपर गयल चनरइता का बाय।
कहय "मम्मा सुनबा तूँ हमार, कहना माना एठे हमार।
तूँ लेकर यहीं घोड़ी रहबा, दुस्मन टहरत सरगे बाय।"
डाककर भयल मँगरा पर असवार, ठनकत न मङरा बाय घोड़ा।
नीचे न छोड़े भुइंधरती, ऊपर छोड़ देले बा असमान।
घोड़ी से ऊपर घोड़ा बाय घूमल, तब फेर बोलत पूत लोरिका।
जेकर दूलर चनरइता बाय नाम, "सङहीं मनबा कहल हमार।
धोखा से मार इहाँ कइला, नाम देला गंजेड़ीपुर चलाय।"
बातय चीतय कइलेन सरवर, राड़ देलेन अकास में मचाय।
जितना घूमल घोड़ा बाय मङरा, उतना जयसिंह छली बाय घूमल।
तब फेर बोलल राजा जयसिंह, "मरबे न मरबे तोयँ अहीर।
जौने तोरे अवार के होई घाव," तब फेर बोलत पूत लोरिके का।
जेकर दूलर चनरइता बाय नाम, "सङहीं आगे घाव नाहीं छोड़ब।
न फेर पीछे रखब छिपाय, जौन आगे अवार देखा हवँड।
खानदान क्रिया बाय अट्ठान," जौन जयसिंह बाय छली।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घोड़ी से चलल पैंतरा पर बाय, मारे न पेटी अहीरे का।
परगठ देबी न दुर्गा बाय पुजमान, घोड़ा ले आवें दहिने काटत।
लटकत तेगा धरती में, धरतिया न रत्ती जाय मुरझाय।
फेरसे घूमल छली जयसिंह, दुसरी मारत अवार सम्हल कर।
मारय न टीका अहीरे का, परगट नाचत देबी पुजमान।
नीचे न ऊपर बाय कइले, तेगा गयल सरगे में मुरचाय[1]।
तब फेर हहरल छली बाय जयसिंह, आपन ठोंकत ताला तकदीर।
धन-धन न पानी धरती का, जहाँ मरद फूटल बाय भगवान।
फेर में घूमत जयसिंह बाय, मारत न पोंगी अहिरे का।
घोड़ा ऊड़ल ऊपर बाय जात, नीचे न गिरल बाय तेगा।
धरती में रत्ती में रत्ती बाय छितराय[2], वह दिन तड़पत पूत लोरिका का।
जेकर दूलर चनरइता बाय नाम, ओसर न ओसर नरियायल[3]।
"सङ्ही पक्का लोहा तोर अंगेजल, अब कचलोइया थमबा तूं हमार।"
खींचत खाँड़ बाय दोगाहै, जेकर चारी अंगुल बाहर भऽयल।
सरगे पड़त गयल अकास, नीचे मारत बाय दवनहरा।

जयसिंह की पराजय : विवाह तथा द्वारचार

ऊपर सरगे लवर बाय गुंगुवात, घूमल न पलक छली का।
खाँड़ गिरल गरदने पर बाय, मार घोड़ी लेलेस बछेंड़ी।
सगरों गिरल धरती में भहराय, सङ्घे घोड़ा लेकर नीचे जातय।
धरय न सिर छली का, जयसिंह के फेंकत किला पर बाय।
जहाँ लागल कचहरी जदुनन्दन का, लड़िका का गिरत सिर जब बाय।
छली सोझय माथ बाय पटकत, ब्याकुल भयल किला भण्डार।
तब फेर उदमत बरात बाय जूटल, एकदम नगर गँजेड़ीपुर पाल।
बाजा बाजत त बाय उदमत, लेकर जूटल दुवारे पर बाय।
दुवरा बरात बाय लगवले, अहीर तड़पत किला पर बाय।
"ससुर न सुनवा जदुनन्दन, कहना माना एठिन हमार।
जलदी न सरऊ सादी हमार करबा, साइत बखत गयिल नगिचाय।
तबय खरीयत एठे देखा बाय," इतना न बात बाय कऽहत।
राजा रोवत रतन के आँसु, रोय-रोय मोकाम बाय डालत।
आडर देलेस नोकर लगाय, माड़ो न थुंहीं बाय गड़त।

---

1. मुर्चालग गया, 2. बिखर गया, 3. चिल्लाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लड़की का तेल हरदी उठ जाय, बराती न आजी न भाजी बाय खात।
पानी पत्तर का होत बाय इन्तजाम, बखत न साइत लगिचाइल।
नाऊ न बाभन बाय जूटल, बियाह बैठत ढंग से बाय।
रोय-रोय पूजत पाँव अहिरे का, सादी बियाह बाय होत।
छली रोय-रोय पाँव बाय पूजत, खरचा मिलत बराती के बाय।
रात भर खातय पीयत बाय अजादी, एकदम भोर होत बाय बिहान।
पुरुब कौआ मचवले बायँऽ रोर, सुरुज जोति में बायँऽ आयल।
सवा लाख ऊठल बरात अहिरे का, दिसा न होत बाय मैदान।
कुल्ला न करत बाय गलाली, नस्ता भयल बायँऽ तैयार।
सगरों नस्ता बरात बाय कऽरत, जाति लेकर परजात।
कहाँर बाजावाला सब जेकर, फेर से बँटत बीरा बाय पान।
सगरों कूँचत बरात जब बाय, रेंगल न मरद चनरइता।
जायकर चढ़ल किला जदुनन्दन का, ओठे कहत आँख बिलगाय।
"ससुर न सुनबा जदुनन्दन, राजा देबा बिदाई हमार।"
बहुत न झंझट बाय मचवले, राजा जिदय छोड़ावै के लागल बाय।
रोय-रोय आडर हुकुम बाय लगावत, एहर लड़िका जूझ गयल हमार।
दूसरे घरे से लड़की बाय निकालत, रोय गाय जौन न लेत देत बने।
दइजा देतय दहेज सब बाय, रोवय लड़की राजा जदुनन्दन का।
सगरों रोवत गँजेड़ीपुर पाल, अटइल रोवै बन बटइल।
कुइयाँ घुरुक रोये पनिहारी, रोय-रोय देतय बिदाई जब बाय।
डाड़ी न डोला में बैठल, पलकी उठन दुवारे पर बाय।
डहरल बरात अहीरे का, सवा लाख रेंगल दुवरीं से बाय।
रोवन न पीटन[1] पटाय, हुकुम आइल पलगी के बाय।
दूनों न भाई बाय चलत, हल जालय डेहुँड़ी[2] जदुनन्दन का।
रानी न बैठल बाई पास, सोने न धारी के किनारी।
सोने का देती करधन जब बाईं, माथे चन्दन चिटकावें।
दूनों के देले हांथे में टेकाय, निहुर-निहुर माथ बाय नेवावत।
दूनों के देत बाय आसीरबाद, आँखों अमर हो जैबा।
"जैसे बाढ़ै पानी गंगले का, वैसे बाढ़ै आयी तोहार।"
जाय कर चढ़ै छत जदुनन्दन का राजा बैठल छली जब बाय।
जाय कर निहुर-निहुर माथ बाय नेवावत, राजा रोय-रोय आसीरबाद बाय।

---

1. रोता-पीटना 2. घर का द्वार।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बारात वापस

कुछ देतय बकसीस में बाय, दूनों न बीर बाय हहरल।
राह धइले सुरावल के बाय, धुरुखा खेह बरात रेंगे।
पैड़े में कूरो मोकाम नाहीं देखाय, राती रेंगय दिन दौड़य।
दूसरे रोज जूट जाय, जायकर जूटत सुरावल बाय पाल।
जायकर जूटत देवथाने[1] बाय, ऊहाँ हूमयँ सकला बाय होत।
बरात गयील किला नगिचाय, देवाइच पलकी में बैठत।
परछन होती दुवारे पर बाय, दूनों न दल बाय रेंगल।
आगे-आगे रेंगल सुबा बाय देवाइच, ओकरे पीछे लिरिया ओकर बाय।
जेकर घरय दुवार छेंके के बाय, ओकर लेन-देन बाय कऽरत।
जाय कर कोहबरे बाय जूटत, ओठे हूमों सकला बाय होत।
माथे चाउर-चन्दन बाय चिटकउले, छूटल गाँठ अहीरे का।
सगरों होतय पलगी प्रनाम, दुवारे पर गिरत जाजिम बाय।
जाति बैठल परजात, पानी पत्तर के होत वाय इन्तजाम।
सबका रोकड़ मजूरी फरियावे, डटकर खाने-खियान बाय होत।
खाय पीय सन्तुल बरात बाय होत, सगरों कूँचत मघइया बाय पान।
तब फेर छुट्टी राजा से माँगत, धीरे-धीरे अपने घरे जाय दुवार।
जितना न लोग बराते का, सगरों घरे दुयारे चल जाय।
अब बीत गयल मोकाम देवाइच का, राज नगर सुरावल बाय पाल।
बाकी बच गयल परानी घरवां का, एकदम राजा बमरी के दरबार।
खात पीयत करै मेहमानी, मौज करत सुरावल बाय पाल।
राम न राम गुन गावै के ठाकुर...देबिया न सुमिरनी भगवती।
दुर्गा जानऽ शक्ति तोहार, जितना कीर्तन गयल सतजुगी।
जोड़ कर देबा कड़ी बैठाय, पलकी खोजत बाय कँहार।

मंजरी गउरा वापस

डाड़ी पतोहू का फँनवले, मंजरी करवलेस पयान गंउरा का।
चारी सपरत चल जाय, राजा बमरी किजा से दरबार।
घोड़ा न लेलेस बछेंड़ा, राह धइले गउरा में जाय
राती रेगें दिन दौड़य, पैड़ें में कुरो मोकाम नाहीं देखात।
जाय कर जुटल डाड़ी गंउरा में, एकदम देवी दुर्गा के धाम।

---

1. देवस्थान।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभोरिका-मंजरी दोनों का सुख पूर्वक गउरा में निवास

अभोरिका करत चौकी पर नहान, कुण्डली में करत आगी तैयार।
कढ़ैं न घीव बखरी में, एकदम करत हुमाद जब बाय।
पूजा न धजा बाय जूटत, देखे देबी दुर्गा धाम।
जौन सिवल्सा दुर्गा का, जेकर अमर धजा फहराय।
दुवराँ में लागल खाम्हियां सोने का, जेमे सुगना चिड़िया छापल।
मुख-मुख बोलत चिड़िया बाईं, डट कर करत पूजा दुर्गा का।
देबी दुर्गाका दरबार, खस्सी भेड़ा का कौनय सही।
लेंहड़ काटत भैंसन का बाय, डट कर करत पूजा दुर्गा का।
एकदम देबी दुर्गा का धाम, मारत हुमाद कुण्डली में बाय।
जेकर बास इन्द्रासन में जाय, इन्दर न लोक खुसी भऽयल।
दुआ देत बरदानी ओके बाय, केन्हें मिरतुक लोक में जनमल।
बास देलेन इन्द्रासन में औजाय, टीकत न डाड़ी फुन बाय।
उठल न डाँड़ी दुवरां से, जायकर बखरी में देलेन भितराय।
मौज करत बखरी में बाय, कहत रहली रामायन।
के ठाकुर भजली नाम हो तोहार, देबी न सुमिरल भगवती।
दुरगा जानऽ सक्ति तोहार, जितना गयल कीर्तन सतजुगी।
जोड़ कर देबा कड़ी बैठाय, एको न कड़ी भूल जाई।
फेर से छोड़य नाम तोहार, ठाकुर भजली नामहो तोहार।

नूरे केंवर की गाथा समाप्त

विशेष—लोरिक की गाथा समाप्त होते उसके वौर पुत्रों की गाथाएँ क्रमशः आरम्भ हो जाती हैं। वे भी उसी प्रकार वीरता दिखाते तथा पितृऋण से मुक्त होते हैं। सम्पूर्ण गाथा में अस्तित्व के लिए संघर्ष किया गया है, किन्तु इन सभी संघर्षों का स्वत्व रक्षा का संकुचित दृष्टिकोण ही नहीं रहा है, अपितु उनके साथ स्वाभिमान रक्षा, जन सामान्य के प्रति अपमान,अन्याय अत्याचार का विरोध, स्त्री-बाल-गो-रक्षा का संकल्प भी रहा है। एक भी विवाह बिना संघर्ष के सम्पन्न नहीं हुआ है। इसका यह मतलब हुआ कि उन दिनों शक्ति की दी सर्वत्र पूजा होती रही है लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि शक्ति का सदा दुरुपयोग ही होता रहा हो। लोरिक ने स्त्री-रक्षा के लिए संघर्ष किया तो उसके पुत्रों ने पिता के ऊपर हुए अन्याय का बदला चुकाया। जो क्षत्रिय धर्म के अनुकूल था।

समीक्षात्मक टिप्पणी—अभोरिका द्वारा चनवां का उद्धार कर गउरा वापस लाया जाना, पुनः काशी जाकर पितरों को पिण्डदान करना, आकाश मार्ग से जाते

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभोरिका को सुगनापुर की रानी द्वारा जादू करके मार गिराना, पुनर्जीवित होकर सुगनापुर की लड़की से विवाह करना, फिर क्रमशः धरमी और पिता लोरिक का उद्धार करके लक्ष्य को प्राप्त करना अभोरिका के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ हैं। कथा का यह विस्तार तथा क्रमबद्ध होना एक बड़ी बात है जिसका निर्वाह भी बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रस्तुत पाठ की सम्पूर्ण कथा प्राप्त अन्य सभी संस्करणों, कथा-रूपों से बड़ी सुरुचिपूर्ण, प्रामाणिक, समग्र तथा संतुलित है। अन्य प्राप्त सभी कथाओं से बड़ी भी है। मिर्जापुर के अंचल से संकलित होने के कारण भी इसकी प्रामाणिकता में सन्देह नहीं रह जाता। अतः कहा जा सकता है कि मँजरी तथा लोरिक की जन्म तथा कर्मभूमि मिर्जापुर से संकलित यही कथा अधिक प्रामाणिक तथा महत्व पूर्ण है। इस कथा से लोक-जीवन एवं संस्कृति के अनेक तथ्य प्रकाश में आते हैं जो अभी तक अनुद्घाटित रहे हैं।

अन्य गायकों के आरम्भिक अंश

सारांश—गोपीचंद का पाठ आरम्भिक अंश—अगोरी में मोलागत नाम का एक राजा रहता था। उसके राज्य में महरा नाम का एक अहीर उसी के समान धनी था। एक दिन राजा की इच्छा जुआ खेलने की हुई। उसने एक सिपाही से महरा के पास जुआ खेलने के लिए पान का बीड़ा भेजा। महरा की इच्छा जुआ खेलने की न थी, किन्तु राजा के हठ करने पर उसे खेलना पड़ा और सब कुछ जीत लिया। राजा भिखारी बन कर जब दूर देश जाने लगा तो मार्ग में ब्राह्मण-वेश में ब्रह्मा जी ने प्रकट होकर कहा "किसी से कुछ कर्ज लेकर महरा से पुनः जुआ खेलो, इस बार बिजय होगी।" राजा ने ऐसा ही किया और पुनः अपनी सारी सम्पत्ति तो वापस जीत ही ली महरिन की कोख भी जीत लिया। शर्त के अनुसार अब महरा को यदि लड़कियाँ पैदा होंगी तो राजा उन्हें अपने रनिवास में ले लेगा और यदि लड़के पैदा होंगे तो वे घोड़ा की सईसी करेंगे।

महरा को सोरही नाम की पहली लड़की पैदा हुई, राजा उसे लियवा गया, दूसरी लड़की जब मँजरी का जन्म हुआ तो वह देवी स्वरूपा थी। उसके जन्मते प्रशवा गृह जगमगा उठा, सवा प्रहर तक स्वर्ण-वृष्टि होती रही, और महरा का सारा घर सोने से भर गया। नाल-छेदन के लिए नोना को सादर बुलाया गया। नोना ने कहा "मेरे लिए सोने की पालकी और सोने का हँसिया आयेगा तो चलूँगी, अन्यथा नहीं," महरिन ने ऐसा ही किया नोना को लाने के लिए सोने की पालकी और नाल-छेदने के लिए सोने का हसिया भिजवा दिया। नोना उसे प्राप्त कर नाल छेदने आ गयी। जब वह नाल काट कर वापस हो रही थी तो राजा की दृष्टि उस पर पड़ी। उसने

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चार सिपाही भेजकर उसे बुलवाया। नोना ने सारा हाल बयान कर दिया। राजा हर्षित हुआ और थोड़े ही दिन बाद उसे लियवा लाने के लिए पाल्की-कहार भेज दिया। लेकिन महरिन ने कहा अभी ले जा कर क्या करेंगे, थोड़ा बड़ी हो जाने दीजिए। राजा फिलहाल मान तो गया, किन्तु थोड़े ही दिन बाद पुनः पालकी कहांर लेकर आ धमका। महरिन ने चालाकी से उत्तर दिया कि अभी ले जाने से कोई लाभ नहीं होगा। मां का दूध पीने के अतिरिक्त यदि वह किसी और का दूध पीयेगी तो उसके शरीर का विकास ठीक से नहीं हो पायेगा।" यह सुनकर राजा वापस चला गया। इधर लड़की नित्य चन्द्रमा की तरह बढ़ने लगी और पन्द्रह दिनों में भी फूट पाक कर तैयार हो गई। तब महरिन ने उसके लिए योग्य वर ढूँढने के लिए कहा।

गोपीचन्द कलवार, गोठानी, मिरजापुर, ने 'लोरिकायन' का आरम्भ इस प्रकार किया था

आजु कहैं नगरिया न गइली पूऽरबी,
आजु कहैं एकओ[1] न जोड़वा नाहीं एऽ मीऽ लय।
मिलत सौंकड़वा न लखए पऽति,
आजु कहैं हाथइ न जोड़िया न करें सऽलाऽऽम।
आजु कहैं फेरिया न पुरबिया देंय दुऽवारे से,
आजु कहैं घूमिय सहरवा कूलि न पूरबी।
आजु कहैं लौटि अगोरिया न चलि ए जाऽय,
आजु कहैं करत सलमिया करत बाय न पुरबी।
आजु कहैं बोलत पुरबिया न बाऽय,
आजु कहैं सुनऽन रजवा न महएऽराऽऽज।
बारह न पलिया घुमली अऽगोरी,
आजु कहैं एकव न करोड़पतिया[2]।
हाथ जोड़ि कइलेन सलमियां न बानऽऽ,
आजु कहैं कइले न बानऽ अऽसामी।
राजा जोग नाहीं न जुववा हमने खेलब,
एकव नाहीं मिलनऽ एकब अऽसामी।
आजु लौटि न अइनऽ बिड़वा तोहाऽऽर,
आजु कहैं सोचत न मनवाँऽ मनऽ एऽ राऽजा।
आजु कहैं बोलत न रजवा बाय मोऽऽलागत,
आजु कहैं सुनऽ पुरबिया फिन एऽ सिपाही।

---

1. एक भी, 2. करोड़पति।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आजु कहैं एकय अगोरिया में बसल बाऽय,
जेकर नामइ महरवा न दयीव एऽबाऽय।
आजु कहैं ओही न घरवा बीड़ा ले जाऽइ,
आजु कहैं महरे न हथवां बीड़ा टेकाऽऽवऽ।
आजु कहैं देहा न बीड़वा फिर टेकाऽय,
पुरववा से देहा बलउवा फिर ए कऽहीं।
रजवा का बालय न बलउवा न जलदी से,
आजु कहैं लौटि पुरबिया फिर एऽजाऽई।
आजु कहैं लौटि महरवा पहले जाऽइ,
आजु कहैं पूछति महरिनिया फिर एऽ बाऽऽइ।
आजु कहैं कइसन खबरिया राजा ए कऽनी,
आजु कहैं बोलत महरवा न फेरि एऽ बाऽऽइ।
आजु कहैं आयल पुरबिया न फिरि ए रऽहल,
आजु कहैं देतय न बीड़वा पनवांऽ कइ।
आजु कहैं टेकी न बिड़वा जब ए लेऽली,
आजु कहैं घरवा से कइलेन बलउवा हऽमाऽऽर।
राजा कनी बहुत न बलउवा जलऽदी से,
महरा न सोचत न मनवां मन एऽ बाऽइ।
राजा कइसन बलउवा मोर एऽ कइलेऽऽन,
आज कहैं कउनो कसुरवा[1] नाहीं एऽ कइऽली।
आजु कहैं कवन चुगुलवा लागि ए गऽयल,
अइसन न रजवा करय बऽलाव।
आजु कहैं रेंगी महरवा फेरि ए देइ,
आजु कहैं पहुँची अगोरिया फेरि एऽ जाऽऽइ।
आजु कहैं लागल न कचहरिया रजवा कइ,
आजु कहैं हाथय न जोरिया फेरि एऽ माऽऽहर।
आजु कहैं एकय न गोड़वा ठड़ा ए बाऽइ,
आजु कहैं करत सलमिया फेरि ए बाऽइ।
आजु कहैं देतय राजा असिसवा न बाऽइ,
आजु कहैं जीवहु महरवा लाख ए बऽऽरीस।
आजु कहैं आइब बैठकवा में फेरि ए बाऽइ,

1. गलती।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आजु कहैं ठाढ़ महरवा फेरि ए बाऽइ।
आजु कहैं कवन कसुरवा राजा ए कऽईली,
जउने से अइसन बलउवा मोर न होऽइ।
आजु कहैं कउनवँ कसुरवा[1] नाहीं ए कऽइले,
महर आइ न कचहरिया बइठिए जाऽइ।
आजु कहैं थोड़य न देरिया केनी ए बाऽत,
आजु कहैं गइनी कचहरिया कुलिए ऊऽठि।
आजु कहैं बची न रजवा न गइनऽ माहर,
आजु कहैं बोलत महरवा फेरि ए बाऽय।
आजु कहैं हमहूँ के छुटिया फेरि एऽदाऽ
आजू कहैं बोलत न रजवा बाय मोऽऽलागत।
माहर तोहार न छुटिया नाहीं ए बाऽइ,
आजु कहैं तोहरे न सङघवाँ जुवा खेऽलब।
आजु कहैं हाथय न जोरिया करइ सलाऽऽम,
आजु कहैं तोहरे न सङ्घवाँ नाही एँ खेऽलब।
आजु कहैं बरवा राजा करय हऽऽठ,
आजु कहैं सुनहु महरवा फिरि ए आजु।
आजु कहैं तोहरे न सङ्घवाँ जूवा ए खेलब जरुऽर।
तोहार नाहीं ए धनवां लेब दौऽलत।
तोहार नाहीं जीतब मउ ए रेऽसी,
नाहीं हम जुअवा त खेलब जरुऽर।
आजु कहैं एतक[2] न बतिया दयिव ए होऽबे,
कहैं कुसय सथरिया देंय मँगाऽइ।
आजु कहै बइठिय न रजवा गदियन पर,
कहैं छाँकत कउड़िया राजा ए बाऽइ।
आजु कहैं पुरुब न मुखवा बैठल ए राजा,
आजु कहैं पच्छिम न मुखवा बइठल ग्वाल।
आजु कहैं बीचइ कउड़िया फिरि ए होऽइ,
आजु कहैं छाँकत कउड़िया राजा मोऽलागत।
आजु कहैं जीतत महरवा फिरि ए बाऽइ,
आजु कहैं रखत न दनवाँ बाड़इ ए राऽजा।

---

1. गलती, 2. इतना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आजु कहैं जेतनी मउरेसिया न राजा ए कऽनी,
कहैं दूसर न दनवाँ फेरि ए छाँकय।
आजु कहैं जेतनी अगोरिया क बाइ जमीन,
ओतना रखीय न दनवाँ बायँ ए राऽऽजा।
आजु कहैं जीतत महरवा फेरि ए बाऽऽइ,
आजु कहैं तीसर न दनवाँ फेरि ए छाँऽकय।
आजु कहैं जेतनी अगोरिया क गारद ए पलटन,
आजु कहैं गोरय-तिलँगवा क पलटन।
आजु कहैं छूरी न फँसिया जेहल ए हाथ,
तवन रखिय न दनवा फेरि ए देऽऽई।
आजु कहैं जीतिय महरवा फेरि ए जाइ,
आजु कहैं चउथा न दनवाँ फेरि ए छाँकय।
आजु कहैं जेतनी अगोरिया क सोना ए चाँदी,
जेतनी रहल असबबवा राजा ए कऽनी।
ओतनी रखीय न दनवाँ फेरि ए देइ,
आजु कहैं जीतिय महरवा फेरि ए जाऽइ।
आजु कहैं पचयें न दनवाँ फेरि ए छाँकय,
आजु कहैं जवन अगोरिया क रहइ ए कीला।
राजा देहलेन दनवाँ फेरि ए राखि,
आजु कहैं जीतिय महरवा कुल ए जाऽइ।
आजु कहैं उतर रजवा गदीयन से,
आजु कहैं नँगे पयर[1] बाय चलि ए देऽइ।
आजु कहैं पुरुब न ओरवाँ से एकय पँडित,
कहैं पच्छिम न ओरवाँ से जात ए राऽजा।
आजु कहैं बीचइ रस्तवा भेंट ए होइ,
आजु कहैं जीरइ खेतरिया[2] में भेंट ए भऽइल।
आजु कहैं करत पण्डितवा न बाय सलाम,
आजु कहैं कवन अफतिया[3] राजा ए आऽइल।
आजु कहैं हमय सरेख न देता लगाय,
आजु कहैं तोहरो करजवा करि ए आऽइत।

---

1. पाँव, 2. स्थान का नाम, 3. आफत।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आजु कहैं बोलत न रजवा महएराऽज,
आजु कहैं जउने डगरिया पण्डित ए धइले आऽवत ।
तउने डगरिया धइले न जाइ,
का करबा हमरे कुसलवा तूँ पूँछ ।
आजु कहैं बोलत पंडितवा फेरि ए बायँ,
आज जउँ देबा सरेखवा हम्में लगाऽय ।
तोहार करिय करजवा हम ए डाऽरब,
आजु कहैं एठिन परिगइलेन पंडित ।
आजु कहैं बोलत न रजवा महएऽराज,
आजु कहैं कइली न रजिया हम अऽमोछ ।
आजु कहैं हारी अगोरिया कुल ए गइली,
आजु कहैं नंगे पयरवा हम्मयँ ए वऽचल ।
जातय पुरुववा के दुइउ ए देस,
आजु कहै बोलत पंडितवा फेरि ए बायँऽ ।
आजु कहैं कहवाँ बइठवला तूं ए राऽजा,
कहवाँ बईठल रहले माऽहर ।
कउने न मुखवा राजा तूं बइठला,
आजु कहैं पुरुब मुखवाँ हम बइठली ।
आजु कहैं कउने न मुखवाँ माहर ए बइठन;
आजु कहै पच्छिम न मुखवा माहर ए बइठल ।
आजु कहैं बीचय कउड़िया दयीव ए होई,
आजु कहैं एकव सोरहिया कउड़ी ए हमाऽऽर ।
आजु कहैं एकक बचनियाँ पंडित ए सूऽनयँ,
आजु कहैं बोलत पंडितवा फेरि ए बाऽइ ।
आजु कहैं सूनऽन रजवा महएराज,
आजु कहैं कुलिव न रजिया देहली हार ।
आजु कहैं हमहूँ अकेलवा बचल ए बाई,
आजु कहैं एकय न दनवाँ लेतय छाँऽट ।
जीतिय न दनवाँ में लेत ए आज,
आजु कहैं करिति सइसिया न घोड़ा क तोहार ।
आजु कहैं बीतिय अगोरिया में दिन ए जात हमार,
आजु कहैं एतना न बतिया राजा ए बोलत ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महरा नाहीं जबबवा कुछु ए देत,
आजु कहैं छाँकत कउड़िया फेरि ए बाइ।
पच्छिम मुँहें बइठल राजा बाइ मोलागत,
पुरुब मुँहे बइठल न गदिया पर बाइ महरा;
आजु कहैं बीचय कउड़िया न होति ए बाइ,
आजु कहैं जीतत कउड़िया राजा ए बाइ।
आजु कहैं जितनी न रजवा क रहनी मउरेसी,
कुलि न राखिय न दनवाँ पर ए जाइ।
आजु कहैं जीतत न रजवा बाय मोलागत,
आजु कहैं दूसर न दनवाँ छाँकि ए देइ।
आजु कहैं जीतत अगोरिया क कुलि ए जमीन,
आजु कहैं तीसर न दनवाँ छाँकि ए देइ।
जितनी गोरी तिलंगा रहइ पलटन,
आजु कहैं गारद पलटनियाँ न देइ ए कूलि।
आजु कहैं जीतत न रजवा बाय मोलागत,
आजु कहैं चउथ न दनवाँ फेरि ए छाँकत।
आजु कहैं जीतत धनवाँ कुलि ए दौलत,
आजु कहैं पँचवें न दनवाँ छाँकि ए देइ।
आजु कहैं जीतत अगोरिया क किला एक बाइ,
आजु कहैं जीतिय न रजवा भइन समतल।
आजु कहै छाँकत कउड़िया राजा न बाइ,
आजु कहैं नाहीं न धनवा नाहीं न दउलत।
नाहीं जितबवा मउएरेसी,[1]
आजु कहैं बोलत न अहीरवा[2] फेरि ए बाइ।
भाई कवन कहबवा तोर ए बाइ,
आजु कहैं सूनऽ महरवा मोरि ए आजु।
आजु कहैं एकय लड़किया बाइ ए सोरही,
आजु कहैं दखिन दनवाँ फेरि ए बाइ।
आजु कहैं रखी अहीरवा फेरि ए देइ,
आजु कहै जीतिय न रजवा गइन मोलागत।
आजु कहैं दूसर न दनवाँ मोरि ए छाँकय,

1. मवेशी, 2. अहीर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आजु कहैं हारत न कोखिया माहर ए बाइ।
आजु कहैं सुन महरवा तूं ए भाइ,
आजु गरभलि महरनिया जउन होइ।
त जनमी लड़किया फेरि ए आजु,
आजु कहैं लेबय किलवा रनिवास।
आजु कउँ जनमी लड़िकया फेरि ए आजु,
घोड़वा क लेबे सइसवा फेरि बनाय।
आजु कहैं देइय महरवा के फेरि छुट्टी,
आजु कहैं पहुँची महरवा घरे जाय।
जब महरा पहुँचन अङ्नवाँ होना,
महरा के आँखी से चूवल अँसुइया होना।
महरिन पूँछे कवन कइला कसुरवा[1] होना,
कि राजा राखे राती दिन किलवा होना।
बोलि उठे महरा होना,
नाहीं कइली कउनों कसुरवा होना।
जबरी राजा खेलय जुववा होना,
नाहीं जीतय धन-दउलतिया हो ना,
जीति लेलैस सोरही लड़किया हो ना।
हार हम मेहर गइली कोखिया हो ना।
लड़की जनमी त बोलाई रनिवसवा हो।
लड़िका जनमी त होई घोड़ा के सइसवा हो ना।
एतनीं बचन सुनि ब्याकुल होई महरनियाँ[2] हो ना।
का बिधि लिखला लिलरवा[3] हो ना।
बीतय लागल दिन बदलवा हो ना।
कि कुछ दिना बितले के बदवा हो ना।
के लेइ गइल सोरही लड़किया हो ना।
जनमत लड़की मंजरिया हो ना।
सवा धरी सवा पहर बरसय सोनवां हो ना।
भेजय महरिन खबरिया हो ना।
जब पावय महरा खबरिया हो ना।
भेज देबे पूरबी सिपहिया हो ना।

---

1. भूल, 2. महरिन, 3. भाग्य।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाय पहुंचय नोना घर चमइनियाँ हो ना ।
बोलि उठय पूरबी सिपहिया हो ना ।
चलऽनऽ नोना महरा के घरवा हो ना ।
बोलि उठे नोना चमइनायाँ हो ना ।
कउने काज से भइया बलउवा हो ना ।
बोलि उठे पूरबी सिपहिया हो ना ।
माहर घरे अनमल लड़किया हो ना ।
वही के छीनय के बा नरवा व्यवरवा हो ना ।
बोलि उठय नोना चमैनियाँ हो ना ।
उहवाँ नाहीं चलबय भइया पूरबी सिपहिया हो ना ।
जाउ माहर घर से आनउ सोना के हँसियवा हो ना ।
जाउ आनव सोने का पलकिना हो ना ।
तब चलब महर घर नरवा[1] छीनय हो ना ।
उहाँ से चल देलेस पूरबी सिपहिया हो ना ।
जाय पहुंचय माहर के दरबरवा हो ना ।
बोलि उठे माहर से सवलवा हो ना ।
चलऽ राजा माहर हो ना ।
गइली नोना घर चमइनियाँ के घरवाँ हो ना ।
ऊ त माँगय सोना का हँसुववा हो ना ।
अउर मांगे सोना क पलकिया हो ना ।
तब ऊहो जाई तोहरे घरवा हो ना ।
लागि गइनी महरिन के हुकुमियाँ हो ना ।
भेज देबा सोना का हँसुववा हो ना ।
भेज देबा सोने का पलकिया हो ना ।
लागि गइनऽ ठेहिठोह[2] कहरवा हो ना ।
पहुँची गइले नोना चमइनियां के घरवा हो ना ।
चलि गइनी नोना चमइनियाँ हो ना ।
लेइ लेनी हंथवा में सोने का हँसुववा हो ना ।
आगे-आगे चलनी पलकिया हो ना ।
पिछवा ले चलय नोना चमइनियाँ हो ना ।
पहुँची गइनी महरा के घरवाँ हो ना ।

---

5. नाल, 2. खोज करके ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लपझप[1] बिनय लागे सोनवा हो ना।
बोलि उठय महरनियाँ हो ना।
चाहे बीनऽ अँडने क सोंनवाँ हो ना।
मति काटऽ नरवा हो ना।
तोहें देब सूपा भर अखतवा सोनवाँ हो ना।
छीनय लगनी नरवा बेवरवा हो ना।
छीनिछान भइले तइयरवा हो ना।
बीतय लागे दिन बादलवा हो ना।
होवय लागे छठिया बरहिया हो ना।
बरही के भइली नोना के बिदइया हो ना।
किलवा से देखय राजा मोलागत हो ना।
रेंगल जाति रहनी नोना चमइनियाँ हो ना।
बोलि उठे राजा मोलागत हो ना।
सुनि लेव पूरबी सिपहिया हो ना।
देखउ कउन आवे तिरियवा[2] हो ना।
पूरवे से आवत बाटय पतरी तिरियवा हो ना।
धावलि धूमलि पैंड़वय पूरबी सिपहिया हो ना।
भयि गइनी रस्ते में भेंटिया हो ना।
बोलि उठे पूरबी सिपहिया हो ना।
कहाँ जाबू पतरी तिरियवा हो ना।
बोलि उठे नोना चमइनियाँ हो ना।
हमार हवंऽ अगोरिया हो ना।
हम हई नोना चमइनियाँ हो ना।
जात बा.ई अपने घरवा हो ना।
पूछि उठय पूरबी सिपहिया हो ना।
कहाँ से आवत बाइउ नोना चमइनियाँ हो ना।
बोलि उठे नोना चमइनियां हो ना।
माहर के घर से आवत बाई पूरबी सिपहिया हो ना।
माहर घरे जनमल हौ लड़किया हो ना।
ओनहीं क बीतनी बरहिया हो ना।

---

1. जल्दी जल्दी, 2. स्त्री।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माहर कइलेन हमरी बिदइया हो ना।
इतनी बचन सुनि पूरबी सिपहिया हो ना।
लौटि गइले पूरबी सिपहिया हो ना।
जाय पहुँचय राजा के कचहरिया हो ना।
राजा तोहें पूछे नोना चमइनिया हो ना।
गइल रहनी महरा के घरवा हो ना।
महरा के जनमनी लड़किया हो ना।
ओनहीं क बितनी बरहिया हो ना।
नोना के भइली बिदइया हो ना।
महरिन के रहली गवने के सड़िया हो ना।
नोना के देले बिदइया हो ना।
एतना बचन जब सुनय राजा मोलागत हो ना।
मनवाँ में भइले हुबियलिया[1] होना।
बीति गइले दूई चार दिनवाँ हो ना।
भेज देहले रजवा पलकिया हो ना।
पहुँची गइले कँहरा महरा के घरवा हो ना।
महर देदेव हरली लड़किया हो ना।
बोलि उठय महरिन लिरियवा हो गा।
का करबा भइया लड़की नदनवां[2] हो ना।
अबहीं न पोसल परनवाँ हो ना।
होइ जइहें दुई चार महिनवाँ हो ना।
तब तूँ लेजनिहऽ गदेलवा[3] हो ना।
अबहीं का करबा ले जाई अपने घरवा हो ना।
लौटि गइनी राजा क पलकिया हो ना।
जाय बोलय पूरबी सिपहिया हो ना।
अबहीं त राजा करय सम्बन्धवा हो ना।
अबहीं हउअइ खून के परनवाँ हो ना।
भेज देबय राजा के खबरिया हो ना।
सुनि लेबा महरा मोर बयनिया[4] हो ना।
देवे देब हरली लड़किया हो ना।

---

1. खुशी, 2. नादान, कम उम्र, 3. लड़का लड़की, 4. वाणी; बात,।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घरवा ले जाइ हम पोसिपालि करबइ तइयरवा हो ना।
फेरि बोलय महरिन सवलबा हो ना।
काहे पीछे पड़ला तूँ रजवा हो ना।
अबहीं हव लड़िका नदनवाँ हो ना।
पीहैं गइया भंइसिया क दूधवा हो ना।
होइ जइहैं लड़की खरवा हो ना।
ढेड़की के ढेड़का फुलिहय लदवा[1] हो ना।
झरत पोंकत मर जइहयँ हो ना।
का करबां ले जाइ के घरवाँ होना।
जब अपने मइया के दुधवा पी पैबा हो ना।
लगिहँय तोहरी बहिनियाँ हो ना।
जो अपनी मेहरी का दूधवा पियइबा हो ना।
लागि जइहयँ तोहरी लड़कियाँ हो ना।
कवने कारज ताहरे अइहयं हो ना।
एतना बचन जब सुनत पूरबी सिपहिया हो ना।
लौटि जाए राजा के घरवा हो ना।
बीति गइले दुई चार दिनवां हो ना।
जइसे बढ़इ चनरमा[2] हो ना।
पन्द्रह दिना भइले पूरन पखवा हो ना।
होइ गयनी मांजरि सुन्दरि तइयरवा हो ना।
बोलि उठे महरिन रनियवाँ हो ना।
सुनि लेबा राजा तूँ महरवा हो ना।
बिटिया के सूधिया अइसा लगइहा हो ना।
पतवा न पावय राजा मोलागत हो ना[3]।

दोनों पाठों में अन्तर

दोनों पाठों में पहला अन्तर तो शैली का ही है। इसमें 'होना' तुकान्त है जब कि पहले वाले पाठ में तुकान्त नहीं है। दूसरी बात यह है कि पहले पाठ में राजा और महरा में विरोध का कारण राजा का महरा के घर जाकर अपमानित होना बताया गया है, जब कि दूसरे पाठ में स्वाभाविक रूप से जुआ का प्रसंग आ गया है। ब्राह्मण-वेश में ब्रह्मा का प्रकट होकर राजा की सहायता का प्रसंग दोनों में लगभग

1. पेट, 1. चन्द्रमा, 2. विवाह करना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समान रूप से आया है। कोख जीतने की बात का उल्लेख भी दोनों में हुआ है। दुबारा जुए में राजा की जीत, महरा द्वारा महरिन की कोख हार जाना, नाल छेदने के लिए नोना द्वारा सोने की कटारी या हंसिया माँगना, नाल-छेदना, राजा द्वारा मँजरी की विदाई का प्रयत्न किया जाना आदि प्रसंग दोनों पाठों में समान रूप से आये हैं। पहले पाठ के अनुसार मँजरी महरा की सातवीं लड़की हैं, किन्तु दूसरे पाठ के अनुसार दूसरी। इसी प्रकार पहले पाठ में नाल-छेदन करने के लिए महरिन अपने भाई सुबाचन को नोना के पास भेजती है, जब कि दूसरे पाठ में एक सिपाही के भेजे जाने का उल्लेख हुआ है। अन्य बातें दोनों में समान हैं।

तीसरा पाठ : रामदास कुर्मी की कथा : आरंभिक अंश का सारांश :

अगोरी में मोलागित नाम का एक राजा राज्य करता था। उसके राज्य में महरा नाम का एक अहीर बड़ा धनाढ्य था। राजा ने एक बार महरा को जुआ खेलने के लिए बुलवाया। जुआ में महरा महरिन की कोख तक हार गया। शर्त थी कि यदि लड़के पैदा होंगे तो घोड़ा की सईसी करेंगे, और यदि लड़कियाँ पैदा होंगी तो महरा किसी कमजोर अहीर को बुलाकर विवाह कर देगा। राजा उसे मारकर, लड़की को रनिवास भोगने के लिए अपने किला में ले जायेगा।

महरा को मोतिसरि नाम की पहली लड़की पैदा हुई जिसे राजा ने उक्त शर्त के अनुसार अपने रनिवास में बुला लिया। फिर क्रमशः दो लड़कियाँ और पैदा हुईं, उसने इनको भी बुलवा लिया, किन्तु चौथी लड़की जब मँजरी का जन्म हुआ तो सारा घर-आंगन प्रकाशमान हो गया, सवा प्रहर तक सोना बरसता रहा। उसे देवी स्वरूपा जानकर महरिन ने अपने भाई सुबाचन को बुलाया और कहा, "जाओ शीघ्र नोना को नाल-छेदने के लिए बुला लाओ।" सुबाचन नोना को बुलाने गया तो नोना ने कहा—"मेरी गोद में नन्हा शिशु है, पैदल कैसे चलूँ ? जाकर पालकी कहार ले लाओ तो चलूँ।' सुबाचन ने जाकर महरा से नोना की बात कह सुनाया तो महरा स्वयं उठकर नोना के घर गया और बोला—"मेरे पास अथाह धन है, जो कहोगी दूँगा, लेकिन पालकी-कहार मत मंगवाओ। क्योंकि यह रिवाज गरीबों के लिए ठीक नहीं है।' इस बात पर नोना मान गयी और पैदल ही नाल-छेदने के लिए चल पड़ी। वहाँ जाकर उसने देखा, मँजरी के जन्म से पूरा घर प्रकाशित हो गया था। सवा प्रहर सोना बरसने से घर सोना से भर गया था। महरिन ने आदेश देकर सोने की पहँसुल बनवाया जिससे नोना ने नाल-छेदन किया। महरिन ने नोना को धन-दौलत देकर विदा किया और कहा—'नोना इस बात को तुम राजा से मत कहना'

किन्तु नोना विदा होकर जब सेवान पार होने लगी तो राजा ने उसे देखकर बुलवा लिया। पूछने पर नोना ने सारा हाल बयान कर दिया। राजा ने तुरंत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिपाहियों को महरा के घर भेजा और कहा—'बालिका को किले में ले आओ।' राजा के सिपाही गये, किंतु महरिन ने महरा से कहा—"आप इसके योग्य वर ढूंढ़ते रहिए। कोई ऐसा अहीर हो जिसे राजा जीत न सके। मैं फिलहाल राजा को लौटाने का उपाय करती हूँ।' महरिन ने राजा से कहा—'आप अभी इसे ले जाकर क्या करेंगे। माता के अतिरिक्त किसी और का दूध पिलायेंगे तो यह अस्वस्थ हो जायगी। अपनी स्त्री का दूध पिलायेंगे तो पुत्री, बहिन का दूध पिलायेंगे तो भानजी लगेगी। अतः अच्छा हो कि आप अभी रहने दें। जब यह बड़ी हो जायगी तो किसी कमजोर अहीर को बुलवाकर इसका विवाह अर दूंगी, आप उस अहीर को मार कर रनिवास भोगवाने के लिए ले जाइएगा।' राजा अहीर की बात मान कर वापस चला गया। इधर उसके लिए योग्य वर की तलाश होने लगी।

रामदास, कुर्मी, पकरहट, मिरजापुर के अनुसार

राम राम राम हो कहलेनि राम कइ नउवाँ, लेहलेन सँझवउँ हो बिहाऽऽन।
कहलेन हे हे माता सुरएसतिया,[1] घन्टवा में इहवाँ[2] तइयाऽऽर।
अउरो भूललि अछरिया हे मइया, जोरि जोरि कइ ए दिहा खियाल।
हमरउ लागत बा ललसा, तोहरे पँवरवा के मइया हो।
गइबय हो दिनवाँ हो राति, अरे माई दुर्गा रहिहा[3] भुजवन पर तैयार।
लागलि बालय ललसा हे माई, तोहरे पँवरवा[4] के आजु।
अरे मइया सूनऽए माई सुमिरन करतै, बितिहइं दिन हो राऽऽति।
सुमिरन क नाहीं ओरवा मिलिहँ अवरो ठेकान।
दुनियाँ में बहुत देवता लेहले बा अवहोतार।
अबले सुनऽए माई अगवाँ क हो हवाल, इहवाँ क चरचा यही रह जाइ।
अब आगे सुनऽ सुरुववन क हाऽऽल, जहाँ बसल सहरिया बाय अगोरी।
नगर अगोरिया गुजए राऽऽति, ओमें बसल बा अहीर महरा।
महरा जेन परल बाय नाम, राजा ए बालय मुलागित।
महरा औ राजा से होत बालय जुववा ए सारी।
अब सब धन से हारत जाय महरा; और न देले बालय जुवा पर चढ़ाय।
तवनों राजा ए जीति न लेहय मुलागित, तब राजा न बोलल बाइ।
सुनऽ ए महरा अब कहनवाँ ले मानऽ हमार, अब तोहरी जनानी जीत लेहल।
अब ए करत बनै तूं करबा उपवाचार[5], तब बोलल बालय महरा।
सुनऽसुनऽ ए राजा मोलागित, अब कहनवां ले मानऽ हमाऽऽर।

---

1. सरस्वती, 2. यहाँ, 3. रहना, 4. इस गाथा को पंवारा भी कहते हैं, 5.उपाय।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जउ तूं लड़िका जनमी तौ हो जाय हमार ।
जउँ तूं लड़िकी जनमी होई जाइ तोहार, कहब हम ए एक बात ओमे अवर[1] ।
कहत न हम बाई अबर-दुबर अहीर, राम नाम गुन गावै के ठाकुर ।
ओसे करबइ बिटिया कऽ बियाह,
तब तूं राजा अपने जाँघी के बलसाई[2] ।
अहीर भारी देहा कुदाऽय[3],
अ ओइ लड़िकी के ले जाय केऽऽ ।
किलवा में बोलया रनिवाऽऽऽ,
एही सरत लिखवावत बा महरा ।
तब राजा बतिया गयल बाइ मान,
पहिले लड़की जनमलि महरा काऽ ।
जेकर नाम परल मोतिसर बाइ,
ओनहूँ क सादी बियाह महरा कइलइ ।
राजा मार पीट क ओइ अहिरे के,
अगोरी से देलय कुदाय ।
जवन बिटिया न बिहअले रहल अहीर,
तवने के ले जाइ के किला बोलावत बाय रनिवास ।
अइसहीं-अइसहीं दुई लड़की अवर अइनी,
तवनों ले गयल एही भाव से ।
चौथे जनम भयल महरा घर बिटिया ऊहव बाइ,
फेर तेनके जनम यें सवा पहर सोना बरसल ।
अइसन गछ्तर क धारी लड़िकी जनमल,
बिन दिया बिन बाती जेकर सुऊर[4] भयल बाइ अँजोर ।
तब फेर महरा बोलत बा सुनऽ सुनऽ ए सार भीर,
सुवाचन अऽ कहनवाँ ले माना हमार ।
हमरे महल में जनमल बाइ बिटिया,
जलदी सोना चमइनी के कहले आवऽ बोलाय ।
आइ क ऊ छीनय नारइ सनी सुनले पर,
अब सुवाचन रैगल बाइ जाल ।
जाय के सोना चमइनी के पुतरी पर करत बाइ पुकार,
सुनऽ सुनऽ ए सोना चमाइन कहनवाँ ए माना हमार ।

1. और, 2. बल से, 3. भला देना, 4. प्रसव गृह ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महरा के घर जनमल बाइ लड़की सगय मैने लागी हमार,
महरा कइले बानऽ तोहार अपने महल में बोलाव।
छीनय के पड़ी ओइ लड़की के तोहरे के नार,
एतना बतिया के सुनले नोना बोलत बाइ चमइनियां।
सुनऽ सुनऽ ए भइया सुबाचन कहनवाँ माना हमार,
हमरे गोदिया में जनमल बाइ एक लड़िका।
अभी पीयत बालय हमरइ[1] छतिया कइ दूध,
जेठ बइसाख के जरत बाइ भूरि।
जब हम रेंग के चलब दूध जाई गरमाय,
ऊहइ दूधवा ए पिआइब अपने बालक के।
बालक हमार होय जाई खराब,
जाइ के कहिहा महरा से भेज दीहयँ पलकी अउर कहांर।
तब ओही पर चढ़ि के छीनय चलब तोहरे भगिनिया[2] क नार,
एतनी बतिया सुनले सुबाचन के नाहीं आयल जबाऽऽब,
सुबचन लौटल के आयल महरा के दुऽऽवार।
जवन बइठल रहल महरा ओनके देत बाइ खबर लगाऽऽइ,
सुनऽ सुनऽ ए बहनोई कहनवाँ ले माना हमाऽऽर।
हम नोना चमाइन बोलावे गइली,
हमसे पूरा रचले बा जबाब।
ओइ जबाब क हम उत्तर नाहीं देहली,
तोहके देत बाई खबर लगाइ।
नोना चमाइन बोलत बाइ सुनऽ सुनऽ ए भइया सुबचन,
कहनवां ले माना हमार जेठ बैसाख कई जरति बाइ भूभूरि।
कइसे चलीं हम छीनय नार,
हमरे गोदिया में जनमल बाइ एक लड़िका।
ई पीयत बाइ छाती कइ दूध,
अब गरमायल दूधवा अउ न पिआइब।
लड़िका मोर होइ जाई खराब,
जाय के कह दा महरा से एक पलकी चार भेजिहंय कहांर।
ओही पर चढ़ी के आइब तब छीनब तोहरे भगनिवाँ के नार,

1हमारे., 2. बहिन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नोना चमाइन के खबर महरा से सुबाचन देनऽ सुनाय।
एतना बतिया सुन के महरा रेंगल नोना चमइनी के दुवार,
जाइ के नोना-नोना गोहरावत बाइ।
नोना निकललि आवति घरवा से बाहर बाइ,
दुवरा पर खड़ी बा महरा ओनसे बोलत।
का तूं भइया हमके गोहरावत बायऽ महरा,
तनी भेदवा हमके दा सुनाय।
तब फेरि बोलत बालय महरा,
सुनऽ सुनऽ ए बचवा चमाइन नोना।
अउर कहनवाँ माना हमार,
हमरे धन दउलत के कौनो नाहीं बा थाह।
केतनी दउलति देले बाइ भगवान,
हम तोहके भेज देबय पलकी औ कहांर।
इहय लगलि रहि जाई रवाजि,[1]
हमार बहुत गरीब भाई दुखी बायंऽ।
ओनहन घरे जनमिहैं बालक,
तब तूं खोजे लगबू इहय पलकी और कहांर।
तउ हमार भाई कहाँ पइहयं दुनियां में हम होबे बदनाम।
ओकरे ससुरा के आइल रहलि।
पलकी से चमाइन बलाइ के छीनय के नार,
अब हम कहाँ पहिले नोना चमाइन के बोलाईं।
त होई दुनियवाँ में हमार बड़ा बेहाल,
चौदिस आवसी गरिअइहइं।[2]
जे ससुरा न लगवले रहल लगान,
त कइसे नोना चमाइन मांगल पलकी औ कहांर।
सुनऽ सुनऽ ए बचवा सांझे सबेरे चलि क छीनि लावऽ नाऽऽर,
इसवर भगवान के दयी से तोहरे लड़िकवा के एको धूमिलवा न होई बार।
एतना सुनले पर नोना चमाइन,
तुरन्तय होइ गयिल ह तइयाऽऽर।

1. रिवाज, 2. गाली देंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तब पांच रुपिया महरा उनके खोंइछवा[1] में देहलेन डालि,
खुसी होइ के नोना चमाइन चलनी महरा के दरबाऽऽर।
तब महरा के गयील घरय अँगना में भितराय,
जौनय घरय में जनमलि दावन बिटिया बाऽऽय।
जेकर दावन मँजरिया परल बाय नाम,
देखति बा नोना चमाइन चेहरा ओकर रूप।
बिन दियइ बिन बाती जेकर सउर भयल बा ओजगार,
तब फेर नोना चमाइन बोलति बाइ।
सुनऽ सुनऽ ए भइया महरा कहनवां ले माना जा हमार,
सोना क पंहसुल[2] तूं बनवावऽ।
तब ओही से छीनब तोहरे लड़किया क नार,
बड़ी नछत्तर क जनमलि बाइ इहो तेज ए धारी।
एतना सुनत भरे महरा जलदी बिना सोनार से सोना क पंहसुल देले बनवाइ।
तब फेर छीनति बाय नोना चमाइन ओनकर नार,
अ नार छीनिछान के अहथिर[3] भइल,
तब जाये लगल अपने महरे के राह,
तब फेर बोलल बानी महरिन,
सुनऽ सुनऽ ए बचवा नोना,
अऊ कहनवां ले माना हमार,
तोहार हम करब बहुत खातिर बाद[4],
ओही बरहिया कइ बाद,
आजु तोहके भरि खोंइछा चाउर देत बाई लगाइ,
बाकी ई हलिया राजा से जाय क खबर देहा सुनाय,
नाहीं त राजा से अ महरा से भयल बालय कहल अऊ झगड़ा,
राजा मोलागित लड़किया के ले जाई,
एतना समझाइ देलइ महरिन नोना के,
नोना घरनी अपने घरवां क राह,
लागलि बाय कचहरी राजा मोलागित क,
जहंवां बोलत राजा मोलागित बाय,
सुनऽ सुनऽ ए सिपाही कहनवां माना हमार,

---

1. अंचरा या आंचल में, 2. नाल-छेदन का छूरा, 3. स्थिर, 4. स्वागत।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नोना चमाइन गइली रहल महरा घरे।
लौटल अपने घरवां बाइ जाति,
तनी बोलावऽ हमरे कचहरी।
अऊ पूछीं महरवा घर क हाल,
एतना सुनले के बाद में सिपाही।
जहवां छेंकत आगे जाइ क राह,
बोलल बायंऽ राजा कइले हवंऽ बलाव।
तोहार कचहरी भयल बालइ बोलाऽऽउ,
एतनी बाति सुनत बाइ नोना चमाइन।
मन बहुत गइल बाय हरखाऽऽइ,[1]
जेऊँ चलऽ राजा के लचऽऽहरी।
सच्ची हलिया देबय बताऽऽइ,
खुशी होई राजा त हमके पूरा-पूरा देही ईनाऽऽम।
जउने में हमार बाल-बच्चा कुछु दिन खइहं, अलखवा राज,
इहय सोच के नोना चल देहलइ।
राजा मतिचागित के दरबार,
तब फेर राजा बोलत बाय।
सुनऽ सुनऽए नोना चमाइन,
अउर कहनवाँ माना हमार।
तूँ गयलि रहलू हऽ महरा के घरे,
तवन खबर हमके दा बताय।
तब फेर बोलत बाय नोना चमाइन,
सुनऽ सुनऽ ए राजा कहनवाँ हमार।
जामलि बाइ बिटिया एक महरा के,
जेकर दावन मँजरिया परल बाय नाम।
बिन दिया बिन बाती जेकर सोवर भयल बाय ओजरार,
वही लड़की क हम छीनयि गयल रहली हऽनार।
सोना क पँहसुल बनवाय के,
तब ओकर छिनायल हऽ नार।
अउ जेकरे जनम में सवा पहर सोना बरसल बाय,

---

1. हर्षित, ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बड़ी नछत्तर क तेज धारी।
महरा घरे ले ले वाइ अवतार,
एतना सुन के राजा बोलत बाइ सिपाही से।
सुनऽ सुनऽ ए चपरासी कहनवाँ नाना हमार,
बड़ी अच्छी बात सुनवले बा नीना चमाइन।
एकरे खोंइंछवा में देब कोदउवा[1] पनए सेर डालि,
एतना जब कोदो लेहलइ नोना चमाइन।
झंखति सोचति चमाइन अपने पर बाइ,
तउने के आगे सुनऽए भाई हवाल।
बरही त बीति गइल तेरहिया बीतति बाइ,
तब फेर राजा खबर महरा घर देले बाय लगाय।
सुनऽ सुनऽए महरा अउ कहतवाँ मानऽ हमार,
तीनि लड़की तोहार बियाह लियइली।
एके कुआँरेय लियाय के घर करबे बियाह,
इहैं खबर महरा के पास गयिल।
महरा सुनत खबरिया बिकल हो जाइ,
तब फेर बोलत बालय महरिन।
सइयाँ सुनऽ सुख नन्दन,
हमरे सेन्हुंर के हउअइ अधिकार।
तोहार नहिनी कउनो अकिल चलति,
हम राजा के जकिल से देब लउटाऽऽय।
तूँ घरे बइठ के आगे क सोचऽ अउर बिचाऽऽरऽ,
के अइसन अहीर तूँ दुनियाँ में खोऽऽजऽ।
जे जब लोहय क जाठन लोहन क बिछावन बाय,
अ लोहय पर रेंगल जाय ऊ अहीर खोजऽ।
वही से कइ देहींदावन मेंजरी क सइयाँ हो बियाह,
जब ओइसन जबहा[2] अहीर चढ़ि आई।
हमरे नगर अगोरिया गुजरात,
राजा के मारि-मारि बदि देही खेलाय।
डोलिया उठी दावन मँजरी क लेइजाइ देखात,
एतना बात सुनत भरे महरा के सोच समाय गयील।[3]

---

1. कोदो, एक प्रकार का कुडान्न, 2. शक्तिशाली, 3. चिन्तित हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तब से पन्द्रह बा दिना बीतल,
राजा पलटन देले बाय सजवाय।
ऊहइ बाजा उहय गाजा से,
हाँथी घोड़ा ले ले बाय रँगवाय।
अच्छा रंग बिरंग कइ पलकी,
लेहले आवत महरा के दुवार।
जब महरा के घर आँगन छेंक लेहले,
तब फेर महरिन बोलति बाय दुवरवाँ आइ के घरे।
जवने हाँथी पर राजा चढ़ल रहल,
वही महरिन गयील सियराय।
हाथ जोरी के महरिन बोलल,
सुनऽ सुनऽ राजा कहनवाँ हमार।
ई तूँ कइसे दल साज के अइलऽ हमरे दुवार,
एतनी बात के सुनले में राजा।
महरिन के देले बा जबाब,
सुनऽ सुनऽ ए महरिन कहनवाँ ले मानऽ हमार।
तीनि लड़की तोहार ले गयिली जवन हरदी धोआय,
छोये में एके हम चाहत बाई कुँआरेय[1] ले चली गढ़ी में।
करीं बियाह, तब फेर महरिन बोलत बाय,
सुनऽ सुनऽ ए राजा तोहार मनबै कहलवा।
तब फेर राजा बोलत बाइ जे कउल करार तय हवय,
जे बेटा जनमी त होई हमार।
अ बेटी जनमी त होई राजा तोहार,
लेकिन अब्बर दुबर अहीर खोज के।
ओकर अँगना में हम हरदी देबय धोआय,
तब अपने जांघी के बलसाई अहीर के मार देहा कूदाय।
तब तूँ ले जाय के किला बोलाया रनिवाऽऽस,
तब फेर बोलत बाय महरिन।
तब काहे दुवारे घर आय क कइला बलाऽऽव;
या त आपन जबान काटऽ ईऽऽहा।
तब लड़की तोहरय पलकी देहीं चढ़ाय,

1. क्वाँरी ही।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाहीं त अपनी अपनी बाति के पालइ के होइ।
त जउन महरा से तोहरे भयल बा करार, वही बाती पर ठहरल रहऽ।
ओइसही एक ठे अबरा दुबरा अहीर, बलाय के हरदी देबय धोवाय[1]।
तब ओनके मार के ले जाय, किला बोलाया रनिवास।
हारल बाति हराम बरोबर, राजा काहे गइलऽ अकुताय।
अबही तनी दूधे क लड़की जउँ ले जइबा, पोस पालि क कइसे करबा तइयार।
जउँ बहिनी क दूध पिआइबा, भगिनी होई तोहार।
जउं फूआ क दूध पियैबा, बहिन होई तोहार।
जब अपने रानी का दूध पिअइबा, सगइ[2] बिटिया हो जाई तोहार।
एतना सुन के राजा फउदि पलटनि देले लउटाइ, जाय के अपने महल बइठल।
वही दिना से लागल करन बिचार, सुनऽ सुनऽ एसुबचन सार।
कहना माना एठे हमार, अब तक बहुत दिना कऽ सहकल[3] राजा बाइ।
एकर मन बहमवाँ बा जात, अइसन अहीर तूँ जाइक खोजऽ दुनियाँ में।
जे जब चढ़ि आवइ अगोरिया गुजरात,
राजा सङ्हें लेइ के लोहा राजा के मारि गिराइ।
तब ले लेही डोला आपन, अपने महल चलिए जाई।

तीनों पाठ : तुलनात्मक अध्ययन :

तीसरे पाठ की शैली तीसरी है। इसमें राजा का नाम भी मोलागत की जगह मोलगित आया है। कथा पहले के दोनों पाठों से संक्षिप्त है। इस पाठ में दूसरी लड़की का नाम मोतिसरि आया है जो नया हैं।

इस पाठ के अनुसार नोना जब पालकी-कहार लाने के लिए कहती है तो राजा स्वयं चल देता है और जाकर कहता है कि मेरे लिए तो कोई बात नहीं है, किन्तु यह परिपाटी गलत हो जायगी जिसका परिणाम गरीबों के लिए अच्छा न होगा। नोना इस बात पर सहमत होती है और पैदल ही नाल-छेदने चल पड़ती है।

इस पाठ में नाल-छेदने वाले यंत्र का नाम 'पंहसुल' आया है जिसे महरिन आदेश देकर सोना की धातु का बनवाती है। महरिन तर्कपूर्ण उक्तियों से राजा को लौटाल देती है। शेष बातें लगभग समान हैं।

चौथे पाठ का सारांश

चिरागन, हरिजन, राबर्ट्सगंज, मिर्जापुर का पाठ—गउरा में खुइलन नाम की महरिन है। उसके तीन पन बीत चुके थे, जब चौथापन (वृद्धापन) आयो तो उसे

---

1. उऋण हो जाऊँगी, विवाह कर दूँगी, 2. सगो, 3. परचा हुआ है, सरहंग बना है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बड़ी चिन्ता हुई, कारण कि अथाह धन-सम्पत्ति होने के बाद भी उसे कोई पुत्र पैदा नहीं हुआ था ।फलयः पुत्र प्राप्ति की कामना से उसने सूर्य-व्रत करना प्रारम्भ किया। वर्षों बाद सूर्य भगवान प्रसन्न हुए। उन्होंने ब्रह्मा को प्रेरित किया। ब्रह्मा जी ने उसे पुत्र-प्राप्ति का वर दिया, किन्तु इधर उसे लोक का ताना सुनना पड़ता था और अपमानित भी होना पड़ता था। खुइलन ने सूर्य से अपनी करुण दशा का परिचय दिया। सूर्य भगवान ने प्रकाश देना बन्द कर दिया तब ब्रह्मा जी घबड़ाये। अन्त में ब्रह्मा जी को मृत्युलोक आकर खुइलन को पुत्र का वरदान देना पड़ा। कुछ दिन बाद महान् तेजस्वी बालक लोरिक का जन्म खुईलन के गर्भ से हुआ। इसके बाद खुइलन के पति की कामना एक पुत्री रत्न प्राप्त करने की हुई।

चिरागर चमार, राबर्टस गंज, मिरजापुर का पाठ

अरे मइया सुनी पंवारा जवन बा,
मतवा झंख गंउवरा वा बजाऽऽर।
एहर देख उ आवत ब्रह्मा बिसनू बायंऽऽ,
अ पण्डित आवत रहन उ डहरीऽऽ[1] में।
अरे ओनकर मतवा कइसे डहरिया छेंकि ए लेऽऽइं,
आजु ऊहइ जबनियाँ दुववा देऽइं।
बड़े भोरइ भिनइयाँ मतवा गऽइनी,
जाइ क बइठलि डहरिया आजुरे बाऽऽईं।
ओहर से आवत ऋसी-मुनी हो बाऽयंऽ,
आजु कवन विपतिया आइरे गऽऽइनी।
हमरे आइलि डहरिया भोंटिया भऽऽइनी,
उहवाँ जाइ पूछइ जबनियाँ आजुरे लाऽऽगइ।
तब बोललि न मतवा ऊहाँ बाऽईं,
सारा भेदवा न देले बाईं बऽऽताइ।
ओइ दिन बोलत न ऋषी-मुनी बायँऽऽ,
तोहके जरूर पुतरवा[2] होइरे जऽइहैं।
मगर ईहाँ से डहरिया आजुरे जाबे,
जाइ नगर न पहुँचे एतनी जूऽऽन।
रस्तवा जाइ न छेंकल सुरूज नराऽऽयन,
एदइयइं[3] न भेदवा आजु बऽऽताईं।

---

1. रास्ता, 2. पुत्र, 3· इस बार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तोहके पुतवा होइ जाई रे मइया,
मइया ऊँ-ऊँ-ऊँ रामइं क नमवां मइया गाइँ।
रामइं क दरिया लेहीं नाऽऽम,
रामजी नीचे सुमिरीं धरती के।
ऊपर मनाइँ भग हो वान,
राम जी सूनऽ पँवारा गउरा कऽऽ।
बतिया मानऽ बचनियाँ हमार।
जइ दिन नगर न अउर गउरा में।
मतवा बइठलि न बाइँ ऊहाँ खुइलन,
बाबा बइठल बँगलवा दरबार।
राम जी जउनइं न दीनां बतिया मानऽ,
अ पुतनी न पुतना गंउरा में।
दिनवां बीतइ न नगर अब हो लागइ,
बाबू तीनइँ न पनवां बीति हो गइल।
चउथइ में झुलझुल ना दँतवा हीलइ लगनऽ,
जइ दिन मारत न धनवां गउरा में।
अरे मतवा लागी बिरधा[1] अबरे गइनऽ,
तहाँ एकउ न पुतनी-पुतना बाऽ।
लोगवा काहे मेहनवां[2] हमके मारइ,
मइया करइ गुमनवां मन में लागइ।
मइया रोवति न बाइँ गउरा में,
बरह्मा कवन उपइया लगाइँ,
अरे मतवा झंखइ लागइ मनवां में,
अरे एतनी बात के भइले।
बचनियां मानऽ हो मइया हमार,
टाइम एहर पँवारा देखउ अरगन भइया परगन[3]।
औ परगन मतवा चललि जाति बाइँ निय-रे-राइ,
अइसइ तइसइ होत भियनइयां[4] जइसे विदवा लेइ लेलेन।
तहवां भरकइ ऊगइ[5] लगनऽ सूरूज नरायन,
अउर गयल रे बायँऽ घबरे राइ।
लगवां पहुँचि न मतवा से पूछत रे बाई,

---

1. वृद्धावस्था, 2. ताना, 3. एक प्रकार का ठेका, 4. प्रात, 5. उदय।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मतवा हो कइसन भागल आज रे अइलू।
अरे काहे अन्हरवा कइले बाइउ,
रची[1] छोड़ा डहरिया हमहूँ जाइं।
अरे बतिया बोलल न मतवा धनवाँ बाइं,
सब भेदवा बतवले आजु रे बाइं।
सूरूज नरायन न बतिया सुनि लेलेन,
इहैं न भागल एतनी जून।
बरह्मा बिस्नू न गइनऽ घव-रे-राइ,
अइसन लागल कचहरी बा ब्रह्माँ कऽ।
जहाँ बइठल न सुरुज नरायन आजुरे बानऽ,
बतिया भेदवा ऊहाँ होवइ न लागल।
बस एतना न भेदवा आजु रे देहला,
मगर दल्दी न देबा तूं बताय।
मृतु लोकवा अन्हरवा होइ रे गइनऽ,
बतिया मानऽ बचनियाँ आजु हमार।
एतना बतिया जुगनवाँ बीति रे गइनऽ,
बरह्मा हारत जबनियाँ आजुरे बानऽ।
अरे सुरुज नरायन एकइ न पुतरवा ओनेके देबा,
बाकी ओनके न खबरिया देबा जनाइ।
मतवा चलल न जइहैं गउरा में,
ओ एतना न बतिया सुनि लेलेन।
सूरुज नरायन न आवत आजुरे बानऽ,
मतवा एतना सरनिया न लेबा लगाइ।
मतवा तोहके न पुतवा होइ रे जइहइं।
अब नगर न जाबे ओतनी जून[2],
मतवा अरगन न गइनी ईहाँ परगन।
मतवा जाई जूटलि बाइ रे गउरा बजार,
अरे ईहै पँवारा सुना भाई।
टाइम गुजरइ लागल होना,
अरजून, भीम, नकुल सहदेवा।

---

1. जरा, 2. समय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओढ़इँ कमरी बिछावइँ लेवा[1] ।
साँचइ में मइयाँ बइठलि बाइँ,
जहवाँ पहुँचि न बरह्मा बिस्नू बायँऽ ।
मगर ईहब न जबबवा पूछइ रे लगनऽ,
आजु नाहीं मृतु लोकवा हमरे जाइब ।
अइसइ तइसइ जबबवाँ, आजु रे देहलेन,
मगर सूनऽ पँवरवा ओतनी जून ।
कइसे हम रहबइ दुनियाँ में,
हमहूँ जबरइ मंगनवाँ बरि हो यार ।
हे ब्रह्मा तबइ मृतुलोकवा हमरे जाबइ,
तहवाँ तीनिउँ तिरियवा मँगले हवँऽ ।
ऊ मँगले न बालइ ओतनी जून,
माँगत मँगनवाँ बरि हो यार ।
ब्रह्मा देले बरदनवाँ ओन्हें बायँऽ,
तहवाँ देलेन न मथवा हो ओनाइ ।
गोली ठहकवा मइया गइनी,
तहवाँ पेटी में बन्हले अजगर कइ ।
अहवाँ सुमिनत न बोहवा तनि हो दइउ,
अरे सुमिरत न माई दुर्गा के ।
गाये मिलत बाटइ ए मइया,
अ बिजुलिया त रहनी तहँ ए-बाढ़ ।
अरे एतनी बात के भइनी रे बतिया माना,
का कोला के जब कौल करार कइ लेला ।
ऊ तुरंत का कोला के गरम भयल बा मतवा रे,
बीति भयल बा तीनि पनवाँ ।
चउथे में जुलजुल निकलल बा दँतवा,
मेहनवाँ ईहइ लोगवा मरले बा बरिहोयार ।
ऊ ब्रह्मा देले न पुतरवा आजु हो बायँ,
दसवाँ न दिन हो गइनऽ नियराई[2] ।
ओह दिन पैदा न होत बा पूत गउरा में,

---

1. कथरी, सुजनी, 2. समीप आ गया, ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रतिया न रतिया लोहवा बाजल रहल।
बतिया मानऽ बचनियाँ हमार,
ओही दिन पण्डित के पोथिया पत्तरा में।
सुभइ नछत्तरवा आइ हो गइलन;
जहाँ जोगवा न लिखत आजु रे बायँऽ।
बतिया सुनऽ पँवरवा अहिरे कइ,
मगर नउवा[1] घरिगयल रे मइया।
लोरिकवा बा सरदार,
ईहइ देवारी क दिनवाँ नियरे अइनऽ।
मगर राजा न माँगइ धनियाँ गोरीऽ।

टिप्पणी तथा समीक्षा—लोरिक के जन्म का यह वृत्तान्त अन्य लिखित या मौखिक किसी पाठ में नहीं मिलता। इसमें सूर्य की कृपा से ब्रह्मा के वरदान से खुइलन को बड़ी तपस्या के बाद वृद्धावस्था में पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। बस इतनी सी बात को गायक ने कई बार पुनरुक्तियों के द्वारा कहा है। लोरिक के जन्म के आगे की कथा में महरा एक धनियाँ गोरी बालिका का वरदान प्राप्त करना चाहता है। लोरिक के जन्म की कथा प्रस्तुत गाथा के मूल पाठ (नूरे केवट) में भी नहीं आयी है। मँजरी के जन्म से ही कथा का आरम्भ किया गया है। यद्यपि यह पाठ भी अव्यवस्थित, अक्रमबद्ध है।

●

1. नाम।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट 1

लोरिकायन के गायकों का संक्षिप्त परिचय

प्रस्तुत सूची में तीन प्रकार के गायक सम्मिलित किये गये हैं—(1) वे, जिन्हें सम्पूर्ण गाथा कंठाग्र हैं, (2) जिन्हें अर्द्धांश कंठाग्र है और (3) जिन्हें उससे भी कम कंठाग्र है। प्रस्तुत सूची के अधिकतर गायक मिरजापुर दक्षिणांचल के हैं। इन सबसे संपर्क का उद्देश्य यह रहा है कि मौखिक परम्पर से प्राप्त विभिन्न संस्करणों का भी तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा सके। सम्पर्क के उपरान्त प्रतीत हुआ कि मिरजापुर में प्रचलित गाथा ही अधिक प्रामाणिक तथा सम्पूर्ण है। गायकों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जारहा है—

(1) **अलगू**—बोदलपुर, नौगढ़, वाराणसी। मृत। बहुत गाते थे और बहुत सुन्दर स्वर में गाते थे।

(2) **कतवारु**—कोहार, लोहरा, स्वीकृत, मिरजापुर। अवस्था—65 वर्ष। अपढ़। हल्के नशे की आवश्यकता होती है।

(3) **गोपीचंद**—कलवार। गोठानी, चौपन, मिरजापुर। अथस्वा 82 वर्ष। अपढ़। अधिकांश कंठाग्र है। बीस वर्ष की अवस्था से ही गाने का शौक है। इन्होंने बंगी कलवार, राजपुर, मिरजापुर से सीखा है। कुछ लल्ला खरवार से भी सीखा है। पेशेवर गायक नहीं है। नशे में होकर गाते हैं। प्रस्तुत संकलन में इनकी कथा का एक अंश है।

(4) **गोगा अहीर**—घटिहटा, अगोरी, मिरजापुर। अवस्था 75 वर्ष। जीवित। नियमित गायक नहीं हैं। पेशेवर भी नहीं हैं। नशे में गाते हैं।

(4) **गोरखनाथ**—अहीर सोनबरसाँ, जसौली, मिरजापुर। अवस्था 45 वर्ष। नियमित गायक नहीं हैं। पेशेवर भी नहीं हैं।

(6) **चिरागन चमार**—रार्बट्सगंज, मिरजापुर। अवस्था 45 वर्ष। पूरी कथा कंठस्थ है। पेशेवर गायक नहीं हैं। शराब पीने की आदत छूटती नहीं है। आर्थिक दशा दयनीय। पेशा पल्लेदारी। प्रस्तुत संग्रह में इनकी कथा का एक अंश संकलित है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(7) छक्कन—कल्यानी पुर, अहरौरा से पश्चिम की ओर एक कोस पर रहते हैं। जाति के बिन, अवस्था 45 वर्ष। सम्पूर्ण कंठाग्र है। पेशेवर हैं। अपढ़।

(8) जगनू अहीर—गौरवाँ, विजयगढ़, मिरजापुर। अवस्था 50 वर्ष। पेशेवर गायक नहीं हैं। अपढ़। अधिकांश याद है।

(9) जयश्री अहीर—पकरहट, मिरजापुर। बहुत गाते थे। अब जीवित नहीं हैं। सम्पूर्ण कंठाग्र था।

(10) डंगर अहीर—नौबादी, नौगढ़, वाराणसो। अवस्था 55 वर्ष। अर्द्धांश याद है। अपढ़। थोड़ी-थोड़ी अन्य गाथायें भी गाते हैं। पेशेवर नहीं हैं।

(11) दुक्खी—अहरौरा, (कतरा में) मिरजापुर। बहुत गाते हैं। पेशेवर हैं। सम्पूर्ण कंठाग्र है। जाति बियार। अवस्था 45 वर्ष। नशे में होकर गाते हैं।

(12) दूधनाथ यादव—घुरमा, राबर्ट्सगंज, मिरजापुर। अवस्था 50 वर्ष। पूरी कथा कंठस्थ। बिरहा भी बनाकर गाते हैं। पेशेवर गायक नहीं हैं। यदा-कदा घर पर ही लोगोंके आग्रह पर या स्वान्त-सुखाय गाते हैं। नशा-पत्ती की आदत नहीं है, पान-बीड़ी चल जाता है। लड़ने-लड़ाने का शौक था। आर्थिक स्थिति सामान्य। इनकी कथा का एक अंश प्रस्तुत संग्रह में संकलित है।

(13) देवन—सांवा क पूरा, अहरौरा, मिरजापुर। अवस्था 45 वर्ष। जाति कुर्मी। सम्पूर्ण कंठाग्र है। साक्षर हैं। नशा का चस्का नहीं है। बीड़ी पीते हैं।

(14) नूरे कँवट—ग्राम-कुरहुल, चोपन, मिरजापुर। 40 वर्ष की अवस्था में मर गये। बिल्कुल अपढ़ थे। सम्पूर्ण लोरिकी कंठाग्र थी। बहुत वर्षों से गा रहे थे। इनके गुरुभूसन थे। जिनसे सुनते-सुनते इन्हें सम्पूर्ण गाथा कंग्राठ हो गयी थी। नियमित गाते थे। पेशेवर नहीं थे। आलोच्य गाथा के गायक यही थे। गाँजा या शराब के नशे में हो लेते थे तो और मस्ती से गाते थे। प्रस्तुत गाथा लिखाने के बाद ही इनकी मृत्यु एक नाव दुर्घटनामें हो गई। नूरे अपने पीछे एक सुपुत्री और पत्नी छोड़ गये हैं।

(15) पहरु—मगरही, नौगढ़, वाराणसी। जाति अहीर। अवस्था 41 वर्ष। अंशतः कंठाग्र है। अपढ़ हैं। पेशेवर नहीं हैं। मौके एवं उत्सव पर गाते हैं।

(16) पदारथ अहीर—डुमरिया, नौगढ़, वाराणसी। ये बहुत गाते थे। अब जीवित नहीं हैं। इन्हें अन्य गाथायें भी याद थीं। नशे में होकर गाते थे।

(17) पंचम अहीर—मरवरिया, नौगढ़, वाराणसी। अवस्था 50 वर्ष। लोरिकायन गाते हैं। नशेबाज भी हैं। साक्षर हैं।

(18) बुट्टन अहीर—अवस्था 50 वर्ष। जीवित हैं। कम गाते हैं पेशेवर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नहीं हैं। चौरा, अगोरी, मिरजापुर के रहने वाले हैं। इन्हें सम्पूर्ण गाथा कंठाग्र हैं। नशा के आदी नहीं हैं।

(19) बच्चा खरवार—गोठानी, मिरजापुर अवस्था 66 वर्ष। रात-रात भर गाते हैं। किन्तु पेशेवर नहीं हैं। नशा मिल जाय तो ठीक है, अन्यथा वैसे भी गा लेते हैं। अपढ़ हैं। थोड़ी-थोड़ी अन्य गाथायें भी कंठाग्र है।

(20) बंशी कलवार—राजगढ़, मिरजापुर। अवस्था 59 वर्ष। अपढ़ हैं। अधिकांश कंठाग्र है। प्रायः प्रतिदिन गाते है। पेशेवर नहीं हैं। नशे में गाते हैं।

(21) बाबू राम—बनबहुआर, जसौली, मीरजापुर। कम गाते हैं।

(22) बूजराज—कसार, नौगढ़, वाराणसी। अवस्था 45 वर्ष। जाति के अहीर। अपढ़ हैं। यदा-कदा गाते हैं। कुछ-कुछ अन्य गाथायें भी कंठाग्र हैं।

(23) बालकिशुन अहीर—पटना, मिरजापुर। अवस्था 65 वर्ष। लगभग सम्पूर्ण लोरिकी याद है। साक्षर हैं। पेशेवर नहीं हैं।

(24) विंध्येश्वरी अहीर—गोंगा, (नगवाँ के पास), मीरजापुर। अवस्था 78 वर्ष। पूरा कंठाग्र है। खूब गाते हैं। जवानी में गाने का और अधिक शौक था। इन्हें लोक-कथायें तथा अन्य गाथायें भी कंठाग्र हैं। अपढ़ हैं, पेशेवर नहीं हैं।

(25) बूजराज अहीर—कुबराडीह, नौगढ़, वाराणसी। अवस्था 45 वर्ष पूरी गाथा कंठाग्र है। अपढ़ हैं। पेशेवर गायक नहीं हैं। नशे की लत है।

(26) बिपतू—जाति कुर्मी। बराँक, राजपुर, मिरजापुर। अवस्था 40 वर्ष आठ वर्ष से गारहे हैं। पेशेवर नहीं हैं। मन में आता है तो गाते हैं। अपढ़ हैं। लग-भग सम्पूर्ण गाथा कंठाग्र है। इनके बड़े पिता पाखंडी भी गाते थे। वे राजा बड़हर को कहानियाँ सुनाते थे तथा गीत-भजन भी सुनाया करते थे।

(27) भगवान—राजपुर, मिरजापुर। जाति अहीर। गाँजा पीकर गाते हैं। अवस्था 25 वर्ष। इन्हें भी अधिकाँश लोरिकायन कंठाग्र है।

भोजू—अहीर। नौबादी, नौगढ़, वाराणसी। अवस्था 58 वर्ष। लगभग संपूर्ण लोरिकायन कंठाग्र है। पेशेवर नहीं हैं। और नियमित गाते हैं।

(29) मंगन—कल्यानीपुर, अहरौरा, मिरजापुर। अवस्था 73 वर्ष। जाति बिना बहुत गाते हैं। सम्पूर्ण कंठाग्र है। नशे में होकर मस्ती में गाते हैं। अपढ़ है।

(30) मकरदूदू अहीर—बराँत, राजपुर, मिरजापुर। इन्हें अधिकाँश लोरिका-यन कंठाग्र है। कोई नशा नहीं लेते। पेशेवर नहीं हैं। साक्षर हैं।

(31) राजबली सोनार—गोठानी, मिरजापुर। अवस्था 59 वर्ष। शराब पी कर गाते हैं पेशेवर नहीं हैं। नियमित गायक नहीं हैं। अंशतः कई गाथायें कंठाग्र हैं।

(32) रामसजीवन अहीर—बिजौरा, चोपन, मीरजापुर। अवस्था 68 वर्ष।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोकगीत, गाथायें गाने का शौक है, साक्षर हैं। अधिकाँश गाथा याद है पेशेवर नहीं हैं। प्रायः नियमित गाते हैं।

(33) **रामदास कुर्मी**=पकरहट, मिरजपुर अवस्था 65 वर्ष। इन्हें लोरिकायन 'बिजयमल' तथा और भी लोकगाथायें कंठाग्र हैं। बचपन से ही गाने का शौक है। अहरौरा जाते समय बैलों की लदनी में गाना सीखा। पेशेवर नहीं हैं। आज भी खेत-खलिहान में गाते हैं। साक्षर हैं। नशे के आदी नहीं हैं। इन्हें रामायण तथा महाभारत की कहानियाँ भी कंठाग्र हैं। तुलनात्मक अध्ययन के लिए इनकी गाथा के भी कुछ अँश उद्धत किये गये हैं।

(34) **रामनन्दन नाई**—पकरहट, मिरजापुर। अवस्था 45 वर्ष। पन्द्रह वर्ष से गारहे हैं। अधिकाँश गाथा कंठाग्र है। साक्षर हैं। नशा का सेवन नहीं करते। इनके पिता रत्थी भी गाने का शौक रखते थे।

(35) **रामजी अहीर**—निपनियाँ, जसाँसी, मिरजापुर। अवस्था 58 वर्ष। बहुत गाते हैं। अन्य गाथायें भी अँशतः कंठाग्र हैं।

(36) **रामदेव**—चकरहट्टा, नौगढ़, वाराणसी। मृत लोरिकायन गाते थे। रामदेव इस क्षेत्र के मशहूर अहीर गायक थे। अधिकाँश लोरिकी कँठाग्र थी।

(37) **राम अवतार**—रघुनाथपुर, राबर्ट्सगंज, मिरजापुर। जाति-कोल, (आदिवासी)। अवस्था 79 वर्ष। नशे का सेवन नहीं करते। सुर्ती खाते हैं। अपढ़ हैं। कहानियाँ भी सुनाते हैं। 'लोरिकीयने का अधिकाँश इन्हें कँठाग्र है।

(38) **ललूलाल खरवार**—गोठानी, मिरजापुर। इनको भी पूरी लोरिकी कंठाग्र है। अपढ़ हैं। पेशेवर गायक नहीं हैं। कभी-कभी खेत-खलिहान में गा लेते हैं। अवस्था 55 वर्ष। सुनते-सुनते पूरी गाथा कंठाग्र हो गई। नशे में होकर गाते हैं। नियमित गायक नहीं हैं।

(39) **लाल साहब**—अहीर, निपनियाँ, जसौली, मिरजापुर। अवस्था 45 वर्ष। लगभग पन्द्रह वर्ष से गारहे हैं। पहलवान भी हैं। अधिकाँश कंठाग्र है। कूड़ी-फरी भी डाँकते हैं।

(40) **विश्वनाथ सिंह यादव 'प्रचारक'**—यहाँ गाजीपुर से आकर बसे। अवस्था 79 वर्ष। गायक नहीं हैं किन्तु कथा के जानकार हैं। पूरी कथा कंठाग्र है।

(41) **सहदेव अहीर**—बड़गाँव, मिरजापुर के पास के रहने वाले हैं। अधिकाँश लोरिकी कंठाग्र है। पेशेवर नहीं हैं। गाने-बजाने का शौक करते हैं।

(42) **शिवप्रसाद**—गोठानी, मिरजापुर, अवस्था-58 वर्ष। जाति सोनार, अपढ़ हैं। पेशेवर नहीं हैं। अंशतः है। इन्होने भी अन्य गाथायें कंठाग्र की हैं। गाते-गाते मस्ती में झूमने लगते हैं। शराब या गाँजे की लत है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(43) सुमेर अहीर—नौगढ़, वाराणसी। पूरी गाथा कँठाग्र है। अवस्था 58 वर्ष। वैसे तो कम गाते हैं किन्तु जब दूसरे गाते हैं तो ये ध्यान से सुनते हैं। जब गाने वाला भूल जाता है तो उसे डाँटते और बताते हैं और तब स्वयँ गाने भी लगते हैं। छोटी अवस्था से ही गा रहे हैं।

(44) सुमेर—ग्राम-लोहरा, स्वीकृत, मिरजापुर। जाति-कोंहार, अवस्था 58 वर्ष। अपढ़ हैं। यदा-कदा गाते हैं। कुछ-कुछ अँश कंठाग्र है।

(45) श्री-राम—स्वीकृत, मिरजापुर। सम्पूर्ण गाथा कँठाग्र है। लगभग पन्द्रह वर्ष से गारहे हैं। अवस्था 48 वर्ष। साक्षर हैं।

(46) शोभू—अहीर, अहरौरा, मिरजापुर। अवस्था 55 वर्ष। बहुत कम गाते हैं। 'लोरिकायन' अँशतः कंठाग्र है। पेशेवर नहीं हैं।

•

परिशिष्ट 2

लोरिकायन में वर्णित महत्वपूर्ण स्थानों का संक्षिप्त परिचय

'लोरिकायन' एक प्रबंधात्मक लोकगाथा है। उसमें वर्णित स्थलों का विस्तृत परिचय कथानक और उसके शिल्पगत अध्ययन के साथ संदर्भित किया जा चुका है। प्रस्तुत प्रबन्ध के आरंभ में मिरजापुर जनपद के मानचित्र में ये समस्त स्थल संकेतित एवं निर्दिष्ट भी हैं। तथापि इन स्थानों का संक्षिप्त परिचय यहाँ देने का तात्पर्य यह है कि पाठकों को समझने में किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव न हो। लोरिकायन में निर्दिष्ट तथा वर्णित सभी स्थल मिरजापुर में है। वे अन्यत्र बलिया आदि में भी हो सकते हैं। गाथा के कलेवर में इन स्थानों की प्रामाणिकता पर अलग से विचार किया गया है। तब भी इस दिशा में निर्विवाद रूप से अब भी कुछ नहीं कहा जा सकता। लोरिक की जन्म तथा कर्मभूमि शोध का एक पृथक विषय भी बन सकता है। अपने विचारों एवं तर्कों को प्रामाणिक स्वीकारते हुए प्रमुख स्थलों का परिचय इस प्रकार दिया जा सकता है—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(1) **अगोरी**— मिरजापुर जनपद के अन्तर्गत राबर्ट्सगंज तहसील में राबर्ट्सगंज से 23 किलो मीटर दक्षिण चोपन नामक स्थान पड़ता है। यहाँ से सात किलो मीटर पश्चिम अगोरी दुर्ग का भग्नावशेष आज भी विद्यमान है। मोलागत राजा यहीं रहता था तथा लोरिक से उसका युद्ध भी यहीं हुआ था। यह सोन नदी के तट पर अवस्थित है।

(2) **कंतित**—'लोरिक कंतित का सरदार था' ऐसा उल्लेख लोरिकायन में अनेकशः हुआ है। यह कंतित मिरजापुर से पश्चिम विंध्याचल के मार्ग में गंगा के तट पर अवस्थित है। यहाँ भी मन्दिर तथा दुर्ग के भग्नावशेष यद्यावधि देखे जाते हैं। कंतित कंतिपुरी का अपभंश बताया जाता है, जिसे कान्तार का भी बिगड़ा हुआ रूप कहा जा सकता है।

(3) **कोटास**—कोटास या कोटा नामक स्थान घोरावल, राबर्ट्सगंज से 30 किलो मीटर पश्चिम बसा है। गउरा से चलकर लोरिक की बारात यहीं आकर टिकी थी। यह स्थान कंतित और आगोरी के बीच स्थित है।

(4) **गउरा**—मिरजापुर नगर से 16 किलो मीटर पश्चिम गंगा के तट पर गउरा बसा है। यहाँ भरों का किलावशेष है। लोरिक गउरा का ही रहने वाला था। वैसे एक दूसरा गउरा चुनार के पास फिर तीसरा गउरा बनारस जिला अन्तर्गत मोगलसराय के पास भी है। अनेक विद्वान लोरिक को बलिया स्थित गउरा का निवासी बताते हैं किन्तु अनेक व्यक्तियों से मिरजापुर स्थित गउरा ही प्रमाणित होता है।

(5) **गड़बड़ा**—मिरजापुर से दक्षिण लालगंज (हलिया) ब्लाक में, जहाँ एक बहुत बड़ा मेला लगता है तथा देवी का मन्दिर भी है, नदी के तट पर बसा है। यह अगोरी और कंतित के बीच में अवस्थित है। राबर्ट्सगंज तहसील के शाहगंज नामक स्थान से यह स्थान 20 किलो मीटर पश्चिम पड़ता है।

(6) **गोठानी**—अगोरी से दो किलो मीटर पूरब सोन के तट पर गोठानी नामक गाँव बसा है। यहाँ बाबा विश्वनाथ का मन्दिर है। वैसे भी लगभग सोलह की संख्या में प्राचीन मंदिरों के भग्नावशेष अथवा मंदिर विद्यमान हैं। लोरिक की बारात यहीं टिकी थी। यहाँ से थोड़ी ही दूर पर महरा का किला था।

(7) **गौरही**—राबर्ट्सगंज अहरौरा सड़क पर मधुपुर नामक स्थान से सटा यह स्थान अवस्थित है। यह राबर्ट्सगंज से लगभग 20 किलो मीटर उत्तर पड़ता है।

(8) **छेबली का बन**—मिरजापुर दक्षिणांचल में छिउल का बन प्रसिद्ध है। छिउल पलाश को कहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(9) **नेउरपुर**—नेउरपुर संभवतः म्योरपुर का बिगड़ा हुआ रूप है। 'नेउरपुर' ही उसे वहाँ की आदिवासी जातियां आज भी कहती हैं। यह स्थान अगोरी से दक्षिण लगभग 40 किलो मीटर की दूरी पर पड़ता है।

(10) **पिपरी**—इस नाम के दो स्थान हैं—एक वह जहाँ रिहन्द बाँध बना है, दूसरा राबर्ट्सगंज से पूरब-उत्तर की ओर राबर्ट्सगंज से लगभग तीन किलो मीटर पड़ता है। पिपरी और बिजरी दोनों स्थान मारकुण्डी घाट के आस पास पड़ते हैं।

(11) **बघनार**—राबर्ट्सगंज से दक्षिण दस किलो मीटर के लगभग मारकुण्डी घाट है। उससे दो किलो मीटर पश्चिम बघनार है। यहाँ एक नार (नाला) बहता है। पहले वहीं बाघ पानी पीते थे, इसीलिये इसका नाम बघनार या बघनाल पड़ गया है।

(12) **ब्यौरा**—यहाँ बेलन नदी है। संभवतः बेलन का ही ब्यौरा हो गया है। लोरिकायन में ब्योरा नदी के रूप में ही वर्णित है।

(13) **बिजरी**—राबर्ट्सगंज—चुर्क के बीच का एक गाँव है।

(14) **मारकुण्डी घाट**—राबर्ट्सगंज—अगोरी के बीच अवस्थित है। यही 'लोरिक-पत्थर' है जिसे लोरिक ने अपनी तलवार से तीन भागों में विभाजित किया था।

(15) **सिंगरौली**—राबर्ट्सगंज से लगभग 100 किलो मीटर दक्षिण पड़ता है। अब यहाँ से कोयला भी निकलने लगा है। सिंगरौली एक परगना है।

(16) **सुगनापुर**—राबर्ट्सगंज से 12 किलो मीटर पश्चिम शाहगंज नाम की एक छोटी सी बाजार है। यहाँ से तीन किलो मीटर पूर्वोत्तर यह स्थान पड़ता है। यह भी अगोरी और कंतित के मार्ग में ही पड़ता है।

(17) **सांखड़बोहा**—साँखड़ सम्भवतः सीखड़ का बिगड़ा हुआ रूप है। सीखड़ चुनार के पास का एक ब्लाक है। बोहा वहाँ के चारागाह के लिये प्रयुक्त है।

(18) **हरदी**—वर्णित कोटा से सटा हुआ पूरब हरदी नामक स्थान है। लोरिकायन में हरदीपुर या हरदी पाल का नाम आया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट 3

पात्र-परिचय

लोरिकायन में आये पात्रों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है—

((1) नायक तथा नायक के सहायक पात्र—लोरिक (नायक), सँवरू, अजई, कठयित, गंगिया नाई, बंठवा, चनवाँ, सेन्हियाँ झीमल, अभोरिका, नान्हू, विजवा आदि, झीमल, जमुनी, बुढ़िया महरी।

(2) नायिका तथा नायिका के सहायक पात्र—मंजरी (नायिका), महरा, महीचन, धनवा (महरिन), अनपी, सुबाचन, मोहिनी पण्डित, कैथे की लड़की।

(3) खल नायक तथा उसके सहायक पात्र—मोलागत (खलनायक), राजा बमदेव, मरदमल, राजा सखलेश तथा बघेल राजे, राजा निरमल, दावन।

(4) अन्य पात्र—(क) अवान्तर कथा पात्र—सोरही, सहदेव, महदेव, कोटा की रानी, सवा सौ गुण्डे, खरफर, महीचन तेली और उसकी लड़की, जयकुन्जर चुगुला सोनार, अजई, अगिया-कोयलिया, सतिया, बरई की लड़की, सेवहर, राजा महुअर, कोल-कोलिन, बिरम्हीं, शोभा, चनरइता, देवसिया, बोलारख झगडू, राजा हरेवा-परेवा, पहरुवा, भगवती, जदुनन्दन, झँगूली, जयसिंह।

(5) दिव्य पात्र—दुर्गा, ब्रह्मा, महादेव, बंसरा, मनियां, बरम्हाइन।

(6) मानवेतर पात्र—इनरावत हाथी, दानव, चन्द्रमा, शुक्र, तरई, गोबर-सैंती, वासुकिनाग, डाइन, हंस का जोड़ा, नाग, मंगरा घोड़ा, चौरी घोड़ी, सुकली कुतिया आदि।

(7) सेवक-सेविका- चुगुला सोनार, नोना चमाइन।

(8) सैनिक—सिपाही आदि।

वर्णमाला के अनुसार पात्रों का संक्षिप्त परिचय

अजई—जाति का धोबी, वीर लोरिक का गुरु।

अभोरिका—मंजरी के गर्भ से उत्पन्न लोरिक का सुपुत्र।

कठयित—लोरिक का पिता।

कोरइया—पश्चिम देश का राजा।

खदरुवा—अजई का श्वसुर।

गंगिया—गउरा-निवासी, लोरिक का सहायक।

चनवाँ—लोरिक की रखैल, राजा सहदेव की पुत्री।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतरइता—चनवाँ का पुत्र ।
गोबर सेंती—आकाश का एक तारा ।
जदुनन्दन—गजेड़ीपुर का क्षत्रिय ।
जमुनी—नोनी हरदी का रहने वाली, कलवारिन।
जर्यासिह—राजा जदुनन्दन का लड़का ।
जयकुअर—निरमल की पत्नी ।
झीमल—अगोरी घाट का मल्लाह, ठेकेदार ।
झगडू—कोइरी, गउरा-गुजरात का निवासी ।
झंगूली—राजा बमरी का छोटा लड़का ।
दावन—राजामोलानत का दरबारी ।
दुर्गा—लोरिक की सहायिका देवी ।
देवाइच—संवरू का लड़का ।
देवसिया—ककरउवाँ कोल का लड़का । वीर ।
धनवाँ—अहरिन, मँजरी की माँ, महरा की पत्नी ।
धरमी—सँवरू, लोरिक का बड़ा भाई ।
निरमल...कोटा का राजा, वीर ।
नान्हू घोरई—अगोरी-निवासी, जाति का कहार ।
नोना चमाइन—अगोरी की रहने वाली, मंजरी का नाल-छेदन करने वाली ।
पहरुवा—नेउरपुर का रहने वाला, कुर्मी जाति का एक व्यक्ति ।
बघेल—पूरब का राजा ।
बमदेव—कोटा का क्षत्रिय राजा ।
बंसरा देवी—अगोरी स्थित लोरिक की आराध्य देवी ।
बुढ़िया महुरी—नोना हरदी की रहने वाली, वैश्य ।
बोलारख—हरेवा-परेवा का लड़का ।
बमरी—सुरावल के राजा भिमली का पिता ।
बरई पुर की लड़की—लोरिक से विवाह का प्रस्ताव रखने वाली ।
बंठा—लोरिक का गुरु-भाई दोनों अजई के शिष्य ।
बिजवा—अजई की पत्नी ।
भगवन्ती—हरेवा-परेवा की स्त्री ।
भिमली—सुरावल के राजा, बमरी का पुत्र ।
मँजरी—नायिका, लोरिक की विवाहिता ।
महरा—मँजरी का पिता, अगोरी का रहने वाला ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महरिन—महरा की पत्नी, मँजरी की माँ ।
महदेव—सहदेव का लड़का ।
महीचन—हरदी का रहने वाला, तेली ।
महादेव—अगोरी के देवता ।
मनियाँ—अगोरी की देवी, किले में राजा मोलागत द्वारा स्थापित ।
महुअर—नोनी हरदी का रहने वाला तेली जाति का राजा ।
मरदमल—राजा मोलागत का पालतू पहलवान ।
रामरति—चौधरी, गँउरा-गुजरात का निवासी ।
लँगड़ा खटिक—सुरावल का निवासी, बरईपुर का ।
लोरिक—नायक, कठयित का पुत्र, मँजरी का पति ।
शोभा—गउरा का व्यापारी ।
सहदेव—गँउरा का राजा, चनवाँ का पिता ।
सुबाचन—मँजरी का मामा ।
सखलेस—दक्षिण देश का राजा ।
सहदेव—चनवाँ का पति ।
सोन्हया—राजा सहदेव की स्त्री ।
हरेवा परेवा—नेउरपुर का क्षत्रिय ।

●

परिशिष्ट 4

सहायक एवं सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

(हिन्दी तथा संस्कृत)

1. अमरकोश
2. अष्टाध्यायी : पाणिनि ।
3. अग्निपुराण : श्रीराम शर्मा द्वारा सम्पादित ।
4. अहीर बंश का प्रदीप : यादव कुमार, श्री मन्मन्ना लाल ।
5. अभिज्ञान शाकुन्तल : कालिदास ।
6. आल्हा खण्ड लोकगाथा : ठाकुर प्रसाद बुकसेलर, कचौड़ी गली, वाराणसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

7. अवधी लोकगीत और परंपरा : इन्दु प्रकाश पाण्डेय ।
8. अवधी की लोक कथाएँ : गोपाल कृष्ण कौल ।
9. अवधी की लोक कथाएँ : भाग-2, 3 : शिवमूर्ति सिंह ।
10. कवि शिवदास का अप्रकाशित कजली संग्रह : मिरजापुर ।
11. कथा-सरित्सागर : सोमदेव, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी ।
12. काव्य-प्रकाश : मम्मटाचार्य ।
13. कविता कौमुदी (ग्रामगीत) : रामनरेश त्रिपाठी ।
14. कादम्बरी : बाणभट्ट ।
15. कायमरवा रासो : दशरथ शर्मा, अगरचन्द नाहटा ।
16. कुमायूँ का लोक साहित्य : त्रिलोचन पाण्डेय ।
17. खोज रिपोर्ट—3, 1923-24 : नागरी प्रचारिणी सभा काशी ।
18. खड़ी बोली का लोक-साहित्य : सत्यगुप्त ।
19. चंदायन : परमेश्वरी लाल गुप्त, ग्रंथ रत्नाकर प्रा० लि० हीराबाग, बम्बई ।
20. चंदायन : माता प्रसाद गुप्त : प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा ।
21. चन्देल और उनका राजत्व काल : केशवचन्द्र मिश्र, ना० प्र० सभा, काशी ।
22. छत्तीसगढ़ी बोली का व्याकरण : हीरा लाल काव्योपाध्याय ।
23. छत्तीसगढ़ की लोक-कथाएँ : चन्द्रकुमार ।
24. छत्तीसगढ़ लोकगीतों का परिचय : श्यमाचरण दूबे ।
25. जाति वर्गों का विकास : उमाशंकर श्रीवास्तव । हिन्दी समिति उ० प्र०,
26. जाति विज्ञान के आधार : विनोद चन्द्र मिश्र, हिन्दी समिति उ० प्र०, लखनऊ
27. ढोलामारू रादूहा : नरोत्तम वर्मा एवं सूर्यरकण पारिक (सं०) ।
28. ढोलामारू (प्रेम गाथा) : राजस्थानी बात संग्रह : नारायण सिंह माटी (सं०)
29. दक्खिनी हिन्दी का साहित्य : श्रीराम शर्मा, दक्षिण प्रकाशन, हैदराबाद ।
30. दशकुमार चरित : दण्डी ।
31. दुर्गा सप्तशती :
32. नाथ सम्प्रदाय : हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
33. नाट्यशास्त्र : भरतमुनि :
34. निमाड़ी लोक साहित्य का अध्ययन : कृष्णलाल हंस ।
35. निरुक्त : दुर्गाचार्य टीका ।
36. पृथ्वी पुत्र : वासुदेवशरण अग्रवाल ।
37. पृथ्वीराज रासो—द्वितीय खण्ड : श्याम सुन्दर दास, ना० प्रा० सभा, काशी ।
38. पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ियाँ : ब्रजविलास ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

39. पद्मावत मूल और संजीवनी व्याख्या : वासुदेवशरण अग्रवाल ।
40. पुनर्नवा : हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
41. ब्रज लोक-साहित्य का विवरण : सत्येन्द्र ।
42. ब्रज लोक-साहित्य का अध्ययन : सत्येन्द्र ।
43. बाबू कुँवर सिंह लोक-गाथा : ठाकुर प्रसाद बुक्सेलर के यहाँ से प्रकाशित ।
44. बाबू कुँवर सिंह महाकाव्य : चन्द्रशेखर मिश्र ।
45. बड़गावत : कृष्ण कुमार शर्मा (सं०) साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ,
46. बघेली लोकगीत : लखन प्रताप उरगेश ।
47, बाणभट्ट की आत्मकथा : हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
48. बालकृष्ण भट्ट : राजेन्द्र शर्मा ।
49. बुन्देलखण्ड के लोकगीत : (दस भाग) : उमाशंकर शुक्ल ।
50. बुन्द्रेलखण्ड का साहित्य और संस्कृति : रामचरण मित्र ।
51. बिहुला लोकगाथा : ठाकुर प्रसाद बुक्सेलर, वाराणसी ।
52. बौद्ध धर्म दर्शन तथा साहित्य : भिक्षु धर्म रक्षित, नन्दकिशोर एण्ड सन्स,
53. भाषा विज्ञान:भोलानाथ तिवारी ।
54. भारतीय लोक-साहित्य श्याम परमार ।
55. भोजपुरी भाषा और साहित्य : उदयनारायण तिवारी ।
56. भोजपुरी मुहावरे और लोकोक्तियाँ : उदयनारायण तिवारी ।
57. भोजपुरी ग्रामगीत : आर्चर डब्ल्यू० जे० और संकठा प्रसाद ।
58. भाषा और समाज : रामविलास शर्मा ।
59. भारत का भाषा सर्वेक्षण : ग्रियर्सन ।
60. भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा : परशुराम चतुर्वेदी ।
61. भारतीय लोक-साहित्य : श्याम परमार
62. भोजपुरी लोकगाथा : सत्यव्रत सिन्हा ।
63. भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन : कृष्वदेव उपाध्याय ।
64. भोजपुरी के कवि और काव्य : दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह : बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, प्रथम संस्करण ।
65. भोजपुरी लोक-साहित्य : कृष्णदेव उपाध्याय ।
66. भोजपुरी लोकोक्तियाँ और मुहावरे : मुक्तेश्वर तिवारी,
67. भोजपुरी लोक-साहित्य : सांस्कृतिक अध्ययन : श्रीधर मिश्र ।
68. मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोक-तात्विक अध्ययन : सत्येन्द्र ।
69. मृच्छटिक : शूद्रक ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

70. मध्यकालीन हिन्दी प्रबन्ध में कथानक रूढ़ियाँ : व्रजविलास
71. मध्यकामीन भारतीय संस्कृति : आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव ।
72. मत्स्य पुराण ।
73 मध्य-प्रदेश का इतिहास : धीरेन्द्र वर्मा ।
74. मध्य-प्रदेश का इतिहास : हीरा जाल : नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
75. महाभारत ।
76. मिरजापुर नगर पालिका के 105 वर्ष ।
77. मैनासत : साधनकृत : हरिहर निवास द्विवेदी द्वारा 1958 में प्रकाशित ।
78. मैना सतवन्ती : गवासीकृत (अप्रकाशित) असफिया पुस्तकालय, हैदराबाद :
79. मैथिली लोकगीत : राम इकबाल सिंह 'राकेश' ।
80. मैथिली लोकगीतों का अध्ययन : तेजनारायण लाल ।
81. यदुकुल सर्वस्व : यादव कुमार पन्ना लाल अभिमन्यु ।
82. रस-रहस्य : चिंतामणि ।
83. राजस्थानी भाषा व साहित्य : मोतीलाल मिनारिया ।
84. राजस्थानी कथावार्ता : भाग 1 सुनीति कुमार चटर्जी ।
85. ऋगवेद : वैक्समूलर ।
86. राजस्थानी लोकगाथा का अध्ययन : कृष्णकुमार शर्मा । राजस्थान प्रकाशन, जयपुर ।
87. राजा गोपीचन्द की गाथा ।
88. राजा भर्थरी की लोक-गाथा ।
89. रामकथा : कामिल बुल्के, 1950 ।
90. राजगाथा : (बंगला) : असित कुमार हल्दार ।
91. रामायण : बाल्मीकि ।
92. रूसी लोक-साहित्य : केशरी नारायण शुक्ल ।
93. लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या : श्रीकृष्ण लाल ।
94. लोक-महाभारत : मूलचन्द प्राणेश (सं0) : भारतीय प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, बीकानेर ।
95. लोक-साहित्य की भूमिका : कृष्णदेव उपाध्याय ।
96. लोक-साहित्य विज्ञान : सत्येन्द्र ।
97. लोक-साहित्य के प्रतिमान : कुन्दनलाल उत्प्रैती ।
98. लोरिकायन : महादेव प्रसाद सिंह : लोकनाथ पुस्तकालय, कलकत्ता ।
99. लोरिक वीर नाटक : ठाकुर महताब सिंह, हरदोई ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

100. वायु पुराण ।
101. वात्स्यायन काम सूत्र ।
102. विंध्य माहात्म्य ।
103. बिंध्य भूमि की लोक-कथाएँ : श्रीचन्द जैन ।
104. बिंध्य प्रदेश के लोकगीत : श्रीचन्द जैन ।
105. संगीत पारिजात : ओंकार ठाकुर ।
106. संस्कृत भाषा विज्ञान : राजकिशोर ।
107. संस्कृत शब्दार्थ कोस्तुभम् ।
108. सिद्धान्त कौमुदी : वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई ।
109. श्रीमद्भागवत महापुराण ।
110. श्रावण शृङ्गार (अप्रकाशित) : शिवदास ।
111. सोरठी लोकगाथा ।
112. संक्षिप्त यदुवंश वृक्ष : मास्टर खिलाड़ी लाल, वाराणसी से प्रकाशित ।
113. शैव प्रमोद : चन्द्रशेखर शुक्ल ।
114. सति मैना उलोर चंदानी : दौलत काजी, हमीदी प्रेस कलकत्ता ,
115. सति मैना : सत्येन्द्र भोपाल : हमीदी प्रेस, कलकत्ता ।
116. सुख सागर : मास्टर खेलाड़ी लाल के यहाँ से प्रकाशित ।
117. साहित्य प्रकाशिका : खण्ड 1, सत्येन्द्र थोपाल : विश्व भारती प्रकाशन शांति निकेतन ।
118. हरियाणा प्रदेश का लोक-साहित्य : शंकर लाल यादय ।
119. हिन्दी शब्द सागर (संक्षिप्त) : काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
120. हिन्दी साहित्य-कोश : धीरेन्द्र वर्मा : ज्ञान मण्डल, वाराणसी ।
121. हिन्दी भक्ति-काव्य में लोक-तत्व : रवीन्द्र भ्रमर ।
122. हिन्दी साहित्य का आदिकाल : हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
123. हिन्दी साहित्य की भूमिका : हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
124. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : रामकुमार वर्मा ।
125. हिन्दी साहित्य का इतिहास : रामचन्द्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, काशी ।
126. हिन्दी प्रेमाख्यान काव्य : कमलकुल श्रेष्ठ ।
127. हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास : शम्भुनाथ सिंह ।
128. हिन्दी भाषा और साहित्य में ग्वालियर क्षेत्र का योगदान : राधेश्याम द्विवेदी ।
129. हिन्दी साहित्य द्वितीय खण्ड : त्रिलोकी नाथ दीक्षित, भा० हि० प०, प्रयाग ।
130. हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास राहुल साँकृत्यायन : ना० प्र० स०,काशी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

131. हिन्दी भाषा और साहित्य : श्यामसुन्दर दास ।
132. हिन्दी भाषा का इतिहास : धीरेन्द्र वर्मा ।
133. हिन्दी साहित्य की पीठिका : राजबली पाण्डेय ।
134. संस्कृत साहित्य का इतिहास : बलदेव उपाध्याय ।

अंग्रेजी

135. ए० एस० आई० : भाग 2 जनरल कनिंघम ।
136. ए हिस्ट्री आफ संस्कृत लिट्रेचर ; ए० बी० कीथ ।
137. एन्शिएण्ट बैलाड्स एण्ड लीजेण्ड्स आफ हिन्दुस्तानी : चारु दत्ता ।
138. एन्शिएण्ट संस्कृत टेल्स : म्योर ।
139. आर्कोलाजिकल सर्वे रिपोर्ट : खण्ड 16, अलेक्जण्डर कनिंघम ।
140. बैलाड एण्ड एपिक : डब्ल्यू० एम० हर्ट ।
141, भागलपुर गजेटियर : हण्टर : स्टैटिकल एकाउण्टैण्ट से उद्धृत ।
142. कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इंगलिश लिट्रेचर : एफ० बी० गूमर ।
143. चाइल्ड स्काटिश एण्ड पापुलर बैलाड्स : क्रिटेज ।
144. कास्ट एण्ड क्लास इन इंडिया : घुरे जी० एस०, पापुलर बुक डिपो, बाम्बे ।
145. कास्ट एण्ड हर्ड्स मैन : सर हेनरी ।
146. कल्चर एण्ड इण्ट्रोडकशन : संन्याल, बी० एस० ।
147. कास्ट एण्ड ट्राइब्स आफ एच० ई० एच०, निजाम डोमिनियन्स : सैय्यद सिराजुल हसन । वालुम—वन, बाम्बे, द टाइम प्रेस, 1920
148. डिक्शनरी आफ बर्ल्ड लिट्रेरी टर्म्स, लंदन, 1955
149. डिक्शनरी आफ फोक लोर : भाग—1, मेरिया लोंच ।
150. हिन्दुस्तानी डिक्शनरी ।
151. हिस्ट्री आफ द इंडियन लिट्रेचर : विंटरनिज़ ।
152. हिन्दी फोकसांग्स : शेरिफ, ए० जी० ।
153. इंगलिश स्काटिश पाय० बैलाड्स : चाइल्ड, एफ० जे०, एच० सी० सर्जेण्ट ।
154. फोटेसिज्म : क्रुक ।
155. फोकसांग्स आफ छत्तीसगढ़ : बेरियर एल्विन ।
156. फोकलोर आफ छत्तीसगढ़ : पार्ट—2 : बेरियर एल्विन ।
157. फोकटेल्स आफ सन्थाल परगनाज़ : बम्पास ।
158. फील्डसांग्स आफ छत्तीसगढ़ : एस० सी० दूबे ।
159. फोकटेल्स आफ बंगाल : लालबिहारी डे ।
160. फोकटेल्स आफ काश्मीर : नोल्स ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

161. फोकटेल्स आफ महाकोशल : एल्विन, वी० ।
162. फोक सांग्स आफ मिरजापुर : मजुमदार, डी० एन० ।
163. फोक एलिमेंट्स इन हिन्दू कल्चर : सरकार, वी० के० ।
164. फोकलोर आफ बर्ड्स एण्ड बीस्ट्स आफ इंडिया : फिट्ज़ पैट्रिक डब्ल्यू० ।
165. इम्पीरियल गजेटियर आफ इंडिया : वालुम—2
166. इनसाइक्लोपीडिया आफ सोसल साइंसेज़ ।
167. इंडियन एंटिक्वेरी : भाग—14, जार्ज ग्रियर्सन,
168. इंडियन फेयरी टेल्स : मिस स्टाक्स ।
169. एजीज़ मिथ्स एण्ड लीजेण्ड्स आफ इँडिया : ए कम्परेटिव सर्वे आफ द सैक्रेड लव् आफ हिन्दूज़, बुद्धिस्ट एण्ड जैन्स ; टामस, पी० ।
170 इण्ट्रोडक्शन टु फोक लोर्स : कावस, एम० आर० ।
171 कथा सरित्सागर : टानी ।
172. लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया, जिल्द—9, भाग—1, ग्रियर्सन ।
173. मिथ आफ मिडिल इंडिया : वैरियर एल्विन ।
174. मिरजापुर गजेटियर : ब्राकमैन, डी० एल०, 1911
175. वर्नाकुलर लिट्रेचर आफ हिन्दुस्तान : जार्ज ग्रियर्सन ।
176. मेमोरियल आफ द हिस्ट्री फोकलोर एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन आफ द रेसेज़ आफ द नार्थ-वेस्टर्न प्राविंसेज़ आफ इंडिया : सर हेनरी एम० इलियट ।
177. मोटिफ इंडेक्स—थाम्सन ।
178. ओल्ड इंगलिश बैलन्ड्स : सेन्थल ।
179. ओल्ड बैलाड्स : फ्रेंक सिजविक : फ्रेंक सिजविक : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस ।
180. पापुलर रेलिजन एण्ड फोकलोर आफ नार्दन इंडिया : क्रुक, डब्ल्यू० ।
181. प्रीमिटिव कल्चर : पार्ट—2 : टिलर, ए० वी० ।
182. स्टैण्डर्ड डिक्शनरी आफ फोकलोर्स माइथालाजी एण्ड लीजेण्ड्स: भाग—1
183. द ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ नार्थ-वेस्टर्न प्राविंसेज़ एण्ड अवध, खण्ड—1, क्रुक ।
184. द बैलेड्स : सिजविक ।
185. द इंगलिस बलेड्स : रावर्ट ग्रेव्स ।
186. यूनाइटेड प्राविंसेज़ : ए कल्चरल मास एयर मजुमदार, डी० एन० ।
187. द फोक एलिमेण्ट्स आफ हिन्दू कल्चर : सरकार, बी० के० ।
188. द हैण्ड़ बुक आफ फोकलोर : बर्न, सी० एस० ।
189. द फोकलोर्स आफ सन्थाल परगनाज़ : बाम्क, एस० एच० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

190. द प्रीमिटिव सांग्स : वोरा, सी० एस० ।
191. द स्टडी आफ फोकलोर : एलान दुन्द्स ।
192. द ट्राइब्स एण्ड कास्ट् आफ सेण्ट्रल प्राविसेज़ आफ इंडिया : ससेल, आर० वी ०
193. फारचून्स आफ प्रीमिटिव ट्राइब्स : मजुमदार, डी० एन० ।
194. द ग्रोथ आफ लिट्रेचर : चदविक, एच० एम० ।
195. द क्रिमिनल टॉइब्स : भगवान, बी० एस० ।
196. द फोक सांग्स आफ इंडिया : प्रोजेश बनर्जी ।
197. द हिन्दू कास्ट्स : रोड्रिगनर, ई० ए० ।
198. रिपोर्ट आफ द आर्कोलाजिकल पार्ट—8 : बेलगर, जे० बी० ।
199. रैयर प्रेमगट्स आफ चंदायन एण्ड मृगावती : अस्करी, एस० एच० ।
200. रैनुल्स एण्ड रिक्लेशन : जनरल स्लीमैन ।

पत्र-पत्रिकाएँ
(हिन्दी)

201. आजकल : मई, 54 तथा जुलाई, 54 ।
202. आज : वाराणसी ।
203. आज-सायं समाचार—साप्ताहिक, वाराणसी ।
204. आलोचना : दिल्ली ।
201- आधान : राबर्टसगंज ।
206. कल्याण-हिन्दू संस्कृति अंक : गीताप्रेस गोरखपुर ।
207. जनपद : बाराणसी ।
208. जनवार्ता : वाराणसी ।
209. गाण्डीव : वाराणसी ।
210. धर्मयुग : बम्बई ।
211. नागरी प्रचारिणी पत्रिका : वाराणसी ।
212. पुराकल्प : वाराणसी ।
213. भारतीय साहित्य मूल-पत्रिका ।
214, यादव पत्रिका : वाराणसी ।
215. हिन्दी अनुशीलन : भारतीय हिन्दी परिषद्, प्रयाग ।
216. हिन्दुस्तानी : जनवरी-मार्च, 1969 ।
217. शोध-पत्रिका : उदयपुर ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

218. सम्मेलन पत्रिका : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।
219. साहित्य संदेश : आगरा ।
229. सरस्वती : इंडियन प्रेस, प्रयाग ।
221. कल्पना : हैदराबाद ।

अंग्रेजी

222. क्वार्टर्ली जर्नल आफ द मीथिक सोसायटी : भाग-25 ।
523. द मैगज़ीन आफ एशियाटिक सोसायटी : भाग-3 ।
224. जरनल आफ द एशियाटिक शोसायटी आफ बंगाल : भाग-50, 1850 ।
225. जे० आर० ए० एस० : पार्ट 16, 1884 ।
226. जे० आर० ए० एस० : पार्ट 18, 1886 ।
227. पायनियर : 13 मार्च, 1888 ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिचय

डॉ० अर्जुनदास केसरी

एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत), पी-एच० डी०, साहित्य शास्त्राचार्य ।
जन्म : ३१ जुलाई, १९३९ ई० । भवानीगाँव, रामगढ़-मिरजापुर ।

अभावों के बीच जीवन प्रारम्भ करने वाले श्री केसरी को मिर्जापुर की जन-जातियों तथा पिछड़े वर्गों के बीच प्रवेश का अवसर चोपन के रेल कर्मचारी उ० मा० विद्यालय में अध्यापन के समय मिला । धीरे-धीरे वे आदिवासियों तथा शताब्दियों से उपेक्षित क्षेत्रों के निवासियों के अभिन्न मित्र हो गये । रेलवे विद्यालय की नौकरी छोड़कर उन्होंने राबर्ट्सगंज को अपना केन्द्र बनाया और वहीं एक विद्यालय की स्थापना की । लोकवार्ता शोध संस्थान की स्थापना उन्होंने अपनी लोक-संस्कृति की व्यापक खोज के उद्देश्य से की है ।

उत्तर भारत की सर्वप्रमुख लोक गाथा होते हुए भी 'लोरिकायन' का ऐसा एक भी प्रामाणिक संस्करण प्रकाश में नहीं आ सका था जिसमें 'लोरिक देव' से सम्बन्धित सभी गाथाओं का संकलन किया गया हो । श्री केसरी ने लगभग १० वर्ष पहले चोपन में इसके संकलन का संकल्प किया था । वे पिछले वर्ष (१९७९) यह कार्य पूरा करने में सफल हुए हैं ।

श्री केसरी ने मिर्जापुर के पिछड़े इलाकों को प्रकाश में लाने के लिए पिछले वर्षों में पांच सौ से अधिक निबन्ध लिखे हैं तथा लोकवार्ता शोध संस्थान के माध्यम से एक नई पीढ़ी इस कार्य के लिए तैयार की है ।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

□

अर्जुन दास केसरी

जन्म : ३१ जुलाई १९३९

ग्राम : भवानी गांव, रामगढ़, मिरजापुर

रचनायें : लोरिकायन : एकअध्ययन (शोधग्रंथ), आधुनिक हिन्दी साहित्य के उत्थान में मिरजापुर जनपद का योगदान (साहित्य महोपाध्याय के लिए शोध प्रबन्ध), मिरजापुर के गुहाचित्र, लोकवार्ता निबंधावली (प्रकाशनाधीन). खरवार जनजाति का उद्भव और विकास, हिन्दी साहित्य के अमूल्य रत्न, भाषा कल्पद्रुम (छात्रोपयोगी) इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनायें, रेडियो एवं टेलिविजन से प्रसारित वार्त्तायें ।

पुरस्कार : लोरिकायन पर ६ हजार रुपये का नमित राहुल सांस्कृत्यायन पुरस्कार ।

संप्रति : अच्छी खासी नौकरी छोड़ने के बाद एक विद्यालय की स्थापना की और उसे चला रहे हैं जहां पढ़ने वाले अधिकतर पिछड़ी जाति-वर्ग एवं आदिवासी बच्चे हैं ।

आवरण : के. विक्रम

छायाचित्र : एस. अतिबल

प्रकाशक : लोक रुचि प्रकाशन, रावर्ट्सगंज, मिरजापुर ।

आवरण मुद्रक : जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा.) लि. गोलघर, वाराणसी ।